हिंदी कथाकोष

हिंदुस्ता

उत

हिन्दी कथा-कोष

प्राचीन हिंदी साहित्य में व्यवहृत नामों तथा पौराणिक
अंतर्कथाओं का संदर्भ-ग्रंथ

१९७४

हिंदुस्तानी एकेडेमी

उत्तरप्रदेश, इलाहाबाद

प्रथम संस्करण : २००० : १९५४
द्वितीय संस्करण : ५००० : १९७४
मूल्य छः रुपये

संशोधित
मूल्य 20/-
इलाहाबाद

मुद्रक
धारा प्रेस, ६०६, कटरा, इलाहाबाद

प्रकाशकीय

हिन्दी में एक ऐसे कोष की आवश्यकता का बहुत समय से अनुभव किया जा रहा था जिसमें पुराने हिन्दी-साहित्य में व्यवहृत नामों तथा पौराणिक अंतर्कथाओं का समावेश हो। कई वर्ष पहले एकेडेमी ने यह कार्य अपने साहित्य-सहायक स्वर्गीय पंडित गणेशप्रसाद द्विवेदी को सौंपा था, लेकिन द्विवेदी जी कार्य के पूरा होने से पूर्व दिवंगत हुए। परिस्थितियों-वश इस कार्य को कई हाथों से गुजरना पड़ा। श्री पारसनाथ तिवारी और श्री माताबदल जायसवाल ने इसे आगे बढ़ाया और कोष को उसका वर्तमान अन्तिम रूप श्री भोलानाथ तिवारी ने दिया। एकेडेमी के ही तत्वावधान में श्री विश्वनाथ मिश्र ने केवल नन्ददास की रचनाओं में आये नामों का एक कोष प्रस्तुत किया था जो कि स्वतन्त्र रूप से 'हिन्दुस्तानी' पत्रिका में प्रकाशित हुआ था। उस सामग्री का भी उपयोग प्रस्तुत कोष में कर लिया गया है।

ऊपर बताये गये कारण से कोष में कदाचित् वैसी एकरूपता नहीं आ पाई है जैसी कि अभीष्ट थी। फिर भी निस्संदेह इस ग्रंथ का अपना विशेष मूल्य है और यह आशा की जाती है कि इससे न केवल हिन्दी शिक्षार्थी लाभान्वित होंगे, बल्कि साधारण पाठक भी, और यह हिन्दी के संदर्भ-ग्रंथों में अपना स्थान बनावेगा।

कथाओं तथा नामों को एकत्र करने में वैदिक संहिताओं, ब्राह्मणों, उपनिषदों, रामायण, महाभारत, पुराणों एवं उपपुराणों, हिन्दी के प्रमुख कवियों की रचनाओं, भक्तमाल तथा डाउसन की क्लैसिकल डिक्शनरी से सहायता ली गई है।

आगे के संस्करण में इसे और भी पूर्ण तथा उपादेय बनाने का प्रयत्न होगा।

हिन्दुस्तानी एकेडेमी,
उत्तरप्रदेश, इलाहाबाद
अगस्त, १९५४

धीरेन्द्र वर्मा
मंत्री तथा कोषाध्यक्ष

द्वितीय संस्करण का प्रकाशकीय

'हिन्दी कथा कोष', हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद का एक महत्त्वपूर्ण और उपयोगी प्रकाशन है। इसका प्रथम संस्करण सन् १९५४ में प्रकाशित हुआ था। हिन्दी भाषा और साहित्य का अध्ययन जिस परिमाण में विस्तृत होता गया उसी परिमाण में इस कोश की उपादेयता बढ़ती गयी। प्रथम संस्करण दो हजार प्रतियों में छपा था किन्तु यह दूसरा संस्करण पाँच हजार प्रतियों में प्रकाशित हो रहा है।

सन् १९५४ से सन् १९७४ के बीच मुद्रण मूल्यों में जो अनिवार्य वृद्धि हुई है वह सर्वविदित है। हमें बाध्य होकर इस दूसरे संस्करण का मूल्य छः रुपये रखना पड़ रहा है। हमारा विश्वास है कि मूल्य वृद्धि के कारण इस कोश की बिक्री में कोई अन्तर न पड़ेगा।

उमाशंकर शुक्ल
सचिव
हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद

१४-२-७४

हिंदी कथा-कोष

अंग–१. विठूर के एक प्रतापी सोमवंशी राजा जिनके अंग से ब्राह्मणों ने यज्ञ द्वारा राजा वेणु को उत्पन्न किया था। ये बड़े धार्मिक थे, किंतु इनका पुत्र आज्ञाकारी न था। दे० 'वेणु'। २. कृतयुग के एक प्रजापति, जिन्होंने एक बार इंद्र का वैभव देखकर उन्हीं के समान पुत्र की कामना से विष्णु की बड़ी उपासना की थी। इस उपासना से प्रसन्न होकर विष्णु ने इनको किसी कुलीन कन्या से विवाह करने की आज्ञा दे दी, किन्तु इन्होंने एक यमकन्या सुनीथा से गांधर्व विवाह कर लिया जिससे बेन नाम का एक बड़ा अत्याचारी पुत्र उत्पन्न हुआ। उसके व्यवहार से दुखी होकर ये सर्वस्व त्याग कर वन में चले गये। इनके सुमनस, ख्याति, क्रतु, अंगिरस तथा गय नाम के पाँच भाई और थे। ३. अंग जनपद के राजा, जिनके पुत्र रोमपाद एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त थे।

अंगद–१. किष्किंधा के राजा बालि के वीर पुत्र। बालि का वध करके रामचंद्र ने इन्हें ही किष्किंधा का राज्य सौंप कर 'युवराज' की पदवी दी थी। राम की सेना में वीरता तथा अजेय साहस के लिए हनुमान् के बाद इन्हीं का स्थान था। राम का दूत बनकर राम-रावण युद्ध के पूर्व ये रावण के दरबार में गए थे। अपने पिता बालि की मित्रता के नाते इन्होंने रावण को राम से बैर न करने के लिए बहुतेरा समझाया किंतु उसकी हठवादिता के कारण इनका समझाना बेकार गया। इसी अवसर पर रावण की बातों से आवेश में आकर इन्होंने अपना पैर जमाकर यह प्रतिज्ञा की थी कि उसकी सभा का कोई भी वीर यदि इनका पैर उठा दे तो राम हार मान कर लौट जायेंगे। किंतु वह पैर किसी से भी न उठा। अंत में उसे उठाने के लिये रावण स्वयं प्रस्तुत हुआ किंतु उसे इन्होंने "मम पद गहे न तोर उधारा' तथा 'गहसि न राम चरन सठ जाई" कह कर लज्जित कर दिया। सुग्रीव इनके चचा तथा पंचकन्या तारा इनकी माता थीं। दे० 'बलि'। २. एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त और जगन्नाथ (पुरी) के अनन्य उपासक। इनके पास एक बहुमूल्य रत्न था जिसे कई राजाओं ने लेने का प्रयत्न किया। अन्त में उसकी रक्षा असंभव समझ कर इन्होंने उसे जगन्नाथ जी को समर्पित कर दिया। अंगदसिंह जाति के क्षत्रिय, रायसिंह गढ़ के निवासी तथा सिलाहदी सिंह के चाचा थे। ऐसी अनुश्रुति है कि पहले यह बड़े विषयी थे और सदैव अपनी रूपवती पत्नी का मुख देखने में ही तन्मय रहा करते थे। अंत में पत्नी से ही इन्हें हरिभक्ति की भी प्रेरणा मिली और उसी के गुरु द्वारा दीक्षित भी हुए।

अंगिरा–एक प्रसिद्ध वैदिक ऋषि जिनका स्थान मनु, बगाति तथा भृगु आदि के समकक्ष माना जाता है। सप्तर्षियों तथा दस प्रजापतियों में भी इनकी गणना है। कालान्तर में अंगिरा नाम के एक प्रसिद्ध ज्योतिषी तथा स्मृतिकार भी हो गये हैं। नक्षत्रों में वृहस्पति यही हैं और देवताओं के पुरोहित भी यही। इस प्रकार ज्ञात होता है कि इस नाम के पीछे कई व्यक्तित्व छिपे हुए हैं। 'अंगिरस' उसी धातु से निकला है जिससे 'अग्नि' और एक मत से इनकी उत्पति भी आग्नेयी (अग्नि की कन्या) के गर्भ से मानी जाती है। मतांतर से इनकी उत्पत्ति, ब्रह्मा के मुख से मानी जाती है। स्मृति, श्रद्धा, स्वधा, सती तथा दक्ष की दो कन्याएँ इनकी पत्नियाँ मानी जाती हैं और हविष्यत् इनके पुत्र तथा वैदिक ऋचाएँ इनकी कन्याएँ मानी जाती हैं। उतथ्य, वृहस्पति तथा मार्कंडेय इनके पुत्र कहे गये हैं। भागवत् के अनुसार रथीतर नामक किसी निस्संतान क्षत्रिय की पत्नी से इन्होंने ब्राह्मणोपम पुत्र उत्पन्न किये थे।

अंजना–हनुमान की माता। इनके पति का नाम केशरी था; किंतु हनुमान की उत्पत्ति पवन से बतलाई जाती है। एक बार किसी कारण-वश महादेव का वीर्यपात हो गया, जिसे वायु ने उड़ाकर अंजनी के कान में फूंक दिया और इस प्रकार गर्भ रह गया, जिससे हनुमान की उत्पत्ति हुई। दे० 'हनुमान'।

अंतरिक्ष–नाभादास के अनुसार ये नव योगीश्वरों तथा प्रमुख भक्तों में से एक थे। दे० 'योगीश्वर'।

अंधक–१. एक राक्षस का नाम जिसकी उत्पत्ति पार्वती के पसीने से मानी जाती है। हिरण्याक्ष के घोर तप करने पर शंकर जी ने प्रसन्न होकर इसे यही पुत्र दिया था। इसके सहस्र बाहु, सहस्र शिर तथा दो सहस्र नेत्र थे। इतने नेत्र रहने पर भी यह अंधों की भाँति झूम-झूम कर चलता था इसी से इसका नाम अंधक पड़ा था। पार्वती की अवज्ञा करने के कारण शिव से इसका घोर युद्ध हुआ। इसके रक्त की एक-एक बूंद से जब इसी के समान राक्षस उत्पन्न होने लगे तब शिव ने एक मातृका उत्पन्न की जो गिरे हुए रक्त को पी लेती थी, पर उसके तृप्त होने पर फिर नये अंधक उत्पन्न होने लगे और उन्हें विवश होकर विष्णु की सहायता लेनी पड़ी। विष्णु की एक युक्ति से सारे नये अंधक विलीन हो गये और शिव ने मुख्य अंधक को त्रिशूल पर लटका दिया। आकुल होकर जब उसने शिव की स्तुति करनी आरंभ की तो उन्होंने इसे गणाधिपत्य प्रदान दिया। मतांतर से यह कश्यप और दिति का पुत्र था। देवताओं ने जब दिति के समस्त पुत्रों का बध कर दिया तब उसने एक अबध्य पुत्र के लिए भगवान से प्रार्थना की जिसके फलस्वरूप अंधक की उत्पत्ति हुई। शिव तथा विष्णु के अतिरिक्त किसी अन्य देवता के

द्वारा पराजित होने का इसे वर प्राप्त था। यह इतना अत्याचारी हुआ कि इसके आतंक से त्रैलोक्य काँप उठा। इसने उर्वशी, इन्द्रावती आदि अप्सराओं का हरण कर लिया तथा नन्दनकानन से पारिजात लाकर अपने यहाँ रख लिया। अन्त में बड़ी कठिनता से यह शिव के हाथों मारा गया। २. वृष्णि वंश के एक पूर्व पुरुष युधाजित का पुत्र तथा क्रोष्टा का नाती। विष्णुपुराण के अनुसार यह सात्वत का पुत्र था।

अंबरीष—१. अयोध्या के एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा। विष्णु का रामावतार इन्हीं के वंश में हुआ था। ये इक्ष्वाकु की चौबीसवीं पीढ़ी में थे और गंगा के प्रवर्तक प्रसिद्ध राजा भगीरथ के प्रपौत्र थे। ये बड़े पराक्रमी थे और कहा जाता है कि इन्होंने १० लाख राजाओं को युद्ध में परास्त किया था। अंबरीष उच्चकोटि के विष्णु-भक्त थे। सारा राज्य-भार कर्मचारियों को सौंपकर ये अपना अधिकांश समय हरि-भजन ही में व्यतीत किया करते थे। अंबरीष की कन्या का नाम सुन्दरी था जिसका गुण भी नाम के ही अनुसार था। देवर्षि नारद और पर्वत, जो किसी कार्य-वश अंबरीष के यहाँ पधारे थे, सुन्दरी पर मुग्ध हो गये और उसे प्राप्त करने के उपक्रम में दोनों बारी-बारी से विष्णु के पास गये। नारद ने प्रार्थना की कि पर्वत का मुँह बन्दर का-सा बना दीजिए और पर्वत ने भी नारद के लिए वही प्रार्थना की। विष्णु ने दोनों की प्रार्थना स्वीकार करके दोनों का मुँह बन्दर का-सा बना दिया। इसी आकृति में वे अंबरीष के यहाँ पहुँचे जिन्हें देखकर सुन्दरी भयभीत हो गई। अंबरीष के साथ पुनः वहाँ पधारने पर दोनों के बीच भगवान् विष्णु को भी बैठे देख सुन्दरी ने उन्हीं के गले में वरमाला डाल दी और तत्काल ही विष्णु की प्रेरणा से अन्तर्धान हो गई। दोनों ऋषि बड़े क्रुद्ध हुए और उन्होंने अंबरीष को श्राप दिया कि वह स्वयं अंधकारावृत हो अपना शरीर तक न देख सके। पर अंबरीष की रक्षा के लिए भगवान् का सुदर्शन-चक्र उपस्थित हुआ और अंधकार का नाशकर मुनियों के पीछे पड़ गया। मुनिगण भागते-भागते अन्त में विष्णु की शरण में पहुँचे। भगवान् ने क्षमा करते हुए सुदर्शन चक्र हटा लिया। वास्तविक बात यह थी कि स्वयं राधा (लक्ष्मी) ने सुन्दरी के रूप में अंबरीष के यहाँ जन्म लिया था और श्रीकृष्ण (विष्णु) को पतिरूप में पाने के लिए इन्होंने बड़ी तपस्या की थी। एक बार अपना व्रत खण्डित न होने देने के लिए अंबरीष ने आमंत्रित ऋषि दुर्वासा के आने से पूर्व ही पारायण कर लिया था जिससे क्रुद्ध होकर ऋषि ने इन्हें मारने के लिए अपनी जटा के एक बाल से कृत्या राक्षसी उत्पन्न की थी किन्तु सुदर्शन चक्र ने राक्षसी को मारकर इनकी रक्षा की और फिर ऋषि के पीछे पड़ा। परेशान होकर ऋषि विष्णु की शरण में गये किन्तु उन्होंने ऋषि को अंबरीष के ही पास क्षमा-याचना के लिए भेज दिया। अन्त में इसी उपाय से ऋषि बच सके।

अंबा—काशीराज की उन तीनों कन्याओं में सबसे ज्येष्ठ जो भीष्म द्वारा अपहृत हुई थीं। ये उनके पराक्रम पर मुग्ध थीं और उनसे विवाह भी करना चाहती थीं किन्तु उन्होंने आमरण ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा के कारण इन्हें अस्वीकार कर दिया। अपहरण के पूर्व इनका विवाह शाल्व के साथ होना निश्चित हुआ था किन्तु इस घटना से उन्होंने भी इनके साथ विवाह करने से इनकार कर दिया। अंबा ने प्रतिशोध के लिए घोर तपस्या की और शिव के वरदान के अनुसार अगले जन्म में शिखण्डी के रूप में अवतरित होकर भीष्म की मृत्यु का कारण हुई। दे० 'शिखण्डी' तथा 'भीष्म'।

अंबालिका—काशिराज की कनिष्ठा कन्या जो विचित्रवीर्य को ब्याही गई थी और पांडु जिनके पुत्र थे। पांडु की उत्पत्ति व्यास से मानी जाती है। दे० 'सत्यवती' तथा 'व्यास'।

अंबिका—काशिराज की मझली कन्या जिनका विवाह विचित्रवीर्य के साथ हुआ था। ये धृतराष्ट्र की माता थीं, जिनकी उत्पत्ति व्यास से मानी जाती है। दे० 'व्यास', 'अंबा' और 'विचित्रवीर्य'।

अंशुमान—१. प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा सगर के पौत्र तथा असमंजस के पुत्र। असमंजस, जो विदर्भकन्या केशिनी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे, बड़े होने पर नितान्त अयोग्य तथा अत्याचारी राजा हुए जिससे तंग आकर सगर ने इनका देशनिकाला कर दिया। किन्तु इसके पूर्व ही वे अंशुमान नामक पुत्र छोड़ गये थे जो पिता के विपरीत अत्यन्त योग्य सिद्ध हुआ। राजा सगर के अश्वमेध का घोड़ा जब इन्द्र ने चुरा लिया और उसकी खोज में सगर के साठ हजार पुत्र कपिल के शाप से भस्म हो गये तो अंशुमान ने ही पाताल में उनका पता लगाया और अपने सद्व्यवहार तथा बुद्धि कौशल से महर्षि कपिल को प्रसन्नकर अश्व का उद्धार किया और पितामह का यज्ञ पूरा कराया। अंशुमान की प्रार्थना पर महर्षि कपिल ने उन्हें यह भी वरदान दिया कि उनके पौत्र भगीरथ द्वारा गंगा का मर्त्यलोक में अवतरण होगा और उन्हीं के द्वारा सगर के साठ हजार पुत्रों का भी उद्धार होगा। दे० 'सगर', 'भगीरथ' और 'दिलीप'।

अकंपन—रावण के एक सेनापति। इनके पिता का नाम सुमाली तथा माता का नाम केतुमाली था। ये रावण के मामा लगते थे। प्रहस्त और धूम्रांस नाम के इनके दो अन्य भाई थे। इनकी मृत्यु युद्ध में हनुमान के द्वारा हुई थी।

अकूती—स्वायंभुव मनु तथा सतरूपा की द्वितीय कन्या और महर्षि रुचि की पत्नी। यज्ञ तथा दक्षिणा इनकी यमल सन्तान मानी जाती हैं। जिन्होंने परस्पर विवाह कर लिया था और उन्हीं से द्वादश यमों की उत्पत्ति हुई थी। उत्तानपाद तथा प्रियव्रत अकूती के भाई थे। पातिव्रत तथा हरिभक्ति के प्रसंग में इनकी गणना प्रमुख रूप से की जाती है।

अक्रूर—एक यादव। लोक-प्रसिद्धि के अनुसार ये कृष्ण के पिता वसुदेव के भाई थे। कंस की राज-सभा में असम्मानित होकर रहनेवाले व्यक्तियों में इनका विशेष रूप से उल्लेख मिलता है। यज्ञ का ढोंग रचकर कंस ने इन्हें कृष्ण तथा बलराम को लाने के लिए गोकुल भेजा था। कृष्ण तथा बलराम इनके साथ मथुरा आए थे और वहाँ

उन्होंने कंस के अनुचरों को धराशायी करने के बाद उसका भी वध कर डाला। अक्रूर उसके बाद निरन्तर कृष्ण के ही साथ रहे। कृष्ण ने जरासंध के आक्रमणों से घबड़ाकर जब द्वारिका को अपना राजनगर बनाया तो ये भी मथुरा छोड़कर सम्भवतः द्वारिका ही चले गये थे। जब ये द्वारिका में थे तो इनके पास स्यमंतक मणि होने की कथा मिलती है। इस मणि के सम्बन्ध में यह प्रसिद्धि थी कि जिसके पास यह रहता है उसे प्रतिदिन विपुल धन-राशि की प्राप्ति होती है, तथा जिस स्थान में वह रहता है वहाँ अनावृष्टि आदि नहीं होती। एक बार अक्रूर किसी कारणवश द्वारिका छोड़कर चले गये थे; उनके जाते ही वहाँ अनावृष्टि प्रारम्भ हो गई। द्वारिका-वासियों ने यह समझकर कि यह पुण्यात्मा व्यक्ति हैं, इन्हीं के चले जाने से अनावृष्टि हो गई है इन्हें द्वारिका फिर बुला लिया। किन्तु कृष्ण ने बतलाया कि इनके पास स्यमंतक मणि हैं, इस कारण जहाँ ये रहते हैं वहाँ अनावृष्टि आदि नहीं होती। एक राज-सभा में कृष्ण ने इनसे इस मणि के सम्बन्ध में पूछा था कि "क्या तुम्हारे पास शतधन्वा की स्यमंतक मणि है ?" कृष्ण जब शतधन्वा का वध करने को उद्यत हुए थे तो वह इस मणि को अक्रूर के पास ही छोड़ गया था। कृष्ण ने उसका पीछा करके उसका वध कर डाला था; इस प्रकार यह मणि अक्रूर के पास ही रह गया था। कृष्ण इस तथ्य से परिचित थे। कृष्ण के पूछने पर अक्रूर को, यह मणि दिखाना पड़ा; किन्तु कृष्ण ने उसे देखकर फिर इन्हें ही वापस कर दिया और उसके बाद वह जीवनपर्यंन्त इन्हीं के साथ रहा।

अक्षपाद–एक प्रसिद्ध ऋषि तथा दार्शनिक। इनका दूसरा नाम गौतम है जो 'न्यायदर्शन' के रचयिता माने जाते हैं। इनके द्वारा प्रतिष्ठापित दर्शन को 'अक्षपाद-दर्शन' भी कहते हैं।

अक्षयकुमार–रावण तथा मंदोदरी के कनिष्ठ पुत्र का नाम जिसकी मृत्यु अशोकवाटिका में सीता की खोज में आये हुए हनुमान के द्वारा हुई थी।

अक्षयमल–एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त।

अगस्त्य–ऋग्वेद की कई ऋचाओं के रचयिता एक ऋषि। उर्वशी के सौंदर्य को देखकर मित्र और वरुण के स्खलन से इनकी और वसिष्ठ की उत्पत्ति हुई। भाष्यकार सायण के कथानुसार इनकी उत्पत्ति घड़े से हुई जिससे इन्हें कलसी-सुत, कुम्भसम्भव और घटोद्भव आदि भी कहा गया है। पिता-माता को ध्यान में रखते हुए इन्हें मैत्रा-वरुणि और और्वशीय भी कहा गया है। जन्म के समय ये एक अँगूठे के बराबर लम्बे थे, इसलिए इन्हें मान भी कहा गया। मतांतर से ये वसिष्ठ के बहुत बाद के हैं और प्रजापतियों में नहीं गिने जाते। कहा जाता है कि विन्ध्य-पर्वत को दण्डवत करने के लिए इनके आगे झुकना पड़ा और वह पहले वाली अपनी ऊँचाई खो बैठा। अगस्त्य नाम पड़ने का कारण इस पर्वत का झुकना ही है। इसी चमत्कार के कारण इन्हें विध्यकूट भी कहा गया। देवासुर संग्राम में जब दानव सागर में जाकर छिप गये और खुद सागर ने भी इन्हें क्षुब्ध कर दिया था, तो ये सागर को ही पी गये और इस कारण पीताब्धि या समुद्रचुलुक कहलाये। बाद में इनकी गणना सप्तर्षियों में होने लगी। पुराणों में इन्हें पुलस्त्य का पुत्र कहा गया है। ये ब्रह्मपुराण के कहनेवालों में से माने गये हैं। इन्होंने औषधियों पर भी लिखा है। महाभारत में इनकी पत्नी के सम्बन्ध में यह कथा है कि इनके पूर्वज उल्टे टाँग दिये थे। उन्होंने इनसे कहा कि उनकी मुक्ति तभी होगी जब इनके पुत्र पैदा हो। तब इन्होंने विभिन्न पशुओं के सुन्दरतम अवयवों के सौन्दर्य से एक कन्या की रचना की और उसे विदर्भ राज के यहाँ चुपके से पहुँचा दिया जहाँ वह राजपुत्री की भाँति पाली-पोसी गई। बड़ी हो जाने पर अगस्त्य ने राजा से इसके साथ विवाह का प्रस्ताव किया। इच्छा न रखते हुए भी राजा को ब्याहना पड़ा। रामायण में इनका महत्व बहुत बढ़ गया है। ये कुंजर पर्वत पर एक कुटी में रहते थे जो बिंध्य के दक्षिण बड़े रमणीक प्रदेश में थी। ये दक्षिण के साधुओं में सबसे प्रमुख थे। इनका राक्षसों पर इतना अधिकार था कि वे उत्तर की ओर आँख नहीं उठा सकते थे।

अग्नि–एक विशेष शक्ति के प्रतीक-स्वरूप स्वीकृत देवता। इनकी अभिव्यक्ति आकाश में सूर्य, बादलों में विद्युत् तथा पृथ्वी पर साधारण अग्नि के रूप में मानी गई है। वेदों में इनके सम्बन्ध में बहुत-सी ऋचाएं मिलती हैं। ऋग्वेद में परम पुरुष के मुख से इनका जन्म माना गया है। यह भी कहा गया है कि प्रत्येक घर में इनका निवास है। यह युवक हैं, बुद्धिमान् हैं, घर के स्वामी हैं तथा हमारे बहुत निकट सम्बन्धी हैं। साथ ही इन्हें विशेष कृपाशील तथा सभी का भाई, पुत्र, पिता और पालक कहा गया है। विवाह के अवसर पर इनका आवाहन सम्भवतः इसी कारण विशेष रूप से किया जाता था और आज भी हिन्दू घरों में किया जाता है। इनकी गणना वायु अथवा इन्द्र और सूर्य के साथ वैदिक त्रिदेवों में भी होती थी। अग्नि पृथ्वी के अधिष्ठाता थे; वायु हवा के, तथा सूर्य आकाश के। आगे के साहित्य में इन्हें दक्षिण पूर्वकोण के दिक्पाल के रूप में भी चित्रित किया गया है। प्रारम्भ में अग्नि में लोक-कल्याण की भावना की प्रधानता स्वीकृति हुई थी, किन्तु बाद को इनकी विनाशकारी प्रवृत्तियों को देखकर इनमें भयंकर भावना का भी विकास हो गया। पुराणों के आधार पर अग्नि को शांडिल्य, एक सप्तर्षि का प्रपौत्र तथा आंगिरस का पुत्र भी कहा जाता है। महाभारत में अग्नि अपने प्रति समर्पित होने वाली सामग्री को उदरस्थ करने के कारण अजीर्ण रोग से पीड़ित मिलते हैं और खांडव वन को औषधि रूप में ग्रहणकर अपने को निरोग करना चाहते हैं। इन्द्र के विरोध के होते हुए भी कृष्ण तथा अर्जुन की सहायता से इन्हें अपने कार्य में सफलता मिलती है। पूर्ण निरोग होकर अपने सहायकों में कृष्ण को इन्होंने कौमोदकी गदा और एक शक्ति दी थी तथा अर्जुन को गांडीव धनुष। विष्णुपुराण में इन्हें ब्रह्मा का ज्येष्ठ पुत्र अभिमानी कहा गया है। इनकी स्त्री का नाम स्वाहा मिलता है जिससे इनके पावक, पवमान तथा सुचि तीन पुत्र हुए थे और इनसे उनचास प्रपौत्र। वायुपुराण

में उन्हें ही अग्नि के उनचास रूपों में स्वीकार किया गया है। इनकी रूपरेखा के सम्बन्ध में कहा जाता है कि ये श्याम वस्त्रों से आवृत्त रहते हैं, चतुर्हस्त हैं, एक हाथ में जाज्वल्यमान माला रहती है। सप्त-पवन इनके रथ के चक्रों में स्थित माने जाते हैं तथा उसके अश्वों का वर्ण रक्तिम है। इनके वाहन के लिए अज का भी उल्लेख मिलता है।

अग्निदग्ध—पितृगणों का एक नाम। ये गृह-अग्नि को जीवित रखते तथा हवन करते थे। जो ऐसा नहीं करते थे वे 'अनग्निदग्ध' कहलाते थे।

अग्निपुराण—अष्टादश महापुराणों में से एक। इसके आकार के सम्बन्ध में मतभेद है। कुछ अनुश्रुतियों के अनुसार इसकी श्लोक संख्या १६००० है, कुछ के अनुसार १५००० और कुछ के अनुसार १४०००। इस पुराण का अधिकांश भाग शिवजी पर ही आधारित है, किन्तु अन्य विषयों की चर्चा भी कम नहीं है। विधि, निषेध, आचार, कर्मकाण्ड, राजनीति, युद्धविद्या, अस्त्रविद्या, धर्मशास्त्र, आयुर्वेद (सुश्रुत के आधार पर), व्याकरण (पाणिनि के आधार पर), छंद तथा पिंगल आदि अनेक विषयों का इसमें विस्तृत वर्णन है। पुराण के पंच लक्षणों के अनुसार इसके विषय नहीं हैं और यह रचना भी बहुत पुरानी नहीं ज्ञात होती। महर्षि वशिष्ठ को शिक्षा देते समय सर्वप्रथम अग्नि ने इस पुराण को सुनाया था। तदनंतर वशिष्ठ ने व्यास को, व्यास ने सूत को और सूत ने नैमिषारण्य में अन्य ऋषियों को इसे सुनाया। सर्वप्रथम अग्नि द्वारा सुनाये जाने के कारण इसका नाम अग्नि-पुराण पड़ा।

अग्निबाहु—ये प्रसिद्ध प्राचीन राजा प्रियव्रत के दस पुत्रों में से एक थे, जो साहस एवं शारीरिक शक्ति के लिए विख्यात थे। इन्हें अपने पूर्व जन्म की स्मृति बनी हुई थी जिसके प्रभाव से इन्होंने राज्य त्यागकर आजीवन ईश्वराधन में अपना समय बिताया।

अग्निवर्च—सूत के एक शिष्य का नाम जो कालांतर में बहुत प्रसिद्ध पौराणिक हुए।

अग्निष्टोम—चाक्षुष मनु के एक पुत्र का नाम। इस नाम का एक वैदिक यज्ञ भी प्रसिद्ध है जिसकी उत्पत्ति विष्णु पुराण के अनुसार ब्रह्मा के पूर्व दिशावाले मुँह से हुई थी।

अग्निष्वात्त—देवताओं के पितृगणों का नाम, जिनकी संख्या चौंसठ सहस्त्र है। इनकी उत्पत्ति ब्रह्मा तथा उनकी मानस कन्या संध्या से मानी जाती है।

अग्रदास—प्रसिद्ध वैष्णव-भक्त तथा कृष्णदास पयहारी के प्रधान शिष्यों में से एक। भक्तमाल के रचयिता नाभादास इनके प्रधान शिष्य थे और इन्हीं की आज्ञा से उन्होंने भक्तमाल की रचना भी की थी। 'अग्रदास आज्ञा दई, भक्तन को यश गाइ। भवसागर के तरन को, नाहिन और उपाइ।' अग्रदास जी रामानन्द की परम्परा में चौथी पीढ़ी में पड़ते हैं :—रामानन्द, अंजनानन्द, कृष्णदास पयहारी, अग्रदास, नाभादास। कहीं-कहीं अंजनानन्द के स्थान पर अनंतानन्द मिलता है।

अघासुर—एक राक्षस। कंस ने योगमाया के द्वारा अपना वध करनेवाले के जन्म का समाचार सुन कर अपनी राजसभा में जिन दुष्टों तथा दानवों को एकत्र किया था यह भी उनमें से एक था। कहा जाता है यह बकासुर तथा पूतना का छोटा भाई था। कंस ने इसे कृष्ण का वध करने के लिए गोकुल भेजा था। जब वह यहाँ पहुँचा तो कृष्ण गोप-बालकों के साथ वन-भोजन का आयोजन कर रहे थे। कृष्ण को देखकर वह सोचने लगा कि जिस प्रकार इसने मेरे भाई तथा बहन को उदरस्थ कर लिया है, मैं भी इसे उदरस्थ कर जाऊँ तो अच्छा हो? पूर्ण निश्चय कर यह एक योजन का विस्तार कर अजगर बनकर मार्ग में पड़ा रहा। उस समय उसका निम्न अधर पृथ्वी में था और ऊर्ध्व आकाश में। गोप-बालक इसे देखकर भिन्न-भिन्न कल्पनाएँ करने लगे। किसी ने कहा आकाश में घने काले बादल छाये हुए हैं और पृथ्वी पर भी उनकी गम्भीर छाया पड़ रही है। अजगर की श्वास उन्हें किसी गुहा से प्रवाहित होने वाली कर्कश वायु सी प्रतीत हो रही थी। एक-आध यह भी कह रहे थे कि यह बड़ा अजगर है जो हम सब को ग्रसने के लिए आया है। फिर भी सभी उसके मुख में प्रविष्ट हो गये। कृष्ण भी सबके साथ उसके मुख के भीतर पहुँच गये। किन्तु यहाँ उन्हें अपनी तथा अपने साथियों की चिन्ता हुई और उन्होंने अपनी ईश्वरता को जागृत किया। उसके मुख में वह सीधे खड़े हो गये, जिसमें उसका श्वास रुद्ध हो गया और ब्रह्मरंध्र फट गया। उसके शरीर से एक ज्योति निकलकर आकाश में स्थिर हो गई। कृष्ण ने अपने सखा गोप-बालकों को अमृत के सहारे फिर जीवित किया। यह स्थिर ज्योति फिर उनके शरीर में आकर लीन हो गई। इस प्रकार अघासुर का अन्त हुआ।

अच्युत—एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। इन्होंने चारों धामों में हरि-भक्ति का प्रचार किया था।

अच्युतकुल—एक वैष्णव भक्त तथा नाभादास के यजमान।

अज—एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा, जो दशरथ के पिता तथा राम के पितामह थे। कुछ ग्रथों में इन्हें दिलीप का पुत्र कहा गया है और कुछ में रघु का। अज की महिषी विदर्भराज-कन्या थीं, जिन्हें ये स्वयंवर से ले आये थे। रघुवंश क अनुसार स्वयंवर-यात्रा के समय एक पागल हाथी ने मार्ग में इन्हें बड़ा कष्ट दिया जिससे क्रुद्ध होकर इन्होंने उसे मारने की आज्ञा दे दी। मरते समय उसके शरीर से एक दिव्य गन्धर्व निकला जिसने इन्हें स्वयंवर जीतने के लिए दिव्य अस्त्र से सुसज्जित किया।

अजामिल—कन्नौज निवासी एक ब्राह्मण, जिन्होंने आजीवन न तो कभी कोई पुण्यकार्य किया और न ईश्वराराधन। इनके पुत्र का नाम नारायण था। कहते हैं कि मृत्यु के समय इन्होंने अपने पुत्र का नाम लेकर बुलाया जो कि भगवान के नाम का पर्याय था और इसी से इनकी सद्गति हो गई। भक्तों ने भगवान् के नाम-माहात्म्य के सिलसिले में अजामिल का प्रायः सर्वत्र उल्लेख किया है।

अटल–होशंगाबाद के एक प्रसिद्ध मध्यकालीन वैष्णव भक्त जिन्होंने अपना घर भक्तों को समर्पित कर दिया था।

अतिकाय–रावण के पुत्रों में से एक। अत्यंत स्थूल होने के कारण इनका नाम 'अतिकाय' पड़ गया था। इन्होंने घोर तपस्या करके ब्रह्माजी से दिव्य रथ तथा सुरों और असुरों द्वारा अबध्य होने का वर प्राप्त कर लिया था। इनका वध लक्ष्मण जी के द्वारा हुआ था, जो न देवता थे और न असुर।

अत्रि–अनेक वैदिक ऋचाओं के कर्त्ता एक ऋषि। प्राय: अग्नि, इन्द्र और विश्वदेव सम्बन्धी स्तुतियों में इनका नाम मिलता है। पौराणिक काल तक आते-आते इनकी गणना दस प्रजापतियों में होने लगी और ये ब्रह्मा के मानस पुत्र माने जाने लगे। दक्ष की पुत्री अनुसूया इनकी पत्नी थीं जिन्होंने पति के साथ पुत्र की कामना से त्रिदेवों की बड़ी आराधना की थी। उनके वरदान के फलस्वरूप विष्णु के अंश से दत्त नामक पुत्र प्राप्त हुआ जो अपने ज्ञान के कारण 'दत्तात्रेय' नाम से अवतार पद को प्राप्त हुआ। इसी प्रकार ब्रह्मा के अंश से चन्द्रमा और रुद्र के अंश से दुर्वासा की उत्पत्ति हुई। रामायण के अनुसार इनका आश्रम चित्रकूट के दक्षिण स्थित था जहाँ राम और सीता ने वनवास के समय इनका दर्शन किया था।

अथर्वन–एक प्राचीन पुरोहित का नाम जो अथर्ववेद के रचयिता माने जाते हैं। ऋग्वेद में इनका उल्लेख हुआ है। इन्होंने ही यज्ञ करने की प्रथा चलाई थी। ब्रह्म विद्या की शिक्षा इन्हें ब्रह्माजी से मिली थी जो इनके पिता माने जाते हैं। इनकी गणना प्रजापतियों में भी होती है और आगे चलकर इन्हें अंगिरा से अभिन्न माना जाने लगा।

अथर्ववेद–चतुर्थ वेद का नाम। इसकी रचना अपेक्षाकृत बाद में हुई जैसा कि इसके अंतर्साक्ष्य से प्रकट है। प्रो० ह्विटनी तथा कुछ अन्य विद्वानों के अनुसार ऋग्वेद के दसवें मण्डल तथा अथर्ववेद का रचनाकाल प्राय: एक ही है। मुख्य वेद तीन ही हैं। ऐसा अनुमान करने के कारण भी हैं कि इसकी रचना सैंधवों द्वारा सिन्धु नदी के तट पर हुई। सम्पूर्ण अथर्ववेद का $\frac{1}{6}$ भाग छन्दोबद्ध नहीं है और दूसरा $\frac{1}{6}$ भाग ऋग्वेद में—मुख्यत:—इसके दसवें मण्डल में—प्राय: ज्यों का त्यों मिल जाता हैं। शेष अंश मौलिक है। अथर्ववेद में कुल ७६० मन्त्र, ६००० छन्द तथा ९ भाग हैं जिनमें पाँच कला और अनुष्ठान विधान का ही अधिक वर्णन है। इस समय इसकी केवल एक शाखा (शौनक) मिलती है जिसके ब्राह्मण का नाम गोपथ है। अन्य वेदों से अथर्ववेद का मुख्य भेद यह है कि इसके उपास्य देवों में भय का भाव अत्यन्त प्रबल है। उपासक राक्षसी तथा अन्य देवों से बहुत डरा हुआ सा ज्ञात होता है। अन्य वेदों में उपास्य देवों के प्रति प्रेम और आस्था के भाव भी मिलते हैं।

अदिति–देवताओं की माता और दक्षप्रजापति की कन्या। कहीं-कहीं इनका वर्णन दक्ष की माता के रूप में भी किया गया है। देवमाता होने की परम्परा बहुत प्राचीन ज्ञात होती है, क्योंकि ऋग्वेद में भी इनके लिए 'देवमातृ' विशेषण प्रयुक्त किया गया है। यही परम्परा पुराणों में भी मान्य रही जहाँ इनके गर्भ से देवताओं की उत्पत्ति दिखलाई गई है और इनकी दूसरी बहिन दिति के गर्भ से राक्षसों की। द्वादश आदित्यों का जन्म भी इन्हीं से हुआ जो इस शब्द की व्युत्पत्ति से स्पष्ट है। दे० 'आदित्य'। विष्णु पुराण के अनुसार ये कश्यप की स्त्री थीं जिनसे विष्णु का वामनावतार हुआ था। पूर्वकाल में कश्यप अदिति की तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान ने उनसे वर माँगने के लिए कहा था। उन्होंने स्वयं विष्णु को ही पुत्र रूप में प्राप्त करने की कामना प्रकट की जिसे भगवान विष्णु ने केवल एक ही बार नहीं बल्कि तीन बार पूरा किया। रामावतार की कौशल्या और कृष्णावतार की यशोदा भी अदिति की ही प्रतिमूर्ति थीं। नरकासुर को मारने पर श्रीकृष्ण को जो दो कुण्डल प्राप्त हुए थे, उन्हें कृष्ण ने अदिति को ही लौटा दिया था। पारिजात पुष्प के लिए इन्द्र और कृष्ण में जो झगड़ा हुआ था उसका फैसला अदिति ने ही किया था।

अद्विषेण–दे० 'आर्ष्टिषेण'।

अधर्म—धर्मविरोधी एक राक्षस का नाम, जिसकी उत्पत्ति भागवत के अनुसार ब्रह्मदेव के पृष्ठ भाग से हुई। इसकी स्त्री का नाम मृषा था जिससे माया तथा दंभ नामक दो मिथुन संतान हुए। उक्त मिथुन से क्रमश: क्रोध-हिंसा, कलि-दुरुक्ति, मृत्यु-भीति, निरययातना आदि की उत्पत्ति हुई जिनसे भय, नरक, माया, वेदना, व्याधि, जरा, शोक, तृष्णा, क्रोध, मृत्यु आदि की उत्पत्ति हुई। अन्त में इन्द्र ने दधीचि की हड्डी से बने वज्र से इसका वध किया। सम्पूर्ण आख्यान अधर्म तथा तज्जनित अत्याचारों का रूपक मात्र है।

अधिरथ–सत्कर्म का पुत्र धृतराष्ट्र का सारथी तथा महाभारतकालीन प्रसिद्ध वीर कर्ण का पोषक पिता। कुंती द्वारा सूर्य के आह्वान से कर्ण के जन्म ग्रहण करते ही कुंती ने कर्ण को एक पेटी में रखकर गंगा में डाल दिया था। पेटी संयोगवश अधिरथ के पास से बहती हुई निकली जो गंगा में जल-क्रीड़ा कर रहा था। निस्संतान अधिरथ तथा उसकी पत्नी राधा को पेटी खोलने पर एक सद्य:जात शिशु मिला जिसे उन्होंने स्नेहपूर्वक पाल पोसकर बड़ा किया। यही बड़ा होने पर कर्ण के नाम से विख्यात हुआ।

अनंग–शाब्दिक अर्थ,, अंग-रहित। कामदेव का एक नाम है। कामदेव के अनंग नामकरण की कथा इस प्रकार है : एक बार तारक असुर के अत्याचारों से देवता बहुत भयभीत हो गये थे। देवराज इन्द्र भी उसके सम्मुख जाने का साहस नहीं कर पाते थे। अन्त में ब्रह्मादि देवगणों ने विचार करके यह निश्चित किया कि शंकर का होनेवाला पुत्र कार्तिकेय ही देवसेना का नायक होकर तारक का संहार कर सकता है। किन्तु महादेव जी उस समय सती की मृत्यु हो जाने के कारण हिमालय पर घोर तपस्या में लीन बैठे थे। उनकी यह तपस्या बिना भंग हुए कार्तिकेय की उत्पत्ति किसी भी प्रकार संभव न थी। इसलिए देवताओं

ने कामदेव से उनकी तपस्या भंग करने के लिए कहा। कामदेव को लोक-कल्याण के लिए उनकी आज्ञा का पालन करना पड़ा। उन्होंने हिमालय पर पहुँचकर देवदार की छाया में बैठे हुए तपस्या में लीन महादेव जी पर अपना पुष्पवाण धावित किया। महादेव जी की तपस्या तो उससे भंग हो गई किन्तु उनका तृतीय नेत्र खुल जाने के कारण कामदेव भस्म हो गये। देवता होने के कारण जलने पर भी जीवित रहे किन्तु अनंग होकर। दे० 'कामदेव'।

अनंत–१. शेषनाग का एक पर्याय। अष्टकुली महासर्पों में से एक जो नागों के राजा तथा पाताल के अधिपति थे। इनके शरीर को शय्या बनाकर भगवान् विष्णु प्रत्येक महाप्रलय के अन्त में शयन करते हैं। इसी से उन्हें अनंतशयन कहा जाता है। इनके फणों की संख्या एक सहस्र कही जाती है, जिन पर स्वर्ग-नर्क तथा सप्त पातालों सहित सारा ब्रह्माण्ड टिका हुआ है। दशरथ के पुत्र लक्ष्मण तथा नन्द के पुत्र बलराम इनके अवतार माने जाते हैं। बहुत से विद्वान् पौराणिक कथाओं के आधार पर अनन्त शेष को अनन्त काल का प्रतीक मानते हैं। कहीं-कहीं वासुकि और शेष दो भिन्न नाम माने गये हैं। कश्यप इनके पिता और कद्रू इनकी माता थीं। इनकी स्त्री का नाम अनंतशीर्षा था। "अनन्त चतुर्दशी" नामक त्यौहार इन्हीं के उपलक्ष्य में मनाया जाता है, जो भादों महीने के शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को पड़ता है। वासुकि, गोनस आदि इनके अन्य बहुत से पर्याय हैं। दे० 'वासुकि' तथा 'शेष'। २. हिन्दी के एक कवि का नाम (जन्म १६३५ ई०) जिन्होंने "अनंतानंद" नामक एक प्रेम काव्य की रचना की है।

अनंतानंद–१. स्वामी रामानन्द की शिष्य परम्परा के एक प्रमुख वैष्णव आचार्य तथा प्रसिद्ध रामभक्त। भक्तमाल के अनुसार ये ब्रह्मा के अवतार थे। इनका जन्म कार्तिकी पूर्णिमा, शनिवार को हुआ था। नाभादासजी के अनुसार अनंतानंदजी के निम्नलिखित शिष्य लोकपालों के समान प्रतापी हुए—योगानंद, गणेश, करमचंद, अल्ह पैहारी, रामदास तथा श्रीरंग जी। बाबा रघुबरदास के 'गुरु परंपरा' नामक एक अप्रकाशित ग्रंथ में अनंतानंद को रामानंद का शिष्य और कृष्णदास पैहारी को अनंतानंद का शिष्य बताया गया है। २. एक अन्य प्रसिद्ध वैष्णवभक्त तथा कथावाचक।

अनरण्य–एक प्राचीन राजा का नाम। ये मत्स्य, ब्रह्मांड, वायु तथा लिंग पुराण के अनुसार राजा संभूत के पुत्र तथा भागवत के अनुसार त्रसदस्य के पुत्र थे। वाल्मीकि रामायण के अनुसार ये अयोध्या के इक्ष्वाकुवंशी राजा थे। रावण की अधीनता अस्वीकार करने पर उससे इनका घोर युद्ध हुआ जिसमें इन्हें पराजित होना पड़ा। इन्होंने मरते समय रावण को यह शाप दिया कि इनके ही कुल में समुत्पन्न दाशरथि राम द्वारा कालांतर में उसका वध होगा।

अनिरुद्ध–शाब्दिक अर्थ जो रुद्ध न हो, अबाध। प्रद्युम्न के पुत्र तथा श्रीकृष्ण के पौत्र। इनका ब्याह इनकी चचेरी बहन सुभद्रा से हुआ था; किन्तु अधिकतर इनका नाम ऊषा के साथ लिया जाता है। ऊषा शोणितपुर के दैत्य राजा वाण की पुत्री थी। पार्वती के वरदान के फलस्वरूप उसने एक दिन स्वप्न में अनिरुद्ध को देखा और उस पर मोहित हो गई। उसकी सखी चित्रलेखा को जब यह ज्ञात हुआ तो वह पथ में मिले हुए नारद के मतानुसार तामसी विद्या के प्रभाव से अनिरुद्ध को ऊषा के राजभवन में ले आई। ऊषा और अनिरुद्ध का गंधर्व-विवाह हो गया। जब बाण को यह सब ज्ञात हुआ तो उसने अपने योद्धाओं को अनिरुद्ध को पकड़ने के लिए भेजा, अनिरुद्ध ने सभी को अपनी गदा के आघातों से धराशायी कर दिया। वाण ने आकर तब अनिरुद्ध को माया युद्ध में पराजित किया और उसे बंदी बना लिया। अनिरुद्ध के इस प्रकार द्वारिका से ले जाये जाने तथा बंदी किये जाने का समाचार जब श्रीकृष्ण, बलराम तथा प्रद्युम्न को ज्ञात हुआ, तो वे शोणितपुर आये और उन्होंने वाण के साथ युद्ध प्रारम्भ किया। इस युद्ध में शिव तथा युद्ध के देवता स्कंद ने भी वाण की सहायता की थी, किन्तु अंत में वाण को पराजित होना पड़ा। अनिरुद्ध मुक्त होकर ऊषा को लेकर सबके साथ द्वारिका वापस आये। इनके पुत्र का नाम बज्र कहा जाता है। दे० 'ऊषा' तथा 'चित्रलेखा'।

अनिल–१. अष्ट वसुओं में से एक विष्णुपुराण के अनुसार शिवा इनकी पत्नी तथा मनोलव, अविज्ञात गति इनके दो पुत्र थे। २. ४६ पवन में से एक। दे० 'वायु'।

अनु–राजा ययाति तथा शर्मिष्ठा के पुत्र। पिता को अपना यौवन देना अस्वीकार करने के कारण इनको पिता द्वारा शाप मिला कि इनकी संतान राज्य की उत्तराधिकारिणी न बन सकेगी। किंतु इस शाप का कोई प्रभाव नहीं पड़ा क्योंकि अंग, बंग, कलिंग आदि इन्हीं के पुत्र थे जिनके नाम पर अब तक उक्त तीनों प्रदेशों के नाम हैं।

अनुक्रमणी–वेदों की सूची का नाम, जिसमें संहिताओं के क्रम से प्रत्येक मंत्र के छंद, देवता तथा ऋषि (रचयिता) का निर्देश है।

अनुविंद–महाभारतकालीन अवंती के राजा जिनकी मृत्यु उक्त युद्ध में अर्जुन के हाथों हुई थी।

अनुसूया–१. दक्ष की चौबीस कन्याओं में से एक तथा अत्रि ऋषि की पतिव्रता पत्नी। मतांतर से महर्षि कर्दम तथा देवहूति की एक कन्या का नाम भी यही है। इनके पातिव्रत की अनेक कहानियाँ मिलती हैं। मानस में वनवास के प्रसंग में अनसूया द्वारा सीता को पातिव्रत का बड़ा शिक्षापूर्ण उपदेश दिलवाया गया है। २. कालिदास के अभिज्ञान शाकुंतल में शकुंतला की दो अंतरङ्ग सखियों में से एक जिसे महर्षि कण्व ने पाला था।

अनूरु–यह अरुण का दूसरा नाम एवं जंघाविहीन का पर्यायवाची है। इनका वर्णन ऊषाकालीन सूर्य की भाँति लाल है। दे० 'अरुण'।

अपया–एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त जिन्होंने चारों धामों में हरिभक्ति का प्रचार किया और जीवनपर्यन्त संतसेवा का व्रत निबाहा।

अपष्टोम–दे० 'औपलोम'।

अपाला–अत्रि मुनि की कन्या जिन्हें कुष्ट रोग हो गया था। इस रोग से मुक्ति पाने के लिए इन्होंने तपस्या करके इन्द्र से सोम प्राप्त किया था। ये ब्रह्मज्ञानी थीं। ऋग्वेद में इनका एक सूक्त भी है।

अपर्णा–हिमालय की ज्येष्ठ कन्या तथा शिव की अर्द्धांगिनी। शिव को वररूप में पाने के लिए इन्होंने इतना कठिन तप किया कि पेड़ की पत्तियों तक का आहार भी छोड़ दिया। इसी से इनका नाम 'अपर्णा' (बिना पत्तों के…) पड़ा था। इनके उग्र तप को देखकर इनकी माता ने निवारणार्थ 'ऊ-मा' (ओ-मत) कहा था जिससे इनका एक नाम 'उमा' भी पड़ गया। इनकी तपस्या से प्रसन्न होकर शिवजी ने इन्हें अपनी अर्द्धांगिनी के रूप में स्वीकृत किया।

अभयराम–एक प्रसिद्ध वैष्णवभक्त राजा।

अभिजित–राजा नल के पुत्र। दे० 'नल'।

अभिनंद–पर्जन्य सुत नव नन्दों में से चतुर्थ। ये प्रसिद्ध गोपाल तथा हरिभक्त भी थे। दे० 'पर्जन्य'।

अभिमन्यु–अर्जुन एवं सुभद्रा के पुत्र तथा कृष्ण के भानजे महाभारत युद्ध के समय इनकी अवस्था केवल सोलह वर्ष की थी। युद्ध में एक दिन अर्जुन को षड्यन्त्र द्वारा स्थानांतरित करके द्रोणाचार्य ने चक्रव्यूह-प्रणाली से युद्ध करना प्रारम्भ किया, जिसे अर्जुन के अतिरिक्त और कोई नहीं जानता था। भीम आदि सभी महारथियों के छक्के छूट जाने पर इस षोडशवर्षीय राजकुमार ने स्वयं युद्ध प्रारम्भ किया और कौरवपक्ष के योद्धाओं का वध करता हुआ व्यूह को तोड़कर उसके सबसे भीतरी भाग तक घुसता चला गया, किन्तु लौटते समय अकेला कई शत्रुओं के द्वारा घिर गया जहाँ सात महारथियों ने मिलकर इसका वध कर डाला। चक्रव्यूह के भीतर से बाहर न निकल पाने का कारण यह था कि जब अभिमन्यु सुभद्रा के गर्भ में था तभी एक बार अर्जुन ने उनको चक्रव्यूह तोड़ने की कहानी सुनाई थी। किन्तु सुभद्रा के सो जाने के कारण व्यूह से बाहर निकलने की विधि नहीं सुनाई गई और इस प्रकार तब यह कहानी अधूरी ही रह गई थी। अस्तु, अभिमन्यु को संस्कार रूप में केवल तोड़ने की ही विधि ज्ञात थी। विराट की पुत्री उत्तरा इनकी पत्नी थीं जो वीरगति के समय गर्भवती थीं। इनके पुत्र परीक्षित ही बाद में सम्राट् हुए।

अमित्राजित्–स्कंदपुराण के अनुसार सुतप्त राजा के पुत्र का नाम। भविष्य पुराण के अनुसार ये सुवर्णयाग के पुत्र थे। इनके राज्य में शिवमन्दिर सर्वत्र वर्तमान थे।

अमूर्त–नाभादासजी के अनुसार एक प्रसिद्ध हरिभक्त ब्राह्मण। ये शैशव-काल से ही बड़े त्यागी तथा भाग्यवान् थे।

अमूर्तरयस्–दे० 'आधूर्तरजस्'।

अमोघा–शंतनु मुनि की पत्नी। एक बार ब्रह्मदेव शंतनु मुनि के यहाँ पधारे। उनकी अनुपस्थिति में अमोघा ने ही इनका आतिथ्य-सत्कार किया। इनके सुन्दर रूप को देखकर ब्रह्मदेव का वीर्यपात हो गया जिससे लोहित नामक तेजस्वी पुत्र की उत्पत्ति हुई।

अयोध्या–कोसल जनपद के सूर्यवंशी राजाओं की राजधानी।

अरिंदम–शाब्दिक अर्थ-शत्रुनाशक। गोपियों ने रास-लीला के पूर्व कृष्ण को इसी संज्ञा से संबोधित किया है। कृष्ण उस समय तक अपना अन्त करने के लिए भेजे गये कितने ही दानव तथा दानवियों का संहार कर चुके थे; सम्भवतः इसी कारण गोपियों ने उन्हें इस नाम से पुकारा था।

अरिष्ट–१. एक राक्षस, बलि का पुत्र। कन्स ने इसे भी कृष्ण का वध करने के लिए वृन्दावन भेजा था। इसकी आकृति वृष की-सी थी; इस कारण यह ब्रज में जाकर वहाँ के पशुओं में मिल गया था। किन्तु इसे अपने बीच देखकर ब्रज के पशु तथा गोप-गोपी सभी भयभीत हो गये थे। कृष्ण ने यह देखकर इसका वध कर डाला था। २. योगवाशिष्ठ के अनुसार एक राजा का नाम जो महर्षि बाल्मीकि के समसामयिक थे और राज्य त्याग कर गंधमादन पर्वत पर तप करते थे।

अरुंधती–१. कर्दम मुनि की कन्या तथा वशिष्ठ की पत्नी। महाभारत में एक कथा आती है कि अत्यन्त निष्ठावान् वशिष्ठ के प्रति भी अरुंधती के मन में सदैव उनके दुश्चरित्र होने की आशंका बनी रहती थी। उसी पाप से उनकी प्रभा धूमारुण की भाँति मलीन पड़ गई और वे कभी दृश्य तथा कभी अदृश्य रहने लगीं। २. एक नक्षत्र। आकाश मण्डल में सप्तर्षिमण्डल में वशिष्ठ के निकट ही अरुंधती की स्थिति है। कहा जाता है कि मृत्यु निकट आने पर लोगों को यह नक्षत्र दिखाई नहीं पड़ता। विवाह में सप्तपदी परिक्रमा के बाद वरवधू को अरुंधती नक्षत्र का दर्शन कराया जाता है। अरुंधती नक्षत्र के ही आधार पर 'अरुंधती दर्शन न्याय' की भी कल्पना की गई है। ३. दक्ष प्रजापति की कन्या तथा धर्म की पत्नी।

अरुण–प्रातःकाल के देवता, सूर्य के सारथी तथा कश्यप इन्द्र के पुत्र। इन्हें अनूरु भी कहते हैं।

अर्जुन–१. पांडु के तृतीय क्षेत्रज पुत्र। प्रथम दो क्रमशः युधिष्ठिर और भीम थे। इनकी माता का नाम कुन्ती था, जो पंच कन्याओं में से एक थीं। उसने दुर्वासा द्वारा विरचित मन्त्र से इन्द्र का आह्वान किया था और उन्हीं के सहवास से अर्जुन की उत्पत्ति हुई थी। अतः अर्जुन इन्द्र के ही औरस पुत्र हुए। दे० 'कुन्ती'। धनुर्वेद-पारंगत गुरु-द्रोण के ये प्रधान और सर्वप्रिय शिष्य थे। वाण-विद्या के क्षेत्र में महारथी कर्ण इनके एकमात्र प्रतिद्वन्दी थे। दे० 'द्रोण', 'कर्ण'। इसी कला के बल से इन्होंने स्वयंवर में मत्स्य वेध कर द्रौपदी से विवाह किया, जो नियति के विधान में पड़कर पाँचों पांडवों की वधू बनी। परन्तु अर्जुन से उसका विशेष प्रेम होना स्वाभाविक था। दे० 'द्रोपदी'। अपने बारह वर्ष के गुप्तवास में अर्जुन ने परशुराम से भी अस्त्र-शिक्षा प्राप्त की। इसी बीच उलूपी नामक एक नागकन्या से उनका

प्रेम हो गया जिससे इरावत नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ। मणिपुर के राजा चित्रभानु की पुत्री चित्रांगदा से भी उन्होंने विवाह किया था, जिससे बभ्रुवाहन की उत्पत्ति हुई जो चित्रभानु के निस्संतान दिवंगत होने पर उनका उत्तराधिकारी बना। अर्जुन का विवाह श्री कृष्ण की भगिनी सुभद्रा से भी हुआ था, जिसका होनहार पुत्र अभिमन्यु चक्रव्यूह के युद्ध में अकेला सप्तमहारथियों द्वारा निर्दयता से मारा गया था। द्रौपदी के गर्भ से जो पुत्र पैदा हुआ था, वह अश्वत्थामा के द्वारा महाभारत के युद्ध में अंतिम दिन वीरगति को प्राप्त हुआ। अर्जुन के पराक्रम से प्रसन्न होकर कई देवताओं ने उन्हें द्विव्य शस्त्र प्रदान किए थे। युधिष्ठिर द्वारा जुए में साम्राज्य गँवा देने पर अर्जुन तपस्या करने हिमालय पर चले गए जहाँ उनसे किरात रूपधारी शिव से युद्ध करना पड़ा। किंतु जब इनको उनके असली स्वरूप का ज्ञान हुआ तो इन्होंने शिवजी का अभिनन्दन किया जिससे प्रसन्न होकर शिवजी ने इन्हें पाशुपत अस्त्र प्रदान किया। इसी प्रकार देवाधिदेव इन्द्र से भी इन्हें कई युद्धास्त्र प्राप्त हुए थे। कृष्ण की सहायता से खाण्डव वन जलाकर अजीर्ण रोगग्रस्त अग्निदेव को भी इन्होंने प्रसन्न किया था। उनकी कृपा से आग्नेयास्त्र और गाण्डीव की प्राप्ति हुई थी, जिसकी टंकार के श्रवणमात्र से शत्रुओं के छक्के छूट जाते थे। अमरावती में इन्द्र के साथ विहार करते समय उर्वशी इन पर मोहित हो गई थी किन्तु उसकी कामवासना संतुष्ट करने में असमर्थता प्रकट करने के कारण उसने इनको नपुंसक होने तथा स्त्रियों के बीच नृत्य करने का श्राप दे दिया था। फलस्वरूप अज्ञातवास के समय 'बृहन्नला' नाम से इन्हें विराट राजकुमारी उत्तरा को नृत्य की शिक्षा भी देनी पड़ी थी। अन्त में कौरवों के विरुद्ध कुरुक्षेत्र में पाण्डवों का घोर संग्राम हुआ जिसमें स्वयं कृष्ण अर्जुन के सारथी बने। युद्ध के आरम्भ में अर्जुन द्वारा मोह प्रकट करने पर कृष्ण ने उन्हें सुप्रसिद्ध भगवद्गीता का उपदेश दिया। युद्ध में इन्होंने शत्रु पक्ष के सहस्रों योद्धाओं का वध किया जिनमें भीष्म, सुशर्मन्, जयद्रथ, कर्ण तथा अश्वत्थामा जैसे महावीर भी थे। युद्ध के पश्चात् युधिष्ठिर ने विराट अश्वमेध किया जिसके उपलक्ष्य में अर्जुन ने दिग्विजय यात्रा करके अनेक राष्ट्रों को पराजित किया। अन्त में कृष्ण द्वारा आमंत्रित किये जाने पर वे द्वारका गये। यादवों का नाश होने पर वहाँ से उन्होंने हिमालय की ओर प्रस्थान किया और वहीं उनका स्वर्गवास हुआ। गुडाकेश, धनंजय, विष्णु, किरीटिन्, पाकशासनि, फाल्गुन, सव्यशाचिन् पार्थ, बीमत्सु, तथा श्वेतवाहन आदि उनके अनेक पर्याय हैं। २. हैहय राजा कृतवीर्य के पुत्र जो कार्तवीर्य नाम से प्रसिद्ध हैं। ३. कृष्ण के मित्र एक गोप। ४. एक मध्यकालीन प्रसिद्ध वैष्णव भक्त।

अर्द्धनारीनटेश्वर—शिव का रूप विशेष। प्रजोत्पत्ति की इच्छा से ब्रह्मा द्वारा घोर तप किये जाने पर शिव ने अपना यह रूप उत्पन्न किया जिसके वामांग में पार्वती के रूप में नारी का शरीर और दक्षिणांग में स्वयं शिव के रूप में पुरुष का शरीर था।

अर्बुद—१. एक असुर जिसकी मृत्यु उसके शत्रु इन्द्र के वज्र से हुई थी। २. आबू पर्वत अथवा उसके समीपस्थ के निवासियों की संज्ञा।

अर्यमन—१. एक वैदिक देवता जो विश्वदेवों में से एक हैं। २. कश्यप तथा अदिति के पुत्र पितृगण में प्रमुख हैं। ३. द्वादश आदित्यों में से एक जो वैशाख मास में उदय होते हैं और जिनकी किरणों की संख्या ३०० मानी जाती है।

अर्यमा—१. जंबू द्वीप के हिरण्यखण्ड के पुजारी। इस खण्ड के अधिष्ठातृ देव सूर्य भगवान हैं। २. पित्रों में प्रमुख। ३. बारह आदित्यों में से एक। ४. विश्वदेवों में से एक।

अलंबुष—महाभारतकालीन एक राक्षस जो कौरवों के पक्ष में लड़ता हुआ सात्यकी द्वारा पराजित हुआ और भीम के पुत्र घटोत्कच द्वारा मारा गया।

अलंबुषा—एक देवांगना जो सुन्दरता तथा नृत्यकला में अद्वितीय थी। एक बार ब्रह्मा के स्थान पर नृत्य करते हुए वायु के झोंके से उसका वस्त्र उड़ जाने के कारण उसके गुह्यांग अनावृत हो उठे जिन्हें देखकर विधूम नामक एक गन्धर्व कामपीड़ित हो उठा। ब्रह्मा तथा इन्द्र आदि सम्मान्य देवताओं की उपस्थिति में ही दोनों एक दूसरे पर मुग्ध होकर कामचेष्टा करने लगे। इस व्यवहार से क्रुद्ध होकर ब्रह्मा ने (मतान्तर से इन्द्र ने) उन्हें मनुष्य-योनि में जन्म पाने का शाप दिया। फलतः अलंबुषा राजा कृतवर्मा के वंश में मृगावती नाम से और विधूम पांडवों के वंश में सहस्रानीक के नाम से उत्पन्न हुए। दोनों का परस्पर विवाह भी हुआ और कथा है कि मृगावती की गर्भावस्था में नररक्त से स्नान करने का दोहद हुआ और ऐसा करते समय कोई पक्षी इसे मांसपिंड समझकर उड़ा ले गया किन्तु वहाँ किसी दिव्य पुरुष ने इसकी रक्षा की और इसे मुक्त कर उदयगिरि पर जमदग्नि के आश्रम में रखा। वहाँ उसे उदयन नामक एक महातेजस्वी पुत्र उत्पन्न हुआ। एक दिन संयोगवश मृगया खेलते समय बालक उदयन ने एक मदारी को साँप पकड़ते देख दयार्द्र होकर उसे मुक्त कराने के बदले अपनी माता का कङ्कण उतारकर दे डाला जिसे लेकर मदारी घूमता हुआ सहस्रानीक के राज्य में पहुँचा और बेंचते समय पकड़ा गया। अपनी प्रिय रानी का पता मिलते ही सहस्रानीक सदलबल उदयनगिरि पहुँचा जहाँ १४ वर्ष के लम्बे वियोग के पश्चात् मृगावती से उसका पुनर्मिलन हुआ। कथा के अनुसार यह वियोग तिलोत्तमा के शाप के कारण हुआ था। कालान्तर में उदयन को राज्यभार सौंपकर सहस्रानीक ने सपत्नीक वाणप्रस्थाश्रम में प्रवेश किया और वहाँ चक्रतीर्थ में स्नान कर दोनों ने शापमुक्त होकर अपनी-अपनी पूर्व योनि को प्राप्त किया।

अलंवल—एक राक्षस जिसके पिता जटासुर का वध पांडवों द्वारा हुआ था। जन्म से ही पांडवद्रोही होने के कारण महाभारत युद्ध में इसने कौरवों का पक्ष लिया और घटोत्कच द्वारा मारा गया।

अलकनंदा–गंगा की एक प्रधान शाखा जिसे शिव ने अपने जटा-पाश में १०० वर्ष तक उलझा रखा था। इसे भगीरथ ने सगर के पुत्रों का उद्धार करने के लिये मर्त्यलोक में अवतरित किया। दे० 'गंगा'।

अलका–मेरु पर्वत पर कुवेर की राजधानी। कालिदास ने मेघदूत में इसकी स्थिति हिमालय बतलाई है। अलका ही गंधर्वों का स्थान है।

अलक्ष्मी–लक्ष्मी की ज्येष्ठा भगिनी। लिंग पुराण के अनुसार समुद्रमंथन के समय रत्न के रूप में इसकी उत्पत्ति लक्ष्मी के पूर्व हुई थी। इसी से इसे ज्येष्ठा कहा जाता है।

अलर्क–सती मदालसा के धर्मपरायण पुत्र जिन्हें उनकी माता ने बचपन में ही धर्म के उपदेश दे देकर उनकी बाल-भावना को उसी ओर प्रवृत्त कर दिया था। पुराणों में एक शव का भक्षण करते हुए दो पिशाचों का वर्णन है जिनका झगड़ा न टूटते देखकर अलर्क ने उनमें से एक को स्वयं अपना ही शरीर समर्पित कर दिया। इससे प्रसन्न होकर विष्णु और शिव ने इन्हें अपने सच्चे स्वरूप का दर्शन दिया जिसे इनकी परीक्षा लेने के लिये पिशाचों के स्वरूप में परिवर्तित कर रखा था और इन्हें वरदान दिया कि जो जिस इच्छा से उनके पास आवेगा उसकी वही इच्छा पूरी होगी। दे० 'ऋतध्वज' तथा 'मदालसा'।

अलायुध–महाभारत-कालीन एक राक्षस जिसके कुटुंब के बहुत से व्यक्तियों को भीम ने मारा था। युद्ध में इसकी मृत्यु भीम के पुत्र घटोत्कच द्वारा हुई।

अलिभगवान–एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त एवं प्रचारक जो 'रासविहारी' के नाम से श्रीकृष्ण की उपासना किया करते थे।

अल्ह–स्वामी रामानंद की गुरु परंपरा में विख्यात वैष्णव आचार्य जो स्वामी अनन्तानंद के सात पट्ट शिष्यों में से एक थे। नाभादास जी ने इनके संबंध में लिखा है :– 'अनंतानंद पद परसि के लोकपाल से तूँ भए।' दे० 'अनंतानंद'। इनके संबंध में ऐसी अनुश्रुति है कि इनके लिए आम की डालें स्वयं झुक आई थीं। दे० 'जसूस्वामी'।

अवधूतेश्वर–शिवजी का एक रूप विशेष। शिवपुराण के अनुसार एक बार इंद्र और वृहस्पति शिव का दर्शन करने चले। परीक्षा लेने की दृष्टि से शिव ने विकराल रूप धारण कर इनका रास्ता रोक दिया। इंद्र ने धर्मच्युत हो अपना वज्र चलाया जिसे शिव ने रोक लिया और उससे अग्नि की ज्वाला निकलने लगी। अंत में वृहस्पति की प्रार्थना से अग्नि शांत हुई।

अविर्होता–नाभादास जी के अनुसार नव योगीश्वरों में से एक प्रमुख वैष्णव भक्त। दे० 'योगीश्वर'।

अशरफ–(सैयद)–एक प्रसिद्ध सूफी महात्मा जो मलिक मुहम्मद जायसी के गुरु और पथ-प्रदर्शक थे।

अशुकंबल–अष्टकुली महानागों में से एक जो वैकुण्ठ के द्वारपाल भी माने जाते हैं। नाभादास जी के अनुसार प्रत्येक हरिभक्त को पहले इन नागराजों को प्रसन्न करना चाहिए। विष्णुपुराण में इनकी संख्या बारह बताई गई है। दे० 'एलापत्र' तथा 'अनंत'।

अशोक–दाशरथि राम के एक आमात्य और भक्त। ये बड़े तत्वज्ञानी और नीति-विशारद थे।

अश्वकेतु–महाभारत कालीन एक साहसी राजा जो युद्ध में कौरवों के पक्ष में लड़ते हुए अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु के द्वारा मारे गये थे।

अश्वत्थामा–द्रोण के पुत्र। इनकी माता कृपा शरद्वान् की पुत्री थीं। भूमिष्ठ होते ही घोड़ों के समान हिनहिनाने के कारण देवताओं ने इनका नाम 'अश्वत्थामा' रख दिया और इन्हें अमर होने का वरदान दिया। कुरु क्षेत्र के संग्राम में अश्वत्थामा कौरवों के पक्ष के सेनापति थे। एक बार रात्रि के समय, जब सभी सो रहे थे पांडवों के शिविर में जाकर अपने पितृहंता धृष्टद्युम्न के साथ शिखण्डी तथा पांडवों के पाचों पुत्रों का इन्होंने वध कर डाला। पुत्रों के वियोग से तड़पती हुई द्रौपदी की दशा देखकर अर्जुन को बड़ा क्षोभ हुआ और उन्होंने अश्वत्थामा को युद्ध के लिए ललकारा। अश्वत्थामा के द्वारा ऐशिकास्त्र का प्रयोग होने पर अर्जुन ने उसके निराकरण के लिए ब्रह्मशिरास्त्र उठाया किन्तु ऐसा अनर्थ होते देखकर व्यास, नारद, तथा धर्मराज युधिष्ठिर सभी उनके विरुद्ध हो गए। द्रौपदी ने भी ब्रह्महत्या के डर से अश्वत्थामा के प्राण लेने की अपेक्षा उसके मस्तक में स्थित मणि पर ही अधिकार करने की इच्छा प्रकट की। फलत: अर्जुन ने उसके सिर की मणि काट कर उसे छोड़ दिया। वह मणि द्रौपदी को मिली जिसे उसने युधिष्ठिर को दे दिया। दे० 'द्रोण' तथा 'द्रुपद'।

अश्वपति–ये केकय देश के राजा तथा दशरथ की सुंदरी रानी कैकेयी के पिता थे। दे० 'कैकेयी'।

अश्वलायन–कल्पसूत्र तथा गृह्यसूत्रों के रचयिता तथा प्रसिद्ध ऋषि शौनक के पुत्र। प्रसिद्ध वैयाकरण कात्यायन भी इनके वंशज थे। इनका समय ४०० ई० पू० के लगभग माना जाता है।

अश्वसेन–प्रसिद्ध सर्पराज तक्षक का पुत्र जिसका परिवार खांडव वन में रहता था। पांडवों द्वारा इस वन में आग लगाये जाने के समय पिता की अनुपस्थिति में माता ने इसे बचाने के प्रयत्न में अपना प्राण त्याग दिया। इसका भी आधा शरीर जल चुका था किन्तु इंद्र ने घनघोर जलवृष्टि कर इसके प्राण बचा लिए। माता की मृत्यु का परिशोध करने के लिए महाभारत में सर्प का रूप धारण कर यह कर्ण के तूणीर में पहुँच गया किन्तु इसके चलाये जाने पर अर्जुन ने अपना सिर नीचे कर लिया जिससे केवल उनके मुकुट को ही क्षति पहुँची। विफल मनोरथ होने पर इसने कर्ण से अपना सारा भेद खोलकर पुन: वाण-रूप में चलाये जाने का आग्रह किया किन्तु आदर्श वीर कर्ण ने इसे अनुचित समझकर उसकी प्रार्थना अस्वीकृत कर दी। निदान यह स्वयं अर्जुन की ओर लपका और उनके वाणों से मारा गया।

अश्विनी–१. दक्ष प्रजापति की एक कन्या जिसका विवाह

चंद्रमा के साथ हुआ था। २. एक नक्षत्र जिसका मुख अश्व के समान माना जाता है। आश्विन मास की पूर्णिमा को चंद्रमा इसी नक्षत्र में निवास करते हैं। इस तिथि को 'शरत् पूर्णिमा' कहते हैं। मतांतर से यह तिथि कार्तिकी पूर्णिमा को पड़ती है।

अश्विनीकुमार–दो वैदिक देवता। ये सूर्य के औरस पुत्र माने जाते हैं। इनकी माता एक अप्सरा थी जिसने अश्विनी का रूप धारण कर लिया था। यह देख सूर्य ने भी अश्व का रूप धारण कर लिया। उनके सहवास से जिन युगल कुमारों की उत्पत्ति हुई वे "अश्विनीकुमार" कहलाए। ये चिरयुवा, चिरसुन्दर, दिव्य तेजयुक्त, लोकोपकारक एवं देव चिकित्सक थे। ये ऊषा के पूर्व दिव्य रथ पर आरूढ़ होकर आकाश में विचरण करते हैं। संभवतः इसी आधार पर वे सूर्य के पुत्र के रूप में कल्पित कर लिए गये हों। निरुक्तकार इन्हें 'स्वर्ग तथा पृथ्वी' और 'दिन तथा रात्रि' का प्रतीक मानते हैं। पौराणिक कथाओं के अनुसार नकुल तथा सहदेव की उत्पत्ति इन्हीं के अंश से मानी जाती है। इन्होंने अतिवृद्ध च्यवन ऋषि को चिरयौवन प्रदान किया था जिसके प्रतिफल स्वरूप च्यवन ने इंद्र से कहकर इन्हें देवताओं का यज्ञभाग दिलवाया था, जिससे चिकित्सक होने के कारण अश्विनीकुमार वंचित रहते थे। दे० 'च्यवन'।

अष्टावक्र–महाभारत के अनुसार ये कहोड़ नामक ब्राह्मण के पुत्र थे। कहोड़ ने अपना विवाह अपने गुरु महर्षि उद्दालक की पुत्री सुजाता के साथ किया था। अष्टावक्र के संबंध में यह कथा प्रचलित है कि इन्होंने गर्भावस्था ही में अपने पिता को अशुद्ध वेदपाठ करने के लिए टोक दिया था। पिता ने क्रुद्ध होकर शाप दिया कि भूमिष्ठ होते ही उसका शरीर वक्र हो जाय। आठ स्थानों पर टेढ़ा होने के कारण उसका नाम 'अष्टावक्र' पड़ा। शरीर से टेढ़े होने पर भी इनकी बुद्धि बड़ी तीक्ष्ण थी। बारह वर्ष की अवस्था में ही इन्होंने मिथिला के राजपंडित को शास्त्रार्थ में पराजित कर अपने मृत पिता का जीवनोद्धार किया जो उक्त पंडित से हारने के कारण जल में डुबा दिये गये थे। अतुल धन-संपत्ति के साथ लौटते हुए मार्ग में उन्होंने अपने पिता के आदेशानुसार समंगा नदी में स्नान किया जिससे उनके शरीर की वक्रता भी जाती रही। मिथिला के राजपंडित से जो प्रश्नोत्तर हुए थे, वे 'अष्टावक्र संहिता' में संगृहीत हैं।

असमंजस–सगर तथा केशिनी का पुत्र जो बड़ा उद्धत एवं अत्याचारी था। पिता के द्वारा त्यक्त होने पर भी यही राज्य का उत्तराधिकारी हुआ और कालांतर में बड़ा प्रसिद्ध हुआ। प्रसिद्ध राजा अंशुमान इसके पुत्र थे।

असित–एक सूर्यवंशी राजा जिनके पिता का नाम ध्रुवसंधि था। ये बड़े विख्यात योद्धा किन्तु क्रोधी स्वभाव के थे। हैहयवंशी राजाओं से इनके अनेक युद्ध हुए और अंत में उनसे पराजित होकर ये हिमालय की किसी गुफा में सपरिवार जा छिपे।

अस्ती–मथुरा के प्रसिद्ध राजा कंस (कृष्ण के मामा) की पत्नी और राजा जरासंध की ज्येष्ठ कन्या। इसकी छोटी बहन प्राप्ति का भी विवाह कंस के ही साथ हुआ था।

अहल्या–प्रसिद्ध पञ्च कन्याओं में से पहली। इनके पिता का नाम मुद्गल था। मतांतर से ये मेनका तथा वृद्धाश्व की पुत्री थीं। अन्य मत से ये ब्रह्मा की मानस पुत्री थीं। इनका विवाह गौतम ऋषि के साथ हुआ था। वाल्मीकि रामायण के अनुसार ब्रह्मा ने अहल्या की सृष्टि संसार की सुंदरतम वस्तुओं का सार लेकर की थी और उसे महर्षि गौतम को सौंप दिया था। देवराज इंद्र ने इन पर आसक्त हो चंद्रमा की सहायता से गौतम के छद्म वेश में इनके साथ भोग किया। सारा भेद खुलने पर महर्षि ने दोनों को शाप दिया जिसके फलस्वरूप इंद्र नपुंसक और सहस्रयोनि हुआ तथा अहल्या पाषाण मयी (मतांतर से अदृश्य)। इंद्र के शाप का निराकरण देवताओं के यत्न से हुआ। उन्हें मेष का पुंसत्व प्राप्त हुआ और सहस्त्र योनि सहस्त्र नेत्र में परिवर्तित हो गये। अहल्या द्वारा बहुत पश्चाताप करने पर ऋषि ने उसके शाप का स्वयं यह निराकरण किया कि त्रेता में श्री विष्णु के अवतार राम के चरण-स्पर्श से उसका उद्धार होगा। समय आने पर जनकपुर जाते समय राम की चरणरज के स्पर्श से (मतांतर से दर्शन प्राप्त कर) अहल्या पुनः अपना पूर्वरूप पाकर राम का यशोगान करती हुई पतिलोक को चली गई। कुमारिल भट्ट के अनुसार यह उपाख्यान एक रूपक मात्र है। अहल्या और इंद्र क्रमशः रात्रि तथा सूर्य के प्रतीक हैं। मतांतर से अहल्या अनुर्वरा भूमि अथवा जड़बुद्धि की भी प्रतीक है। दे० 'गौतम' तथा 'इंद्र'।

अहि–दे० 'शेष' और 'वासुकि'।

अहिरावण–पाताल में अहिरावण तथा महिरावण के नाम से रावण के दो मित्र थे। ये दोनों घोर पराक्रमी और क्रूरकर्मा थे। इन्होंने राम लक्ष्मण को बड़ा कष्ट दिया किन्तु अंत में मारुति की सहायता से दोनों सपरिवार नष्ट हुए।

आंगरिष्ट–एक प्रसिद्ध राजर्षि जिन्होंने कामंद नामक ऋषि से धर्म तथा तत्त्वविद्या का ज्ञान प्राप्त किया था।

आंगिरस–१. अंगिरस् कुलोद्भव ऋषियों का नाम। ये अथर्ववेद के प्रवर्तक थे। २. वृहस्पति का एक पर्याय। दे० 'वृहस्पति'।

आंगिरसी–वसु की पत्नी का नाम।

आकथ–मंकण के पुत्र का नाम। ये एक बहुत बड़े शिवभक्त थे। एक बार इनके घर में आग लग जाने के कारण उसमें प्रतिष्ठापित शिवलिंग आधा जल गया। अतएव भक्ति के आवेश में इन्होंने भी अपना आधा शरीर जला दिया। इससे प्रसन्न होकर शिवजी ने इन्हें साक्षात् दर्शन दिया और वरदान स्वरूप उन्हें दिव्य शरीर प्रदान किया।

आकाशज विप्र–ब्रह्मदेव का नाम। इनका पार्थिव शरीर नहीं है और न यम द्वारा इनकी मृत्यु होने की संभावना रहती है। ये जन्म-मृत्यु से परे विज्ञान रूप हैं।

आकृति–यह गरुड़ विद्या के एक आचार्य का नाम है, जिन्होंने युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के अवसर पर दक्षिण दिशा को विजय करने में सहदेव की सहायता की थी।

आखंडल–इंद्र का पर्याय। दे० 'इंद्र'।

आगस्त्य–अगस्त्य ऋषि के पुत्र का नाम।

आग्नीध्र–प्रियव्रत और बर्हिष्मती के ज्येष्ठ पुत्र का नाम। विष्णुपुराण के अनुसार इनका नाम अग्नीध्र था। उर्जस्वती नाम की इनकी एक भगिनी थी। दे० 'अग्नीध्र'।

आजकेशिन–इंद्र का नामांतर। इन्होंने बक का प्रतिकार किया था।

आजगर–महाभारतकालीन एक प्रसिद्ध ब्राह्मण का नाम जो अयाचित वृत्ति से रहते थे।

आज्य–सावर्णि मनु के पुत्र का नाम।

आज्यप–पितृगण में से एक। ये ब्रह्मा के मानसपुत्र पुलह के वंशज थे और यज्ञों में आज्यपान करने के कारण इनका यह नाम पड़ा था।

आटविन्–याज्ञवल्क्य के वाजसनेय शिष्य। व्यास की यजुः शिष्य-परम्परा में इनकी उत्पत्ति मानी जाती है।

आडि–अंधकासुर के पुत्र का नाम। इसने घोर तपस्या के द्वारा ब्रह्मा को प्रसन्न करके अमरत्व का वरदान माँगा किन्तु ऐसा असंभव होने के कारण इसे इच्छानुसार रूप परिवर्तन करने का वर मिल गया जिसके बल पर निर्भय होकर इसने अनेक अत्याचार किये। शिवाजी का पराभव करने के लिए यह कैलास गया जहाँ वीरभद्र से इसका युद्ध हुआ। युद्ध में मृत्युभय से इसने सर्प का रूप धारण किया किन्तु उसमें भी प्राणों का संकट देखकर इसने पार्वती का रूप धारण कर लिया। अंत में शिव को इस कपट रूप का पता लगा और उन्होंने इसका वध किया।

आतातापि–एक प्राचीन ऋषि तथा धर्मशास्त्र ग्रंथ के प्रणेता।

आत्मदेव–एक प्रसिद्ध ब्राह्मण का नाम जो तुंगभद्रा के तट पर रहते थे और निस्संतान होने के कारण बहुत चिंतित रहा करते थे। एक सिद्ध ने पुत्रोत्पत्ति के लिए इनकी पत्नी को एक फल खाने को दिया किन्तु उसने वह फल अपनी बहन को दे दिया। बहन ने भी स्वयं न खाकर उसे एक गाय को खिला दिया। ब्राह्मण को जो पुत्र उत्पन्न हुआ उसका नाम धुंधकारी पड़ा और गाय को जो पुत्र हुआ उसके बैल जैसे कान होने के कारण उसका नाम गोकर्ण पड़ा। धुंधकारी बड़ा अत्याचारी हुआ और गोकर्ण को कष्ट दिया करता था। गोकर्ण ने ज्ञान मार्ग का आश्रय लेकर परामर्श प्राप्त किया।

आत्रेय–अत्रि मुनि के पुत्र। कालांतर में अत्रि कुलोत्पन्न सभी ब्राह्मणों की संज्ञा आत्रेय हो गई।

आत्रेयी–अत्रि मुनि की कन्या का नाम। इनका विवाह अग्नि के पुत्र अंगिरा के साथ हुआ था जिससे इनके पुत्र 'अंगिरस' नाम से प्रसिद्ध हुए। दे० 'अंगिरा'।

आत्रेयस्मृति–एक स्मृति ग्रंथ जिसके रचयिता अत्रि मुनि कहे गये हैं।

आदित्य–अदिति के पुत्र और एक प्रसिद्ध वैदिक देवता। चाक्षुष मन्वंतर में इनका नाम त्वष्टा था। वैवस्वत मन्वंतर में ये आदित्य कहलाए। कालांतर में इन्हें सूर्य का पर्याय माना जाने लगा। पहले आदित्यों की संख्या छः ही थी जो क्रमशः मित्र, अर्यमन्, भग, वरुण, दक्ष तथा अंश के नाम से प्रसिद्ध थे। वेदोत्तर काल में प्रत्येक मास के लिए एक एक आदित्य की कल्पना हुई। तैत्तिरीय ब्राह्मण में भी आठ आदित्यों के नाम आते हैं—१. अंश, २. भग, ३. धातृ, ४. इंद्र, ५. विवस्वन्, ६. मित्र, ७. वरुण तथा ८. अर्यमन्। मतांतर से आठवें आदित्य अदिति के पुत्र मार्तण्ड थे। आदित्य वास्तव में एक देववर्ग का नाम था जिसमें सर्वप्रमुख विष्णु थे।

आदित्यकेतु–धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम जिसका वध भीम ने किया था।

आदिवराह–भगवान् विष्णु का एक अवतार जो हिरण्याक्ष से पृथ्वी का उद्धार करने के लिए हुआ था। दे० 'वराह'।

आधूर्त रजस्–गय राजा के पिता का नाम। मतांतर से इनका नाम अमूर्तरयस् था।

आनंद–१. एक प्रसिद्ध ब्राह्मण जिनकी उत्पत्ति महर्षि गालव्य के कुल में हुई थी। २. मेधातिथि के सात पुत्रों में से एक। ३. महात्मा बुद्ध के एक शिष्य जिनमें तथागत का इतना विश्वास था कि वे इन्हें अपने समान ही समझते थे।

आनंदगिरि–शंकराचार्य के शिष्य और वेदांत के प्रकांड पंडित 'शंकर दिग्विजय' इनका प्रसिद्ध ग्रंथ है, जिसमें आचार्य के शास्त्रार्थों तथा मुख्य कृत्यों का विवरण है। शंकर के 'शारीरक भाष्य' की टीका, तथा गीता और उपनिषदों पर इनके भाष्य अत्यंत विद्वत्तापूर्ण हैं।

आनंदवर्धन–एक प्रसिद्ध काश्मीरी पंडित तथा काव्य-शास्त्र के आचार्य। 'काव्यालोक' 'ध्वन्यालोक' तथा 'सहृदयालोक' इनके प्रसिद्ध ग्रंथ हैं। ये ध्वनिवादी हैं और अलंकार शास्त्र के आचार्यों में इनका महत्वपूर्ण स्थान है। कल्हण की राजतरंगिणी में एक स्थल पर इनका जिक्र आता है जिसके अनुसार ये काश्मीर के राजा अवंतिवर्मा के राजपंडित सिद्ध होते हैं। अवंतिवर्मा का समय नवीं शताब्दी माना जाता है।

आनकदुंदुभि–कृष्ण के पिता वसुदेव का एक नामांतर। इनके जन्म के अवसर पर देवताओं ने आनंद से दुंदुभी बजाई थी इसी से इनका यह नाम पड़ा। दे० 'वसुदेव'।

आनर्त–राजा शर्याति के पुत्र का नाम।

आपस्तंब–प्रसिद्ध वैदिक ऋषि तथा स्मृतिकार। इनका समय तीसरी शताब्दी ई० पू० माना जाता है। इस नाम के कई ऋषि मिलते हैं किन्तु दो विशेष प्रसिद्ध हैं—एक सूत्रकार और दूसरे स्मृतिकार। इनके नाम पर आपस्तंब संहिता भी प्रसिद्ध है जिसमें कृतकर्मों के फल तथा पापों के प्रायश्चित्त का विस्तारपूर्वक विवरण है। धर्म में क्षमा का स्थान सर्वोपरि माना गया है।

आपिशलि–एक प्रसिद्ध वैयाकरण जिनका उल्लेख पाणिनि ने संधिप्रकरण में किया है। इनके द्वारा प्रणीत आपिशलि नामक ग्रंथ में काशिका तथा कैयट का उल्लेख होने से ज्ञात होता है कि काशिकाकार तथा कैयट इनके पूर्व हो चुके थे।

आयु–प्रसिद्ध चंद्रवंशी राजा पुरूरवा के ज्येष्ठ पुत्र जिनका

विवाह राजा बाहु की कन्या के साथ हुआ था। इससे इन्हें पाँच पुत्र हुए थे।

आयोद धौम्य–एक प्रसिद्ध वैदिक ऋषि जिनके तीन शिष्य उपमन्यु, आरुणि तथा वेद विशेष प्रसिद्ध हैं।

आराकरन–एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त तथा कवि।

आरुणि–प्रसिद्ध वैदिक ऋषि आयोद धौम्य के शिष्य। इनकी गुरुभक्ति के संबंध में एक कथा प्रसिद्ध है, जिसके अनुसार एक नाली को बाँधने के लिए गुरु ने इन्हें आज्ञा दी थी। न बाँध सकने के कारण जल के वेग को रोकने के लिए ये स्वयं लेट गए थे और बहुत समय बीत जाने पर गुरु के आने पर अचेत मिले। इससे प्रसन्न होकर आयोद धौम्य ने इनका नाम 'उद्दालक' रक्खा।

आर्जव–द्यूतक्रीड़ा कुशल शकुनि के एक बंधु का नाम जिसका वध अर्जुन के पुत्र इरावान ने किया था।

आजीगर्ति–शुनःशेष का पैतृक नाम।

आर्जिहायन–काश्यपगोत्रीय ऋषियों का नाम।

आर्यक–कद्रु का एक पुत्र जिसकी कन्या मारीषा का विवाह यदुकुलोत्पन्न राजा शूर के साथ हुआ था।

आर्य क्षेमीश्वर–एक प्रसिद्ध विद्वान् कवि तथा नाटक कार। इनके द्वारा रचित "चंड कौशिक" नामक नाटक अत्यंत प्रसिद्ध है, जिसके आधार पर भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने अपना विख्यात नाटक 'सत्य हरिश्चंद्र' लिखा था। इनका समय निश्चित् रूप से नहीं ज्ञात है किन्तु साहित्यदर्पण में इनका उल्लेख होने से इन्हें विश्वनाथ के पूर्व का ही माना जायगा।

आर्यभट्ट–बीजगणित के प्रथम प्रवर्तक। कोलब्रूक के अनुसार इनका जन्म कुसुमपुर (पटना) में ४७६ ई० के लगभग हुआ था। इन्होंने अपना ज्योतिष संबंधी ग्रंथ २३ वर्ष की ही अवस्था में तैयार कर लिया था। 'आर्य-सिद्धांत' इनका प्रसिद्ध ग्रंथ है। इस नाम के एक और ज्योतिर्विद इनसे कुछ काल पश्चात् हुए जिन्हें 'लघु' आर्यभट्ट कहा जाता है।

आर्श्यशृंगि–महाभारतकालीन एक राक्षस का नाम जो कौरवों के पक्ष में लड़ते हुए अर्जुन के पुत्र इरावान द्वारा मारा गया था।

आर्ष्टिषेण–एक सत्ययुगीन राजर्षि का नाम जिन्होंने घोर तप करके ब्राह्मणत्व प्राप्त किया था। इनका आश्रम हिमालय पर नारायणाश्रम के समीप था जहाँ महाप्रस्थानकाल में पांडव इनके पास गये थे। ये एक प्रसिद्ध मंत्रकार भी थे। इनका दूसरा नाम अहिषेण भी मिलता है।

आलंब–धर्मराज की सभा के एक प्रसिद्ध ऋषि।

आलवार–वैष्णव सिद्धांत के प्रमुख प्रचारकों का सामूहिक नाम, जिनकी संख्या बारह मानी जाती है। वैष्णव लोग इन्हें विष्णु के आयुद्धों का अवतार मानते हैं।

आशधर–मध्यकालीन एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त।

आश्वलायन–ऋग्वेद की एक शाखा के प्रवर्तक ऋषि और शौनक के शिष्य। इनके रचे हुए श्रौतसूत्र, गृह्य-सूत्र तथा आश्वलायन स्मृति नामक ग्रंथ प्रसिद्ध हैं, जिनमें पहला १२ अध्यायों का, तथा दूसरा ४ अध्यायों का है।

आसंग प्लायोगि–वेदकालीन एक दानवीर राजा तथा सूक्त-द्रष्टा का नाम।

आसकर–मध्यकालीन एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त तथा राजर्षि।

आसकरन–कछवाहा राजा पृथ्वीराज के वंशज राजा भीम सिंह के पुत्र तथा कील्ह देव स्वामी के शिष्य, एक वैष्णव भक्त। ये नटवरगढ़ के राजा थे और युगल मोहन (अर्थात् जानकीमोहन राम तथा राधामोहन कृष्ण) की उपासना करते थे। कहा जाता है कि ये अपने उपास्य की आराधना में इतने तन्मय रहा करते थे कि एक बार जब किसी शत्रु ने इनके ऊपर आक्रमण करके तलवार से इनकी एड़ी काट दी तो ध्यानमग्न रहने के कारण उनके ऊपर इसका कुछ प्रभाव ही नहीं पड़ा। इन्हें पहुँचा हुआ भक्त समझकर शत्रु लौट गया।

आसमंजस–असमंजस राजा के पुत्र अंशुमान। दे० 'अंशुमान'।

आसावरी–आसावरी एक बड़ा ही श्रुति मधुर प्रातर्गेय राग है। इसके आरोह में गंधार तथा निषाद वर्जित है। इसमें धैवत वादी (प्रधान स्वर) तथा गंधार संवादी है, और ये दोनों स्वर भरसक आंदोलित रहते हैं। प्राचीन मत के अनुसार आसावरी में ऋषभ भी कोमल लगना चाहिये। पर यह मत कम प्रचलित है। यह राग करुणरस-प्रधान होता है।

आसुरायण–त्रैवणी (मतांतर से आसुरी) के शिष्य। ब्रह्माण्ड पुराण के अनुसार ये पाराशर्य कौथुभ के शिष्य थे।

आसुरि–भरद्वाज मुनि के एक प्रसिद्ध शिष्य तथा औपजंघनी के गुरु का नाम। मतांतर से ये याज्ञवल्क्य तथा आसुरायण के भी शिष्य बतलाए जाते हैं। ये सायंहोम के पक्षपाती तथा उदिपहोम के घोर विरोधी थे। अग्नि के उपस्थापन के संबंध में इनका एक मंत्र भी है।

आसुरी–देवताजित राजा की पत्नी तथा देवद्युम्न की माता का नाम।

आस्तीक–जरत्कारु ऋषि के पुत्र जिनकी माता जरत्कारु नागराज वासुकी की बहन थीं। जनमेजय के सर्पयज्ञ में जब संसार भर के सर्पों की आहुति दी जा रही थी तब आस्तीक ने ही वासुकी तथा उसके परिवार की रक्षा की थी।

आहार्य–आंगिरस गोत्रीय एक मंत्रकार का नाम।

आहुक–मृत्तिकावत् नगरी के भोजवंशी राजा अभिजित के पुत्र जो बड़े पराक्रमी तथा ऐश्वर्यशाली थे। इनका विवाह काश्या से हुआ था जिससे देवक तथा उग्रसेन नाम के दो पुत्र उत्पन्न हुए थे। मतांतर से ये पुनर्वसु के पुत्र थे और इनके पुत्र का नाम शंभर था। महाभारत के अनुसार कृष्ण से इनका युद्ध भी हुआ था।

आहुकी–पुनर्वसु राजा की कन्या तथा आहुक की भगिनी। राजा की यमल संतान में पुत्र का नाम आहुक और पुत्री का नाम आहुकी था। दे० 'अहुक'।

इंदिरा–लक्ष्मी का एक पर्याय। दे० 'रमा' तथा 'लक्ष्मी'।

इंदीवराक्ष–१. विद्याधराधिप नलनाभ के गंधर्व पुत्र का नाम। २. भगवान् विष्णु का एक नामांतर।

इंदु–चंद्रमा का नामान्तर। दे० 'चंद्रमा'।

इंदुमणि–एक प्रसिद्ध मणि (रत्न) का नाम। दे० 'चंद्रकांत'।

इंदुमती–विदर्भराज भोज की भगिनी का नाम जिन्होंने स्वयंवर में राजा अज को पतिरूप से वरण किया था। पूर्व जन्म में यह हारिणी नाम की अप्सरा थीं जिन्हें इंद्र ने तृणविंदु नामक ऋषि की तपस्या भंग करने के लिए भेजा था। वहाँ ऋषि ने इन्हें मनुष्ययोनि में जन्म लेने का शाप दिया किंतु अत्यन्त अनुनय विनय करने पर स्वर्गीय पुष्प का दर्शन करने से पुनः इंद्रलोक में लौट सकने का वचन दिया। फलतः एक बार अज के साथ वाटिका विहार करते समय इन्हें नींद आ गई और वहीं लतामण्डप में शयन करते समय स्वर्ग से आते हुए नारद की वीणा से पारिजात की माला इनके ऊपर गिरी जिससे इनकी मृत्यु हो गई। श्रीरामचन्द्र जी के पिता दशरथ की उत्पत्ति रानी इंदुमती के ही गर्भ से हुई थी।

इंद्र–आकाश तथा बादलों के प्रतीक-स्वरूप स्वीकृत हुए देवता। ऋग्वेद के त्रिदेवों में अग्नि तथा सूर्य अथवा वरुण के साथ इनका भी नाम मिलता है। इस प्रकार ये उस काल के प्रमुख देवता थे। ऋग्वेद में इनके सम्बन्ध में लगभग २५० मंत्र मिलते हैं। इससे अधिक मंत्र किसी और देवता के सम्बन्ध में नहीं हैं। इन मंत्रों में बार-बार इंद्र से दासों तथा दस्युओं के नगरों का नाश करने की प्रार्थना की गई है। जल की वर्षा के लिए भी उनका स्मरण किया गया है। एक स्थान पर उनके देवराज होने की कथा इस प्रकार दी हुई है: देव प्रजापति के पास जाकर बोले कि 'राजा के बिना युद्ध करना असम्भव है।' यज्ञ करके उन्होंने इंद्र से राजा होने की प्रार्थना की, और वे देवराज हो गये। ऋग्वेद में कई स्थान पर इंद्र के द्वारा वृत्र के परास्त होने की बात कही गई है। पुराणों में यह कथा और भी विकसित रूप में देखने को मिलती है। ऋग्वेद में इनकी माता का नाम निष्टिग्री मिलता है। इनकी माता ने इन्हें सहस्र मास गर्भ में रखा था तथा जन्म के समय ही इनके वीर्यपूर्ण होने के कारण वे प्रमत्त हो गई थीं। एक स्थान पर इंद्र के अपने पिता को पाद-द्वय पकड़ कर मार डालने की बात भी लिखी है। अथर्ववेद के अनुसार इनकी माता का नाम एकाष्टका था जिन्होंने घोर तप के उपरांत महाशक्तिमान इंद्र को जन्म दिया जिनके द्वारा देवताओं ने असुरों और दस्युओं का विनाश किया। इंद्र के पिता सोम हैं। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार इंद्र की उत्पत्ति प्रजापति से हुई थी। तैत्तिरीय ब्राह्मण के अनुसार देवताओं ने मिलकर प्रजापति से यह अभिमंत्रणा की कि असुरों की सृष्टि हो जाने पर उनके दमनकर्ता की भी आवश्यकता पड़ेगी। इस पर प्रजापति ने इंद्र की उत्पत्ति के लिये देवताओं को तप करने के लिये प्रेरित किया। दीर्घ काल तक तप करने के अनन्तर उन्हें अपनी ही आत्मा के अन्दर इंद्र का भान हुआ और उनसे देवताओं ने जन्म ग्रहण करने की प्रार्थना की। अंत में अभीप्सित ऋतु, संवत्सर तथा नक्षत्र आदि में इंद्र का जन्म हुआ। आगे के साहित्य, महाभारत तथा पुराणों में इंद्र के चरित्र में वह महानता नहीं मिलती। त्रिदेवों में उनका स्थान नहीं रह जाता और उनके चरित्र की कुछ दुर्बलताएँ भी हमारे सामने स्पष्ट होती हैं। वाल्मीकीय रामायण में इनके रावण के पुत्र मेघनाद से पराजित होकर बंदी होने की बात मिलती है। देवताओं को इनकी मुक्ति के लिये रावण को अमर होने का वरदान देना पड़ा था। महाभारत में गौतम की स्त्री अहिल्या के साथ इनके बलात्कार करने की कथा मिलती है, जिसके कारण इनके शरीर पर एक सहस्र योनि के चिह्न हो गये थे, किंतु बाद को वह आँखों में परिवर्तित हो गये जिससे इनका नाम सहस्राक्ष हुआ। तैत्तरीय ब्राह्मण में इन्द्राणी के साथ विवाह के सम्बन्ध में यह लिखा है कि इन्होंने उसे उसके पिता पुलोमा को मारकर प्राप्त किया था। इंद्र के क्षेत्रज नहीं औरस पुत्रों में बालि तथा अर्जुन का नाम लिया जाता है। वृत्रासुर के सम्बन्ध में पुराणों में लिखा है कि इंद्र ने उसके वध के लिये दधीचि से उनकी हड्डियाँ लेकर उनका बज्र बनवाया था और उससे उसका संहार किया था। ब्रज के लोग भी इंद्र की उपासना करते थे; किंतु कृष्ण ने उन्हें गोवर्धन की पूजा के लिये जागरुक किया था। इंद्र ने क्रोधित होकर प्रलय के मेघों को ब्रज को डुबाने के लिये भेजा था। कृष्ण ने उस समय गोवर्धन को अपनी छिगुनी पर धारण कर ब्रजवासियों की रक्षा की थी। उसके बाद इंद्र की पूजा के कोई विशेष उल्लेख नहीं मिलते हैं। समुद्र-मंथन के उपरांत इन्हें ऐरावत नामक हाथी, उच्चैःश्रवा नामक अश्व और पारिजात नामक वृक्ष मिले थे। ऋग्वेद के अनुसार इंद्र एक आदित्य होते हुये भी द्वादश आदित्यों से भिन्न हैं। इनके पुत्र का नाम जयंत, भवन का नाम वैजयंत तथा पुरी का नाम अमरावती है।

इंद्रकील–मंदराचल का नामांतर। दे० 'मंदर'। इसी पर्वत पर अर्जुन ने तप किया था और शिवजी से युद्ध करके पाशुपतास्त्र प्राप्त किया था।

इंद्रजीत–मेघनाद का एक पर्याय। दे० 'मेघनाद'।

इंद्रद्युम्न–१. सुमति के पुत्र तथा भरत के पौत्र। २. अवंति के राजा जिन्होंने विष्णु मन्दिर का निर्माण कराया था। इसी मन्दिर में आगे चलकर जगन्नाथ की स्थापना हुई। पुराणों के अनुसार स्वयं विष्णु ने समुद्रतट पर एक काष्ट-खंड प्राप्त होने का इन्हें स्वप्न दिया था, जिसको कटवाकर इन्होंने कृष्ण, बलराम तथा सुभद्रा की मूर्तियाँ बनवाई थीं। ३. एक प्राचीन ऋषि जो मार्कंडेय से भी पूर्व के थे और पथभ्रष्ट होने के कारण मर्त्यलोक में आ गये थे।

इंद्रप्रमति–ऋग्वेद के एक प्राचीन आचार्य तथा अध्यापक जो महर्षि पैल के शिष्य थे। इनके पुत्र विख्यात मांडव्य ऋषि थे जिनका उपनिषद् प्रसिद्ध है। मांडूक्य को वेदों की शिक्षा अपने पिता द्वारा ही प्राप्त हुई थी।

इंद्रप्रमति वासिष्ठ–वसिष्ठ कुलोत्पन्न एक ऋषि क

नाम। ऋग्वेद में इनके नाम पर दो ऋचाएँ तथा एक सूक्त प्राप्त होते हैं।

इंद्रवर्मन–महाभारतकालीन मालवा के राजा जो प्रसिद्ध गज अश्वत्थामा के स्वामी थे और कौरवों के पक्ष में लड़े थे।

इंद्रसावर्णि–मनु का एक नामांतर। भागवत के अनुसार ये चौदहवें मन्वंतर के मनु थे।

इंद्रसेन–१. युधिष्ठिर के सारथि का नाम। २. ऋषभदेव तथा जयंती के पुत्र का नाम। ३. राजा नल का पुत्र। ४. माहिष्मती के एक राजा। ५. राजा कूर्च का पुत्र। ६. महाभारतकालीन एक कौरवपक्षीय राजा।

इंद्रसेना–राजा नल की कन्या।

इक्षालव–एक ऋषि का नाम जो ऋक् शिष्य परंपरा में ब्यास के शिष्य माने जाते हैं।

इक्ष्वाकु–१. वैवस्वत मनु के पुत्र तथा सूर्यवंश के प्रथम राजा, जिन्होंने अयोध्या में कोसल राज्य की स्थापना की थी। प्रसिद्ध राजा रामचद्र जी इन्हीं के वंशज थे। मनु की छींक से इनकी उत्पत्ति होने के कारण इनका नाम इक्ष्वाकु पड़ा। इनके सौ पुत्र कहे जाते हैं जिनमें विकुक्षि, निमि और दंड विशेष प्रसिद्र हैं। शकुनि आदि इनके पचास पुत्र उत्तरापथ के तथा शेष दक्षिणा-पथ के राजा हुए थे। २. एक दूसरे इक्ष्वाकु काशी के राजा हुए थे जिनके पिता का नाम सुबंधु था। इनकी उत्पत्ति इक्षुदंड से होने के कारण इनका नाम इक्ष्वाकु पड़ा।

इडा–१. वैवस्वत मनु की कन्या का नाम जिसकी उत्पत्ति प्रजासृष्टि के अभिप्राय से यज्ञकुण्ड में डाले हुए हविष्य से हुई थी। इसका विवाह बुध के साथ हुआ जिससे पुरूरवा नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। दे० 'पुरूरवा'। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार इडा की उत्पत्ति उस यज्ञकुण्ड से हुई थी जिसका निर्माण मनु ने संतानोत्पत्ति के संकल्प से किया था और उसका पाणिग्रहण मित्रावरुण ने किया था। २. मानव शरीर की एक नाड़ी का नाम जिसका प्रयोग संस्कृत के योग साहित्य तथा हिंदी के संत साहित्य में प्राय: मिलता है। इड़ा, पिंगला तथा सुषुम्ना नाड़ियों को क्रमश: गंगा, यमुना तथा सरस्वती का प्रतीक माना गया है।

इड़पिड़ा–दे० 'इलविला'।

इध्मजिह्व--प्रियव्रत तथा बर्हिष्मती के दस पुत्रों में से द्वितीय का नाम जो प्लक्ष द्वीप के स्वामी थे।

इरावत--अर्जुन के एक पुत्र का नाम जिसकी उत्पत्ति ऐरावत नाग की विधवा कन्या उलूपी से हुई थी। नागशत्रु गरुड द्वारा जामाता का वध होने पर ऐरावत ने अपनी पुत्री को अर्जुन के हाथ समर्पित कर दिया। इसी के गर्भ से इरावत (अथवा इरावान) की उत्पत्ति हुई जिसने महाभारत युद्ध में कौरवों का प्रचुर संहार किया और अंत में दुर्योधन-पक्षीय आर्यश्रृंग नामक राक्षस द्वारा मारा गया।

इरावती--रावी नदी का नामांतर। इसका यूनानी नाम हिड्राओटीस है।

इलराज--कर्दम प्रजापति के पुत्र तथा बह्लीक देश के एक प्राचीन राजा। इनके सम्बन्ध में कथा प्रचलित है कि एक बार ये शिकार खेलते-खेलते ऐसे वन में पहुँच गए जहाँ जाने पर पुरुष स्त्री में परिवर्तित हो जाता था। फलत: समस्त सेना सहित अपने को स्त्री रूप में पाकर वे बड़े चिंतित हुए और उस स्वरूप से मुक्ति पाने के लिए शिव जी की आराधना करने लगे। किंतु शिवजी ने अपनी असमर्थता प्रकट की। निदान पार्वती की तपस्या करने पर उन्हें आंशिक सफलता प्राप्त हुई, जिसके अनुसार वे एक महीना पुरुष और एक महीना स्त्री के रूप में रहने लगे।

इलविला--एक देवकन्या जिसकी उत्पत्ति अप्सरा अलंबुषा तथा तृणविंदु से मानी जाती है। एक मत से यह विश्रवा की पत्नी और कुबेर की जननी मानी जाती है। दे० 'कुबेर' मतांतर से यह पुलस्त्य की पत्नी तथा विश्रवा की जननी मानी जाती है। दे० 'पुलस्त्य'।

इलवृत--अग्नीध्र के नौ पुत्रों में से एक जो जंबूद्वीप के स्वामी माने जाते हैं।

इला--वैवस्वत मनु तथा श्रद्धा की कन्या। मनु ने पुत्रोत्पत्ति की लालसा से यज्ञ किया किंतु उनकी भार्या श्रद्धा कन्या चाहती थीं जिसके लिए वे नियमपूर्वक दुग्धपान करके रहती थीं और होता से कन्या के लिए ही प्रार्थना कर-वाती थीं। फल-स्वरूप इला नामक कन्या की उत्पत्ति हुई। मनु ने वसिष्ठ से अपने दु:ख का निवेदन किया जिनकी प्रार्थना से आदि पुरुष ने इला को ही पुरुष-रूप में परिवर्तित कर दिया जो सुद्युम्न के नाम से प्रसिद्ध हुआ। दे० 'सुद्युम्न' तथा 'वैवस्वत'।

इलापत्र--द्वादश प्रधान नागराजों में से एक जिन्हें अष्ट-कुली महासर्प या महानाग भी कहते हैं। भक्तमाल के अनुसार ये भगवान् के मंदिर के द्वारपाल हैं और इनकी सम्मति के बिना कोई उसमें प्रवेश नहीं पा सकता। अत: भगवान् का सान्निध्य प्राप्त करने के लिए पहले इन्हें प्रसन्न करना आवश्यक है।

इलावृत--मेरु पर्वत के मध्य में स्थित एक वन जहाँ शिव का वास कहा जाता है।

इष्टिपरुष--यज्ञ की हवन सामग्री के चीटों का सामूहिक नाम। व्यापार साम्य के कारण यज्ञ सामग्री चुराने वाले राक्षसों को यह संज्ञा दी गई थी।

ईश- १. शिव का नामांतर। दे० 'शिव'। २. एक उप-निषद् का नाम।

ईशान--शिव अथवा रुद्र का रूपान्तर जो उत्तरपूर्व कोण के स्वामी माने गए हैं।

ईश्वरकृष्ण--सांख्य-कारिका के प्रणेता एक प्रसिद्ध आचार्य का नाम।

ईश्वरसी--नाभा जी के अनुसार एक प्रसिद्ध राजवंशीय वैष्णव भक्त।

उक्थ--स्वाहा के पुत्र का नाम। विष्णुपुराण के मत से ये

छल के तथा भविष्यपुराण के मत से छद्मकारी के पुत्र थे। इन्होंने दस सहस्त्र वर्ष राज्य किया।

उक्थ्य—सामदेव के एक भाग का नाम जो ब्रह्मा के दक्षिण मुख से कहा हुआ माना जाता है।

उख—एक आचार्य का नाम जिनका समावेश पितृ तर्पण के अंत में किया गया है।

उग्र—१. एक राक्षस जिसके पुत्र का नाम वज्रहा था। २. शिव की वायुमूर्ति का नाम। ३. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम जिसका वध भीम के द्वारा हुआ था।

उग्रक—कद्रू के एक पुत्र का नाम।

उग्रकर्मा—महाभारतकालीन साल्व राजा का नाम जिसका वध भीम ने किया था।

उग्रचंडा—दुर्गा का एक नामांतर। आश्विन मास की कृष्णा नवमी को शाक्त लोग इनकी पूजा करते हैं। इनकी भुजाओं की संख्या अष्टादश मानी जाती है। सती ने इसी रूप में दक्ष का यज्ञ विध्वंस किया था। दे० 'सती'।

उग्रतप—एक प्राचीन ऋषि का नाम जिन्होंने गोपिकाओं के साथ विहार मग्न कृष्ण का आराधन किया था जिसके फलस्वरूप कृष्णावतार में इनका जन्म गोकुल के सुनंद नामक गोप की कन्या के रूप में हुआ और इन्होंने कृष्ण की खूब सेवा की।

उग्रतारा—देवी का एक नामांतर। शुंभ-निशुंभ नामक राक्षस द्वय के अत्याचार से संतप्त देवताओं ने हिमालय पर एकत्र होकर ध्यानस्थ मातंग मुनि की बड़ी स्तुति की जिससे प्रसन्न होकर देवी मातंग मुनि की पत्नी के रूप में प्रकट हुई और उनके शरीर से जो दिव्य तेज निकला उसी से दोनों राक्षसों का नाश हुआ। इसी से इनका एक नाम मातंगी भी है। दे० 'शुंभ' तथा 'निशुंभ'।

उग्रतीर्थ—महाभारतकालीन एक राजा का नाम जिन्होंने कौरवों के पक्ष में युद्ध किया था।

उग्रदंष्ट्री—मेरु की कन्या का नाम जिनका विवाह अग्नीध्र के पुत्र हरिवर्ष के साथ हुआ था।

उग्रदेव—एक पितृ-विशेष का नाम जिनका उल्लेख ऋग्वेद में तुर्वस तथा यदु के साथ आया है।

उग्रपश्या—एक अप्सरा का नाम जो ब्राह्मणग्रंथों के अनुसार जुआ खेलने के पापों से मनुष्यों की रक्षा करती है।

उग्रमन्यु—महाभारत कालीन एक राजा का नाम जिन्होंने भारत युद्ध में पांडवों के विरुद्ध युद्ध करते हुए अर्जुन के हाथों वीरगति प्राप्त की थी।

उग्रसेन—१. एक यदुवंशी राजा जो प्रसिद्ध अत्याचारी कंस के पिता और राजा आहुक के पुत्र थे। इनकी माता का नाम काश्या था जिनके उग्रसेन तथा देवक नामक दो पुत्र थे। उग्रसेन के नौ पुत्र तथा पाँच कन्याएँ हुई जिनमें सबसे ज्येष्ठ कंस ने अपने श्वसुर जरासंध की सहायता से इन्हें राज्यच्युत कर कारागार में डाल दिया और स्वयं राजा बन बैठा। दे० 'कंस'। २. महाभारत के अनुसार धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक का नाम। ३. सूर्य के एक सहचर का नाम।

उग्रसेना—अक्रूर की एक स्त्री का नाम।

उग्रहय—यह राम के अश्वमेध यज्ञ करने के समय यज्ञाश्व की रक्षा के लिए लक्ष्मण जी के साथ गया था।

उग्रायुध—कृत राजा के पुत्र। भागवत के अनुसार नीपा के पुत्र थे। राजा शांतनु के निधन के पश्चात् इन्होंने सत्यवती का पाणिग्रहण करना चाहा था जिससे क्रुद्ध होकर भीष्म ने इनका वध कर डाला।

उंछवृत्ति—महाभारतकालीन एक ब्राह्मण का नाम जो बड़े दरिद्र थे और भिक्षाटन से निर्वाह करते थे। एक बार भिक्षाटन में इन्हें केवल एक सेर सत्तू मिला। अत्यंत क्षुधित होने पर भी इन्होंने उसमें से अग्नि और ब्राह्मण का भाग अलग करके शेष में अपने पुत्र तथा कुटुंबियों का भाग लगाया। जब स्वयं खाने बैठे तो ब्राह्मणवेशधारी यम और धर्म ने परीक्षा के लिए इनसे भोजन माँगा। पहले इन्होंने उन्हें अपना भाग दे दिया किन्तु जब उन्होंने अपने परिवार के लिए भी भोजन माँगा तो ब्राह्मण ने अपने बच्चों का भाग भी उन्हें समर्पित कर दिया। अंत में धर्म ने प्रसन्न होकर इन्हें सदेह स्वर्ग जाने का वरदान दिया।

उच्चैःश्रवा—१. एक प्राचीन राजा जो मत्स्यगंधा के पोषक पिता थे। २. इंद्र के श्वेत अश्व का नाम जो समुद्रमंथन के समय निकले हुए चौदह रत्नों में से एक था। इसकी कीर्ति तथा श्रुति के चारों दिशाओं में व्याप्त होने के कारण इसका नाम उच्चैःश्रवा पड़ा।

उज्जयिनी—एक प्राचीन नगरी का नाम जिसे आजकल उज्जैन कहते हैं।

उतंक (उतंग)—मतंग ऋषि के एक प्रसिद्ध हरिभक्त शिष्य जिन्हें गुरु ने त्रेता युग में श्री रामचंद्र जी के दर्शन पर्यंत तप करने की आज्ञा दी थी। आज्ञानुसार वे दण्डक वन में निरंतर तप करते रहे जहाँ उन्हें वनवासी राम के दर्शन प्राप्त हुए।

उतथ्य—एक प्राचीन ऋषि का नाम जो सुरगुरु वृहस्पति के बड़े भाई थे। एक बार वृहस्पति ने कामातुर होकर इनकी पत्नी समता के पास जाकर अपनी इच्छा प्रकट की। गर्भवती होने के कारण समता ने उनकी इच्छा का विरोध किया जिससे रुष्ट होकर वृहस्पति ने शाप दे दिया कि गर्भस्थ बालक जन्मांध हो जायगा। उतथ्य के इस जन्मांध पुत्र का नाम दीर्घतमा पड़ा। उतथ्य बड़े बुद्धिमान तथा प्रसिद्ध ज्ञानी थे। मतांतर से उतथ्य अंगिरा गोत्रीय एक ऋषि थे और इनकी पत्नी भद्रा, जो सोम की कन्या थीं, अपूर्व सुन्दरी थीं। वरुणदेव, जो उन पर पहले से ही आसक्त थे, इन्हें ऋषि के आश्रम से हर ले गये जिससे क्षुब्ध हो उतथ्य ने समुद्र का पान कर लिया, सरस्वती को अदृश्य कर दिया और समस्त भूमि को शुष्क कर दिया। अंत में विवश हो वरुण ने भद्रा को इन्हें लौटाया जिससे प्रसन्न हो उतथ्य ने पृथ्वी को पुनः जलपूर्ण कर दिया।

उत्कल—राज सुद्युम्न के पुत्र जिन्होंने अपने नाम से एक प्रदेश स्थापित किया था जो अब उड़ीसा नाम से प्रसिद्ध है।

उत्तम—राजा उत्तानपाद के पुत्र जिनकी उत्पत्ति सुरुचि

के गर्भ से हुई थी। अपनी पहली रानी सुनीति तथा उसके पुत्र ध्रुव की अपेक्षा राजा सुरुचि तथा उसके पुत्र को अधिक प्यार करते थे, किन्तु एक बार मृगया खेलते समय उत्तम पथभ्रष्ट हो गया और एक यक्ष के द्वारा मारा गया। उसकी खोज में सुरुचि भी उसी बन में जाकर पंचत्व को प्राप्त हुई। दे० 'ध्रुव' तथा 'उत्तानपाद'।

उत्तमौजस–पंचाल देशीय एक राजकुमार जिसने भारत-युद्ध में पांडवों की सहायता की थी। अभिमन्यु वध के बाद जिस दिन अर्जुन ने जयद्रथवध की प्रतिज्ञा की थी उस दिन उत्तमौजस ने अपने भाई युधामन्य के साथ अर्जुन के अंगरक्षक के रूप में अलौकिक पराक्रम का परिचय दिया था।

उत्तर--राजा विराट के पुत्र का नाम। पांडवों के अज्ञातवास की अवधि समाप्त होते ही कौरवों ने भीष्म, द्रोण आदि के साथ विराट के गोगृह पर आक्रमण कर उन्हें बंदी बना लिया। कुमार उत्तर भी इनकी बड़ी सेना देख भयभीत हो गया किन्तु वृहन्नला वेषधारी अर्जुन ने अपना वास्तविक परिचय देते हुए इनका साहस बँधाया और स्वयं युद्ध करके कौरवों को तितर-बितर कर दिया। भारत-युद्ध में उत्तर की मृत्यु शल्य द्वारा हुई थी।

उत्तरकुरु--जंबू द्वीप की उत्तरी सीमा के एक प्राचीन प्रांत का नाम जिसके निवासी भी इसी नाम से प्रसिद्ध थे।

उत्तर नैषध चरित--श्री हर्ष द्वारा प्रणीत एक महाकाव्य का नाम जिसकी रचना १००० ई० के लगभग हुई थी। इसमें राजा नल तथा दमयंती की कथा है। इसकी गणना संस्कृत के तीन सर्वश्रेष्ठ महाकाव्यों (शेष दो माघ रचित शिशुपालवध तथा भारवि रचित किरातार्जुनीय हैं) में की जाती है।

उत्तरमीमांसा--मीमांसा नामक दर्शन की दो शाखाओं में से एक। पहली का नाम पूर्वमीमांसा है।

उत्तर रामचरित–महाकवि भवभूति रचित एक प्रसिद्ध नाटक जिसका रचना-काल आठवीं शताब्दी ईसवी के लगभग माना जाता है। इसमें राम के सिंहासनारूढ़ होने के बाद के जीवन की कथा है जिसका मुख्य आधार रामायण के उत्तरकांड की कथावस्तु है। कालिदासकृत अभिज्ञान शाकुंतल तथा भवभूति का उत्तर रामचरित संस्कृत के सर्वश्रेष्ठ नाटक माने जाते हैं। इस नाटक के अनुवाद विदेशी भाषाओं में भी हो चुके हैं।

उत्तरा--राजा विराट की पुत्री का नाम। अज्ञातवास के समय वृहन्नला रूपधारी तृतीय पांडव अर्जुन को इसकी संगीत नृत्यादिक की शिक्षा का भार दिया गया था। गोग्रहणकाल में अर्जुन के पराक्रम से मुग्ध होकर विराट ने उत्तरा का विवाह अर्जुन से करना चाहा किन्तु अर्जुन ने कहा कि मेरी शिष्या होने के कारण वह मेरी पुत्री की तरह है। अन्त में अर्जुन के पराक्रमी पुत्र अभिमन्यु के साथ उसका विवाह हुआ जिससे परीक्षित का जन्म हुआ।

उत्तानपाद–स्वायंभुव मनु तथा सतरूपा के पुत्र। सुरुचि तथा सुनीति नाम की इनकी दो पत्नियाँ थीं जिनसे क्रमशः उत्तम और ध्रुव नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए थे। राजा सुरुचि को अधिक चाहते थे और इसी पक्षपात के कारण सुनीति के पुत्र ध्रुव की प्रायः अवहेलना करते रहते थे। एक बार उत्तम को पिता की गोद में बैठा देख बालक ध्रुव को भी उसके पास बैठने की स्पर्धा हुई; किन्तु सुरुचि की उपस्थिति में राजा ने ध्रुव का तिरस्कार कर दिया। ध्रुव के कोमल हृदय को इस अपमान से बड़ी ठेस लगी और वे अपनी माता के पास जाकर फूट-फूटकर रोने लगे। माता ने सदुपदेशों से उन्हें सांत्वना दी। कालांतर में ध्रुव तप करने को बन में चले गये और इन्हीं के प्रताप से अंत में उत्तानपाद को ज्ञान हुआ। दे० 'ध्रुव'।

उत्तानबर्हि–शर्याति राजा के तीन पुत्रों में से ज्येष्ठ का नाम।

उत्पलाक्ष–काश्मीर के एक प्राचीन राजा जो किसी सिद्ध महात्मा के पुत्र माने जाते हैं। इनके संबंध में यह कथा प्रचलित थी कि इनके विरोधी का तुरंत ही सर्वनाश हो जायगा।

उत्पलापीड़–राजतरंगिणी के अनुसार काश्मीर के राजा अजितापीड़ के पुत्र जिन्हें सुखवर्मा ने राजा अनंगापीड़ को राज्यच्युत कर गद्दी पर बिठाया था। तीन वर्ष राज्य कर लेने पर ये भी राज्यच्युत कर दिये गये थे।

उदंक शौल्वायन–राजर्षि जनक के समकालीन एक तत्ववेत्ता आचार्य का नाम जिन्होंने प्राण और ब्रह्म में अभेद संबंध प्रतिपादित किया था।

उदकसेन–हस्तिनापुर के एक प्राचीन राजा का नाम जिनके पिता का नाम विष्वकसेन था।

उदमय आत्रेय--एक ब्राह्मण आचार्य का नाम जो, ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार, अंग वैरोचन के पुरोहित थे।

उदय--१. न्यूहवंशी कृष्णवर्मा के पुत्र का नाम जिन्होंने उदयपुर बसाया था। २. एक पर्वत का नाम जो पुराणों के अनुसार सूर्योदय का केंद-स्थल है।

उदयन--१. कौशांबी के प्रसिद्ध चंद्रवंशी राजा जो सहस्त्रानीक के पुत्र थे और वत्सराज के नाम से प्रसिद्ध थे। उज्जयिनी की राजकुमारी वासवदत्ता स्वप्न में इन्हें देख कर इन पर मुग्ध हो गई थी। संयोगवश उदयन चंद्रसेन द्वारा बंदी बनाकर उज्जयिनी लाए गए किन्तु मंत्री के प्रयत्नों से मुक्त हो गए। स्वतन्त्र होने पर इन्होंने वासवदत्ता का अपहरण करके उसके साथ विवाह किया। यह कथा संस्कृत के प्रसिद्ध नाटक स्वप्नवासवदत्ता में वर्णित है। इनके कूटनीतिज्ञ मंत्री यौगंधरायण ने इन्हें चक्रवर्ती बनाने की प्रतिज्ञा की थी जिसमें वह पूर्णरूप से सफल हुआ। इनके चरित्र के आधार पर संस्कृत के 'प्रतिज्ञा यौगंधरायण' नामक नाटक की रचना हुई। २. अगस्त्य का एक नामांतर। ३. विष्णुपुराण के अनुसार किन्हीं दर्भक के पुत्र का नाम भी उदयन था जिसे वायु तथा ब्रह्माण्ड पुराण में उदयिन कहा गया है और भविष्य में उदयाश्व। गंगा के दक्षिण तट पर इन्होंने पुष्पपुर नामक नगर बसाया था जो पाटली पुत्र से अभिन्न ज्ञात होता है।

उदयनाचार्य--एक प्रसिद्ध नैयायिक का नाम जो बौद्ध दर्शन के प्रबल विरोधी थे। इनका शास्त्रार्थ 'नैषध चरित्र' के प्रणेता श्री हर्ष के साथ हुआ था। बौद्ध धर्म का इस देश से उच्छेद करने में इनका भी हाथ माना जाता है।

न्याय कुसुमांजलि, आत्मतत्वविवेक, न्याय परिशिष्ट, न्याय-वार्तिक तथा तात्पर्य परिशुद्धि आदि इनके कई ग्रंथ प्रसिद्ध हैं।

उदयाश्व–दे० 'उदयन'।

उदयिन–दे० 'उदयन'।

उदवसु–मिथिला के एक प्राचीन राजा जो राजर्षि जनक के पुत्र तथा सीता के भाई थे।

उदाराम–नाभादास के अनुसार एक मध्यकालीन वैष्णव भक्त तथा वैष्णवधर्म-प्रचारक का नाम।

उदारावत–भक्तमाल के अनुसार एक मध्यकालीन वैष्णव भक्त।

उद्दालक–एक प्राचीन ऋषि जो ब्रह्मविद्या के निष्णात विद्वान् और सामाजिक विधि-निषेध के प्रवर्तक माने जाते हैं। ये औपवेशि गौतम के पुत्र तथा शिष्य थे। इनका पूरा नाम उद्दालक आरुणि और इनके पुत्र का नाम श्वेतकेतु था।

उद्धव–१. श्रीकृष्ण के परामर्शदाता तथा सखा। कहा जाता है कि यह वसुदेव के भाई देवनाग के पुत्र तथा श्रीकृष्ण के चचेरे भाई थे। कृष्ण के मथुरा चले जाने के कारण ब्रज की गोपियाँ जब विरह में व्याकुल रहती थीं तो कृष्ण ने इन्हें गोपियों के समझाने के लिए भेजा था। इन्होंने गोपियों को निराकार ब्रह्म की उपासना का उपदेश दिया था। श्रीमद्भागवत में गोपियाँ उनके उपदेश को सुनकर निराकार ब्रह्म की उपासना में साकार कृष्ण को भूल गई थीं। किंतु हिंदी कृष्णकाव्य में उद्धव स्वयं गोपियों के रंग में रँग जाते हैं और निराकार ब्रह्म को छोड़कर साकार ब्रह्म अपने सखा कृष्ण की उपासना करने लगते हैं। २. भक्तमाल के अनुसार एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त तथा नाभाजी के यजमान। ३. भक्तमाल के अनुसार अग्रदास स्वामी के शिष्य तथा नाभाजी के समकालीन एक वैष्णव भक्त। इन्हें उधोजी (लघु) कहा जाता था। ४. भक्तमाल के अनुसार होशंगाबाद के निवासी एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त का नाम जिन्होंने अपनी कोठी भक्तों को दान कर दी थी। ५. भक्तमाल के अनुसार एक वैष्णव भक्त जो ज्ञानी उद्धव से भिन्न हैं और जिनकी उत्पत्ति नाभाजी के अनुसार वनचर हनुमान के वंश में हुई थी। इसीलिए इन्हें वनचर उद्धव या उद्धव वनचर भी कहते हैं।

उद्भ्रातृ–यज्ञ के बलिदान कर्म में वेद पाठ करने वाले वैदिक ब्राह्मणों का सामूहिक नाम।

उपकोसल कामलायन–कमल के पुत्र का नाम। इन्होंने सत्यकाम के यहाँ बारह वर्ष पर्यंत पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए विद्याध्ययन किया था। इनकी निष्ठा से प्रसन्न होकर सत्यकाम ने अन्य शिष्यों को दीक्षा-समारोह के पश्चात् विदा कर दिया किंतु इन्हें अत्यन्त स्नेहपूर्वक अपने ही यहाँ रखा।

उपनंद–पर्जन्यसुत नवनंदों में से तृतीय का नाम जो भक्तमाल के अनुसार कृष्ण के परम भक्त तथा सखा थे।

उपनिषद्–उपनिषद् संस्कृत साहित्य के उन विशेष ग्रंथों का नाम है जिनमें तत्वचिंतन का सर्वप्रथम प्रयास मिलता है। आत्मा, ब्रह्म, जीव, जगत् आदि गहन प्रश्नों की व्याख्या का मौलिक प्रयास इन्हीं ग्रंथों में किया गया है और फिर इन्हीं से सांख्य, वेदांत आदि प्रसिद्ध षट्दर्शनों का विकास हुआ है। इन दर्शनों में जिन तत्वों का विकास किया गया है उनके बीज उपनिषदों में वर्तमान हैं। प्राचीनता में वेदों के बाद ही उपनिषदों का स्थान है। धार्मिक दृष्टि से भी इनकी मान्यता वेदों के समकक्ष मानी जा सकती है। किंतु उपनिषदों की संख्या के संबंध में बड़ा मतभेद है। इनकी संख्या इस समय तक दो सौ के ऊपर पहुँच चुकी है जिनमें से कुछ लोग केवल चार को ही प्रामाणिक मानते हैं। विद्यारण्य स्वामी के अनुसार उपनिषदों की संख्या बारह है। सब मिलाकर तत्वचिंतन के कुल चार ही प्रसंग उपनिषदों में मिलते हैं :— १. आत्मा की व्यापकता, २. आत्मा का देहांतर या पुनर्जन्म ग्रहण, ३. सृष्टि तत्व, ४. प्रलय तत्व। छांदोग्य, केन, ईश, कठ तथा वृहदारण्यक मुख्य उपनिषद् माने जाते हैं।

उपमन्यु वासिष्ठ–१. वसिष्ठ कुलोत्पन्न श्री व्याघ्रपाद के पुत्र का नाम जिनका आश्रम हिमालय पर्वत पर था। इनकी माता का नाम अंबा तथा गुरु का नाम आपोदधौम्य था। उपमन्यु अपनी गुरुभक्ति के कारण बहुत प्रसिद्ध हैं। ये भिक्षा से बचे हुए अन्न पर अपना निवाह करते थे किंतु गुरु के निषेध करने पर उन्होंने उसका त्याग कर दिया। भिक्षा में पाई हुई समस्त सामग्री गुरु को देकर स्वयं स्तन्यपान के पश्चात् बछड़ों के मुँह में लगे झाग, फेन इत्यादि से निर्वाह करने लगे। उनकी आज्ञाकारिता की परीक्षा लेने के लिए गुरु ने इसका भी निषेध कर दिया। आदेशानुसार उपमन्यु ने उसका भी त्याग कर दिया किंतु एक बार अत्यंत क्षुधित होने पर इन्होंने कपास के पत्ते चबा लिए, जिससे उनके नेत्रों की ज्योति जाती रही और भटक कर ये किसी कूएँ में गिर गए। दूसरे दिन खोजते हुए इनके गुरु ने इस दशा में देखकर इन्हें देववैद्य अश्विनीकुमारों की स्तुति करने का उपदेश दिया। अश्विनीकुमारों ने इन्हें खाने की औषधि दी किंतु इनकी गुरुभक्ति उस सीमा तक पहुँच चुकी थी कि बिना उनकी आज्ञा के उन्होंने औषधि ग्रहण करना भी उचित न समझा। इनकी गुरुभक्ति से प्रसन्न हो अश्विनीकुमारों ने इन्हें दिव्यनेत्र प्रदान किए और गुरु ने इन्हें समस्त शास्त्र, वेद आदि का ज्ञान वरदान रूप में दिया। उपमन्यु के नाम से निम्नलिखित ग्रंथ प्रसिद्ध हैं :—१. नंदिकेश्वर कृत काशिका पर टीका, २. अर्द्धनारीश्वराष्टक, ३. तत्वविमर्षिणी मंत्र, ४. शिवाष्टक, ५. शिवस्तोत्र तथा ६. उपमन्यु निरुक्त। २. वेद ऋषि के एक शिष्य का नाम। ३. कृष्णद्वैपायन व्यास के पुत्र का नाम। ४. इंद्रप्रमति पुत्र वसु के पुत्र का नाम।

उपमश्रवस्–मित्रातिथी के पुत्र का नाम।

उपरिचर वसु–सुधन्वा के वंश का एक प्रसिद्ध चंद्रवंशी राजा जो चेदि जनपद के अधिपति थे। इनके पिता का नाम कृती (मतांतर से कृतयज्ञ, कृतक) तथा इनके पाँच पुत्रों के नाम क्रमश: प्रत्यग्र, कुशांब वृहद्रथ, मावेल्ल और मत्स्य थे। इनमें वृहद्रथ तथा मत्स्य (यदु)

विशेष प्रसिद्ध हुए थे। इन्होंने अपने विशाल साम्राज्य को अपने पुत्रों में बाँट दिया था जिसके अनुसार यद्रु को मत्स्य देश मिला और जयद्रथ को मगध। राजा उपरिचर बड़े मृगयाव्यसनी थे किंतु कालांतर में इनके स्वभाव में बहुत परिवर्तन हो गया और ये अपना सारा समय तपश्चर्या में देने लगे। यहाँ तक कि इंद्र ने अपना इंद्रासन छिन जाने के डर से देवताओं को इन्हें विरत करने के लिए भेजा। इन्होंने उनकी प्रार्थना मान ली जिससे प्रसन्न हो इंद्र ने इन्हें एक माला और लाठी उपहार में दी थी।

उपरिमंडल–भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम। इनका दूसरा नाम परिमंडल भी मिलता है।

उपलोम–वसिष्ठ कुलोत्पन्न एक ऋषि का नाम।

उपवर्ष–पाटलीपुत्र के श्री शंकर स्वामी के पुत्र का नाम। ये पाणिनि के गुरु के भाई माने जाते हैं। शबर तथा शंकराचार्य ने इनका कई बार उल्लेख किया है। इन्होंने मीमांसा-सूत्रों पर वृत्ति की है। इनका दूसरा नाम बौधायन भी बताया जाता है, किंतु भाष्यकार इन दोनों को एक नहीं मानते।

उपसुंद–हिरण्यकशिपु के वंशज निसुंद अथवा निकुंभ नामक राक्षस के दो पुत्रों में से एक। इसके दूसरे भाई का नाम सुंद था। दोनों भाइयों ने शक्ति-प्राप्ति के लिए विंध्य गिरि पर घोर तपस्या की जिससे प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने यह वर दिया कि वे परस्पर लड़ कर चाहे प्राण खो दें किंतु उन्हें कोई दूसरा नहीं मार सकेगा। फलतः उन्होंने मनमाने अत्याचार करने आरंभ किए जिससे त्रैलोक्य काँप उठा। अंत में देवताओं की प्रार्थना पर ब्रह्मा ने तिलोत्तमा नामक एक अनुपम सुंदरी की सृष्टि करके उसे भूलोक में इनके पास भेजा जिसे देखकर दोनों कामातुर होकर परस्पर लड़ते हुए नष्ट हो गए। दे॰ 'सुंद'।

उपस्त–एक सामवेदी ब्राह्मण का नाम।

उपावृद्धि–वसिष्ठ कुलोत्पन्न एक ऋषि का नाम।

उबीणा–भक्तमाल के अनुसार एक प्रसिद्ध हरिभक्ति परायण महिला जिनका समय नाभा जी से कुछ पहले का था।

उभयजात–भृगुकुलोत्पन्न एक ब्रह्मर्षि का नाम।

उभयबाई–भक्तमाल के अनुसार दो अनन्य हरिभक्ति परायणा राजकन्याएँ। ये संत-दर्शन के लिए इतनी आकुल रहा करती थीं कि उपने पुत्र को केवल इसलिए विष दे दिया था कि उसकी मृत्यु का रोना-धोना सुनकर संत लोग अवश्य आएँगे और इसी बहाने उनके दर्शन मिलेंगे। नाभा जी के अनुसार संतों की कृपा से इनके मृत पुत्र पुनः जीवित हो उठे थे।

उमा–महादेव की अर्द्धांगिनी। मेनका के गर्भ से उत्पन्न हिमालय की कन्या। महादेव की कठोर तपस्या में लीन रहने के कारण एक दिन इनकी माता ने इनसे कहा था, 'उमा' अर्थात् कठोर तपस्या न करो, तभी से इनका नाम 'उमा' हो गया। अपनी कठोर साधना से महादेव को प्रसन्न करके ही इन्होंने उन्हें अपने वर के रूप में पाया था। इनके नाम का प्रथम उल्लेख केन उपनिषद् में ब्रह्मा तथा अन्य देवताओं के साथ मिलता है। 'मानमंजरी नाम-माला' में इनके निम्नलिखित पर्याय और मिलते हैं : अपर्णा, ईश्वरी, गौरी, गिरिजा, मृडा, चंडिका, अंबिका, भवा, भवानी, आर्या, मेनकजा, अजा, सर्वमंगला तथा माया।

उरगाद–सर्पों का भक्षण करनेवाले गरुड़। दे॰ 'गरुड़'।

उरुक्रिय–वृहद्बल के पौत्र तथा वृहद्रण के पुत्र का नाम। इनका दूसरा नाम उरुक्षय था।

उरुक्षय–दे॰ 'उरुक्रिय'।

उरुश्रवस्–सत्यश्रवा के पुत्र का नाम।

उर्मि–सोम के पुत्र का नाम।

उर्मिला–१. सीरध्वज जनक की कन्या तथा लक्ष्मण की स्त्री का नाम। २. सोमदेव नामक गंधर्व की माता का नाम।

उर्व–ब्रह्मा के मानस पुत्र एक ऋषि का नाम जिनके पुत्र का नाम और्व था।

उर्वरा–एक अप्सरा का नाम।

उर्वरी मान–सावर्णि मनु के पुत्र का नाम।

उर्वशी–स्वर्ग की एक अप्सरा का नाम जिसका जन्म नारायण की जंघा से माना जाता है। एक बार इंद्र की सभा में नृत्य करते हुए वह राजा पुरूरवा पर मुग्ध हो गई जिससे उसका ताल भंग हो गया। इस पर इंद्र ने उसे मर्त्यलोक में जन्म ग्रहण करने का शाप दिया। उर्वशी ने पुरूरवा का पत्नीत्व इस शर्त पर स्वीकार किया कि यदि वह राजा को नग्न देख ले अथवा वे उसकी इच्छा के विरुद्ध समागम करें, अथवा उसके दो मेष यदि स्थानांतरित कर दिये जायँ तो वह उन्हें छोड़ कर पुनः स्वर्गलोक में चली जायगी। दोनों दीर्घकाल तक साथ रहे और पुरूरवा से उर्वशी के नौ पुत्र भी उत्पन्न हुए, पर उर्वशी की अनुपस्थिति उधर गंधर्वों को बहुत खलती थी और उन्होंने विश्ववसु नामक एक गंधर्व को उर्वशी के मेषों को चुराने के लिए भेजा। उस समय पुरूरवा नग्न थे और मेषों की चुराने की आहट पाकर वे उसी दशा में उनके पीछे दौड़े। इसी अवसर पर गंधर्वों ने सर्वत्र प्रकाश कर दिया जिससे उर्वशी ने महाराज को नग्न रूप में देख लिया। सारे प्रतिबंध टूट जाने पर उर्वशी शापमुक्त होकर पुनः स्वर्गलोक में चली गई। भागवत के अनुसार उर्वशी स्वर्ग की सर्वाधिक सुंदरी अप्सरा थी। ऋग्वेद में उर्वशी का संवादात्मक एक सूक्त है। महाकवि कालिदास का प्रसिद्ध नाटक विक्रमोर्वशी इसी की कथा पर आधारित है। महाभारत के अनुसार एक बार इंद्र के यहाँ अस्त्र विद्या सीखने आए हुए अर्जुन पर उर्वशी मोहित हो गई थी किंतु अर्जुन ने उसे माता के रूप में ही देखा जिससे रुष्ट होकर उसने इन्हें वर्ष भर नपुंसक रहने का शाप दे दिया था।

उर्विजा–पृथ्वी से उत्पन्न सीता का एक पर्याय। दे॰ 'सीता'।

उर्वीशु–पद्मपुराण के अनुसार एक प्रसिद्ध पापी का नाम जिसका उद्धार व्रत और दान से हुआ था।

उर्वी–पृथ्वी का एक पर्याय। दे॰ 'पृथ्वी'।

उर्वीभाव्य–मत्स्यपुराण के अनुसार पुरंजय के पुत्र का नाम।

उलवातायन–ऋग्वेद के एक सूक्तद्रष्टा आचार्य का नाम।

उलवाष्णि वृद्ध–ब्राह्मण-साहित्य के एक आचार्य का नाम।

उलुक्य ज्ञानश्रतेय–ब्राह्मण-ग्रंथों में उद्धृत एक आचार्य का नाम।

उलूक–१. प्रसिद्ध ऋषि विश्वामित्र के पुत्र का नाम। २. महाभारतकालीन शकुनी के पुत्र जो दुर्योधन के द्वारा दूत बनाकर युधिष्ठिर के पास युद्ध के अह्वान का संदेश सुनाने भेजे गये थे। युद्ध के अठारहवें दिन सहदेव के भाले से इनकी मृत्यु हुई थी। ३. हिरण्याक्ष के चार पुत्रों में से एक का नाम। ४. महाभारत आरण्यक पर्व के अनुसार द्रौपदी के स्वयंवर में उपस्थित एक राजा का नाम। ५. वैशेषिक दर्शनकार का नामांतर जिनका दर्शन 'औलूक्य दर्शन' के नाम से प्रसिद्ध है।

उलूकी–कश्यप तथा ताम्रा की कन्या का नाम जो महाभारत के अनुसार उलूकों की जननी मानी जाती हैं।

उलूखल–हिरण्यनाभ के शिष्यों में से एक जो ब्रह्मांड पुराण के अनुसार व्यास की शिष्य-परम्परा में आते हैं।

उलूप–विश्वामित्र कुलोत्पन्न ऋषिगण।

उलूपी–एक नागकन्या का नाम, जो एरावत (नाग) के वंशज कौरव्य की पुत्री थीं। इसका विवाह पहले एक नाग से हुआ था किंतु गरुड़ द्वारा उसके भक्षित हो जाने पर उलूपी को अकाल वैधव्य भोगना पड़ा। इसी बीच ब्रह्मचारी वेश में तीर्थाटन करते हुए अर्जुन का उधर जाना हुआ जो अपनी प्रतिज्ञा भंग करने के कारण युधिष्ठिर की आज्ञा से बारह वर्ष का वनवास व्यतीत कर रहे थे। उलूपी इन पर मुग्ध हो इन्हें अपने निवास स्थान पाताल में ले गई जहाँ उसने अर्जुन से गंधर्व विवाह करने की इच्छा प्रकट की। अर्जुन ने अपनी परिस्थितियों पर विचार करते हुये पहले तो विवाह करने से इनकार किया किंतु उलूपी तथा उसके अभिभावक एरावत के निरंतर आग्रह के कारण उससे गांधर्व विवाह कर ही लिया जिससे इरावान नामक एक पुत्र की उत्पत्ति हुई। उलूपी ने अंत तक अर्जुन का साथ दिया और सशरीर स्वर्गारोहण के समय तक वह उनके साथ रही। अंत में वहीं गंगा में कूद कर अपना शरीर त्याग दिया। दे० 'अर्जुन' तथा 'इरावान'।

उल्कामुख–वाल्मीकि रामायण के अनुसार राम की सेना के एक वानर वीर का नाम। जो अंगद के साथ सीता के अन्वेषण में दक्षिण दिशा को गया था।

उल्कासुभट–भक्तमाल के अनुसार प्रसिद्ध वानरवीर और राम सेना के प्रमुख सामंतों में से एक। इसने राम-रावण युद्ध में अद्भुत पराक्रम दिखाया था।

उल्मुक–१. बलभद्र तथा रेवती के कनिष्ठ पुत्र का नाम, जिनके बड़े भाई का नाम निशठ था। २. चक्षुर्मनु के कनिष्ठ पुत्र का नाम।

उल्वण–वसिष्ठ और अरुंधती के सात पुत्रों में से एक का नाम।

उवट–काश्मीर-निवासी एक प्रसिद्ध वेदभाष्यकार आचार्य का नाम जो काव्यप्रकाशकार मम्मट के कनिष्ठ भ्राता माने जाते हैं। ये लोग तीन भाई थे—कैयट, मम्मट तथा उवट या औपट। इनके पिता का नाम जैयट था, किंतु उवट ने एक स्थल पर अपने पिता का नाम वज्रट दिया है जिससे दूसरे मत के विद्वानों का अनुमान है कि यह मम्मट के चचेरे भाई थे और वज्रट तथा जैयट सगे भाई थे। इनका एक प्रसिद्ध ग्रंथ वाजसनेयी संहिता का भाष्य है जिससे यह भी ज्ञात होता है कि ये लोग अवंतिराजा भोज के समकालीन थे।

उशंगु–महाभारतकालीन एक ऋषि का नाम जिनके आश्रम में आर्ष्टिषेण, विश्वामित्र, सिंधुद्वीप आदि मुनियों ने तप कर सिद्धिलाभ किया था। बलराम जी भी इनके स्थान पर तीर्थ करने गए थे।

उशना–१. असुरों के कुलगुरु तथा अध्वर्यु जो द्वापर के व्यास माने जाते हैं। उशना धर्मशास्त्र के नाम से सात अध्यायों का एक ग्रंथ उपलब्ध हैं जिसमें श्राद्ध, प्रायश्चित्त आदि का विधि-विधान वर्णित है। याज्ञवल्क्य ने इनका उल्लेख किया है। २. शुक्राचार्य को कुछ लोग इन्हीं का नामांतर मानते हैं। राजकीय विषयों पर इनका शुक्रनीति नामक एक ग्रंथ उपलब्ध है। औशनस उपपुराणों का उल्लेख भी कुछ स्थलों पर मिलता है। ३. एक मत से ये भृगु के पुत्र माने जाते हैं। ४. भागवत मत से उशना धर्म के तथा भविष्य मत से तामस के पुत्र थे। ५. उत्तम सावर्णि तथा स्वयंभुव मनु के पुत्र के नाम भी उशना थे। ६. औत्य मन्वन्तर के सप्तर्षियों में भी एक का नाम उशनष था।

उशिज–१. कलिंगराज की महिषी की एक दासी का नाम जिससे ऋग्वेद में कक्षिवात् की माता कहा गया है। एक बार राजा ने अपनी महिषी को दीर्घतमस् नामक अंध ऋषि के आलिंगनपाश में बद्ध होने की आज्ञा दी थी, किंतु रानी ने अपने स्थान पर अपनी दासी उशिज को भेज दिया। ऋषि ने अपने अंतर्ज्ञान से सब कुछ जानकर भी उशिज को पवित्र कर दिया। उसके गर्भ से कक्षिवान की उत्पत्ति हुई जो औरस ब्राह्मण तथा क्षेत्रज क्षत्रिय हुए। दे० 'उतथ्य' तथा 'दीर्घतमस'। २. अंगिरा कुलोत्पन्न एक ऋषि जो दीर्घतमा ऋषि के पिता माने जाते हैं।

उशीनर–एक प्रसिद्ध चंद्रवंशी चक्रवर्ती राजा का नाम जिनके पिता चक्रवर्ती महामना थे। मृगा, कृमी, नवा, दर्वा तथा दृशद्वती नामक इनकी पाँच स्त्रियाँ थीं जिनसे मृग, नम, कृमि, सुव्रत तथा शिवि औशीनर नामक पाँच पुत्र पैदा हुए थे। इनमें अंतिम पुत्र सबसे अधिक प्रसिद्ध हुआ। दे० 'शिव'। इसकी तथा इसके भाई तितिक्षु दोनों की ही स्वतंत्र वंशशाखाएँ प्रचलित हुईं।

उषा–बाणासुर की कन्या का नाम। एक बार स्वप्न में इन्होंने एक सुंदर राजकुमार को देखा और फिर उसी के विरह में सदैव खिन्न रहने लगीं और दिन प्रतिदिन दुर्बल होने लगीं। यह बात जानकर इनकी प्रिय सखी चित्रलेखा ने देश के सभी प्रसिद्ध राजकुमारों के चित्र खींचना आरंभ किया क्योंकि उषा को उस तरुण की आकृति के अतिरिक्त और किसी भी बात का पता न था। चित्रशाला में प्रद्युम्न के पुत्र अनिरुद्ध का भी चित्र था जिसे

देखते ही उषा के नेत्र लज्जा तथा अनुराग से लाल हो गये। चित्रलेखा ने योगबल से सोते हुए अनिरुद्ध का अपहरण कर उसका उषा से गांधर्व विवाह कराया और चार मास तक एक गुप्त स्थान में दोनों को साथ रखा। वाणासुर को सेवकों द्वारा जब इस बात का पता लगा तब उसने अनिरुद्ध को बंदी बनाकर कारा में डाल दिया। नारद के द्वारा यह समाचार प्राप्त होने पर यादवों की सेना ने उस पर आक्रमण कर दिया। घोर युद्ध के अनन्तर वाण पराजित हुआ। उसकी माता कोटरा के अत्यंत अनुनय-विनय पर कृष्ण ने उसे जीवन-दान दिया। वाणासुर ने बड़ी धूमधाम से उषा का विवाह अनिरुद्ध के साथ करके यादवों को सम्मान के साथ विदा किया।

उहाक--वसिष्ठ कुलोत्पन्न गोत्रकारों का सामूहिक नाम।

ऊरु--अंगिरस् गोत्रोत्पन्न एक सूक्त-दृष्टा का नाम।

ऊर्ज--१. स्वारोचिष मनु का नाम। २. सप्तर्षियों में से एक। ३. उत्तम मनु के पुत्र का नाम।

ऊर्जयोनि--विश्वामित्र के पुत्र का नाम।

ऊर्जस्वती--प्रियव्रत एवं बर्हिष्मती की कन्या का नाम, जो शुक्र की पत्नी मानी जाती है।

ऊर्जस्विन्--वैवस्वत मन्वंतर के इंद्र का नाम।

ऊर्जा-दक्ष प्रजापति की एक कन्या का नाम, जो स्वायंभुव मन्वंतर में वसिष्ठ की पत्नी थीं। वसिष्ठ से इनके चित्रकेतु, सुरोचि, विरलामित्र, उल्वण, वसुमृत, यान तथा द्युमान नामक सात पुत्र हुये थे।

ऊर्जित--कार्तवीर्य के पुत्रों में से एक का नाम।

ऊर्णनाभ--धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

ऊर्णनाभि--अत्रि कुलोत्पन्न एक ऋषि का नाम।

ऊर्णा--१. स्वायंभुव मन्वंतर में मरीचि नामक प्रजापति की पत्नी का नाम। २ राजा चित्ररथ की पत्नी।

ऊर्ध्वकेतु--१. सनद्वाज जनक के पुत्र तथा अज के पिता। २. कश्यप तथा सुरभि के पुत्रों में से एक।

ऊर्ध्वग--कृष्ण तथा लक्ष्मण के एक महारथी पुत्र।

ऊर्ध्वग्रावन आर्बुदि--एक सूक्तद्रष्टा।

ऊर्ध्वदृष्टि--पुलह तथा श्वेता के पुत्र जिनके पांच पुत्र तथा पाँच कन्याएँ थीं।

ऊर्ध्वबाहु--रैवत मन्वंतर के सप्तर्षियों में से एक।

ऊर्व--च्यवन के पुत्र तथा और्व के पिता।

ऋक्ष--१. शुक के पुत्र तथा विरजा के पति। २. ऋच के पुत्र तथा तक्षक की कन्या ज्वलंती के पति का नाम। ३. देवातिथि के पुत्र का नाम। ४. अजमीढ़ तथा द्युमिनी के पुत्र का नाम।

ऋक्षदेव--शिखंडी के दो पुत्रों में से एक का नाम।

ऋक्षपुत्र--यह अक्रोधन के पुत्र का नाम।

ऋक्षरजस्--एक बानर का नाम जिसकी उत्पत्ति ध्यान-मग्न ब्रह्मा के अश्रुबिंदु से मानी गई है।

ऋक्षवान्--पुराणों के अनुसार नर्मदा नदी के समीप का एक पर्वत जो रैवतक पर्वत का एक भाग माना जाता है।

ऋग्वेद--चार वेदों में प्रथम तथा मुख्य वेद का नाम। यह दस मंडलों में विभक्त है, इन मंडलों में पचासी अनुवाक हैं जिनमें एक हजार अट्ठाईस सूक्त हैं। प्रत्येक मंडल के अनुवाक तथा सूक्तों का विवरण नीचे दिया जा रहा है :—

मंडल सं०	अनुवाक सं०	सूक्त सं०
१	२४	१९१
२	४	४३
३	५	६२
४	५	५८
५	६	८७
६	६	७५
७	६	१०४
८	१०	१०३
९	७	११४
१०	१२	१९१
कुल १०	८५	१०२८

शौनक के चरणव्यूह नामक ग्रंथ के अनुसार ऋग्वेद में आठ भेद या स्थान हैं जिनके नाम हैं : चर्चा, (श्रादक-चर्चक) श्रवणीय, पार, क्रमपाठ, क्रमजटा, क्रमरथ, क्रम-शर और क्रमदंड, ऋग्वेद की पाँच शाखाएँ हैं— आश्वलायनी, साङ्ख्यायनी, शाकल्या, वास्कला और मांडूका। ऋग्वेद की बहुत सी शाखाएँ चरणव्यूह के मत से अप्राप्त हो गई हैं। अन्य ग्रंथों के अनुसार ऋग्वेद की कुल २१ शाखाएँ थीं किंतु इस समय केवल शाकल की ही शाखाएँ प्राप्त हैं। यज्ञ की विधि और नियमावली के पश्चात् ऋग्वेद के मुख्य दो भाग हैं जो ऐतरेय ब्राह्मण तथा कौशीतकी अथवा सांख्यायन ब्राह्मण के नाम से प्रसिद्ध हैं—पहली शाखा के प्रणेता ऐतरेय तथा दूसरी के कुषीतक ऋषि थे। वेदव्यास ने सर्वप्रथम वेदों का विभाग करके अपने शिष्य पैल को उनकी शिक्षा दी थी। इन्होंने उसे दो भागों में विभक्त कर अपने शिष्य इंद्र प्रमिति तथा वाष्कलि को दे दिया था। वाष्कलि ने अपना भाग चारों भागों में विभक्त करके अपने चार शिष्यों में बाँट दिया था। इस प्रकार ऋग्वेद अनेक शाखा तथा उप-शाखाओं में विभक्त हुआ जिनमें से अधिकांश का पता इस समय नहीं है। प्रत्येक वेद मंत्र तथा ब्राह्मण नामक दो मुख्य भागों में विभक्त है, जिनमें मुख्य भाग मंत्रों का ही है। इस विभाग में अग्नि, जल, इंद्र, उषा, सूर्य आदि वैदिक देवताओं की छंदोबद्ध स्तुतियाँ हैं। ब्राह्मण भाग गद्य में है तथा अपेक्षाकृत बाद का है। इसमें मंत्रों की व्याख्या, फल-महिमा, दार्शनिक विश्लेषण तथा दृष्टांत के रूप में उपाख्यानों का वर्णन है। ब्राह्मण भाग में आरण्यक और उपनिषद और जोड़ दिये गये हैं। भारतीय दर्शन शास्त्र के बीज इन्हीं उपनिषदों में मिलते हैं। इनमें अध्यात्म विद्या तथा आत्मा एवं परमात्मा आदि चिरंतन तात्विक विषयों का निरूपण है। समस्त वैदिक साहित्य स्थूल रूप से दो खंडों में विभक्त किया जा सकता है—१. कर्मकाण्ड तथा २. ज्ञानकाण्ड। मंत्र तथा सूक्त आदि कर्मकाण्ड और तात्विक विवेचन ज्ञानकाण्ड

के अंतर्गत आते हैं। ब्राह्मण तथा उपनिषदों का संबंध ज्ञानकाण्ड से ही है। समष्टि रूप से समूचा वैदिक साहित्य 'श्रुति' नाम से प्रसिद्ध है। 'श्रुति' का अर्थ है 'सुना हुआ', अर्थात् जो कुछ ज्ञान ऋषियों से सुना गया वही 'श्रुति' है। मुख्य वेद ऋग्वेद ही है और इसी के आधारभूत यजुः और साम हैं। ऋग्वेद के भी मौलिक सूक्त १०१७ ही हैं जिनमें वालखिल्यों के ११ मंत्र और जोड़ने पर १०२८ होते हैं। इनका दूसरा विभाजन अष्टकों के अनुसार है। ये समस्त सूक्त आठ अष्ठकों तथा उतने ही अध्यायों में उपविभक्त हैं, जिनमें २००६ वर्ग १०,४१७ ऋचाएँ तथा १५३,८२६ पद हैं। मंडलों के अनुसार ऋग्वेद का विभाजन पहले दिया जा चुका है। कुछ विद्वान दसवें मंडल को अपेक्षाकृत बाद का मानते हैं। ऋग्वेद के कुछ मंत्रों में, मुख्यतः दसवें मंडल की कुछ ऋचाओं में, एक परम आत्मा की सत्ता का धुँधला निरूपण मिलता है। शेष मंत्रों में अग्नि, सूर्य, जल, वायु आदि प्राकृतिक देवताओं की प्रार्थना की गई है। इनसे ऋषियों ने जनसमूह के शुभ, कल्याण तथा उन्नति की प्रार्थना की है और अपने गोधन तथा स्वास्थ्य की वृद्धि तथा रक्षा के लिए मिन्नतें माँगी हैं। मुख्य वैदिक देवता अग्नि सूर्य और इंद्र हैं। वस्तुतः अग्नि की उपासना सबसे अधिक प्रधान है जिनकी उपासना यज्ञ के रूप में शारीरिक रक्षा, कृषि, वनस्पति, फल तथा गोधन की रक्षा और वृद्धि के लिए होती थी। इंद्र की उपासना वर्षा के देवता के रूप में की गई है जिससे कृषि की उन्नति होती थी। अन्य आराध्य देवताओं में प्रकाश तथा उष्णता प्रदान करनेवाले सूर्य, द्यायुस् पितृ, वरुण, उषा, अश्विनीकुमार तथा मरुत् और पृथ्वी आदि मुख्य हैं। प्रत्येक मंत्र का एक ऋषि होता था जो उसका प्रणेता अथवा द्रष्टा माना जाता था। वसिष्ठ, विश्वामित्र, भरद्वाज आदि ऐसे ही ऋषि थे। यह कहना बड़ा कठिन है कि ये मंत्र पहले पहल कब लिपिबद्ध किये गये थे। शताब्दियों तक इनका पाठ मौखिक परंपरा से ही चलता रहा—पिता पुत्र को कंठस्थ करा देता था और वह पुत्र अपने पुत्र को। प्रत्येक हिंदू (द्विजाति) के लिए तीन जन्म-ऋण माने गये हैं—देवऋण, पितृऋण तथा ऋषि-ऋण। ऋषिऋण से उद्धार पाने के लिए यह आवश्यक था कि सूक्तद्रष्टा ऋषियों की रचना अर्थात् वेदों का अध्ययन किया जाय और अपनी संतान को भी उन्हें कण्ठस्थ करा दिया जाय। इसी विधि से प्राचीन आर्यों ने दीर्घकाल तक वेदों की रक्षा की थी। मूलरूप की रक्षा के लिए उच्चारण की परिपाटी निर्धारित की गई थी, वह आश्चर्यजनक और असाधारण है। इसी सावधानी के कारण वेदों का पाठ सहस्रों वर्षों तक ज्यों का त्यों शुद्ध रखा जा सका। पर प्रत्येक शाखा के आचार्य ने अपनी विशिष्ट परिपाटी से अपने शिष्यों को पाठ कण्ठस्थ कराया अतः स्वाभाविक रूप से वेद कई 'शाखाओं' या 'स्कूलों' में विभक्त हो गया। अंत में कृष्णद्वैपायन व्यास ने पाठों का मिलान करके उसे सुव्यवस्थित तथा सुश्रृंखलित रूप में प्रकट किया। वेदों को कुछ लोग अपौरुषेय तथा अनादि मानते हैं पर अधिकांश पुरातत्ववेत्ताओं के अनुसार इनकी रचना १५०० से १००० ई० पू० के बीच हुई थी। दे० 'वेद'।

ऋच--१. एक राजकुमार का नाम। जो विष्णुपुराण के अनुसार सुनीति का पुत्र था। इसका एक नामांतर रुच भी मिलता है। दे० 'रुच'। २. देवातिथि तथा मर्यादा के पुत्र और ऋक्ष के पिता।

ऋचा--ऋग्वेद के मंत्रों का नाम, जिन्हें दीक्षित होता यज्ञों में पढ़ते थे।

ऋची--आप्नवान की पत्नी का नाम।

ऋचीक--भृगु वंश के एक प्रसिद्ध ऋषि, जो सत्यवती के स्वामी उर्व के पुत्र तथा यमदग्नि के पिता थे। इनकी पत्नी सत्यवती विश्वामित्र की भगिनी तथा गाधि की कन्या थी। महाभारत तथा विष्णु-पुराणों के अनुसार इन्होंने वृद्धावस्था में सत्यवती के पाणिग्रहण की इच्छा प्रकट की थी जिस पर गाधि ने इनसे १००० ऐसे अश्व माँगे जिनके एक कान काले हों। ऋचीक ने वरुण से ऐसे घोड़ों को प्राप्त करके दे दिया और सत्यवती को प्राप्त किया।

ऋचीय- पुरुवंशीय रौद्राश्व के पुत्रों में से एक का नाम।

ऋजाश्व--एक जानपद का नाम, जिसने एक बार सौ भेड़ियों को मारकर एक मादा भेड़िया को खाने के लिये दिया था, इससे क्रुद्ध हो इसके पिता ने इसकी आँखें फोड़वा दी थीं। मादा भेड़िया ने इनकी आँखें पूर्ववत् कर देने के लिए देववैद्य अश्विनीकुमारों की प्रार्थना की जिससे प्रसन्न हो उन्होंने इसे दिव्य नेत्र प्रदान किये।

ऋजिश्वन्--वैदिक युग के एक राजा का नाम, जो इंद्र का मित्र था और दस्युओं के विरुद्ध युद्ध करने में इसे इंद्र से सहायता भी प्राप्त हुई थी।

ऋजिश्वन् भारद्वाज--एक सूक्तद्रष्टा ऋषि का नाम।

ऋजु--(ऋजुदाय)--वसुदेव तथा देवकी के एक पुत्र जिनका नाम भागवत के अनुसार ऋजु, विष्णु पुराण के अनुसार ऋभुदास, मत्स्य पुराण के अनुसार ऋजिवास तथा वायु पुराण के अनुसार ऋजुदाय था।

ऋणंचय--एक प्राचीन राजर्षि तथा मंत्रद्रष्टा का नाम, जिन्होंने वभ्रु नामक एक सूक्तद्रष्टा को बहुत दान दिया था।

ऋणज्य--अठारहवें द्वापर के एक व्यास का नाम।

ऋतंभर--एक राजर्षि का नाम, जिन्होंने जाबालि ऋषि की गाय की बड़ी सेवा की थी जिसके फलस्वरूप इन्हें सत्यवान् नामक पुत्र प्राप्त हुआ था।

ऋत--१. अंगिरस पुत्रों में से एक का नाम। २. सत्य का नाम। ३. धर्म के एक पुत्र का नाम जिसकी उत्पत्ति दक्ष प्रजापति की एक कन्या से हुई थी। ४. मिथिलाधिपति विजय जनक के एक पुत्र का नाम। ५. रुद्र सावर्णि मनु का एक नामांतर।

ऋतध्वज--राजा प्रतर्दन का एक नामांतर अथवा उनकी उपाधि। गालव ऋषि की तपस्या में दैत्य लोग बड़ा विघ्न डाला करते थे अतः इस उत्पात को रोकने के लिये इसके पिता शत्रुजित ने इन्हें भेजा। वहाँ बाराह रूप में

आये हुए एक शत्रु का पीछा करते हुए वे एक विवर में घुस गये जहाँ कुछ दूर जाने पर दिव्य प्रकाशयुक्त राजभवन में एक परम सुंदर किशोरी मिली जो इनके स्वरूप पर मुग्ध होकर इन्हें देखते ही मूच्छित हो गई। वह गंधर्व विश्वावसु की कन्या मदालसा थी। सखियों ने उसका उपचार कर ऋतुध्वज को उसका परिचय दिया। पाताल लोक के उस भवन में वह वज्रकेतु दानव के पुत्र पाताल केतु द्वारा अपहृत होकर लाई गई थी और कारा में बंद रखी गई थी। सखियों ने ऋतध्वज से उसके उद्धार की प्रार्थना की, जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया और दैत्य-सेना का संहार कर मदालसा को साथ लेकर अपने राज्य में लौट आये। कुछ समय के उपरांत तपोवन के ऋषियों की सहायता के लिये पुनः ऋतध्वज की आवश्यकता पड़ी। इस बार पातालकेतु के भाई तालकेतु ने अपने भाई का बदला चुकाने का पूरा निश्चय किया और उसने एकांत में मिलकर छल से उनका मणिजटित हार प्राप्त कर लिया। उसे लेकर वह शत्रुजित की सभा में उपस्थित हुआ और वहाँ यह समाचार फैला दिया कि दानवों के साथ युद्ध करने में राजकुमार ऋतध्वज मारे गये। उनकी मृत्यु का समाचार पाकर मदालसा ने शोक विह्वल हो प्राण त्याग दिया। इधर मदालसा की मृत्यु का समाचार जब उसने ऋतुध्वज को सुनाया तो वे भी शोक में पागल हो गये; किंतु नागराज के पुत्रों ने इनका दुःख दूर करने की प्रतिज्ञा की और शिव तथा पार्वती को तप से प्रसन्न कर यह वर प्राप्त कर लिया कि मदालसा जिस रूप में मरी थी उसी रूप में नागराज के यहाँ जन्म ग्रहण करेगी और हुआ भी ऐसा ही। नागराज ने ऋतध्वज को बुलाकर उनसे अभिनव मदालसा का पाणिग्रहण कराया। दोनों का यह मिलन स्थायी हुआ।। मदालसा को ऋतध्वज से चार पुत्र उत्पन्न हुए : चिक्रांत, सुबाहु, शत्रुमर्दन और अलर्क। इन चारों पुत्रों की शिक्षा स्वयं सती मदालसा द्वारा ही हुई जिसके प्रभाव से चारों भाइयों ने अपने-अपने क्षेत्र में अश्रुतपूर्व प्रसिद्धि प्राप्त की। दे० 'प्रतर्दन' तथा 'मदालसा'।

ऋतायन--राजा सल्य के पिता का नाम।

ऋतुजित--विष्णु पुराण के अनुसार अंजन के पुत्र का नाम।

ऋतुध्वज--दे० 'ऋतुध्वज'।

ऋतुपर्ण--इक्ष्वाकुवंशीय एक प्रसिद्ध राजा का नाम, जो द्यूत विद्या में बड़े निपुण थे। कलि के प्रताप से राज्यच्युत हो दमयंती के वियोग में राजा नल ने इनके यहाँ बाहुक नामक सारथि के वेश में आश्रय ग्रहण किया था। नल अश्वविद्या में विशारद थे और ऋतुपर्ण को इसकी शिक्षा देते थे बदले में उनसे द्यूतविद्या सीखते थे। इधर विदर्भराज की कन्या दमयंती भी नल से वियुक्त होकर चेदिराज की कन्या सुनंदा की दासी बनकर रहने लगी। विदर्भराज ने कन्या तथा जामाता का पता लगाने के लिए दूत भेजे जिनमें सुदेव नामक एक ब्राह्मण दूत ने दमयंती का पता लगा लिया। चेदिराज ने दमयंती का वास्तविक परिचय प्राप्त कर उन्हें ससम्मान विदर्भराज भीम के यहाँ भेज दिया। ऋतुपर्ण के यहाँ नल का पता लगने पर दमयंती ने पिता से छिपा कर ऋतुपर्ण के यहाँ अपने स्वयंवर का निमंत्रण इस आशा से भेज दिया जिससे स्वयंवर वार्ता सुनकर यदि नल वहाँ होंगे तो अवश्य आ जायँगे। फलतः ऋतुपर्ण बाहुक वेशधारी नल के साथ शीघ्र विदर्भराज भीम के यहाँ पहुँचे, किंतु वहाँ स्वयंवर की कोई तैयारी नहीं थी। दमयंती ने केशिनी नामक एक दासी के द्वारा नल को अंतःपुर में बुलवाया और फिर सारी बातें क्रमशः प्रकट हुईं। राजा ऋतुपर्ण भी इस अप्रत्याशित घटना से बड़े प्रसन्न हुए और नल तथा दमयंती को आशीर्वाद देकर अपने राज्य में लौट गए।

ऋतुमंत--मणिभद्र तथा पुण्यजनी के पुत्र का नाम।

ऋतुस्तुभ--एक ऋषि का नाम जिनकी रक्षा अश्विनीकुमारों ने की थी।

ऋतेयु--पुरुवंशीय राजा रौद्राश्व तथा घृतीची के दस पुत्रों में से ज्येष्ठ का नाम। औचेयु इनका नामांतर था।

ऋद्धि--१. वैश्रवाप की पत्नी का नाम। २. धन के देवता कुबेर की पत्नी का नाम। ३. पार्वती का एक नामांतर।

ऋभु--एक प्राचीन वैदिक देवता जो पहले मानव थे किंतु यज्ञ, तप आदि के प्रभाव से देवत्व को प्राप्त हुए थे।

ऋषभ--१. दूसरे मन्वंतर के सप्तर्षियों में से एक का नाम। २. राजा कुशाग्र के एक पुत्र का नाम। ३. वाल्मीकि रामायण के अनुसार राम पक्ष के एक सेनापति का नाम। ४. कैलास के एक स्वर्णश्रृंग का नाम। ५. संगीत के सात स्वरों में से द्वितीय का नाम। ६ पुराणों के अनुसार मेरु के उत्तर में स्थित एक पर्वत का नाम। ७. एक दिग्गज का नाम।

ऋषभदेव--जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर का नाम। भागवत के अनुसार ये विष्णु के अंश संभूत अवतार थे और इन्होंने भारतवर्ष के पश्चिमी भाग में जैनधर्म का प्रचार किया था। पुराणों के अनुसार इनकी वंशावली इस प्रकार है ! ब्रह्मा—स्वायंभुव मनु (मानसपुत्र)—राजा प्रियव्रत--राजा आग्नीध्र--राजा नाभि (पत्नी मेरु)--ऋषभदेव। ऋषिभदेव की पत्नी का नाम जयंती था जिनके ९९ पुत्र हुए। उनके पुत्रों में भरत मुख्य थे। दे० 'जयंती' तथा 'भरत'।

ऋषभस्कंध--वाल्मीकि रामायण के अनुसार रामसेना के एक वानर का नाम।

ऋषि--प्रबुद्ध महापुरुष जो वेद-मंत्रों के द्रष्टा या स्रष्टा थे। प्रमुख ऋषियों की संख्या सात है जो 'सप्तर्षि' के नाम से प्रसिद्ध हैं। इनको प्रजापति तथा ब्रह्मा का मानसपुत्र भी कहा गया है। भिन्न-भिन्न ग्रंथों में इनकी नामावली विभिन्न रूप में दी गई है। महाभारत के अनुसार इनके नाम क्रमशः मरीच, अत्रि, अंगिरा, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य और वसिष्ठ हैं। वायुपुराण 'सप्तर्षि' संज्ञा मानते हुए भी इनमें भृगु का नाम और मिला देता है। विष्णुपुराण में भृगु तथा दक्ष को और मिलाकर इन्हें 'नवब्रह्मर्षि' कहा गया है। शतपथ में इनके नाम

गौतम, भारद्वाज, विश्वामित्र, यमदग्नि, वसिष्ठ, कश्यप तथा अत्रि हैं। कुछ अन्य ग्रंथों में कण्व, बाल्मीकि, व्यास तथा मनु आदि भी इनमें सम्मिलित कर लिए जाते हैं। अंतरिक्ष के 'सप्तर्षिमण्डल' को इन्हीं ऋषियों का प्रतिरूप माना जाता है। नाभादास जी इन्हें प्रमुख हरिभक्तों की श्रेणी में रखते हैं और इनकी संख्या छब्बीस मानते हैं।

ऋषिका--एक नदी का नाम जो महेन्द्र पर्वत से निकल कर गंजम के पास समुद्र में गिरती है। इसका दूसरा नाम ऋषिकुल्या है।

ऋषिकुल्या--दे० 'ऋषिका'।

ऋषिज--उशिज का नामांतर। दे० 'उशिज'।

एकचक्रा--१. कश्यप तथा दनु के पुत्र का नाम जो एक प्रसिद्ध दैत्य था। २. एक नगरी का नाम जिसमें व्यास की आज्ञा से माता कुंती के साथ पाण्डवों ने कुछ दिन निवास किया था और भीम ने बक नामक नरभोजी राक्षस का वध किया था।

एकजटा--लंका की एक राक्षसी का नाम जो अशोक-वाटिका में बंदिनी सीता की परिचर्या के लिए अन्य राक्षसियों के साथ नियुक्त थी।

एकत--गौतम के ज्येष्ठ पुत्र का नाम।

एकदंत--गणेश का नामांतर। दे० 'गणेश'।

एकद्य नोधस्--एक सूक्तद्रष्टा का नाम।

एकपर्णा--हिमवान् तथा मैना की तीन कन्याओं में से एक का नाम। शेष दोनों का नाम पर्णा तथा अपर्णा था। तीनों कन्याओं ने बड़ी कठिन तपस्या की थी। एकपर्णा रातदिन में केवल एक पत्ता खाकर निर्वाह करती थी इसी से इसका नाम एकपर्णा हुआ। ब्रह्माण्ड पुराण के अनुसार इसका विवाह असित देवल से हुआ था। दे० 'अपर्णा', 'उमा' तथा 'एकपाटला'।

एकपाटला--पर्णा का नामांतर जो हिमालय तथा मैना की तीन कन्याओं में से एक थी। इन्होंने भी अपनी बहनों के साथ घोर तप किया था जिसमें केवल एक पाटल पर निर्वाह करने के कारण इनका नाम एक-पाटला पड़ा। इनका विवाह ब्रह्माण्ड पुराण के अनुसार जैगीषव्य मुनि से हुआ था जिनसे शंख तथा लिखित नामक दो पुत्रों की उत्पत्ति हुई। दे० 'अपर्णा', 'एकपर्णा' तथा 'उमा'।

एकपाद--कश्यप तथा कद्रू के एक पुत्र का नाम।

एकपादा--अशोकवाटिका में वंदिनी सीता के परिचर्यार्थ नियुक्त राक्षसियों में से एक का नाम।

एकलव्य--व्याधराज हिरण्यधनू के पुत्र का नाम जो धनुर्विद्या में बड़ा प्रवीण था। एक बार इसे काला कंबल ओढ़े हुए देखकर एक कुत्ता बहुत भूकने लगा। एकलव्य ने एक साथ सात वाण इस प्रकार मारा कि कुत्ते के मुंह में तनिक भी चोट नहीं आई और उसका भूंकना भी बंद हो गया। कुत्ता अपने मुंह में वाण लिए इधर-उधर भटक रहा था कि मार्ग में मृगया के लिए आये हुए पाण्डव गण मिल गये जिन्हें धनुर्विद्या के इस अभूतपूर्व कौशल पर बड़ा आश्चर्य हुआ। वे लोग कुत्ते के पीछे चलने लगे जो अंत में एकलव्य के स्थान पर रुका। अर्जुन के प्रश्न करने पर एकलव्य ने बताया कि वाणविद्या की शिक्षा उसे गुरु द्रोणाचार्य से प्राप्त हुई। अर्जुन ने आचार्य के पास जाकर उलाहना दिया। किंतु बहुत सोचने पर भी द्रोण को एकलव्य नाम के किसी शिष्य का स्मरण न हुआ। अंत में दोनों एकलव्य के पास गये जहाँ उन्हें विदित हुआ कि अनार्य होने के कारण आचार्य द्वारा तिरस्कृत होने पर एकलव्य ने उनकी मिट्टी की प्रतिमा बनाकर और उसी को गुरु मानकर अभ्यास करना आरंभ किया जिसके फलस्वरूप वह इस कला में पारंगत हुआ। द्रोणाचार्य ने प्रसन्नता प्रकट करते हुए एकलव्य के दाहिने हाथ का अँगूठा गुरु-दक्षिणा में माँगा जिसे उसने सहर्ष दे दिया। कारण यह था कि द्रोणाचार्य ने अर्जुन को पहले ही वर दे दिया था कि वे धनुर्विद्या में अद्वितीय होंगे। किंतु एकलव्य जैसा प्रतिद्वंद्वी रहते हुए यह असंभव था; अतः उसका दाहिना अँगूठा माँगकर आचार्य ने उसकी कला छीन ली। भारत युद्ध में एकलव्य ने कौरवों का पक्ष ग्रहण किया और दाहिना हाथ बेकार होते हुए भी असाधारण पराक्रम दिखाया।

एकलोचना--अशोकवाटिका में वंदिनी सीता के परिचर्यार्थ नियुक्त राक्षसियों में से एक का नाम।

एकविंश--ऋचाओं के एक संग्रह का नाम जो ब्रह्मा के उत्तर मुख से निकला माना जाता है।

एकवीर--राजा हरिवर्मा के पुत्र का नाम जिसकी उत्पत्ति विष्णु की तपस्या के फलस्वरूप हुई थी। इनका नामांतर हैहय था। यदुकुलोत्पन्न प्रसिद्ध राजा हैहय इनसे भिन्न थे। इनकी दो पत्नियाँ थीं जिनके नाम क्रमशः एकावली तथा यशोवती थे।

एकाक्ष--दनु तथा कश्यप के एक पुत्र का नाम।

एकादशरथ--वायुपुराण के अनुसार दशरथ के एक पुत्र का नाम।

एकानंगा--यशोदा की कन्या तथा कृष्ण की भगिनी का नाम।

एकानेका--अंगिरा ऋषि की कन्या का नाम।

एकावली--एक वीर राजा की पत्नी का नाम।

एकाशय--महाभारत के अनुसार तक्षक के पुत्र अश्वसेन का नाम।

एकाष्टका--प्रजापति की एक कन्या का नाम जो अपनी तपस्या के फलस्वरूप इंद्र तथा क्षोम की माता हुई।

एतश--ऋग्वेद के एक सूक्तद्रष्टा ऋषि का नाम।

एरक--महाभारत के अनुसार एक प्रसिद्ध सर्प का नाम।

एलपत्र--महाभारत के अनुसार कद्रु के एक पुत्र का नाम। यह एक विशालकाय सर्प था जिसके अनेक फण थे। दे० 'नभ'।

एलापुत्र--दे० 'एलपत्र' तथा 'नभ'।

एवयामरुत्--एक मंत्रद्रष्टा ऋषि का नाम।

ऐंद्र--एक सूक्तद्रष्टा का नाम। ऋग्वेद में ऐंद्र नाम से कई सूक्तद्रष्टाओं के नाम मिलते हैं, जैसे अप्रतिस्थ, जय, लव, वसुक, विमद, वृषाकपि तथा सर्वहरि।

ऐंद्राश्व–भविष्यपुराण के अनुसार धनयानी के पुत्र का नाम।

ऐकादशाक्ष मानुतंतव्य–एक प्रसिद्ध पौराणिक राजा जो प्रतिदिन सूर्योदय के साथ-साथ हवन तथा यज्ञ आरंभ कर देते थे। यह नगरिन् जानश्रुतेय के समकालीन थे।

ऐकेपि–अंगिरा का एक नामांतर। दे० 'आंगिरा'।

ऐक्ष्वाक–इक्ष्वाकु कुलोत्पन्न राजाओं की सामूहिक संज्ञा।

ऐक्ष्वाकी–भूमन्यु के पुत्र सुहोत्र की पत्नी का नाम।

ऐडविड–१. इडविड (इलविल) के पुत्र कुबेर का नाम। २. दशरथ अथवा शतरथ के पुत्र का नाम।

ऐतरेय आरण्यक–ऋग्वेद के ब्राह्मण भाग के उपसंहार का नाम। सायण के अनुसार इसके दो भाग हैं—१. आरण्यक तथा २. ब्राह्मण। गृहस्थाश्रम के लिए ब्राह्मण तथा वाणप्रस्थाश्रम वालों के लिए आरण्यक उपयोगी है। आरण्यक में ब्रह्मविद्या तथा तत्संबंधी आचारों का निरूपण है। मनु के अनुसार वेदाध्ययन समाप्त करने के अनंतर आरण्यक का अध्ययन आवश्यक है। याज्ञवल्क्य के अनुसार योगाभ्यास करने वालों के लिए इसका अध्ययन अनिवार्य है। ऐतरेय आरण्यक में ऋग्वेद के प्रत्येक ऋषि का परिचय दिया गया है। उसके पद-पदांश तथा शब्द-शब्दांश की संख्या भी इसमें दी गई है। ऐतरेय ऋग्वेद का उपनिषद् है और इसके पाँच भाग हैं। प्रत्येक आरण्यक के नाम से प्रसिद्ध हैं। दूसरा और तीसरा भाग एक स्वतंत्र उपनिषद् है। इसका एक और उपविभाग है जो मुख्यतः वेदांत दर्शन के सिद्धांतों को प्रतिपादित करता है। ऐतरेय हारीति ऋषि कुलोत्पन्न मांडूक्य ऋषि के पुत्र थे। इनकी माता का नाम इतरा होने से इनका नाम ऐतरेय पड़ा।

ऐतरेय ब्राह्मण–ऐतरेय के ब्राह्मण भाग में मुख्यतः कर्मकांड का वर्णन है और प्रसंगवश दार्शनिक तत्वों का सन्निवेश भी मिल जाता है। बहुत सी पौराणिक कथाओं के मूल तत्व ब्राह्मणों में मिलते हैं। यज्ञ में पशुबलि का विधान भी सर्वप्रथम ब्राह्मणों में ही मिलता है।

ऐरावत–१. एक नाग का नाम। दे० 'उलूपी'। २. श्वेत रंग के एक प्रसिद्ध हाथी का नाम जो समुद्र-मंथन से प्राप्त चौदह रत्नों में से एक था और जिसे इंद्र ने अपनी सवारी के लिए ग्रहण किया था। दे० 'जरत्कारु'।

ऐरीडव–अंगिरागोत्रीय एक ब्रह्मर्षि का नाम।

ऐल–दे० 'पुरूरवा'।

ऐलविल–दे० 'कुबेर'।

ऐलिक्–भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।

ऐशिज–एक ऋषि का नाम।

ओंकार–२. शिवपुराण के अनुसार शिव के एक अवतार का नाम जो पृथ्वी पर सदैव प्रणव रूप में विद्यमान रहते हैं। २. प्रणव का नामांतर जिसे नादब्रह्म का प्रतिरूप माना जाता है।

ओघ–एक प्राचीन राजा का नाम जो भविष्य पुराण के अनुसार कुंतिभोज के पुत्र थे और जिन्होंने १०,००० वर्ष तक राज्य किया था।

ओघरथ–भविष्य पुराण के अनुसार राजा ओघ के पुत्र का नाम दे० 'ओघ'।

ओघवत्–प्रतीक के पुत्र का नाम।

ओघवती–प्रतीक की कन्या तथा सुदर्शन की पत्नी का नाम।

ओज–श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम जो बड़े पराक्रमी, तथा महारथी थे।

ओजस्विन्–भौत्य मन्वंतर के मनु के पुत्र का नाम।

औगज–अंगिरा गोत्रोत्पन्न एक सूक्तद्रष्टा का नाम।

औचेयु–दे० 'ऋतेयु'।

औडलोमि–एक तत्वज्ञानी का नाम जिनके मतभेद का ब्रह्मसूत्रों में कई बार उल्लेख हुआ है।

औदमय–अंग वैरोचन पुरोहित का नाम।

औदवाहि–भारद्वाज के गुरु का नाम।

औदुंबरायण–एक आचार्य का नाम जिनका उल्लेख निरुक्त में शब्द के नित्यत्व के प्रसंग में है।

औपट–दे० 'उवट'।

औपलोम–वसिष्ठ कुलोत्पन्न गोत्रकार ऋषिगणों के नाम।

औपशवि–एक वैयाकरण का नाम।

औपस्थल–वसिष्ठ कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।

औपस्थव–विश्वामित्र कुलोत्पन्न ऋषिगणों का सामूहिक नाम।

औपाविजान श्रुतेय–एक राजर्षि का नाम।

औपोदित–व्याघ्रपाद तथा उपेदिता के पुत्र का नाम। इनका पैत्रिक नाम गौपालायन था।

और्णवाम–कौडिन्य ऋषि के एक शिष्य का नाम।

और्व–१. एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम। एक बार भृगुवंशी राजाओं तथा उनके पुरोहित यजमानों में इतना वैमनस्य हुआ कि विरोधियों ने भृगुवंशी स्त्रियों के गर्भस्थ शिशुओं तक की हत्या आरंभ कर दी जिससे भयभीत होकर उनके परिवार की एक स्त्री पर्वतकंदरा में जा छिपी। शत्रु उसकी खोज करते हुए वहाँ पहुँच गए किंतु उसी समय उसका जंघा फोड़कर गर्भस्थ बालक उत्पन्न हुआ जो अग्नि के समान तेजस्वी था। माता के उरु से उत्पन्न होने के कारण उसका नाम 'और्व' पड़ा। भूमिष्ठ होते ही प्रचंड क्रोधाग्नि से उसने शत्रुओं समेत सारी पृथ्वी को भस्म कर देना चाहा किंतु उसके पूर्व पुरुषों ने प्रकट हो उसे रोका जिससे यह विचार त्याग कर उसने अपना क्रोध समुद्र में डाल दिया। वह अग्नि समुद्र में सदैव विराजमान रहती है और वड़वानल अथवा और्वानल के नाम से प्रसिद्ध है। २. मालव देशवासी एक ब्राह्मण का नाम जिसकी पत्नी का नाम सुमेधा तथा पुत्री का नाम शमीका था। ३. स्वारोचिष तथा सावर्णि मन्वंतरों के सप्तर्षियों में से एक का नाम।

औलान–सायणाचार्य के अनुसार शांतनु के वंशज का नाम।

औलूक्य–वैशेषिक दर्शन का नामांतर। दे० 'उलूक'।

औशनस–दे० 'उशनस'।

औशीनर–दे० 'उशीनर'।

कंक–१. राजा उग्रसेन के नौ पुत्रों में से चतुर्थ का नाम। २. अज्ञातवास के समय पांडवों ने अपने नाम-भेष परिवर्तित कर रखे थे। उस समय युधिष्ठिर का कल्पित नाम कंक था और वे राजा विराट को द्यूत क्रीड़ा सिखलाते थे।

कंकट–अंगिरा-कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम। दे० 'कट्'।

कंका उग्रसेन की कन्या तथा प्रसिद्ध अत्याचारी राजा कंस की भगिनी का नाम।

कंकी–विष्णुपुराण के अनुसार उग्रसेन की कन्या का नाम।

कंजानना–दाशरथि राम के पुत्र लव की कनिष्ठा पत्नी का नाम। दे० 'लव'।

कंठ–वायुपुराण के अनुसार अजमीढ के पुत्र का नाम।

कंठायन–वायुपुराण के अनुसार भेधातिथि के पुत्र का नाम।

कंडु–एक ब्रह्मर्षि का नाम। इनका एक दशवर्षीय पुत्र बन में मर गया था। अतः इन्होंने उस समूचे बन को वृक्षोदक रहित कर दिया था। भागवत के अनुसार इन्द्र ने इनका तप भंग करने के लिए प्रम्लोचा नामक अप्सरा को भेजा था जिसके साथ इन्होंने १०० वर्ष तक विहार किया। प्रम्लोचा के गर्भ से मारीषा नामक एक कन्या की उत्पत्ति हुई।

कंडू–कलिंग देश की एक कन्या का नाम जो अक्रोधन की पत्नी थीं। इसके पुत्र का नाम देवातिथि था।

कंदली–और्व ऋषि की कन्या का नाम जिनकी उत्पत्ति जानु से हुई थी। ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार ये दुर्वासा की पत्नी थीं। एक बार दुर्वासा को तिलोत्तमा तथा बलिराज पुत्र की रतिक्रीड़ा देखने का संयोग प्राप्त हुआ जिससे वे स्वयं काम के वशीभूत हो गए। उसी समय और्व ऋषि अपनी कन्या लेकर पाणिग्रहण की प्रार्थना के साथ उनके पास उपस्थित हुए। कंदली असाधारण सुन्दरी थी पर साथ ही कलहप्रिय थी। अतः उसके पिता ने दुर्वासा से पहले यह शर्त तै कर ली कि उसके सौ अपराध उन्हें क्षमा करने होंगे। दुर्वासा ने यह शर्त स्वीकार कर ली किंतु स्वयं भी अत्यंत क्रोधी स्वभाव का होने के कारण यह सौदा उन्हें बहुत महँगा पड़ा। उन्होंने किसी प्रकार उसके सौ अपराध तो क्षमा किये किंतु इसके उपरांत असह्य होने पर उन्होंने कंदली को शाप द्वारा भस्म कर दिया जो दूसरे जन्म में कदली (केला) वृक्ष हुई। कन्या की इस विपत्ति से क्षुब्ध हो और्व ने दुर्वासा को भी शाप दिया कि एक नगण्य अपराध के लिए ऐसा क्रूर शाप देने के कारण तुम्हें पराभव स्वीकार करनी पड़ेगी। तदनुसार दुर्वासा को अंबरीष से पराजय स्वीकार करनी पड़ी थी।

कंपन–१. लंका के एक राक्षस का नाम जिसकी मृत्यु बालिपुत्र अंगद के द्वारा हुई थी। २. महाभारत के अनुसार युधिष्ठिर की सभा के एक क्षत्रिय का नाम।

कंबल–भागवत के अनुसार कद्रू से उत्पन्न एक सर्पराज का नाम जो पाताल के अधीश्वर थे। ये आश्विन मास में त्वष्टा (सूर्य का एक नाम-विशेष) के सम्मुख होते हैं।

कंबल बर्हिष–अंधक के कनिष्ठ पुत्र का नाम। दे० 'अंधक'।

कंस–मथुरा के महाराज उग्रसेन का क्षेत्रज तथा दानवराज दुर्मिल का वीर्यज पुत्र। दानवराज ने ऋतुस्नाता उग्रसेन की पत्नी के साथ उग्रसेन का रूप बना कर ही संभोग किया था। कंस की माता को दानवराज में अपने पति से अधिक गौरवर्ण देख कर संदेह हो गया था और उन्होंने पूछा था—"कस्त्वम् ?" दानवराज ने उत्तर दिया था, कितनी ही स्त्रियों के इस प्रकार के संभोग से देवता सदृश संतान उत्पन्न हुई हैं। इसमें कोई दोष नहीं है। तुमने मुझसे "कस्त्वम्" पूछा था। तुम्हारे कंस नामक शत्रु-विजयी पुत्र होगा। यही कंस के जन्म तथा नामकरण की कथा है। बड़े होकर कंस ने मगधराज जरासंध की अस्ति तथा प्राप्ति नाम की दो कन्याओं का पाणिग्रहण किया था। उसके कुछ दिनों बाद इन्होंने अपने पिता उग्रसेन को राज्यच्युत कर स्वय राजसिंहासन ग्रहण कर लिया था। अपने पितृव्य की पुत्री देवकी का विवाह इन्होंने वसुदेव के साथ किया था। इस प्रकार यह कृष्ण के मामा लगते थे। जब वसुदेव देवकी को लेकर अपने घर चल रहे थे तो आकाशवाणी हुई थी—'देवकी के गर्भ से उत्पन्न होने वाला आठवाँ पुत्र तुम्हारा वध करेगा।' कंस ने यह सुनकर वसुदेव तथा देवकी दोनों को कारागार में बंद कर दिया। उसके बाद देवकी की जितनी संतानें हुईं उन सभी का उसने वध करा डाला। आठवें गर्भ में कृष्ण की उत्पत्ति हुई, किंतु वसुदेव उन्हें किसी प्रकार गोकुल में गोपराज नंद के यहाँ रख आए तथा उसी रात को उत्पन्न हुई गोपराज की स्त्री यशोदा के गर्भ से उत्पन्न हुई कन्या योगमाया को लेकर कारागृह में आ गए। कंस को जब यह ज्ञात हुआ कि देवकी के आठवें गर्भ से एक कन्या उत्पन्न हुई है तो यह उसका वध करने के लिए आया; किंतु जब उसने उसे पटकने के लिए ऊपर उठाया तो वह आकाश में उड़ कर लोप हो गई और कहती गई कि "दुर्बल ! तुम्हारा वध करने वाला जन्म ले चुका है।" कंस ने इस पर क्रोधित होकर अपने राज्य के अंतर्गत सभी नवजात शिशुओं का वध करने की आज्ञा दी। किंतु कृष्ण इस संहार-चक्र से भी किसी प्रकार बच गए। अंत में कृष्ण को पहचान कर कंस ने धनुषयज्ञ का ढोंग रच कर उन्हें बुलाया और उनका वध करना चाहा किन्तु इसके पूर्व ही कृष्ण ने अवसर पाकर उसका वध कर डाला। दे० 'कृष्ण'।

कंसवती–भागवत के अनुसार उग्रसेन की कन्या तथा प्रसिद्ध अत्याचारी राजा कंस की बहन का नाम जो वसुदेव के कनिष्ठ भ्राता देवश्रव्य को ब्याही थीं। उनसे इनको सुवीर तथा इषुमत् नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए।

कंसा–भागवत के अनुसार उग्रसेन की कन्या का नाम जिनका विवाह वसुदेव के भाई देवभाग के साथ हुआ था। चित्रकेतु वृहद्वल तथा उद्धव नाम के इनके तीन पुत्र हुए थे।

ककुत्स–सूर्यवंशी राजा पुरंजय का नामांतर। इनका वंशक्रम इस प्रकार है: मनु—इक्ष्वाकु—शशाद—पुरंजय (ककुत्स) एक बार देवता तथा असुरों के युद्ध में देवताओं द्वारा आमंत्रित होने पर इन्होंने इस शर्त पर अपने

सहयोग देना स्वीकार किया था कि देवराज इंद्र को इनका वाहन बनना पड़ेगा। पहले तो इंद्र ने इस प्रस्ताव को अपमानजनक समझकर इनकार कर दिया किंतु अंत में विष्णु के आग्रह पर वृषभ का रूप धारण कर इनका वाहन बनना स्वीकार कर लिया। वृषभ रूप धारी इंद्र के ककुद पर चढ़कर इन्होंने दैत्यों से युद्ध किया था इस लिए इनका नाम ककुत्स पड़ा। युद्ध में इन्होंने दैत्यों का सदलबल विनाश किया। इनके वंश में अज, रघु, दशरथ, राम आदि प्रसिद्ध तथा पराक्रमी राजा हुए जो काकुत्सवंशीय कहलाए। इन्होंने भागवत् के अनुसार ३५७०० वर्ष (दिन ?) राज्य किया था।'

ककुद्मिन (रैवत)–रैवत राजा के पुत्र का नाम जो अपनी कन्या रेवती के योग्य वर की खोज में ब्रह्मा के पास गए थे। ब्रह्मदेव ने विचार कर बताया कि द्वापर में परमेश्वर के अंस सम्भूत बलराम का अवतार होगा और वही रेवती के उपयुक्त वर होंगे।

ककुभ–१. धर्म ऋषि की पत्नी अरुंधती का नामांतर जो दक्ष प्रजापति की कन्या थीं। २. एक रागिनी का नाम।

कक्षसेन–१. महाभारत के अनुसार एक प्रसिद्ध राजर्षि का नाम जिन्होंने असित नामक पर्वत पर उग्र तपस्या की थी। २. महाभारत के अनुसार युधिष्ठिर की सभा के एक क्षत्रिय का नाम।

कक्षीवत्–ऋग्वेद के अनुसार ऋषिदीर्घ तमस् तथा उशिज के पुत्र का नाम। दे० 'दीर्घतमस्'।

कक्षेपु–विष्णु पुराण के अनुसार रौद्राश्व के पुत्र का नाम और मत्स्य पुराण के अनुसार भद्राश्व के पुत्र का नाम।

कच–एक प्रसिद्ध महर्षि का नाम जो देवगुरु वृहस्पति के पुत्र माने जाते हैं। एक बार अधिकार-विस्तार की लिप्सा के कारण देवता तथा दैत्यों में घोर युद्ध छिड़ा जिसमें मरे हुए दैत्यों को दैत्यगुरु शुक्राचार्य संजीवनी विद्या के प्रताप से पुन: जीवित कर देते थे पर देवता लोग इस विद्या से अनभिज्ञ होने के कारण ऐसा नहीं कर पाते थे। इस अभाव का परिहार करने के लिए देवताओं ने यह निश्चय किया कि कच शुक्राचार्य के पास जाकर उनका शिष्यत्व ग्रहण करें और इस विद्या का रहस्य प्राप्त करें। कच ने आज्ञानुसार ऐसा ही किया किंतु दैत्यों को इस बात का पता लग गया और उन्होंने कच का वध कर डाला। इससे दुर्वासा की पुत्री देवयानी को, जो कच पर अनुरक्त थी, बड़ा दुख हुआ और वह पिता के सामने फूट-फूट कर रोने लगी। इससे द्रवित हो दैत्यगुरु ने संजीवनी द्वारा उसे जीवित कर दिया। इसी प्रकार दैत्यों ने दो बार और उसका वध किया और दोनों ही बार शुक्राचार्य ने उसे जीवित किया। अंत में ऊबकर दैत्यों ने कच को मारकर जला डाला और उसकी भस्म को मदिरा में मिला कर गुरु को पिला दिया। न चाहते हुए भी पुत्री की दशा देखकर शुक्राचार्य को उसे पुन: जीवित करने का उपक्रम करना पड़ा, किंतु जब उन्होंने मंत्र द्वारा कच का आह्वान किया तो वह उनके पेट में ही बोलने लगा। उससे आचार्य को जब सारी बातें ज्ञात हुईं तो उन्हें बड़ी चिंता हुई। उसे जीवित करने पर उनकी मृत्यु निश्चित थी क्योंकि वह उनका पेट फाड़कर ही बाहर निकल सकता था। अत: उन्होंने पहले कच को संजीवनी विद्या की शिक्षा देकर इस शर्त पर उसे जिलाया कि बाहर निकलने पर वह उसी विद्या के सहारे उन्हें भी पुन: जीवित कर दे। कच ने प्रतिज्ञा की और उसका पालन भी किया। तदनंतर शुक्राचार्य ने दीर्घकाल तक कच को शिक्षा दी और जब उसका अध्ययन समाप्त होने को हुआ तो देवयानी ने उससे अपने पाणिग्रहण की प्रार्थना की किंतु कच ने गुरु कन्या होने के नाते ऐसा करने में अपनी असमर्थता प्रकट की। इस पर क्षुब्ध हो देवयानी ने कच को शाप दिया कि तुम्हारी विद्या फलवती न होगी। कच ने भी देवयानी को शाप दिया कि तुम्हारी वासना कभी पूर्ण न हो सकेगी और कोई भी ब्राह्मण तुम्हारा पाणिग्रहण न करेगा। मेरी विद्या मेरे लिए चाहे फलवती न हो किंतु जिसे मैं इसकी शिक्षा दूँगा उसे अवश्य ही फलेगी। इसके बाद कच स्वर्ग चले गए और वहाँ उन्होंने देवताओं को संजीवनी की शिक्षा दी जिसके फलस्वरूप देवता लोग दैत्यों की ओर से निश्चित हुए। दे० 'देवयानी'।

कच्चायण--महर्षि कात्यायन का पाली नाम। दे० 'कात्यायन'।

कच्छ--विष्णु का एक अवतार। कहा जाता है कि देवासुर संग्राम के बाद जो वस्तुएँ इस संघर्ष में खो गई थीं, उनकी प्राप्ति के लिए समुद्र-मंथन का आयोजन हुआ तो मथानी बनाए गए मंदराचल पर्वत को क्षीरसागर में धारण करने के लिए विष्णु ने कच्छप का रूप धारण किया था। वासुकि नाग की रस्सी बनाई गई थी और देवताओं तथा असुरों ने एक-एक ओर खड़े होकर समुद्र-मंथन किया था, जिससे निम्नलिखित चौदह वस्तुएँ प्राप्त हुई थीं—१. अमृत, २. धन्वंतरि, (देवताओं के चिकित्सक), ३. लक्ष्मी, ४. सुरा, ५. चंद्र, ६. रंभा, ७. उच्चैश्रवा (एक सुन्दर अश्व), ८. कौस्तुभ मणि, ९. पारिजात वृक्ष, १०. सुरभि गाय, ११. ऐरावत हाथी, १२. शंख, १३. धनुष तथा १४. विष।

कच्छप--१. विष्णु के कच्छ अवतार का नाम। दे० 'कच्छ'। २. विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम। ३. कुबेर की नौ निधियों में से पंचम निधि का नाम।

कटय--दे० 'कटु'।

कटायनि--भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।

कटु–अंगिरा कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम। कंकट अथवा कटय भी इनके नामांतर हैं।

कठ--वसिष्ठ कुलोत्पन्न एक गोत्रकार ऋषि का नाम। इनके नाम से कठोपनिषद्, कठब्राह्मण, कठ संहिता, कठ सूत्र तथा कठपरिशिष्ट आदि ग्रंथ प्रसिद्ध हैं। कात्यायन श्रौत सूत्रों में कठसूत्रों का भी सन्निवेश है। कठोपनिषद् का अंग्रेजी अनुवाद डा० रूर ने बिब्लओथिका इंडिका में किया है।

कठशाठ--एक शाखा प्रवर्तक ऋषि का नाम। दे० 'पाणिनि'।

करिणक–धृतराष्ट्र के नीतिविशारद मंत्री का नाम जिन्होंने पांडवों के साथ व्यवहृत धृतराष्ट्र की नीति का विरोध किया था।

करीशा–कश्यप तथा क्रोधा की पुत्री का नाम जिनका विवाह पुलह के साथ हुआ था।

कण्व–एक ब्रह्मर्षि का नाम जिनकी गणना कभी-कभी सप्तर्षियों में भी होती है। इस नाम के कई ऋषियों का उल्लेख मिलता है जिनमें सबसे प्रमुख घोर-पुत्र कण्व हैं। जिन्होंने ऋग्वेद के अष्टम मण्डल की रचना की थी। एक कण्व अंगिरस कुलोत्पन्न तथा दूसरे कश्यप कुलोत्पन्न प्रसिद्ध हैं। कण्व नामक एक ऋषि ने शकुन्तला का पालन पोषण किया। उनका आश्रम मालिनी नदी के तट पर था जहाँ मेनका नामक अप्सरा, जो विश्वामित्र का तप-भंग करने आई थी, शकुन्तला को छोड़कर चली गई थी। वहीं पर कण्व ने अपनी कन्या की तरह उसका पालन किया था।

कद्रू–दक्ष प्रजापति की कन्या तथा कश्यप की पत्नी का नाम। ये अत्यंत सुंदरी तथा गुणवती थी। पुराणों के अनुसार इन्होंने एक सहस्र नागों को जन्म दिया था जिनमें वासुकि तथा शेष मुख्य थे।

कनक–१. एक प्राचीन राजा का नाम जो हैहय वंशीय दुर्दम (मत्स्य) अथवा दुर्मद (वायु) के पुत्र माने जाते हैं। इनके चार पुत्र थे; कृतवीर्य, कृतौजा, कृतवर्मा तथा कृताग्नि। २. विप्रचित तथा सिंहिका के पुत्र जिन्हें परशुराम ने मारा था।

कनकध्वज–धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। इसने भी द्रौपदी-स्वयंवर की मत्स्य भेद प्रतियोगिता में भाग लिया था। महाभारत के युद्ध में इसका वध भीम के हाथों हुआ।

कनकांगद–महाभारत के अनुसार धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

कनकायु–महाभारत के अनुसार धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

कनिष्क–शकजातीय एक प्रसिद्ध राजा का नाम जो ७८ ई० में पुरुषपुर (पेशावर) में राज्यसिंहासनारूढ़ हुए थे। ये बड़े प्रतापी थे। इन्होंने अपना एक अलग संवत्सर चलाया था जो शकाब्द के नाम से प्रसिद्ध है और जो इनके सिंहासनारोहण काल से आरंभ होता है।

कनिष्ठ–भौत्य मन्वंतर में देवताओं के एक समूह विशेष का नाम।

कन्हर–एक वैष्णव भक्त तथा कथा-वाचक।

कप–एक देवता का नाम।

कपट–कश्यप तथा दनु के एक पुत्र का नाम।

कपर–कश्यप तथा दनु के एक पुत्र का नाम।

कपर्दिन–गणेश का एक नामांतर। दे० 'गणेश'।

कपर्देय–विश्वामित्र कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।

कपालभारण–विंध्य निवासिनी एक त्रिवक्र कन्या सुशीला का शुचि नामक ब्राह्मण पुत्र जो घोर तपस्या में रत था और जिससे घबड़ा कर इंद्र ने उसका विनाश किया। उसकी मृत्यु के पश्चात् इसका पुत्र दुर्मेधस् गद्दी पर बैठा।

कपालिन्—१. कश्यप के पुत्र का नाम। इनकी माता का नाम सुरभि था। ये एक रुद्र माने गए हैं। २. रुद्र का एक नामांतर।

कपाली—दुर्गा का एक नामांतर अथवा रूपांतर। दे० 'दुर्गा'।

कपिंजल–वसिष्ठ कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।

कपि–१. तामस मन्वंतर के सप्तर्षियों में से एक का नाम। २. भृगु गोत्रीय एक शाखा प्रवर्तक ऋषि का नाम। ३. उमुक्षय (नामांतर उभक्षय) नामक एक क्षत्रिय के पुत्र का नाम। क्षत्रिय कुलोत्पन्न होते हुए भी ये उग्र तपस्या के प्रभाव से ब्राह्मण वर्ण में सम्मिलित कर लिए गये थे। इस नाम के कई ऋषियों के उल्लेख यत्रतत्र मिलते हैं, जिनमें से कोई मनुपुत्र, कोई सूक्तद्रष्टा तथा कोई सप्तर्षियों में से एक माने गये हैं।

कपित्थक–कद्रूपुत्र एक सर्प का नाम।

कपिमुख–पराशर कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम। कपिश्रवस् इनका एक अन्य नामांतर है। दे० 'कपिश्रवस्'।

कपिराय–बंदरों के राजा सुग्रीव का पर्याय। कपिराइ, कपीश आदि इनके अन्य नामांतर हैं। दे० 'सुग्रीव'।

कपिल–१. विष्णु के अवतारों में एक (पाँचवें) जिनकी उत्पत्ति कर्दम मुनी की पत्नी देवहूति के गर्भ से हुई थी। देवहूति ने भगवान की तपस्या करके उनसे विष्णु के समान पुत्र प्राप्त की इच्छा प्रकट की। भगवान ने अपने समान केवल अपने को ही पाकर स्वयं उनके गर्भ से जन्म ग्रहण करने का वचन दिया। फलतः देवहूति के गर्भ से कपिल भगवान की उत्पत्ति हुई। दीर्घकाल तक सांसारिक सुख भोगते रहने पर अंत में जब कर्दम और देवहूति को इस जीवन से विरक्ति हुई तो उन्होंने भगवान से ज्ञान-प्राप्ति की प्रार्थना की। देवहूति के ज्ञान और भक्ति संबंधी प्रश्नों के उत्तर के रूप में जो कुछ कपिल कपिल मुनि ने कहा वही आगे चलकर सांख्य दर्शन के रूप में प्रसिद्ध हुआ। हरिवंश पुराण के अनुसार ये वितथ के और श्वेताश्वतर के अनुसार ब्रह्मा के मानस पुत्र थे। कपिल के नामपर निम्नलिखित ग्रंथ प्रसिद्ध हैं—१. सांख्य सूत्र, २. तत्वसमास, ३. व्यास प्रभाकर, ४. कपिलगीता, ५. कपिल पंचरात्र, ६. कपिल संहिता, ७. कपिल स्मृति, ८. कपिल स्तोत्र। दे० 'कर्दम'। २. एक अग्नि-विशेष का नाम जो कर्म (विश्वपति अग्नि) तथा हिरण्यकश्यपु की पुत्री रोहिणी के पुत्र थे। ३. कश्यप तथा दनु के एक दानव पुत्र का नाम। ४. कश्यप तथा कद्रू से उत्पन्न एक सर्प का नाम। ५. विंध्य निवासी एक बानर का नाम। ६. रुद्रगणों में से एक का नाम। ७. शिवावतार दधिवाहन के एक शिष्य का नाम। ८. एक यक्ष का नाम। ९. भद्राश्व के पुत्र का नाम।

कपिला–१. कश्यप की पत्नी का नाम जो दक्ष की कन्या थी। २. कश्यप तथा श्वसा से उत्पन्न एक कन्या का नाम।

कपिलाश्व–कुवलयाश्व के पुत्र का नाम।

कपिवत्–तामस मन्वंतर के सप्तर्षियों में से एक का नाम।

कपिवन--एक ऋषि का नाम। इनके नाम से एक यज्ञ प्रसिद्ध है जो दो दिन का होता था।

कपिश--कश्यप तथा दनु के एक दानव पुत्र का नाम।

कपिश्रवस्--दे० 'कपिमुख'।

कपीतर--अंगिरस् कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।

कपूर--एक मध्यकालीन वैष्णव भक्त।

कपोत--१. गरुड़ के पुत्र का नाम। २. एक तत्वज्ञानी राजर्षि का नाम।

कपोतक--एक सर्पराज का नाम जो पाताल के स्वामी थे।

कपोत नैर्ऋत--एक सूक्तद्रष्टा का नाम।

कपोतरोमन्--१. भागवत के अनुसार विलोमन् के पुत्र का नाम। अन्य पुराणों में इन्हें धृष्ट, धृति अथवा वृष्टि का पुत्र माना गया है। २. राजा शिवि के पुत्र का नाम। दे० 'शिवि'।

कबंध--१. वाल्मीकि रामायण के अनुसार दण्डकारण्य में रहनेवाले एक भयानक दैत्य का नाम, जिसके मस्तक विहीन शरीर में केवल कबंध (धड़) था। इसी से इसका नाम कबंध था। इसके पेट में विकराल दाँत थे, वक्षस्थल में एक भयानक आँख थी, आकार पर्वत के समान था और भुजाएँ एक-एक योजन लंबी थीं। यह पहले एक गंधर्व था किंतु इसने इंद्र से झगड़ा कर लिया जिसमें उन्होंने वज्र से इसके शिर और जंघाएँ इसके पेट में घुसेड़ दीं। मतांतर से किसी ऋषि के शाप के कारण वह इस प्रकार कुरूप हो गया था। जटायुवध के अनंतर सीता की खोज करते हुए राम-लक्ष्मण के ऊपर क्रौंचवन में मतंग मुनि के आश्रम के पास कबंध ने आक्रमण किया। राम ने उसकी भुजाएँ काट डालीं जिससे मुमूर्षु अवस्था में प्राप्त हो उसने राम से अपना शरीर जला डालने की प्रार्थना की। भस्मीभूत होने पर यह सद्गति को प्राप्त हुआ और विश्वावसु नामक एक दिव्य शरीरधारी गंधर्व के रूप में परिणत हो गया। राम को सीता का पता बताते हुए सुग्रीव से उनकी मैत्री करवा कर वह रावण के विरुद्ध जय यात्रा में राम का बड़ा सहायक सिद्ध हुआ। २. समंतु ऋषि के पुत्र का नाम जो व्यास की अथर्वन् शिष्य-परंपरा में थे। दे० 'कबंध आथर्वण' ३. अट्टहास नामक शिवावतार के शिष्य का नाम।

कबंध आथर्वण--एक ऋषि का नाम जो अथर्ववेद के आदि आचार्य थे। बृहदारण्यक उपनिषद् के अनुसार इन्होंने पतंजलि से अध्यात्मविद्या प्राप्त की थी। दे० 'कबंध'।

कबंधिन् कात्यायन--पिप्पलाद मुनि के एक शिष्य का नाम।

कबंधी--पञ्चशिख मुनि की माता का नाम।

कबीर--मध्ययुगीन हिंदी साहित्य के एक प्रसिद्ध संत कवि। निर्गुणोपासना के अंतर्गत कबीर-पंथ के जन्मदाता, एक स्वतंत्र क्रांतिकारी चिंतक तथा समाज-सुधारक। इनकी जाति, जन्म माता-पिता आदि के संबंध में विद्वानों में मतभेद है। किंवदंती है कि इनकी उत्पत्ति एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से हुई थी जिसने काशी के 'लहरतारा' नामक तालाब में इन्हें फेंक दिया था वहाँ से नीरू नामक एक जुलाहे ने इनको उठा लिया। इनका पालन-पोषण उसी के यहाँ हुआ। कबीर-कसौटी नामक ग्रंथ में इनका जन्म १४५५ सं० और मृत्यु १५७३ सं० लिया गया है। कबीरपंथियों में और कई कथायें प्रचलित हैं जो अत्यंत अस्वाभाविक हैं। श्री हजारी प्रसाद जी द्विवेदी का मत है कि कबीर का जन्म 'योगी' (गोसाईं) नामक जाति में हुआ था जिसे वास्तव में न हिंदू कह सकते हैं और न मुसलमान। यद्यपि कबीर ने अपने गुरु के विषय में कोई विशेष विवरण नहीं दिया, किंतु जनश्रुति और विद्वन्मण्डली इन्हें रामानंद की शिष्य-परंपरा में मानती है। कुछ लोग शेख 'तकी' को इनका गुरु बतलाते हैं किंतु अंतर्साक्ष्य के आधार पर यह कहा जा सकता है कि तकी से कबीर का परिचय भले ही रहा हो लेकिन कबीर के वे गुरु किसी प्रकार भी नहीं हो सकते। कबीर ने अपने पदों में 'तकी' को समझाते हुए संबोधन किया है; और नाम लेकर गुरु को संबोधित करना संतों की परंपरा के बिल्कुल विरुद्ध है। कबीर के विवाह के संबंध में भी मतभेद हैं। जो लोग यह मानते हैं कि इनका विवाह हुआ था उनके मतानुसार इनकी स्त्री का नाम 'लोई' था जिससे 'कमाल' नामक एक पुत्र और 'कमाली' नामक एक पुत्री उत्पन्न हुई थी। नाथ-संप्रदाय को साधना कबीर को पूर्वजों से चली आती हुई धरोहर के रूप में मिली थी। वैष्णव भक्ति का बीज रामानंद से मिला। इसी प्रकार तत्कालीन प्रचलित सूफी साधना से भी कबीर प्रभावित हुए। उपनिषदों के वेदांत संबंधी अद्वैतवाद की भावना भी उनको रामानंद से मिली होगी। इन्हीं सब के समन्वय से अपने क्रांतिकारी व्यक्तित्व की अमिट छाप लगा कर कबीर ने अपने अमर साहित्य का प्रणयन किया था। कबीर की धर्म-भावना के अनुसार कबीर के 'राम' निर्गुण राम हैं, जिनकी प्राप्ति के लिए भक्ति ही परम साधन है। कबीर जाति-पाँति विरोधी थे।

कमठ--१. युधिष्ठिर के दरबार के एक क्षत्रिय वीर का नाम। २. महानगर में रहनेवाले हारीत नामक एक ब्राह्मण के पुत्र का नाम। ३. विष्णु से कच्छपावतार का एक नामांतर। दे० 'कूर्म'।

कमला--१. लक्ष्मी का एक पर्याय। दे० 'रमा'। २. एक मध्यकालीन हरिभक्त परायण महिला।

कमलाकर भट्ट--मध्व संप्रदाय के अनुयायी एक विख्यात दार्शनिक आचार्य का नाम जो अपनी असाधारण प्रतिभा के कारण 'द्वितीय मध्वाचार्य' के नाम से प्रसिद्ध हुये। ये भगवान के सभी अवतारों को पूर्ण मानते थे और विजय ध्वजी पद्धति के अनुसार भागवत की कथा कहते थे। भक्तमाल के अनुसार इन्होंने अपनी भुजाओं पर भगवान के आयुधों की तप्त मुद्रा धारण की थी।

कमलाक्ष--तारक के पुत्र का नाम जो त्रिपुरांतर्गत सुवर्णपुरी का अधीश्वर था। इसका वध शिवजी ने किया था।

कयाधू--हिरण्यकशिपु नामक प्रसिद्ध राक्षस की स्त्री का नाम। यह तारकासुर के जंभासुर नामक सेनापति की कन्या थी।

करंधम--विष्णु पुराण के अनुसार अतिभूति नामक एक प्राचीन राजा के पुत्र तथा अवीक्षित के पिता का नाम। अन्य पुराणों के अनुसार ये त्रिभान, त्रिशांव, त्रिसारि अथवा त्रिसानु के पुत्र माने गये हैं। महाभारत के अनुसार एक बार इन्होंने अपना कर कंपित कर अनेक सेनानी उत्पन्न किये थे और अपने आक्रमणकारियों को परास्त किया था। इसी कारण इनका नाम करंधम पड़ा था। विष्णुपुराण के अनुसार इनके पौत्र का नाम मरुत्त था।

करंभ–१. अगस्त्य कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम। २. एक दानव का नाम। ३. मत्स्य तथा वायु पुराण के अनुसार शकुनि के पुत्र का नाम।

करंभि–भागवत तथा विष्णुपुराण के अनुसार शकुनि के पुत्र का नाम। दे० 'करंभ'।

करकष--शिशुपाल के चार पुत्रों में से एक का नाम।

करकाक्ष–एक राजा का नाम जिसने महाभारत युद्ध में कौरवों की सहायता की थी।

करकायु--धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक का नाम।

करभाजन–एक प्रसिद्ध भक्त का नाम जो नव योगीश्वरों में से एक थे। ऋषभदेव के नौ सिद्ध पुत्रों में से एक का नाम। ये प्रसिद्ध योगी तथा अध्यात्मवित् थे। इन्होंने ही राजा जनक को ज्ञानोपदेश दिया था जिससे वे 'विदेह' पदवी प्राप्त कर सके।

करमानंद--एक प्रसिद्ध चारण भक्त जो कुशल गायक भी थे। २. पर्जन्य सुत नवनंदों में से एक का नाम। दे० 'पर्जन्य'।

कररोमन--कश्यप तथा कद्रू के एक पुत्र का नाम। इनका एक नामांतर करवीर भी है।

करवीर--दे० 'कररोमन'।

करालजनक--एक धर्मवेत्ता ऋषि का नाम जिनका वसिष्ट के साथ क्षराक्षरलक्षण विषयक शास्त्रार्थ हुआ था।

करिक्रत वतिराशन--एक सूक्तद्रष्टा का नाम।

करीश--विश्वामित्र कुलोत्पन्न गोत्रकार ऋषिगणों का सामूहिक नाम।

करूश--वैवस्वत मनु के दस पुत्रों में से एक का नाम जो दक्ष सावर्णि मन्वंतर के अधिपति थे। इनकी संतति कारूषक नाम से प्रसिद्ध है। इन्होंने केवल वायु सेवन कर दीर्घकाल तक देवी की उपासना की थी जिससे प्रसन्न होकर उन्होंने इन्हें मन्वंतराधिप बनाया था।

करेणुमती–पांडुपुत्र नकुल की पत्नी का नाम जो शिशुपाल की कन्या थी।

कर्कट--मर्यादा नामक पर्वत पर रहनेवाले एक भील का नाम।

कर्कटी--हिमालय के उत्तर प्रांत में रहनेवाली एक राक्षसी का नाम जिसे लोगों को मारने का वर मिला हुआ था। बाहर जनसंहार का कार्य कर यह पुनः हिमालय में चली जाती थी जहाँ इसका नाम कंदरा देवी हो जाता था। विषूचिका तथा अन्यायवाधिका इसके अन्य नामांतर हैं।

कर्कोटक--अष्टकुली महासर्पों में से एक प्रसिद्ध महासर्प जो तक्षक का भाई था। कद्रू ने एक सहस्र सर्प उत्पन्न किये थे जिनमें शेष, वासुकि, ऐरावत, तक्षक तथा कर्कोटक मुख्य थे। कर्कोटक ने एक बार नारद से कपट व्यवहार किया था, जिससे क्रुद्ध हो उन्होंने शाप देकर इसे स्थावर बना दिया और साथ ही कलि के प्रथम चरण में राजा नल द्वारा उसके उद्धार का भी वचन दिया। कलि के प्रभाव से राज्यच्युत होकर जब नल कालांतर में उस वन से होकर गुजर रहे थे तो वह वन दावानल से भस्मीभूत हो रहा था। कर्कोटक ने नल को देखकर 'त्राहिमाम्' की पुकार लगाई और नल ने उसका उद्धार किया किंतु कर्कोटक ने उल्टा उन्हें डँस लिया। इससे उनका उपकार ही हुआ क्योंकि उसके विष के प्रभाव से उनके शरीर में रहनेवाला कलि नष्ट हो गया।

कर्ण--१. कुंती के गर्भ से उत्पन्न सूर्य के पुत्र। कुंती ने एक बार ऋषि दुर्वासा का विशेष आदरसत्कार किया था जिससे प्रसन्न होकर उन्होंने कुंती को एक मंत्र बताया था, जिसकी सहायता से वह किसी भी देवता से सहवास कर सकती थीं। कुंती उस समय कुमारी ही थीं। उत्सुकता वश उन्होंने उसी अवस्था में सूर्य का आह्वान किया। उसी के फल-स्वरूप कर्ण का धनुष वाण कुंडल कवच सहित जन्म हुआ। किंतु कुंती ने लोक-लाज के भय से अपने नवजात शिशु को अश्व नदी में छोड़ दिया, जहाँ से धृतराष्ट्र के सूत अधिरथ ने उसे उठाकर अपनी पत्नी राधा के हाथ रख दिया। इस सूत-दंपति ने ही कर्ण का पालन पोषण किया था, जिससे वे सूत-पुत्र तथा राधेय कहलाए। कर्ण को शस्त्र-विद्या की शिक्षा द्रोणाचार्य ने दी थी, किंतु इनकी उत्पत्ति के विषय में संदेह होने के कारण उन्होंने इन्हें ब्रह्मास्त्र का प्रयोग नहीं सिखाया था। इसके लिए वे परशुराम के पास गये और अपने को ब्राह्मण बताकर शस्त्रविद्या सीखने लगे। किंतु एक दिन परशुराम को यह किसी प्रकार ज्ञात हो गया कि यह ब्राह्मण नहीं हैं तो उन्होंने श्राप दिया कि "जिस समय तुम्हें इस विद्या की विशेष आवश्यकता होगी, उसी समय तुम इसे भूल जाओगे।" कर्ण की दुर्योधन से बचपन से ही विशेष मित्रता हो गई थी। दुर्योधन के लिए उन्होंने सफलतापूर्वक अश्वमेध यज्ञ भी किया था। जिस समय द्रौपदी के स्वयंवर के लिए राजा-गण द्रुपद के यहाँ एकत्र हो रहे थे दुर्योधन ने कर्ण को उसके उपयुक्त बनाने के लिए उन्हें कलिंगदेश का अधिपति बनाया था। द्रुपद के यहाँ अर्जुन के पूर्व कर्ण ने मत्स्य-बेध किया था किंतु द्रौपदी ने, सूत-पुत्र होने के कारण इनके साथ ब्याह करना अस्वीकार कर दिया था। कर्ण ने इससे अपने को विशेष रूप से अपमानित समझा था। इनकी अर्धांगिनी का नाम पद्मावती तथा पुत्रों का वृषकेतु, वृषसेन तथा चित्रसेन आदि मिलता है। कर्ण की प्रतिद्वंद्विता अर्जुन से बचपन से ही प्रारम्भ हो गई थी। कर्ण के सूत्र-पुत्र के रूप में विख्यात होने के कारण अर्जुन बराबर उन्हें हेय दृष्टि से देखते थे। उन्हें कर्ण के अपने बड़े भाई होने की बात ज्ञात न थी। भीष्म भी कर्ण को इसी कारण अधिरथ ही कहते थे। कर्ण ने पाँचों पांडवों का वध करने का प्रण किया, किंतु

अपनी माता कुंती के कहने पर उन्होंने अपने प्रण को अर्जुन के वध तक ही सीमित कर लिया था। कर्ण दानवीर के रूप में भी प्रसिद्ध हैं। इनकी यह ख्याति सुनकर ही इंद्र इनके पास उस कुंडल तथा कवच को माँगने आये थे, जिनके साथ इनका जन्म हुआ था। कर्ण ने अपने पिता सूर्य के द्वारा इंद्र की प्रवंचना को जानते हुए भी उन्हें वे अमोघ कुंडल-कवच दे दिये थे। उसके लिए इंद्र ने उन्हें एक बार के प्रयोग के लिए अपनी अमोघ शक्ति दी थी, जिससे किसी का भो वध, निश्चित था। कर्ण उसका प्रयोग अर्जुन पर करना चाहते थे किंतु दुर्योधन के कहने पर उन्हें उससे भीम-पुत्र घटोत्कच का संहार करना पड़ा था। शस्त्रों की शय्या पर लेटे हुए भीष्म ने कर्ण से कुंती से सुनी हुई उनके जन्म की कथा के आधार पर पांडवों का साथ देने के लिए कहा था। किंतु कर्ण का उत्तर था : "मैंने दुर्योधन का नमक खाया है। इस युद्ध के समय मैं उसे किसी प्रकार धोखा नहीं दे सकता।" महाभारत में भीष्म तथा द्रोण के बाद कर्ण कौरवों के सेनापति बनाये गए थे और तीन दिन युद्ध का संचालन करने के बाद अर्जुन के हाथों उनका वध हुआ था। २. मेवाड़ के एक राणा जो महाराणा प्रतापसिंह के पौत्र और राणा अमरसिंह के पुत्र थे। इनके पिता के समय से ही मुगलों के निरंतर आक्रमणों के कारण राज्य की व्यवस्था बिगड़ गई थी जिससे ऊबकर उन्होंने सं० १६७१ में जहाँगीर से संधि कर ली। तभी से राज्य का सारा काम-काज कर्णसिंह देखने लगे थे किंतु इनका वास्तविक राज्याभिषेक सं० १६७६ में हुआ। संधि के फलस्वरूप शांति स्थापित हो जाने के कारण इन्हें राज्य-व्यवस्था में कुछ सुधार करने का अवसर मिला। इन्होंने अपने राज्यकाल में कई महल बनवाये, अनेक भग्न प्राचीरों का पुनर्निर्माण कराया और कुछ पुण्य कार्य भी किये। सं० १६८४ में इनका देहान्त हो गया। ३. गुजरात के प्रसिद्ध राजा भीमदेव के पुत्र का नाम जिनका राज्यकाल सं० ११२० से ११५० तक रहा। इनके पुत्र का नाम जयसिंह सिद्धराज था। ४. गुजरात के ही एक अन्य चालुक्य राजा का नाम जो सारंगदेव के पुत्र थे और जिनका राज्यकाल सं० १३५३ से १३६० तक माना जाता है।

कर्णक--अत्रि कुलोत्पन्न एक मंत्रद्रष्टा ब्रह्मर्षि का नाम।

कर्णजिह्व--अत्रिगोत्री ऋषिगणों का नाम।

कर्णवेष्ट--पांडवपक्षीय एक राजा का नाम।

कर्णश्रावस्--(अंगिरस्)--अंगिरस्-कुलोत्पन्न एक मंत्रद्रष्टा का नाम।

कर्णश्रुत वासिष्ठ--वसिष्ठ कुलोत्पन्न एक मंत्रद्रष्टा का नाम।

कर्णिका--१. वसुदेव के भाई कंक की पत्नी का नाम। इनके जय तथा ऋतुधाम नाम के दो पुत्र थे। २. एक अप्सरा का नाम।

कर्णिकार--जटायु के एक पुत्र का नाम।

कर्दम--स्वायंभुव मन्वंतर के एक प्रजापति जिनके पिता का नाम कीर्तिभानु और पुत्र का नाम अनंग था। इनकी उत्पत्ति ब्रह्मा की छाया से मानी जाती है। इनका विवाह स्वायंभुव मनु की कन्या देवहूति से हुआ था जिससे लोक प्रसिद्ध महर्षि कपिल की उत्पत्ति हुई, जिन्होंने सांख्य दर्शन की रचना की। योग्य पुत्र प्राप्त करने के लिए कर्दम ऋषि ने दस सहस्र वर्ष घोर तपस्या की थी। दे० 'कपिल' तथा 'देवहूति'।

कर्मचंद--स्वामी रामानंद की परंपरा के प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य स्वामी अनंतानंद जी के प्रधान शिष्यों में से एक का नाम। दे० 'अनंतानंद'।

कर्मजित--राजा बृहत्सेन के पुत्र का नाम। इनके पुत्र का नाम सृतंजय था।

कर्मश्रेष्ठ--स्वायंभुव मन्वंतर में पुलह तथा गति के तीन पुत्रों में से ज्येष्ठ का नाम।

कर्माबाई--जगन्नाथ पुरी में रहनेवाली एक भक्ति परायण महिला जो नित्यप्रति प्रातःकाल भगवान को खिचड़ी का भोग लगाया करती थी किंतु स्वच्छता आदि का विशेष ध्यान नहीं रखती थी। एक दिन एक संत ने इनको विधि-निषेध का पालन न करने के लिए बहुत फटकारा जिससे प्रभावित होकर उस दिन वह विधिवत स्नान करने लगी जिससे बालभोग में देर हो गई। इधर भगवान् दुखी हुए और पंडों ने जब पट खोला तो देखा कि श्रीमुख में खिचड़ी लगी हुई है। भगवान ने पंडों को आदेश दिया कि मैं विधिनिषेध का पालन नहीं चाहता केवल प्रेम चाहता हूँ। कर्माबाई को उसी प्रकार मेरा भोग लगाने दो जैसे वह पहले लगाती थी। बाई जी की दिनचर्या पुनः पूर्ववत् चलने लगी और पंडों ने अपनी गलती स्वीकार की।

कर्मिन्--शुक्राचार्य के चार पुत्रों में से कनिष्ठ का नाम।

कलंकी--विष्णु के अंतिम अवतार को कल्कि या कलंकी अवतार कहते हैं। दे० 'कल्कि'।

कलश--एक सर्प का नाम।

कलहा--सौराष्ट्र निवासी भिक्षु नामक एक ब्राह्मण की पत्नी का नाम जो बड़ी कर्कश थी। एक बार जब इससे श्राद्ध-पिण्ड को गंगा में स्थापित करने के लिए कहा गया तो इसने उसे ऐसे कुएँ में डाल दिया जिसमें मल-मूत्र फेंका जाता था। फलस्वरूप उसे पिशाच योनि प्राप्त हुई। तदनंतर धर्मदत्त ने द्वादशाक्षर मंत्र द्वारा इसका उद्धार किया। अगले जन्म में धर्मदत्त और कलहा दशरथ तथा कौशल्या के रूप में अवतरित हुए और उनके पुत्र राम हुए।

कला--१. कर्दम तथा देवहूति की नव कन्याओं में से पहली का नाम जो मरीचि ऋषि की पत्नी थीं और जिनके गर्भ से कश्यप तथा पूर्णिमा नामक दो पुत्रों की उत्पत्ति हुई। २. विभीषण की ज्येष्ठ कन्या का नाम जो अशोक वाटिका-स्थित सीता का कुशल समाचार बराबर लिया करती थी।

कलावती--लीलावती की कन्या का नाम। इसने एक बार सत्यनारायण के प्रसाद का अपमान किया था, जिसके फलस्वरूप इसे बहुत कष्ट झेलने पड़े। बाद में इसकी सत्यनारायण में बड़ी निष्ठा हो गई।

कलि--एक युग-प्रवर्तक देवता का नाम। इन्हीं के नामानुसार चौथे युग का नाम कलियुग हुआ। कलिपुराण के अनुसार द्वापर के अंत में ब्रह्मा ने अपनी पीठ से अधर्म की उत्पत्ति की। अधर्म की स्त्री का नाम मिथ्या था जिससे दंभ नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। दंभ ने अपनी भगिनी माया से विवाह किया जिससे लोभ उत्पन्न हुआ लोभ ने अपनी भगिनी से विवाह किया जिससे क्रोध नामक पुत्र और हिंसा नाम की कन्या उत्पन्न हुई। अंत में क्रोध और हिंसा का विवाह हुआ, जिससे कलि नामक पुत्र और दुरुक्ति नामक कन्या उत्पन्न हुई। कलि और दुरुक्ति के विवाह से भय नामक पुत्र और मृत्यु नामक कन्या उत्पन्न हुई। इनके पारस्परिक विवाह से नित्य नामक पुत्र और यातना नाम की कन्या उत्पन्न हुई। कलि का आयुष्काल चार लाख बत्तीस हजार वर्ष माना गया है, जिसके अंत में कल्कि अवतार होगा। आर्य भट्ट के मत से कलि १५७७६१७५० दिन रहता है। दमयंती के स्वयंवर में देवताओं के अपमान का बदला लेने की इच्छा से कलि ने राजा नल को अनेक क्लेश दिये थे। दे० 'नल'।

कलि प्रगाथ--१. राजा वलि के एक पुत्र का नाम। २. महाभारत के अनुसार एक राजा का नाम जिन्होंने द्रौपदी-स्वयंवर में भाग लिया था। ३. कृतयुग के एक दैत्य का नाम।

कलिल--सोम के पुत्र का नाम।

कल्कि--विष्णु का अंतिम अवतार। कल्कि पुराण के अनुसार यह कलियुग के अंत में होगा। कल्कि भगवान कलि का संहार कर फिर सतयुग का आविर्भाव करेंगे। साथ ही पद्मा के रूप में लक्ष्मी अवतार लेंगी। कल्कि इनका पाणिग्रहण करेंगे। तदनंतर विश्वकर्मा के द्वारा निर्मित 'शांभल' नगर में ये वास करेंगे। वहाँ बौद्धों का दमन तथा कुथोदर नामक राक्षसी का बध करेंगे। इसके बाद मल्लाह नामक नगर से अवरुद्ध शशिध्वज नामक राजा की मुक्ति होगी। मल्लाह के निवास-काल में शय्याकर्ण नामक एक राजा से इनका युद्ध होगा। तदनंतर भूलोक के समस्त अत्याचारियों के विनाश के बाद सत्ययुग का आविर्भाव होगा। भूतल पर देव तथा गंधर्व आदि प्रकट होंगे। कल्कि भगवान वैकुंठ लौट जायेंगे।

कल्पतरु--कल्पवृक्ष का पर्याय। देवलोक का एक वृक्ष जो समुद्र-मंथन से प्राप्त हुए चौदह रत्नों में माना जाता है। यह इंद्र को मिला था। पुराणों के आधार पर लोगों का कहना है कि यह मनोवांछित वस्तु को देने वाला है। एक कल्प तक इसकी आयु मानी गई है।

कल्माष--कश्यप तथा कद्रू के पुत्र का नाम।

कल्याण--सिंधु देश के पाली नामक गाँव के निवासी एक वैश्य का नाम जिसकी कन्या का नाम इंदुमती तथा पुत्र का नाम वल्लाल था।

कल्याण--संगीत शास्त्र के अनुसार एक राग का नाम। इसमें मध्यम, तीव्र तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। आजकल 'कल्याण' से 'शुद्ध कल्याण' नामक राग का बोध होता है जो एक ओड़व संपूर्ण राग है। इसका विस्तार मंद्र सप्तक में अधिक होता है और गंधार तथा पंचम इसके मुख्य स्वर हैं। इसका न्यास अधिकतर मंद्र पंचम पर होता है। कालांतर में प्रसिद्ध पारसीक संगीतज्ञ तथा कवि अमीर खुसरो ने इसी से मिलते-जुलते 'यमन' नामक राग का आविष्कार किया जो बड़ा लोक प्रिय हुआ। दे० 'यमन' तथा 'यमन कल्याण'।

कल्याणदास--१. रामानंदी संप्रदाय के एक प्रमुख प्रचारक जो पौहारी जी के शिष्य थे और नाभाजी के गुरु अग्रदासजी के गुरुभाई थे। २. एक अन्य वैष्णव भक्त जो प्रसिद्ध संत धर्मदास जी के पुत्र थे। ३. मारवाड़ के एक वैष्णव संत का नाम।

कल्याणदेवी--राजा जयंत की कन्या का नाम जो काशी के राजा जयापीड़ की पत्नी थीं।

कल्याणवर्मा--एक प्रसिद्ध ज्योतिषी जिनका जन्म ५७८ ई० के लगभग माना जाता है। सारावली नाम का इनका रचा हुआ एक प्रसिद्ध ज्योतिष-ग्रंथ है जिसकी रचना प्रसिद्ध ज्योतिषी वराहमिहिर के बाद हुई थी। ये बघेल क्षत्रिय थे और देवग्राम नामक स्थान में निवास करते थे। ब्रह्मगुप्त ने अपने ग्रंथ में इनका उल्लेख किया है।

कल्याणसिंह--जगन्नाथजी के एक अनन्य भक्त जिन्होंने 'राम' और 'जानकी' का उच्चारण करते हुए प्राणत्याग किया था।

कल्याणिनी--१. धर नामक वसु की स्त्री का नाम। २. एक अप्सरा का नाम।

कवचिन्--महाभारत के अनुसार धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम जिसका वध भीम ने किया था।

कवष ऐलूष--१. एक सूक्तद्रष्टा का नाम। ये कुरुश्रवण के उपाध्याय थे और शूद्रा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। इनके पिता का नाम इलूष था। २. एक आचार्य का नाम जो युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में सम्मिलित हुए थे।

कवषा--एक ऋषि-पत्नी का नाम जो तुर नामक ऋषि की माता थीं।

कवि--१. शुक्राचार्य का एक नामांतर। २. स्वायंभुव मन्वंतर में भृगु के तीन पुत्रों में से कनिष्ठ का नाम। इनके पुत्र प्रसिद्ध उशना ऋषि थे जो प्रसिद्ध सूक्तद्रष्टा हुए। ३. राजर्षि प्रियव्रत तथा बर्हिष्मती के दस पुत्रों में से कनिष्ठ का नाम जो बाल्यावस्था से ही विरक्त हो गये थे। ४. उरुक्षय नामक एक क्षत्रिय राजा के पुत्र का नाम। ५. तामस मन्वंतर के सप्तर्षियों में से एक का नाम। ६. रैवत मनु के दस पुत्रों में से पाँचवें का नाम। ७. ऋषभदेव तथा जयंती के नव सिद्ध पुत्रों में से जेष्ठ का नाम। ८. वैवस्वत मनु के दस पुत्रों में से कनिष्ठ का नाम। ९. दुरितक्षय नामक क्षत्रिय के पुत्र का नाम, जो अपने तप के बल पर ब्राह्मण हो गया था। १०. कौशिक ऋषि के सात पुत्रों में से एक का नाम। ११. कृष्ण के एक प्रपौत्र का नाम।

कविजी--नाभादास के अनुसार एक प्रमुख भक्त जो नवधा प्रेमा तथा परा आदि भक्तियों के रत्नाकर माने जाते थे और जो नव योगीश्वरों में से एक हैं। दे० 'योगीश्वर'।

कविरथ--चित्ररथ के पुत्र का नाम।

कव्यवाह--एक पितृ-विशेष का नाम। ब्रह्मा की मानस-कन्या संध्या पर दक्ष आदि मोहित हो गये जिससे उनका स्वेदबिंदु इस लड़की के ऊपर गिर गया और इसी से इनकी उत्पत्ति हुई।

कव्हा--वायुपुराण के अनुसार उग्रसेन की कन्या का नाम।

कश--पुरूरवा के वंशज राजा सुहोत्र के पुत्र तथा आयु के पौत्र का नाम।

कशाय--एक शाखा प्रवर्तक ऋषि का नाम।

कशु--वेदि के एक राजा का नाम जिनकी दानवीरता की प्रशंसा ब्रह्मातिथि काण्व ने की है।

कश्यप--ब्रह्मा के मानसपुत्र मरीचि के पुत्र तथा सप्तर्षियों में से एक। ये सृष्टिकर्त्ता प्रजापतियों में प्रधान माने जाते हैं। इनकी सात स्त्रियाँ थीं जिनसे दैवी, आसुरी, मानवी आदि अनेक प्रकार की सृष्टियाँ उत्पन्न हुई थीं। इनकी दिति नामक स्त्री से दैत्य, अदिति से देवता (आदित्य-गण) विनता से खेचर जीव (पक्षी आदि) कद्रू से सरी-सृप वर्ग, सुरभि से गो-महिष आदि, दनु से दानव तथा सरमा से श्वान आदि पशु उत्पन्न हुए। मार्कण्डेय तथा हरिवंश पुराणों के अनुसार कश्यप के दिति, अदिति, दनु, विनता कद्र, स्वप्ता, मुनि, क्रोधा, अरिष्टा, इरा, ताम्र, इला तथा प्रधा नाम की तेरह स्त्रियाँ थीं। कश्यप का शब्दार्थ कच्छप अथवा कछुआ होता है। शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है कि प्रजापति ने कच्छप का रूप धारण करके सारी सृष्टि का निर्माण किया। विष्णु पुराण के अनुसार भी विष्णु की उत्पत्ति वामन रूप में कश्यप और अदिति से हुई थी।

कहोड--महर्षि उद्दालक के शिष्य तथा अष्टावक्र के पिता का नाम। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार ये याज्ञवल्क्य के समकालीन थे। व्रीहि, यव आदि नव धान्यों को नवान्न याग करने के अनंतर खाने की प्रथा इन्होंने ही आरंभ कराई थी। आश्वलायन गृह्य सूत्रों में ब्रह्म यज्ञांग-तर्पण के प्रसंग में भी इनका उल्लेख है। कहोल कौषीतकि इनका एक अन्य नामांतर है। दे० 'अष्टावक्र'।

कहोल कौषीतकि--दे० 'कहोड'।

कांकायन-एक प्राचीन ऋषि का नाम जिनका उल्लेख शांत्युदक संबंधी मंत्रों के संबंध में मिलता है।

कांचन--१. च्यवन भार्गव का एक नामांतर। २. भागवत तथा विष्णु पुराण के अनुसार भीम के एक पुत्र का नाम। वायुपुराण में इनका नाम कांचनप्रभ मिलता है।

कांचन मालिनी--एक अप्सरा का नाम जिसे प्रयाग में माघस्नान करने से मुक्ति प्राप्त हुई थी।

कांटय--अंगिरस् कुलोत्पन्न एक गोत्रकार तथा प्रवर का नाम।

कांडमायन--एक वैयाकरण का नाम जिसके मत का उल्लेख विसर्ग संधि के प्रकरण में मिलता है।

कांडशय (कांडूषय)--पराशर कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।

कांबोज--१. उपमन्यु कुलोत्पन्न एक आचार्य का नाम। २. भारत के उत्तर-पश्चिम प्रदेश में रहने वाली एक जाति-विशेष का प्राचीन नाम। यह प्रदेश अच्छी नस्ल के घोड़ों के लिए प्रसिद्ध है।

काकभुशुंड--भगवान के एक भक्त जो कौवे के रूप में रहते हैं और जिनका मानस के अनुसार कभी नाश नहीं होता। ये पूर्व जन्म के ब्राह्मण थे किंतु लोमश मुनि के शाप से कौवे की योनि में आ गए और प्रकाण्ड ज्ञानी हुए। ये राम के बालरूप के उपासक थे।

काकी--१. स्कंद के शरीर से उत्पन्न होनेवाली मातृकाओं में से एक का नाम। २. कश्यप तथा ताम्रा की कन्याओं में से एक का नाम।

काकुत्स्थ--ककुत्स्थवंशीय राजाओं का पैत्रिक नाम। राम, दशरथ आदि इसी वंश के थे। दे० 'ककुत्स्थ'।

काकेयस्थ--कृष्ण पराशर कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।

काक्षीवत्--दे० 'दीर्घतमस्'।

काण्व--१. एक प्राचीन आचार्य का नाम जिन्होंने स्वर-विषयक मत का प्रतिपादन किया था। २. वसिष्ठ गोत्रीय ऋषिगणों का सामूहिक नाम। ३. व्यास की याज्ञवल्क्य शाखाओं में से एक का नाम।

काण्वायन--अंगिरस् कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।

काण्व्यायन--एक आचार्य का नाम।

कात्थक्य--एक प्राचीन ऋषि का नाम जिन्होंने अर्थ-विषयक विचार किया है।

कात्यायन--१. विश्वामित्र कुलोत्पन्न एक प्राचीन ऋषि का नाम जिन्होंने श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र तथा प्रतिहारसूत्र नामक ग्रंथों की रचना की थी। २. गोभिल नामक एक प्राचीन ऋषि के पुत्र का नाम जिनके बनाए हुए गृह्यसंग्रह छंदोपरिशिष्ट और कर्मप्रदीप ग्रंथ हैं। ३. एक बौद्ध आचार्य जिन्होंने 'अभिधर्म ज्ञान प्रस्थान' नामक ग्रंथ की रचना की। इनका समय बुद्ध के लगभग ४५ वर्ष बाद माना जाता है। ४. एक अन्य बौद्ध आचार्य जिन्होंने पालि-व्याकरण की रचना की और जो पाली में कच्चयान नाम से प्रसिद्ध है। ५. प्रसिद्ध महर्षि तथा व्याकरण शास्त्र के प्रणेता जिन्होंने पाणिनि की अष्टाध्यायी का परिशोधन कर उस पर वार्तिक लिखा था। कुछ विद्वान् प्राकृतप्रकाश के रचयिता वररुचि को इनसे अभिन्न मानते हैं, किंतु इस कथन के लिए कोई ठोस प्रमाण नहीं है। कात्यायन का समय मैक्समुलर के अनुसार चौथी शताब्दी ई० पू०, गोल्डस्टकर के अनुसार दूसरी शताब्दी ई० पू० तथा बेबर के अनुसार ईसा के जन्म के २५ वर्ष पूर्व था। व्याकरण के अतिरिक्त श्रौत सूत्रों तथा यजुर्वेद प्रातिशाख्य के रचयिता भी कात्यायन ही माने जाते हैं। बेबर ने इनके सूत्रों का संपादन किया है। इन्हें एक स्मृति ग्रंथ का रचयिता भी माना जाता है। कथासरित्सागर के अनुसार ये पुष्पदंत नामक गंर्वध के अवतार थे। कात्यायन के नाम पर प्रसिद्ध सभी ग्रंथों की सूची निम्नलिखित हैं :--१. श्रौतसूत्र, २. इष्टि-पद्धति, ३. गृह्यपरिशिष्ट, ४. कर्म प्रदीप, ५. त्रिलोडिक सूत्र, ६. श्राद्ध कल्प सूत्र, ७. पशुबंध सूत्र, ८. प्रतिहार

सूत्र, ९. भ्राजश्लोक, १०. रुद्रविधान, ११. वार्तिकपाठ, १२. कात्यायनी शांति, १३. कात्यायनी शिक्षा, १४. स्नान-विधि, १५. कात्यायन कारिका, १६. कात्यायन प्रयोग, १७. कात्यायन वेद प्राप्ति, १८. कात्यायन शाखा भाष्य, १९. कात्यायन स्मृति (जिसका उल्लेख यलवल्क्य, हेमाद्रि तथा विज्ञानेश्वर आदि ने किया है), २०. कात्यायनोपनिषद्, २१. कात्यायन गृह्य कारिका, २२. वृषोत्सर्ग पद्धति, २३. आतुरसन्यास विधि, २४. गृह्य सूत्र, २५. शुक्ल युजुः प्रातिशाख्य। २६. प्राकृत प्रकाश तथा २७. अभिधर्म ज्ञान प्रस्थान। उपर्युक्त सभी ग्रंथ भ्रमवश वररुचि कात्यायन के ही मान लिए जाते हैं, जो ठीक नहीं हैं।

कात्यायन स्मृति--अष्टादश स्मृतिग्रंथों में से एक जिसके रचयिता महर्षि कात्यायन बताये जाते हैं, किन्तु यह ग्रन्थ इस समय अप्राप्य है।

कात्यायनी--१. याज्ञवल्क्य की दो पत्नियों में से एक का नाम। इनकी दूसरी पत्नी मैत्रेयी अध्यात्मविद्या में पारंगत थी, किन्तु सांसारिक विषयों में कात्यायनी का ही मत मान्य था। २. देवी के एक रूप विशेष का नाम। कात्यायन के ही द्वारा सर्वप्रथम पूजित होने के कारण इनका नाम कात्यायनी पड़ा था। देवी की यह मूर्ति दस भुजाओं से युक्त है और वे सिंह पर समारूढ़ रहती हैं। इसी रूप में इन्होंने सौ वर्ष के युद्ध के उपरांत महिषासुर नामक एक भयंकर दैत्य का वध किया था। इस राक्षस ने देवताओं को नाना प्रकार के कष्ट दिये थे जिससे विपन्न हो देवताओं ने त्रिदेवों की प्रार्थना की। अत्यंत क्रुद्ध होने के कारण त्रिदेवों के मुख से एक तेज निकला जिसने स्त्री का रूप धारण करके महिषासुर का वध किया। यही कात्यायनी देवी थीं। इनके अवतार का एक और कारण था। महिषासुर ने एक बार परम रूपवती स्त्री का रूप धारण करके कात्यायन के शिष्य को मोहित करना चाहा था जिससे क्रुद्ध हो कात्यायन ने शाप दे दिया कि स्त्री के हाथ से ही तेरा वध होगा। दे० 'महिषासुर' तथा 'कात्यायन'। ३. एक हरि भक्ति परायण महिला जिनका प्रेम गोपियों के प्रेम के बराबर था और जो गान विद्या में भी बड़ी निपुण थीं।

कादंबरी--संस्कृत के प्रसिद्ध महाकवि वाणभट्ट द्वारा प्रणीत एक विख्यात ग्रंथ का नाम जो काव्यमय गद्य में है और अपनी विशेषताओं में बेजोड़ है। इसमें राजा चंद्रपीड तथा गंधर्वराज चित्ररथ की कन्या कादंबरी का प्रेमोपाख्यान वर्णित है। कादंबरी इस कथा की नायिका है। इतना प्रौढ़, प्रांजल तथा आलंकारिक गद्य विश्व-साहित्य में दुर्लभ है। वाण की प्रतिभा के संबंध में एक उक्ति प्रसिद्ध है; "वाणोच्छिष्टं जगत्सर्वं" अर्थात् कोई ऐसी अनूठी उक्ति नहीं जिसे वाण ने पहले से ही न कह रक्खा हो। दे० 'वाणभट्ट'।

कान्हर--१. विट्ठल जी के पुत्र का नाम। २. उक्त ग्रंथ के ही अनुसार एक अन्य मध्यकालीन वैष्णव भक्त का नाम।

कान्हरदास--१. रामानंद संप्रदाय के एक प्रमुख प्रचारक और भक्त जो पौहारी जी के शिष्य थे और अग्रदास जी के समकालीन थे। २. 'बुढ़िया' नामक ग्राम में रहनेवाले एक विख्यात वैष्णव भक्त का नाम जो किन्हीं सोभूराम जी के शिष्य थे।

कान्हरा--भारतीय संगीत पद्धति का एक प्रसिद्ध राग। कान्हरे अठारह प्रकार के होते हैं किन्तु अधिकतर कान्हरा से दरबारी कान्हरा का बोध होता है। इस राग का आविष्कार तानसेन ने किया था और सम्राट् अकबर को यह बहुत प्रिय था। उनके दरबार में बहुधा इस राग का आलाप होने के कारण इसका नाम दरबारी कान्हरा पड़ गया। इसमें ग, ध, नि कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। रे ग और ध का इस राग में प्राधान्य रहता है। गंधार सदा वक्र और आंदोलित तथा मध्यम का अंश लेकर लगता है। गंधार की ही भाँति धैवत भी आंदोलित रहता है और निषाद का अंश लेकर लगता है। इसके गाने का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। इसका विस्तार मंद्र तथा मध्य सप्तक में ही अधिक होता है। प्रकृति शांत और गंभीर होने के कारण यह राग भक्ति रसात्मक पदों के लिए यह बहुत उपयुक्त है। यही कारण है कि संतों के पदों में कान्हरे और विलावल बहुत मिलते हैं।

कामंद--एक ब्रह्मर्षि का नाम जिन्होंने राजा अंगरिष्ट को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के संबंध में उपदेश दिये थे।

कामंदक--'कामंदकीय नीतिसार' नामक ग्रंथ के रचयिता एक प्रसिद्ध नीतिविशारद का नाम। इन्होंने अपने ग्रन्थ में चाणक्य का उल्लेख किया है जिससे स्पष्ट है कि ये चाणक्य के बाद हुए थे।

काम--१. दे० 'कामदेव'। २. संकल्प के पुत्र का नाम। ३. धर्म ऋषि के एक पुत्र का नाम। ४. परशुराम के एक भाई का नाम। ५. वैवस्वत मन्वंतर में वृहस्पति के दौहित्र का नाम।

कामकला--एक गोपी, जो राधा की सखी थी।

कामकायन--विश्वामित्र के कुल में उत्पन्न एक गोत्रकार ब्रह्मर्षि का नाम।

कामठक--एक पौराणिक सर्प।

कामदेव--प्रेम के देवता। ऋग्वेद में अद्वैत में सर्वप्रथम इच्छा की उत्पत्ति मानी गई है। यह इच्छा ही आगे चल कर प्रेम के देवता के प्रतीक-स्वरूप कामदेव के नाम से स्वीकृत हुई। अथर्ववेद में इनकी उत्पत्ति के संबंध में लिखा है: "काम की उत्पत्ति ही सर्वप्रथम हुई थी। उनकी समानता देवता प्रजापति और मनुष्य कोई भी नहीं कर सकते।" इसके अतिरिक्त कामदेव को इन सबसे महान् भी कहा गया है। तैत्तरीय ब्राह्मण के अनुसार इन्हें न्याय के अधिष्ठाता धर्मराज तथा विश्वास के प्रतीक स्वरूप स्वीकृत हुई देवी श्रद्धा का पुत्र कहा जा सकता है। हरिवंश पुराण में इन्हें लक्ष्मी का पुत्र कहा गया है। कुछ स्थानों पर इनके संबंध में ब्रह्मा के पुत्र होने के उल्लेख भी मिलते हैं। इन्हें आत्मभू, अज तथा अनन्यज भी कहा जाता है, जिससे ज्ञात होता है इनका जन्म स्वयं ही बिना माता-पिता के हो गया था। पुराणों में

इनकी स्त्री का नाम रति अथवा रेवा मिलता है। एक बार शंकर का ध्यान भंग करने के कारण इनके भस्म होने की कथा भी मिलती है। इस प्रकार अपने पति का सर्वनाश देखकर इनकी स्त्री रति के विलाप करने पर शंकर ने उसके अंगहीन होकर भी जीवित रहने तथा कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न के रूप में जन्म लेने की बात कही थी। रुक्मिणी के गर्भ से प्रद्युम्न का जन्म हुआ था और रति मायावती के रूप में उत्पन्न हुई थी। प्रद्युम्न के पुत्र का नाम अनिरुद्ध तथा पुत्री का नाम तृषा मिलता है। कामदेव के साथियों में वसंत का नाम लिया जाता है। इनका वाहन कोकिल अथवा शुक है और अस्त्र फूलों का धनुष-बाण कहा जाता है। इनकी ध्वजा में मकर का चिह्न है। दे० 'अनंग'।

कामधेनु--समुद्र-मंथन में प्राप्त चौदह रत्नों में से एक का नाम जिससे यथेष्ट वर की प्राप्ति हो सकती है।

कामध्वज--नाभादास के अनुसार एक मध्यकालीन प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। इनके शेष तीनों भाई उदयपुर के राणा की नौकरी करते थे किन्तु ये केवल हरिभजन करते थे और जंगल में पड़े रहते थे। केवल भोजन मात्र के लिए घर आ जाया करते थे। एक बार इनके भाई ने पूछा कि जंगल में मर जाने पर तुम्हें जलावेगा कौन? कामध्वज ने उत्तर दिया कि जिसका मैं दास हूँ वही जलावेगा भी। समयानुसार जंगल में ही उनकी मृत्यु हुई जहां राम की आज्ञा से हनुमान ने उनका दाह-संस्कार किया।

कामरूप--एक तीर्थ का नाम। वर्तमान रंगपुर, जलपाईगुड़ी तथा कूच विहार आदि आसाम के जिले प्राचीन कामरूप प्रदेश के अंतर्गत माने जाते हैं। कथा सरित्सागर तथा अन्य लोकप्रचलित कथाओं से ज्ञात होता है कि प्राचीन काल में किसी समय यह प्रदेश कौल साधना का मुख्य केंद्र रहा है।

कामलता--एक गोपी। राधा की सखी।

कामली--परशुराम की माता का नाम। इनका नामांतर रेणुका है। दे० 'रेणुका'।

कामाक्षी--कामरूप प्रांत की कामपीठस्थ देवी का नाम। नरकासुर नामक एक दैत्य ने इनके पाणिग्रहण की इच्छा प्रकट की थी जिस पर इन्होंने यह प्रतिबंध लगाया कि ऐसा तभी हो सकता है जब वह देवी का मंदिर रातोंरात तैयार करवा दे। नरकासुर ने तत्काल विश्वकर्मा को पकड़ कर मंदिर बनाने की आज्ञा दी किन्तु देवी ने अनेक कुक्कुट उत्पन्न कर वास्तविक रात्रि व्यतीत होने के पूर्व ही उनके शब्दों से प्रातःकाल की सूचना दे दी जिससे दैत्य की इच्छा पूरी न हो सकी। इस पर क्रुद्ध हो उसने सारे कुक्कुटों का वध कर दिया। वर्तमान कामाक्षी देवी का मंदिर नरकासुर का बनवाया हुआ माना जाता है जिसे सन् १५६४ में काला पहाड़ ने नर नारायण के राज्य-काल में नष्ट कर दिया था।

कामोदा--क्षीरसमुद्र की चार कन्याओं में से एक का नाम जिसकी उत्पत्ति अमृत के फेन से मानी जाती है और जिसे विष्णु ने अपनी पत्नी के रूप में ग्रहण किया।

काम्यक--महाभारत के अनुसार सरस्वती के तट पर स्थित एक वन का नाम जिसमें पाण्डवों ने गुप्तवास किया था।

काम्या--कर्दम प्रजापति की एक कन्या का नाम।

कायनि--भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।

कायव्य--क्षत्रिय पिता तथा निषाद माता से उत्पन्न एक दस्यु का नाम जो सदाचार से रहने तथा गो ब्राह्मण की रक्षा करने के कारण सदगति को प्राप्त हुआ था।

कारकि--अंगिरस् कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।

कारीर--ब्राह्मण ग्रंथों के अनुसार एक प्राचीन आचार्य का नाम।

कारीरथ--अंगिरस् कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।

कारीषि--विश्वामित्र के पुत्र का नाम।

कारुकायण--विश्वामित्र कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।

कारूषक--करुषक प्रदेश के एक प्राचीन राजा का नाम जिसका पुत्र दंतचक्र भारतयुद्ध में कौरवों के पक्ष में था।

कारोटक--अंगिरस् कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।

कार्तवीर्य--हैहय राजा कृतवीर्य के पुत्र का नाम। इनका वास्तविक नाम अर्जुन था। दत्तात्रेय की कृपा से सहस्त्र भुजाएँ प्राप्त होने पर इनका नाम सहस्त्रार्जुन हो गया। सहस्त्रार्जुन कार्तवीर्य ने वायुपुराण के अनुसार ८५००० वर्ष पृथ्वी पर राज्य किया और ऐश्वर्य, वैभव तथा पराक्रम में इनके समान कोई दूसरा राजा नहीं था। सहस्त्र भुजाओं के अतिरिक्त दत्तात्रेय भगवान से इन्हें एक स्वर्णमय रथ मिला था, जिसकी सर्वत्र अबाधगति थी। साथ ही यह वरदान भी मिला था कि युद्ध में इन्हें कोई जीत नहीं सकता और समस्त भूमण्डल में इनका एकच्छत्र राज्य होगा। एक बार अपनी स्त्रियों के साथ जलविहार करते हुए इन्होंने अपनी सहस्त्र भुजाओं से नर्मदा का प्रवाह रोक दिया जिसका परिणाम यह हुआ कि नर्मदा की उल्टी धारा ने स्वर्णमय शिवलिंग की उपासना में रत राक्षसराज रावण के यज्ञपात्र आदि को दूर बहा दिया। इससे क्रुद्ध हो रावण ने इन पर आक्रमण कर दिया किन्तु इन्होंने उसे परास्त कर वन्य पशु की भाँति अपनी राजधानी के एक कोने में बँधवा दिया। वायुपुराण के अनुसार इन्होंने लंका पर आक्रमण कर वहाँ रावण को कैद किया था। इस प्रकार कार्तवीर्य अपरिमित शक्ति और ऐश्वर्य से मदांध हो मनमाना अत्याचार करने लगा। एक बार जमदग्नि के आश्रम में जाकर इन्होंने कामधेनु को प्राप्त करने की इच्छा प्रकट की किन्तु महर्षि ने इसे अस्वीकार कर दिया। इस पर इन्होंने जमदग्नि का वधकर बलात् कामधेनु का अपहरण कर लिया। उस समय परशुराम अनुपस्थित थे। आने पर उन्हें जब यह समाचार मिला तो उनके क्रोध का ठिकाना न रहा और तत्काल ही कार्तवीर्य का वध करके उन्होंने इक्कीस बार पृथ्वी को क्षत्रियों से रहित करने की प्रतिज्ञा की और अपनी यह प्रतिज्ञा उन्होंने पूरी भी की। मतांतर से कार्तवीर्य के मनमाना अत्याचार से तंग देवताओं की प्रार्थना पर विष्णु ने परशुराम का अवतार ग्रहण कर कार्तवीर्य का वध किया था। दे० 'जमदग्नि' तथा 'परशुराम'।

कातिक--१. वर्ष के बारह महीनों में से एक का नाम। २. कार्तिकेय का एक नामांतर। दे० 'गणेश' तथा 'स्कंद'।

कार्तिकेय--इनका नामांतर स्वामि कार्तिक भी है। दे० 'गणेश' तथा 'स्कंद'।

कार्तिमति--शुक्र की कन्या तथा अणुह की पत्नी का नाम।

कार्तिरुग्रायुध--कृत के पुत्र का नाम। दे० 'कृत'।

कार्तिवय--कश्यपगोत्रीय एक ब्रह्मर्षि का नाम।

कार्दमायनि--भृगुगोत्रीय एक ब्रह्मर्षि का नाम।

कार्पणि--भृगुकुलोत्पन्न एक ब्रह्मर्षि का नाम।

कार्षणि--भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार ब्रह्मर्षि का नाम।

कार्ष्णाजिनि--एक प्राचीन आचार्य का नाम जिन्होंने कार्ष्णाजिनि-स्मृति-ग्रंथ की रचना भी की थी। इस ग्रंथ का उल्लेख हेमाद्रि माधवाचार्य आदि ने किया है। मिताक्षरा, स्मृतिचंद्रिका आदि ग्रंथों में भी इसका उल्लेख है।

कार्ष्णायन--कृष्ण पराशर कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।

कार्ष्णि--१. कृष्ण के पुत्रों मुख्यतः—प्रद्युम्न का नाम। २. अभिमन्यु का एक नामांतर।

काल--१. ध्रुव वसु के पुत्र का नाम। २. एक असुर का नाम। दे० 'महिषासुर'। ३. एक प्राचीन योद्धा का नाम। दे० 'कुशीलव'। ४. रुद्रों में से एक नाम।

कालकंज--एक असुर का नाम। इसने स्वर्ग प्राप्ति की इच्छा से अग्निचयन का अनुष्ठान किया था किंतु इंद्र ने उसमें विघ्न उपस्थित कर इसे युद्ध में परास्त कर दिया।

कालका--वैश्वानर नामक दानव की कन्या, तथा कश्यप की स्त्रियों में से एक का नाम। यह मारीच नामक एक राक्षस की पत्नी थी, जिससे कालकेय अथवा कालकंज नाम से अनेक पुत्र उत्पन्न हुए थे।

कालकाक्ष--एक असुर का नाम जिसका वध गरुड ने किया था।

कालकामुक कार्मुक--खर नामक प्रसिद्ध राक्षस के बारह मंत्रियों में से एक का नाम।

कालकूट--त्रिपुरासुर के आश्रित एक दैत्य का नाम।

कालकेतु--एक असुर का नाम जिसका वध एकवीर नामक एक हैहय राजा ने किया था।

कालकेय--हिरण्यपुर में रहने वाले असुरों का नाम जिन्हें अर्जुन ने मारा था।

कालखंज--दे० 'कालकंज', 'कालका' तथा 'कालकेय'।

कालघट--जनमेजय के नागयज्ञ में सम्मिलित एक सभासद का नाम।

कालजित--लक्ष्मण के सेनापति का नाम।

कालजिह्व--एक रुद्र का नाम।

कालनर--भागवत के अनुसार सभानर के पुत्र का नाम। इसके पुत्र का नाम सृंजय था।

कालनाभ--१. रुषाभानु का पुत्र और हिरण्यकशिपु का एक सभासद। २. कश्यप तथा दनु से उत्पन्न एक दानव का नाम। ३. विप्रचिति तथा सिंहिका के एक पुत्र का नाम जिसका वध परशुराम ने किया था।

कालनेमि--१. लंका का एक राक्षस जो लक्ष्मण को शक्ति लगने पर औषधि के लिए जाते हुए हनुमान के मार्ग में विघ्न उपस्थित करने के लिए रावण के द्वारा भेजा गया था। यह ऋषिवेश में उस स्थान पर बैठा था जहाँ हनुमान जल-पान के निमित्त रुके थे। ज्ञानी हनुमान को इसका कपट वेश ज्ञात हो गया और उन्होंने क्षण भर में ही उसका वहीं काम तमाम कर दिया। २. शंभर मुख के एक दैत्य का नाम। ३. पातालवासी एक दैत्य का नाम जिसका वध विष्णु के हाथ से हुआ था। पद्मपुराण के अनुसार यही कालांतर में कंस के रूप में प्रकट हुआ था।

कालपथ--विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

कालपृष्ट--कश्यप तथा दिति के एक पुत्र का नाम। इसने शिव की तपस्या कर यह वर प्राप्त कर लिया था कि जिसके सिर पर मैं हाथ रखूं वह भस्म हो जाय। वर प्राप्त होते ही उसने इस शक्ति का प्रयोग पहले शिव पर ही करने का निश्चय किया। इस पर विष्णु ने मोहिनी का रूप धारण कर ऐसा उपाय किया कि यह स्वयं अपने सिर पर हाथ रखने से भस्म हो गया। दे० 'भस्मासुर'।

कालभीति--मांटी के पुत्र का नाम। इन्होंने पुत्र की कामना से सौ वर्ष पर्यंत रुद्रयज्ञ किया था जिसके परिणामस्वरूप इनकी पत्नी गर्भवती हुईं, किंतु काल के भय से गर्भस्थ बालक चार वर्ष तक भूमिष्ठ नहीं हुआ। इससे दुखी हो मांटी ने शिव के पास जाकर इस समस्या को हल करने की प्रार्थना की। शिव ने गर्भस्थ बालक को धर्म, ज्ञान तथा वैराग्य का बोध कराने का उपदेश दिया जिसके पश्चात् शिशु का जन्म हुआ। संस्कार होने पर इसने काल-भीति क्षेत्र में जाकर अनुष्ठान किया जिससे प्रसन्न हो शिव ने इसे 'महाकाल' नाम से प्रसिद्ध होने का आशीर्वाद दिया।

कालभैरव--भैरव तथा रुद्र का नामांतर। ये सम्भवतः अनार्यों के देवता थे। काशी में इनका मन्दिर है। दे० 'भैरव' तथा 'रुद्र'।

कालयवन--एक प्राचीन राजा का नाम जिसके पिता महर्षि गार्ग्य तथा माता गोपाली नाम की अप्सरा थीं। इसकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में यह कथा है कि एक बार भरी सभा में यादवों ने गार्ग्य (महर्षि गर्ग के पुत्र) को नपुंसक कह कर उनकी बड़ी हँसी उड़ाई। इससे क्षुब्ध हो इन्होंने बारह वर्ष तक लौहचूर्ण खाकर पुत्र-प्राप्ति की कामना से शिव की घोर तपस्या की। काल यवन इसी तपस्या का फल था जो अंधकों तथा वृष्णियों का घोर शत्रु हुआ। शैशव में इसका पालन एक निस्संतान यवन राजा (यूनानी) ने किया था। इसी से इनका नाम काल-यवन पड़ गया। कालयवन बड़ा पराक्रमी हुआ। इसने जरासंध के साथ यादवों पर आक्रमण किया जिससे भय-भीत हो कृष्ण के परामर्श से सारे यादव द्वारका भाग गए। युद्ध में पराजित हो कृष्ण स्वयं हिमालय की एक गुफा में भाग गए जहाँ मांधाता के पुत्र मुचकुंद शयन कर रहे थे। कालयवन भी इनका पीछा करता हुआ वहाँ पहुँचा और मुचकुंद को ही कृष्ण समझकर

उन्हें पाँव की ठोकरों से उठाने लगा। निद्राभंग होने पर ज्योंही मुचकुंद ने नेत्र उठाकर कालयवन की ओर देखा, वह भस्म हो गया।

कालवीर्य--एक असुर का नाम।

कालशिख--वसिष्ठ गोत्रीय एक ऋषि का नाम।

काला--१. कश्यप की स्त्री का नाम जो दक्ष प्रजापति तथा असिक्री की कन्या थीं। इनका नामांतर काष्ठा है। २. देवताओं की प्रार्थना पर पार्वती द्वारा उत्पन्न की हुई शक्ति का नाम, जिसने शुंभ, निशुंभ, रक्तजीव, चंडमुंड तथा धूम्रलोचन आदि दैत्यों का नाश किया था। काली, कालिका, कौशिकी, ब्राह्मणी, वैष्णवी, शांकरी, इंद्राणी, भवानी, वाराही आदि इनके अनेक नामांतर हैं।

कालाक्ष--प्रसिद्ध राक्षस घटोत्कक्ष का नामांतर।

कालानल--१. एक दैत्य का नाम जिसका वध गणेश ने किया था। २. कालानर का नामांतर।

कालायनि--व्यास की ऋक् शिष्य परम्परा में वाष्कली के एक शिष्य का नाम।

कालिंदी--१. प्रसिद्ध यमुना नदी का एक नामांतर २. कृष्ण की एक स्त्री का नाम। पूर्व जन्म में ये सूर्य की कन्या थीं और तभी कृष्ण को पतिरूप में पाने के लिए इन्होंने तप किया था, जिससे प्रसन्न हो कृष्ण ने इसका पाणिग्रहण किया था। इनसे कृष्ण को दस पुत्र उत्पन्न हुए थे श्रुत, कवि, वृष, वीर, सुबाहु, भद्र, शान्ति दर्श, पूर्णमास तथा सोमक।

कालिक--व्यास की ऋक्शिष्य-परम्परा के अंतर्गत हिरण्यनाभ के एक शिष्य का नाम।

कालिक वृक्षीय मुनि--एक प्राचीन ऋषि का नाम जिनके पास भूत, भविष्य, वर्तमान बताने वाला एक पक्षी था। एक बार ये अपने पक्षी के साथ कोसल के राजा क्षेमदर्शी के यहाँ गए जिन्होंने पक्षी का गुण जानकर उससे यह पता लगाना चाहा कि उसके मंत्री उसके सम्बन्ध में क्या सोचते हैं। इस पर पक्षी ने मंत्री के दुर्गुणों को स्पष्ट बतला दिया जिससे रुष्ट हो अन्य मंत्रियों ने रात को उसे मरवा डाला। इससे राजा ने समझा कि उसके विरुद्ध कुछ और षड्यंत्र हो रहा होगा। इस आशंका से उसने अपने मंत्रियों को घोर दंड दिया।

कालिंग--एक अंत्यज का नाम। एक बार यह चोरी करने गया हुआ था जब कि इसका उद्धार हुआ।

कालिदास--संस्कृत के एक सुविख्यात महाकवि और नाटककार का नाम। कालिदास का समय अभी अनिश्चित ही है। परम्परा इन्हें उज्जयिनी के विख्यात राजा विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक मानती चली आई है। विल्सन की धारणा है कि यह वही विक्रमादित्य हैं जिनका चलाया हुआ विक्रम संवत् ५६ ई० पू० से चल रहा है और यही कालिदास के आश्रयदाता थे। किंतु कुछ विद्वान् उस विक्रम को हर्ष विक्रमादित्य मानते हैं जो ईसा की ६ठीं शताब्दी में हुए थे। विलियम्स के अनुसार कालिदास का रचनाकाल ईसा की तीसरी शताब्दी में मानना चाहिए। लासेन इनका समय इससे लगभग ५० वर्ष और पूर्व का ठहराते हैं। कुछ विद्वान् यह भी मानते हैं कि ऐसे कई कवि हो चुके हैं जिन्होंने कालिदास उपनाम से ग्रंथरचना की। इन वि ानों के अनुसार मातृगुप्ताचार्य ही विवेच्य कालिदास हैं। एक मत के अनुसार कालिदास बौद्ध नैयायिक दिङ्नाग के समकालीन थे जिसका उल्लेख उन्होंने स्वयं मेघदूत में किया है—'दिङ्नागानां पथि परिहरन् स्थूल हस्तावलेपान्।' किंतु दिङ्नाग का भी समय अनिश्चित रहने के कारण कालिदास जी के समय निर्धारण में विशेष सहायता नहीं मिलती। कालिदास की जीवनी के सम्बन्ध में एक प्रबल किंवदंती प्रचलित है जिससे ज्ञात होता है कि आरम्भ में ये एक दरिद्र ब्राह्मण के पुत्र थे और साथ ही गूंगे और मूर्ख भी थे। अवंतिराज की विदुषी तथा सुंदरी कन्या विद्याधरी ने यह प्रण किया था कि वह जिससे शास्त्रार्थ में पराजित हो जायगी उसी से विवाह करेगी। स्वयंवर सभा में देश भर के अग्रगण्य पंडित उससे शास्त्रार्थ में पराजित हो गये थे। इसी दल के तीन पंडित म्लानमुख सभा से लौट रहे थे। रास्ते के जंगल में उन्होंने देखा कि एक ब्राह्मण कुमार जिस डाल पर बैठा है उसी को काट रहा है। उन लोगों ने लड़के को समझाया कि ऐसा करने में उसके प्राणों का खतरा है किंतु उसने इशारे से इसका प्रतिवाद किया। ईर्ष्यालु पंडितों ने सोचा कि किसी प्रकार ऐसे ही मूर्खाधिराज से विद्यावती का पाणिग्रहण करवा कर अपना बदला चुकाना चाहिए। उन लोगों ने उसे समझा-बुझाकर अपने साथ चलने को राज़ी किया और स्वयंवर सभा में पहुँचकर यह प्रसिद्ध किया कि यह ब्राह्मणकुमार महान ज्ञानी है किंतु मौन रहता है, अतः विद्यावती को इंगित से ही शास्त्रार्थ करना पड़ेगा। सभा प्रारंभ हुई राजकुमारी ने अपनी एक उँगली उठाई जिसका आशय अद्वैत का प्रतिपादन करना था। ब्राह्मण-कुमार ने समझा कि यह मेरी एक आँख फोड़ देने को कहती है। इसलिए उसने अपनी दो अँगुलियाँ दिखा कर यह आशय प्रकट किया कि मैं तुम्हारी दोनों आँखें फोड़ दूंगा। ब्राह्मणों ने इस इंगित का यह भाष्य किया कि ब्राह्मण महोदय अद्वैत के विरुद्ध द्वैत का प्रतिपादन कर रहे हैं, इसी प्रकार राजकुमारी ने तीन प्रश्न किये और तीनों का उत्तर उन्हें उसी शैली में दिया गया। ब्राह्मण-कुमार मूर्ख होते हुए भी परम तेजस्वी तथा दर्शनीय था। राजकुमारी ने प्रभावित होकर पराजय स्वीकार करते हुए उससे अपना विवाह कर लिया; किन्तु उसी रात उसकी मूर्खता का पता चलने से उसे त्याग दिया। ब्राह्मण को इससे बड़ा दुःख हुआ जिससे मूर्छित हो वह मन्दिर में सरस्वती की प्रतिमा के सामने गिर पड़ा। गिरने से उसकी जिह्वा कट गई और रक्त की धारा देवी के चरणों में वह चली इससे देवी ने प्रसन्न हो 'वरंत्र हि' कहा। ब्राह्मण कुमार किसी प्रकार केवल 'विद्या विद्या!' कह सका। वरदान मिला। फिर उसने बारह वर्ष तक विद्याध्यन किया। कई महाकाव्य रचे और देश में बड़ी ख्याति अर्जित की। अंत में विक्रम के दरबार में एक विराट् कविसम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमें कालिदास नामधारी ब्राह्मणकुमार

और दिङ्नाग की प्रतियोगिता हुई । विद्यावती, भी अपने पिता के साथ इस सभा में सम्मिलित हुई थी। उसने कालिदास को पहचान लिया और उससे प्रश्न किया "अस्तिकश्चिद् वाग्विलासः ?" कहा जाता है कि कालिदास ने उक्त वाक्य के प्रत्येक शब्द को लेकर तीन काव्यों की रचना की। 'अस्ति' पर कुमार-संभव की रचना की जिसकी पहली पंक्ति है : 'अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा' इत्यादि । इसी प्रकार 'कश्चित्' पर मेघदूत की और 'वाक्' पर रघुवंश की रचना की। इन काव्यों से कालिदास की ख्याति देशभर में गूंज उठी और विद्यावती राजमहल का त्याग कर पत्नीरूप से कालिदास की सेवा करने लगी। कालिदास की निम्नलिखित रचनाएँ प्रसिद्ध हैं : नाटक १. अभिज्ञान शाकुन्तल, २. विक्रमोर्वशीय, ३. मालविकाग्निमित्र । काव्य—१. रघुवंश, २. कुमार संभव, ३. मेघदूत, ४. ऋतुसंहार. ५. नलोदय। इनके अतिरिक्त कुछ अन्य ग्रंथ भी कालिदास के रचे हुए बताए जाते हैं किंतु इस संबंध में बड़ा मतभेद है। उक्त ग्रंथों में शाकुंतल की प्रशंसा संसार के सभी विद्वानों ने मुक्तकंठ से की है। इसका सबसे पहला अंग्रेजी अनुवाद सर विलियम जोन्स ने किया था; इससे संस्कृत साहित्य के प्रति यूरोपीय विद्वानों का ध्यान आकृष्ट हुआ। जर्मन महाकवि गेटे शाकुंतल के कला सौंदर्य पर मुग्ध था। उसने जिन शब्दों में उक्त नाटक की प्रशंसा की है उन्हें भुलाया नहीं जा सकता :—"क्या तुम नूतन वर्ष के पुष्प और उसके फल एक साथ चाहते हो? क्या तुम ऐसी चीजें चाहते हो जिससे हृदय मंत्रमुग्ध हो, प्रेरित हो, और संतुष्ट हो? क्या तुम स्वर्ग और मर्त्य दोनों एक ही नाम में एकत्र चाहते हो? तो शकुंतले! मैं तुम्हारा नाम लेता हूँ जिसमें ये सभी बातें समाहृत हैं ?"

कालिय--कद्रूपुत्र एक नाग का नाम। यह पन्नग जाति का सर्प था। यह पहले रमणक द्वीप में रहता था पर गरुड़ के भय से भागकर व्रज के समीप यमुना के एक दह में रहने लगा था जहाँ सौमरि के शाप से गरुड़ की गति नहीं थी। पर यहाँ उसने दह का पानी विषैला कर दिया था जिससे व्रज के गोप-गोपी और उनकी गाएँ मरने लगीं। इस पर श्रीकृष्ण ने उस दह में जाकर इसका दमन किया। भयभीत होकर कालिय ने प्राणों की भिक्षा माँगी। कृष्ण ने इसे फिर समुद्र में चले जाने की आज्ञा दी और उसके फण पर अपना चरण-चिन्ह छोड़कर उसे अभयदान दिया क्योंकि उसे देखकर गरुड़ फिर उसको नहीं सता सकता था। दे० 'कालीनाग'।

काली--१. देवी का एक रूप विशेष। कालिकापुराण के अनुसार इनके चार हाथ हैं। दाहिने हाथों में खट्वांग और चंद्रहास तथा बाएँ हाथों में ढाल और पाश हैं। इनके गले में नरमुंड की माला है। व्याघ्रचर्म इनका परिधान तथा शीश-रहित शव इनका वाहन है। दे० 'काला'। २. उपरिचर वसु की कन्या का नाम जो मत्स्यगंधा, योजनगंधा तथा सत्यवती के नाम से भी विख्यात हैं। दे० 'सत्यवती', तथा 'शंतनु'। ३. भीम की दूसरी पत्नी का नाम जिनसे सर्वगत नामक पुत्र की उत्पत्ति हुई थी।

कालीदह—यमुना की धारा में ब्रजभूमि में एक दह। गरुड़ के भय से यहाँ कालिय नाग के आकर रहने का उल्लेख मिलता है। सौमरि मुनि के शाप के कारण गरुड़ के उस दह में न आ सकने की बात कही जाती है। दे० 'कालीनाग'।

कालीनाग—नाग-राज। गरुड़ के भय से यह नागों के निवास-स्थान रमणक द्वीप को छोड़कर सौमरि मुनि के शाप से गरुड़ से संरक्षित ब्रजभूमि में, एक दह में, आकर रहने लगा था। कहा जाता है उसके वहाँ रहने से वह स्थान उजाड़ सा हो गया था। एक बार कृष्ण जब छोटे थे तो खेलते-खेलते उस स्थान में पहुँचकर दह में गिर पड़े थे। कालिय तथा उसके साथी अन्य नागों ने आकर उन्हें घेर लिया था। ब्रजवासी गोप-गोपियाँ तथा नंद-यशोदा यह देखकर बहुत चिंतित हो गये थे। अंत में कृष्ण ने उसे वश में किया था और उसके फण पर खड़े होकर नृत्य किया था। कहा जाता है कृष्ण के उस दिन अंकित किये हुये पद-चिह्न आज तक काले नागों में देखे जा सकते हैं। कृष्ण ने कालिय नाग को अपने बंधु-बांधव के साथ फिर अपने पूर्व-स्थान रमणक द्वीप में जाकर रहने की आज्ञा दी थी। गरुड़ से अपने पद-चिह्न अंकित कर देने के कारण उन्होंने उसे पूर्ण अभय दान दिया था। दे० 'कालिय'।

कालीयक—कद्रु तथा कश्यप के एक पुत्र का नाम।

कालेय—१. अत्रिकुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम। २. रसातल निवासी एक दैत्य का नाम। इसके भाई का नाम कालकेय था जिसका वध इंद्रपुत्र जयंत ने किया था।

कावषेय—एक तत्वज्ञानी आचार्य का नाम जिनके पिता तुर ऋषि थे और माता का नाम कवषा था।

काव्य—१. कवि के पुत्रों का नाम। यह पितृगणों का सामूहिक नाम भी है। २. वारुणी कवि के पुत्र का नाम। ३. तामस मन्वंतर के सप्तर्षियों में से एक का नाम।

काशकृत्स्न—एक प्रसिद्ध तत्वज्ञानी आचार्य तथा व्याकरणकार का नाम जिन्होंने तीन अध्यायों के एक व्याकरण ग्रंथ की रचना की थी।

काशिक—एक राजा का नाम जिसने भारत-युद्ध में पांडवों की सहायता की थी।

काशिराज—१. काश के पुत्र तथा काशी के एक प्राचीन राजा का नाम। अंबा, अंबिका तथा अंबालिका इनकी तीन कन्याएँ थीं। कालांतर में यह नाम उपाधि के रूप में काशी के सभी राजाओं के लिए व्यवहृत होने लगा। २. प्रतर्दन को काशिराज दैवोदासि भी कहा गया है। ये एक सूक्तद्रष्टा थे। ३. भाष्कर संहितांतर्गत 'चिकित्सा-कौमुदी' नामक तंत्र के लेखक का नाम। ४. एक राजा का नाम जो भारत-युद्ध में कौरवों के पक्ष में लड़ा था।

काशी—भारतवर्ष के एक नगर का नाम जो प्राचीन काल से ही संस्कृति तथा धर्म का केन्द्र रहा है। वाराणसी इसका नामांतर है जिससे इसका आधुनिक नाम बनारस निकला है।

काशीश्वर गुसाईं—नाभादास के अनुसार चैतन्य महाप्रभु के प्रमुख शिष्यों में से एक जो गुरु की आज्ञा से

वृंदावन आकर बस गये और वहीं गोविंद जी की पूजा करने लगे।

काश्य–१. भागवत के अनुसार सुहोत्र के पुत्र का नाम २. संदीपनी ऋषि के पिता का नाम।

काश्यप–परीक्षित का समकालीन, सर्पविद्या का एक आचार्य जो इस विद्या में पारंगत होते हुए भी अत्यंत लोभी था। जब शमीक ऋषि के पुत्र ने परीक्षित को तक्षक द्वारा डसे जाने का शाप दिया तो काश्यप भी धन और यश की आशा से राजधानी की ओर चला। रास्ते में इनके मंत्र की परीक्षा के लिए तक्षक वृद्ध ब्राह्मण के वेश में इन्हें मिला जिसने अपने विष से एक वृक्ष को जला दिया, किंतु काश्यप ने अपने मंत्र द्वारा उसे पुन: हरा कर दिया। तक्षक ने इन्हें अतुल संपत्ति देकर प्रसन्न कर लिया और वापस लौटा दिया। २. कश्यप प्रजापति द्वारा उत्पन्न की हुई प्रजा मात्र का सामूहिक अथवा सर्वसाधारण पैतृक नाम। पर विशेषतया यह नाम कश्यप गोत्रीय मंत्रकारों के लिए प्रयुक्त होता है जिनमें भृगु, कश्यप, अवत्सार, असितदेवल, निध्रुवि, भतांश, रेभ, रंमसूक्ति तथा विभ्रि मुख्य हैं। ३. एक धर्मशास्त्रकार का नाम जिनके द्वारा प्रणीत काश्यप संहिता में ५० प्रकरण तथा १५०० श्लोक हैं। इस ग्रंथ में सर्व प्रथम दूरवीक्षणादि मंत्रों का उल्लेख हुआ है। ४. कुछ मन्वंतरों के सप्तर्षियों में से एक का नाम। ५. दाशरथि राम की सभा के एक विदूषक तथा एक धर्मशास्त्री का नाम। ६. वसुदेव के पुरोहित का नाम। ७. अत्रि के मानसपुत्र का नाम। ८. गोकर्ण नामक शिवावतार के शिष्य का नाम।

काश्या–भीम की एक स्त्री का नाम। दे० 'काली'।

काष्ठा–प्राचेतस दक्ष प्रजापति तथा आसिक्री की कन्या का नाम।

किंकर–एक राक्षस का नाम। विश्वामित्र की आज्ञा से यह राजा कल्माषपाद के शरीर में प्रवेश कर गया था। जिसके प्रभाव से वे नरभोजी हो गए थे। दे० 'कल्माषपाद'।

किंकर जी–नाभादास जी के अनुसार उनके समकालीन एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त का नाम।

किंदम–एक ऋषि जो मृग का रूप धारण कर मृगियों के साथ विहार किया करते थे। इन्हें पांडुराज ने मारा था जिस पर इन्होंने राजा को शाप दिया था।

किंपुरुष–१. भागवत के अनुसार आग्निध्र के नौ पुत्रों में से दूसरे का नाम। इसकी पत्नी का नाम प्रतिरूपा था। २. मतांतर से मनु के एक पुत्र का नाम।

किन्नर–विष्णु तथा वायु के मत से सुनक्षत्र के पुत्र का नाम। किन्नर एक प्रकार के देवता हैं जिनका मुख घोड़े के समान होता है ये संगीत विद्या में बड़े निपुण होते हैं। ये कैलास पर कुबेर की पुरी में रहते हैं। इनकी उत्पत्ति ब्रह्मा के अंगूठे से हुई थी और ये पुलस्त्य के वंशज तथा कश्यप के पुत्र माने जाते हैं।

किन्नराश्व–'किन्नराश्व' के शाब्दिक अर्थ होते हैं "मनुष्य या घोड़ा ?"। इनका मुंड घोड़े का और शेष शरीर मनुष्य का होता था। दे० 'किन्नर'।

किरात–शिव का एक अवतार। इस रूप में इन्होंने मूक नामक राक्षस का वध किया था और अर्जुन से युद्ध कर उन्हें पाशुपतास्त्र दिया था।

किर्मीर–एक राक्षस का नाम जो बकासुर का भाई था और वैत्रकीय नामक वन में रहता था। यह वन नरभोजी राक्षसों से भरा था। वनवासी पांडव जब इस वन में आए तब किर्मीर ने आगे बढ़कर इनका मार्ग रोका और युद्ध के लिए ललकारा। भीम ने भयंकर मल्लयुद्ध के पश्चात् इसे परास्त किया।

किशोर–बलिदैत्य के पुत्रों में से एक का नाम।

किशोर जी–स्वामी अग्रदास के शिष्य तथा नाभा जी के समकालीन एक वैष्णव भक्त का नाम।

किशोर सिंह–नाभाजी के अनुसार एक राजवंशीय वैष्णव भक्त जिनके पिता रामरतन तथा पितामह खेमालरतन भी प्रसिद्ध भक्त थे। ये लोग 'खेमाली' भक्तों के नाम से प्रसिद्ध थे।

कीकक–१. भागवत के अनुसार ऋषभ और जयंती के एक पुत्र का नाम। २. धर्मपुत्र संकट के पुत्र का नाम।

कीकट–अनार्यों के एक देश का नाम जो वर्तमान मगध और दक्षिण बिहार के आस पास था।

कीर्ति–१. राजा प्रियव्रत की महिषी का नाम। दे० 'प्रियव्रत'। २. दक्ष प्रजापति की एक कन्या का नाम जो धर्म की पत्नी थीं। वृषभानु की पत्नी तथा श्री कृष्ण की प्रधान सहचरी राधा की माता का नाम। नंददास ने 'स्यामसगाई' में लिखा है कि पहले यह राधा का व्याह कृष्ण के साथ करने के लिए प्रस्तुत न थीं। किंतु एक बार राधा जब कृष्ण को देखकर हतज्ञान हो गई थीं तो इन्होंने कृष्ण को गोकुल से बुलवा कर अपनी कन्या को सजग किया था, और कृष्ण के साथ उसके विवाह की भी अनुमति दे दी थी। इनका निवास स्थान गोकुल के पास बरसाने ग्राम में होने का उल्लेख मिलता है।

कीर्तिधर्मन–एक प्राचीन राजा का नाम जिन्होंने भारत युद्ध में पांडवों की सहायता की थी।

कीर्तिमत्–१. नृग के पुत्र का नाम। दे० 'नृग'। २. उत्तानपाद तथा सुनीता के दो पुत्रों में से कनिष्ठ का नाम जो ध्रुव के भाई थे। ३. वसुदेव तथा देवकी के एक पुत्र का नाम जिसका वध कंस ने किया था। ये कृष्ण के बड़े भाई थे।

कीर्तिमती–शुक्राचार्य तथा पीवटी की कन्या का नाम। ये नीप की पत्नी थीं। मतांतर से इनका विवाह राजा अणुह के साथ हुआ था। इनके पुत्र का नाम ब्रह्मदत्त था।

कीर्तिमुख–शिव की जटा से उत्पन्न होने वाले गणों का नाम। इनके तीन पाँच, तीन पूंछ और सात हाथ थे।

कीर्तिरथ–वायुपुराण के अनुसार ये प्रतित्वक् के पुत्र थे। कृतिरथ इनका एक अन्य नामांतर है।

कील्हदेव–१. कृष्णदास पयहारी के प्रधान शिष्य और राजा मानसिंह (जयपुर) के समकालीन। नाभादास जी के कथानुसार इन्होंने भीष्म के समान मृत्यु पर अधिकार प्राप्त कर लिया था। इनके पिता का नाम सुमेर देव था

जो गुजरात के निवासी थे। एक अन्य मध्यकालीन वैष्णव भक्त जो बड़े यशस्वी थे।

कुंजर–१. तारकासुर के सेनापति का नाम। २. एक वानर का नाम जिसे अंजनी का पिता माना जाता है। ३. कश्यप और कद्रू के एक पुत्र का नाम।

कुंड–एक राक्षस का नाम जिसकी आकृति हाथी के समान थी। इसका वध गणेश ने किया था।

कुंकर्ण–दंडी मुंडीश्वर नामक शिवावतार के एक शिष्य का नाम।

कुंडज–महाभारत के अनुसार धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम जिसका वध भीम ने किया था।

कुंडधार–१. एक सर्प का नाम। २. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम जिसका वध भीम ने किया था।

कुंडपायिन्–एक प्राचीन आचार्य का नाम। सूत्रग्रंथों में इनके नाम से एक सूत्र प्रसिद्ध है।

कुंडभेदिन्–धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम जिसका वध भीम ने किया था।

कुंडला–मदालसा की एक सखी का नाम। यह विंध्यवान् की पुत्री तथा पुष्करमाली की स्त्री थी। इसके पति को शुंभ ने मारा था।

कुंडिन–वसिष्ठ कुलोपन्न एक गोत्रकार, मंत्रकार तथा प्रवर का नाम।

कुंडिनेय–मित्रावरुण के पुत्र का नाम।

कुंड़ोदर–राजर्षि रुरु के पुत्र का नाम।

कुंतल–कौतल के राजा का नाम और चंद्रहास का नामांतर।

कुंतलस्वातिकर्ण–मत्स्यपुराण के अनुसार मृगेंद्र स्वातिकर्ण के पुत्र का नाम।

कुंति–भागवत के अनुसार नेत्र के पुत्र का नाम। अन्य मतों के अनुसार यह धर्मनेत्र अथवा ऋथ के पुत्र का नाम था।

कुंतिभोज–महाभारतकालीन एक राजा का नाम। निस्संतान होने के कारण इन्होंने शूरसेन की कन्या पृथा उपनाम कुंती को गोद लिया था। एक बार दुर्वासा इनके अतिथि हुए थे। कुंती के आतिथ्य से प्रसन्न होकर उन्होंने इसे एक ऐसा मंत्र दिया था जिससे किसी भी देवता का आह्वान कर उससे समागम किया जा सकता था। इसी मंत्र के प्रभाव से पांडवों को उत्पत्ति हुई थी। कुंतिभोज शूरसेन की बुआ के पुत्र थे, अतः उनके फुफेरे भाई होते थे। महाभारत के अनुसार इनके ग्यारह पुत्र थे जिनमें से पुरुजित नामक एक पुत्र को द्रोणाचार्य ने मारा था, शेष दस पुत्रों का वध अश्वत्थामा के हाथों हुआ। २. भविष्यपुराण के अनुसार ऋथ के पुत्र का नाम।

कुंती–महाराज पांडु की पत्नी तथा युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन की माता का नाम। ये पंच कन्याओं में से एक थीं और अपने समय की श्रेष्ठ सुंदरी थीं। इनके पिता का नाम शूरसेन था जो मथुरा के अधिपति थे, किन्तु इनका पालन-पोषण महाराज कुंतिभोज ने किया था। दे० 'कुंतिभोज'। कुंती जब कुमारी थी तभी महर्षि दुर्वासा से इन्हें एक ऐसा मंत्र प्राप्त हुआ था जिसके द्वारा आहूत होने पर यथेच्छ देवता तत्काल उपस्थित हो आह्वानकर्त्री के साथ सहवास करता था। एक बार विवाह के पूर्व ही इन्होंने इस मंत्र का प्रयोग किया। इन्होंने सूर्य का आह्वान किया था जिनके सहयोग से महावीर और महादानी कर्ण की उत्पत्ति हुई। लज्जावश कुंती ने सद्यःजात शिशु को भागीरथी में फेंक दिया जो अधिरथ तथा राधा नामक एक निस्संतान शूद्र दम्पति के हाथ बहता हुआ लगा। उन्होंने इसका पालन पोषण किया। इसके अनंतर पांडु से इनका विवाह हुआ और विवाहित जीवन में क्रमशः धर्म, पवन तथा इंद्र के आह्वान तथा सहयोग से युधिष्ठिर भीम तथा अर्जुन नामक तीन लोकप्रसिद्ध वीरों की उत्पत्ति हुई। कुंती ने अपनी सपत्नी माद्री को भी दुर्वासा द्वारा प्राप्त मंत्र बता दिया था जिससे उन्होंने अश्विनीकुमारों का आह्वान कर नकुल तथा सहदेव को उत्पन्न किया था। माद्री से ईर्ष्या करते हुए भी उसके सती होने के बाद इन्होंने उसके बच्चों का यत्नपूर्वक लालन-पालन किया था। महाभारत युद्ध के अनंतर कुंती धृतराष्ट्र तथा गांधारी के साथ वन में चली गईं, जहाँ सभी दावानल में भस्म हो गए। दे० 'कर्ण', 'पांडु' और 'पांडव'।

कुंददंत–एक प्राचीन ब्राह्मण का नाम। कुंद पुष्प के समान दाँत होने के कारण इनका नाम कुंददंत पड़ा था। ज्ञानप्राप्ति के लिए इन्होंने घर का परित्याग करके बहुत समय तक वन-विचरण कर तत्वज्ञानी महात्माओं का सत्संग किया, किन्तु पूर्ण रूप से ज्ञानप्राप्ति करने में असमर्थ रहे। अत में अयोध्या आकर वसिष्ठ से मोक्षोपाय संहिता का श्रवण करके ही इन्हें सच्चा ज्ञान प्राप्त हुआ।

कुंदनपुर–विदर्भ देश का राजनगर। आज यह अमरावती से कोई चालीस मील दूर कुंदपुर के रूप में शेष रह गया है। रुक्मिणी यहीं के महाराज भीष्म की पुत्री थी।

कुंपय–कश्यप तथा दनु के पुत्र का नाम।

कुंभ–प्रह्लाद के पुत्र का नाम। २. कुंभकर्ण के ज्येष्ठ पुत्र का नाम। ३. हिरण्याक्ष की सेना के एक राक्षस का नाम। इसने कुबेर से युद्ध किया था। कुबेर ने इसके सब दाँत तोड़ दिये तब यह कुबेर के सहायक इंद्र पर टूट पड़ा और उन्होंने वज्र-प्रहार से इसका वध किया।

कुंभकर्ण–पुलस्त्य ऋषि के पौत्र तथा विश्रवा के पुत्र का नाम। सुमाली की कन्या केकसी से उत्पन्न यह रावण का भाई था। उत्पन्न होते ही यह हजारों लोगों को खा गया। सब लोगों का हाहाकार सुनकर इंद्र ने इस पर वज्र चलाया, किन्तु घोर गर्जना करके इसने एरावत का एक दाँत उखाड़ लिया और उसे इंद्र के ऊपर चलाया। इस पर लोगों की प्रार्थना से ब्रह्मा ने इसे श्राप दिया कि यह सदैव निद्रित रहे। रावण के बहुत विनती करने पर उन्होंने कहा कि ६ माह में एक बार इसकी नींद टूटा करेगी। कुबेर की बराबरी करने के लिये इसने ब्रह्मा की उग्र तपस्या की। जब ब्रह्मा वर देने आये, तो लोग हाहाकार करने लगे। सरस्वती इसके कंठ में जा बैठीं और परिणामतः इसने शयन करते रहने का ही वरदान माँगा। राम-रावण युद्ध के समय रावण ने इसके जगाने का बहुत प्रयत्न किया। कहा जाता है कि एक हजार हाथियों ने वह रस्सी खींची थी जो इसके गले में बँधी थी। कर्ण-

रंध्र और नासा-रंध्र में जल-श्रोत बहाये गये थे। खीझकर रावण प्रहार करने लगा। बड़ी कठिनाई से जगने पर इसने सीता-हरण के लिये रावण की निंदा की और सीता को उसी प्रकार लौटा देने को कहा। रावण ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया और इसे युद्ध के लिये उत्तेजित किया। युद्ध करते समय राम-दल में इसने हाहाकार मचा दी। हनुमान् को मींज दिया। सुग्रीव को लंका की ओर फेंक दिया। अंत में रामचंद्र ने इसका वध किया।

कुंभज–अगस्त्य ऋषि का एक पर्याय। दे० 'अगस्त्य'।

कुंभनदास–नाभादास के अनुसार एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त तथा कवि जिनकी गणना अष्टछाप के प्रख्यात कवियों में होती है। ये महाप्रभु वल्लभाचार्य के शिष्य थे।

कुंभनाभ–कश्यप तथा दनु के एक पुत्र का नाम।

कुंभ-निकुंभ–कुंभकर्ण के दो पुत्रों का क्रमशः नाम। राम-रावण युद्ध में कुंभ की मृत्यु सुग्रीव और निकुंभ की मृत्यु हनुमान द्वारा हुई थी।

कुंभमान–कश्यप तथा दनु के एक पुत्र का नाम।

कुंभयोनि–१. अगस्त्य मुनि का नातांतर। दे० 'अगस्त्य'। २. द्रोणाचार्य के लिये भी यह नाम आया है।

कुंभरेतस्–भारद्वाज अग्नि तथा वीरा के पुत्र का नाम। इनकी स्त्री का नाम सरयू तथा पुत्र का सिद्ध था। यह एक प्रकार की अग्नि हैं।

कुंभहनु–प्रहस्त के मंत्री का नाम। तार नाम के बानर वीर ने इनको मारा था।

कुंभाडु–बाणासुर के मंत्री का नाम। ये बलि के मंत्रियों में प्रधान और चित्ररेखा के पिता थे। बलराम से इनका युद्ध हुआ था जिसमें इनकी मृत्यु हुई। २. दंडी मुंडीश्वर नामक शिवावतार के शिष्य का नाम।

कुंभीनसी–१. बलि दैत्य की कन्या का नाम। यह बाणासुर की बहन थी। २. रावण की माता कैकसी जी बहिन का नाम। ३. माल्यवान राक्षस की कन्या अनला की कन्या का नाम। इसके पिता का नाम विश्वासु था। गुप्त रीति से मधु नामक राक्षस से इसने विवाह किया था, जिससे लवणासुर नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। ४. अंगारपर्ण गंधर्व की स्त्री का नाम। ५. चित्ररथ गंधर्व की स्त्री का नाम। वनवास के समय एक बार पांडव एक घने अरण्य को पारकर गंगा में उपस्थित हुये। वहीं पर चित्ररथ अपनी स्त्रियों सहित जलक्रीड़ा कर रहा था। अपने एकांत विहार में इस प्रकार विघ्न पड़ते देखकर चित्ररथ ने युद्ध के लिये ललकारा। अर्जुन और चित्ररथ में घोर युद्ध हुआ। अंत में अर्जुन ने उसे बाँध लिया। इस पर चित्ररथ की पत्नी कुम्भीनसी ने युधिष्ठिर से प्रार्थना की। युधिष्ठिर के कहने से अर्जुन ने छोड़ दिया। इससे चित्र रथ ने उन्हें माया युद्ध करने का कौशल सिखाया। अर्जुन द्वारा परास्त होने के कारण उसने अपना चित्रवर्ण नामक एक विचित्र रथ जला दिया और अपना नाम दग्धरथ प्रसिद्ध किया।

कुंभीपाक–नरक विशेष। श्रीमद्भागवत में लिखा है कि जो व्यक्ति पशु-पक्षियों को मार कर खाता है, उसे यमदूत मृत्यु के बाद कुंभीपाक के तप्त तेल में डाल देते हैं।

कुंवरवर–नाभादास जी के अनुसार एक मध्यकालीन वैष्णव भक्त तथा कथावाचक का नाम।

कुकण–एक सर्प का नाम।

कुकर्दम–एक अन्यायी राजा का नाम जो पिंडारक क्षेत्र का अधिपति था। अपने कुकर्मों के कारण इसे प्रेतयोनि प्राप्त हुई थी। अंत में घूमते-घामते यह कहोड़ ऋषि के आश्रम में पहुँचा, वहाँ उन्होंने एक श्राद्ध का अनुष्ठान करके इसका उद्धार किया।

कुकुर–अंधक के पुत्र का नाम। इन्हीं से कुकुरवंश की उत्पत्ति हुई थी।

कुक्षि–१. रैभ्य ऋषि के पुत्र का नाम। २. पौष्येजि ऋषि के पुत्र का नाम जिन्होंने सामदेव की शंभर संहिता का अध्ययन किया था।

कुक्षेयु–रौद्र के दस पुत्रों में से एक का नाम। पाठान्तर के अनुसार इनका नाम कक्षेयु भी मिलता है।

कुचैल–कृष्ण के एक भक्त तथा सहपाठी का नाम जो अधिकतर सुदामा अथवा श्रीदामा के नाम से प्रसिद्ध हैं। ये जाति के ब्राह्मण थे और परम जितेंद्रिय तथा ज्ञानी होते हुए भी अत्यंत दरिद्र थे। दरिद्रता से तंग आकर इनकी पत्नी ने कह-सुनकर इन्हें इनके मित्र श्रीकृष्ण के यहाँ धनप्राप्ति के लिए जाने को तैयार किया और साथ में संबलस्वरूप थोड़ा चावल भी बाँध दिया। भेंट होने पर श्रीकृष्ण ने इनका बड़ा सत्कार किया और बात-बात में ही इनकी झोली से एक मूठी तंडुल निकालकर खाया जिसके फलस्वरूप कुचैल के घर में अतुल संपत्ति आ गई। किंतु उस समय तक इसका उन्हें कोई ज्ञान नहीं था। रात्रि व्यतीत होने पर इन्होंने लौटने की इच्छा प्रकट की और कृष्ण ने सम्मानपूर्वक विदा कर दिया। चलते समय न तो कृष्ण ने इन्हें कुछ दिया और न इन्होंने ही माँगना उचित समझा। इन्होंने अपने मन को किसी प्रकार समझा-बुझा कर शांत कर लिया। लौटने पर इन्हें अपना घर धन-धान्य तथा ऐश्वर्य से परिपूर्ण मिला। हिंदी के वैष्णव साहित्य में प्रायः सुदामा या श्रीदामा नाम मिलता है और भागवत में कुचैल। कथानक से यह स्पष्ट है कि कुचैल और सुदामा परस्पर अभिन्न हैं।

कुजंभ–एक दैत्य का नाम जिसने तारक नाम के प्रसिद्ध असुर का राज्याभिषेक किया था।

कुज–१. मंगल ग्रह का नामांतर। २. नरकासुर का नामांतर। दे० 'नरकासुर' और 'मंगल'।

कुटीचर–शिव के विशेष गणों का नाम।

कुटुंबिनी–कामंद वैश्य की स्त्री का नाम। दे० 'कामंद'।

कुठारपानि–दे० 'परशुराम'।

कुणख्यडव–पतंजलि के अनुसार एक व्याकरणकार का नाम।

कुणारु–एक असुर का नाम।

कुणि–पाणिनि के अनुसार एक वैयाकरण तथा धर्मशास्त्रकार का नाम। कैयट ने भी इनका उल्लेख किया है। २. प्रसिद्ध यादववीर सात्यकी के एक पुत्र का नाम। ३. वेदशिरस् नामक शिवावतार के एक शिष्य का नाम।

कुणिक--एक प्राचीन आचार्य का नाम।

कुणीति--वसिष्ठ के एक पुत्र का नाम जो घृताची नाम की एक अप्सरा से उत्पन्न हुआ था। इसकी पत्नी का नाम पृथुकन्या था।

कुबरी--अक्रूर के साथ कंस के राजभवन की ओर जाते हुए कृष्ण को एक कुब्जा नाम की दासी मिली थी। उसका कुब्जा नामकरण उसकी पीठ में कूबड़ होने के कारण हुआ था। कंस के यहाँ यह माला तथा अनुलेपन आदि ले जाती थी। कृष्ण ने, मिलने पर, इससे अनुलेपन माँगा था। उसने बड़े स्नेह के साथ उसे कृष्ण को दे दिया था। उसके इस कार्य से प्रसन्न होकर कृष्ण ने उसका कूबड़ अच्छा कर दिया था। दे० 'कुब्जा'।

कुबेर--अलकापुरी के स्वामी का नाम। इनकी माता भरद्वाज की पुत्री देववर्णिनी, पिता विश्रवा तथा पितामह महर्षि पुलस्त्य थे। पिता के आदेश से ये पहले लंकापुरी में रहते थे और जहाँ ब्रह्मा के प्रसाद से माल्यवान, माली और सुमाली नाम के तीन राक्षस दीर्घजीवी होकर मनमाना अत्याचार करते थे। उन्हें दबाने के लिये स्वयं विष्णु को आना पड़ा जिनके आतंक से माल्यवान और माली तो पाताल में चले गए और सुमाली मृत्युलोक में विहार करने लगा। धनाधिप कुबेर को पुष्पक पर घूमते देख इसे ईर्ष्या हुई और इसने सोचा कि कोई ऐसा प्रतापी पुत्र उत्पन्न किया जाय जो कुबेर को लंका से भगा दे। इस अभिप्राय से उसने अपनी कन्या केकसी को विश्रवा के पास संतानोत्पत्ति की इच्छा से भेज दिया जिसके गर्भ से महाप्रतापी रावण ने जन्म लिया। रावण के अत्याचार से कुबेर को लंका छोड़कर कैलाश पर आश्रय लेना पड़ा। ये यक्षों के स्वामी तथा शिव के धनरक्षक हैं। इनके तीन पैर और आठ दाँत हैं। अपनी कुरूपता के लिये ये बहुत प्रसिद्ध हैं। इनका एक अन्य नाम वैश्रवण भी है। ब्रह्मा की तपस्या के फलस्वरूप ये चौथे लोकपाल भी हुए।

कुबेर वारक्य--जयंत वारक्य के शिष्य का नाम।

कुबेराणि--अंगिरस् कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।

कुब्जा--१. एक स्त्री जिन्हें दुर्भाग्य से बाल-वैधव्य प्राप्त हुआ था और जिन्होंने ६० वर्षों तक पुण्य कर्म करते हुए अपना जीवन व्यतीत किया। माघ स्नान के पुण्य प्रताप से इनको बैकुण्ठ प्राप्त हुआ। इसके बाद सुंद-उपसंद नामक राक्षस बंधुओं के वध करने के लिये ये तिलोत्तमा नाम से अवतरित हुईं। सुदोपसुंद के वध के अनंतर ब्रह्मदेव ने इन्हें अभिनंदित कर सूर्यलोक को भेज दिया। २. कंस की एक दासी का नाम। इसका शरीर तीन जगह से टेढ़ा था। कंस द्वारा आमंत्रित होकर जब कृष्ण और बलराम मथुरा गये उसी अवसर पर कृष्ण की कृपा से इसका शरीर सीधा हो गया। हिंदी-कृष्ण साहित्य मुख्यतः 'भ्रमरगीत' सम्बन्धी पदावली में इसका उल्लेख बार-बार मिलता है। दे० 'कुबरी'। ३. कैकेयी की दासी मंथरा का उल्लेख भी इसी नाम से मिलता है। दे० 'मंथरा'।

कुमार--ब्रह्मा के एक मानस पुत्र का नाम। ये एक प्रजापति थे। वायु पुराण में ब्रह्मा के चार पुत्र सनक, सनंद, सनातन तथा सनतकुमार के साथ यह शब्द संयुक्त है। उत्पत्ति-काल से लेकर पाँच सौ वर्ष तक ये बालक के समान रहे, इसलिये इनको कुमार कहा गया है। ये सशरीर बैकुंठ गये। वहीं द्वारपाल के रोकने पर इन्होंने उसे शाप दे दिया। २ शिव पुत्र स्कंद का नामांतर। दे० 'स्कंद'। ३. हैहय कुलोत्पन्न एक प्राचीन राजा का नाम। एक बार आखेट खेलते समय एक ऋषिकुमार को मृग समझकर इन्होंने मार तो डाला, किंतु तुरंत ही अपनी भूल जानकर ऋषिकुमार का पता लगाने के लिये वन में बहुत दूर तक निकल गये। अरिष्ट नेमि नामक ऋषि के आश्रम में पहुँच कर उस ऋषिकुमार को जीवित देखा। राजा ने ऋषि से इसका कारण पूछा। ऋषि ने बताया कि वह कुमार अपने तपोव्रत से इच्छामृत्यु हो गया है। चिंता करने की कोई बात नहीं है। राजा निश्चित होकर राजधानी को लौट आये।

कुमार आग्नेय--एक मंत्रद्रष्टा का नाम। दे० 'वत्स'।

कुमार आत्रेय--एक मंत्रद्रष्टा का नाम।

कुमारदास--सिंहल द्वीप के एक प्रसिद्ध राजा जो संस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि थे और काव्य-क्षेत्र में कालिदास की समता करते थे। इनका 'जानकी हरण' (अब दुष्प्राप्य) नामक ग्रंथ प्रसिद्ध है। यह भी किंवदंती है कि कालिदास इनके समकालीन तथा मित्र थे और इनके आग्रह से एक बार इनकी राजधानी में गये भी थे। प्रसिद्ध कवि राजशेखर ने इनका उल्लेख किया है।

कुमार पामायन--एक मंत्रद्रष्टा का नाम।

कुमार हारित- गालव ऋषि के शिष्य का नाम। इनके शिष्य का नाम कैशोर्य काप्य था।

कुमारिका--सिंहल के राजा शतशृंग की कन्या का नाम। यह प्रसिद्ध राजा भरत की पौत्री थीं। इनका सिर बकरी के सिर के समान था। इनकी कथा स्कंद पुराण में इस प्रकार वर्णित है—किसी समय एक बकरी समुद्र में पानी पीने गई परन्तु एक लताजाल में फँस जाने के कारण वहीं उसकी मृत्यु हो गई। उसका शरीर समुद्र में तथा मुँह लता में उलझा पड़ा रह गया। फिर समुद्र के प्रभाव से वह बकरी सिंहलराजा के यहाँ उत्पन्न हुई। उसका सारा शरीर मनुष्य का और सिर बकरी के सिर का सा था। इस रूप का ज्ञान होने पर वह बड़ी दुखी हुई और राजा की आज्ञा लेकर उस स्थान पर गई जहाँ उस बकरी का मुँह लता में फँसा हुआ था। उसने उस मुँह को निकालकर समुद्र में फेंक दिया जिसके प्रभाव से उसका मुख एक सुंदर स्त्री-मुख में परिणत हो गया। वहीं पर इन्होंने अपनी आराधना से शिव को प्रसन्न किया और उनसे यह माँगा कि आप सदा वहाँ उपस्थित रहें जिसे शिव ने स्वीकार कर लिया। कुमारिका ने वहाँ मंदिर बनवा कर शिव की प्राण-प्रतिष्ठा की जो बर्करेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हुये। स्वरितक नामक एक नाग पाताल को भेद कर कुमारिका के दर्शनार्थ आया था, जिससे उस मंदिर के पास एक अथाह गर्त बन गया और वह गंगा-

जल से भर गया। कुमारिका का विवाह महाकाल से हुआ था।

कुमारिल भट्ट–एक प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान। इन्होंने किसी बौद्ध पाठशाला में शिक्षा प्राप्त की थी, किंतु कालान्तर में उसी का विरोध किया। इससे इन्हें गुरु-विरोध के लिये प्रायश्चित करना पड़ा अर्थात् भूसी की आग में धीरे-धीरे जलना पड़ा। ये शंकराचार्य के पूर्वकालीन थे। प्रसिद्ध शास्त्रज्ञ मंडन मिश्र इनके साले थे। जिस समय ये भूसी की आग में जल रहे थे, उसी समय शंकराचार्य इनके पास अपने 'भाष्य' का वार्तिक लिखाने आये। कुमारिल भट्ट ने उनको मंडन मिश्र के पास जाने की सलाह दी। कुमारिल मीमांसा दर्शन के माननेवाले थे। इन्हीं के प्रभाव से बौद्ध और जैनधर्म का विरोध करके हिंदू धर्म पुन: स्थापित हुआ।

कुमारी–१. दे० 'चित्रलेखा'। २. धनंजय की स्त्री का नाम।

कुमुद–१. विष्णु के पार्षदगणों में से एक का नाम। २. राम सेना के वानर वीर का नाम जो गोमती के तट पर स्थित रम्यक नामक पर्वत पर रहता था। ३. कश्यप तथा कद्रू के एक पुत्र का नाम। ४. व्यास की अथर्वन् शिष्य-परंपरा में पथ्य ऋषि के शिष्य का नाम। ५. नाभादास जी के अनुसार राम की बानर सेना के एक प्रमुख सेनापति तथा सहचर जिन्होंने युद्ध में अतुल शौर्य का प्रदर्शन किया था। नाभाजी ने भगवान के १६ पार्षदों में कुमुद और कुमुदाक्ष को जय और विजय के समकक्ष माना है।

कुमुदाक्ष–१. कश्यप तथा कद्रू के पुत्र का नाम। २. मणिवर तथा देवजनी के पुत्र का नाम। इनके पुत्र गुह्यक नाम से प्रसिद्ध हैं। दे० 'कुमुद,।

कुमुद्वती–राम की एक पतोहू तथा कुश की दूसरी पत्नी का नाम। इनकी सपत्नी का नाम चंपका था। कुमुद्वती के पुत्र अतिथि ने सूर्यवंश का विस्तार किया था। एक बार जलक्रीड़ा करते समय कुश के कड़े सरयू में गिर पड़े और उन्हें कुमुद्वती नामक कुमुद नाग की बहिन नागलोक में उठा ले गई। क्षोभ से कुश ने सरयू को शुष्क कर देने के लिए शरसंधान किया, किंतु तभी कुमुद ने उपस्थित होकर कड़ों के साथ कुमुद्वती कुश को समर्पित कर दी। २. मयूरध्वज राजा की स्त्री तथा ताम्रध्वज की माता का नाम।

कुरुंग–एक वैदिककालीन राजा का नाम। देवातिथि काण्व ने इनके दान की प्रशंसा की है।

कुरु–१. एक प्रसिद्ध चंद्रवंशी राजा का नाम। वैदिक साहित्य में इनका उल्लेख है। इनके पिता का नाम संवरण तथा माता का नाम तपती था। शुभांगी तथा वाहिनी नाम की इनकी दो स्त्रियाँ थीं। वाहिनी के पाँच पुत्र हुये जिनमें कनिष्ट का नाम जनमेजय था जिनके वंशज धृतराष्ट्र और पांडु हुये। बास्तव में धृतराष्ट्र तथा पांडु दोनों के वंशज ही कौरव कहे जा सकते हैं, किंतु धृतराष्ट्र के पुत्र ही कौरव कहलाते हैं। कुरु के अन्य पुत्रों के नाम विदूरथ (शुभांगी से) अश्ववत्, अभिष्यंत, चैत्ररथ तथा मुनि (वाहिनी से) और जनमेजय हैं। २. अग्नीध्र के एक पुत्र का नाम। इनकी स्त्री का नाम मेरुकन्या था।

कुरुवत्स–नवरथ के पुत्र का नाम।

कुरुवश–मधुराजा के पुत्र का नाम। इनके पुत्र का नाम अनु था।

कुरुश्रवण त्रासदस्यव--त्रसदस्यू के पुत्र नकाम। ऋग्वेद में कलष ऐलूष ने इनके दान की प्रशंसा की है।

कुरुसुति काण्व–एक सूक्तद्रष्टा का नाम।

कुल--१. दशरथ पुत्र राम के दरबार के एक विदूषक का नाम। २. राम-सेना के एक बानर का नाम।

कुलक--रल का राजा का नामांतर। मत्स्यपुराण के अनुसार यह क्षुद्रक राजा के पुत्र थे।

कुलह--कश्यप कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।

कुलिक--कद्रू और कश्यप से उत्पन्न एक नाग का नाम।

कुल्मल बर्हिष शैलूष--एक सूक्तद्रष्टा का नाम।

कुवलयापीड़--हाथी के रूप में एक राक्षस का नाम। कृष्ण और बलराम जब मथुरा में उत्सव में सम्मिलित होने के लिये आ रहे थे तब रास्ते में ही इनका वध करने के लिये कंस ने कुवलयापीड़ को भेजा था। कृष्ण ने रास्ते ही में इसका वध कर दिया था।

कुवलयाश्व--एक विख्यात चक्रवर्ती राजा का नाम। भविष्य पुराण के अनुसार ये वृहदश्व के पुत्र थे। दिवोदास के पुत्र प्रतर्दन का दूसरा नाम भी यही था। ये कई नामों से प्रसिद्ध हैं जैसे कुवलाश्व, द्युमत, शत्रुजित तथा ऋतुध्वज आदि।

कुवलाश्व--राजा श्रावाज के पौत्र तथा वृहदश्व के पुत्र का नाम। उहोंने महर्षि उत्तंक की आज्ञा से धुंध नामक राक्षस का वध किया था, जिससे इनका नाम धुंधमार भी प्रसिद्ध है। यह राक्षस एक बालुकामय समुद्र में रहता था और उसमें से उसे निकालना असंभव ही था। पर कुवलाश्व ने अपने २१००० पुत्रों की सम्मिलित खोज से इसे किसी प्रकार निकलने के लिए बाध्य किया। निकलने पर इसके अश्वरंध्र से अग्नि की ऐसी लपटें निकलीं कि इनके तीन पुत्रों—दृढ़ाश्व, कपिलाश्व तथा भद्राश्व—को छोड़कर शेष सब भस्म हो गये, पर राजा कुवलाश्व के सामने वह अधिक न ठहर सका और वीरगति को प्राप्त हुआ। उतंक ऋषि की तपस्या में विघ्न डालने के कारण ही धुंध का वध किया गया था। हरिवंश पुराण के अनुसार इनके केवल १०० पुत्र थे। इनकी मृत्यु के बाद इनका पुत्र दृढ़ाश्व गद्दी पर बैठा। मार्कण्डेय पुराण के अनुसार ये शत्रुजित के पुत्र थे।

कुश--१. राम के पुत्र का नाम। इनकी माता वैदेही तथा छोटे भाई लव थे। रावण को जीतने के बाद अग्नि-परीक्षा लेकर राम ने सीता को स्वीकार किया था; किन्तु बाद में लोकापवाद के भय से त्याग दिया। यद्यपि वे इस समय गर्भवती थीं। लक्ष्मण उन्हें तमसा नदी के किनारे बाल्मीकि के आश्रम के पास छोड़ आये। आश्रम में जैसे अन्य ऋषि-पत्नियाँ रहती थीं वैसे हीं इनके भी रहने की व्यवस्था हो गई। श्रावण मास की मध्य रात्रि में इनके कुश और लव नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए। बाल्मीकि

ने उनके सब संस्कार किये तथा शस्त्र-शास्त्र आदि की भी शिक्षा दी। वे दोनों सभी विद्याओं में पारंगत हो गये। इसी बीच राम ने अश्वमेध यज्ञ किया। इनका छोड़ा हुआ यज्ञाश्व बाल्मीकि आश्रम के पास से निकला। घोड़े के मस्तक पर तिलक लगा हुआ था और एक पत्र भी लगाया हुआ था। इस घोड़े को देखकर लव ने कौतूहलवश पकड़ लिया और उस पत्र को पढ़ा। उसमें लिखा था—'एक वीराध कौसल्या तस्या पुत्रो रघूद्वहः। तेन रामेण मुक्तोसौ वाजी गृहणात्विमं बली।' यह पढ़कर इनकी क्षात्रवृत्ति जागृत हो उठी और इन्होने अश्व को रोक लिया। उसकी रक्षक सेना के सेनापति शत्रुघ्न थे। दोनों में युद्ध हुआ। शत्रुघ्न के आहत होने पर लक्ष्मण, फिर लक्ष्मण के आहत होने पर भरत और भरत के आहत होने पर राम आये। किशोर बालकों के अद्भुत आक्रमण को देखकर राम के हृदय में वात्सल्य प्रेम उमड़ आया। अंग-प्रत्यंग शिथिल हो गये। धनुष नहीं उठा। उन्होंने इन्हें प्रेम से बुलाकर पूछा, "तुम किसके लड़के हो। धनुर्विद्या तुम्हें किससे प्राप्त हुई ?" लड़कों ने पहले तो कहा, "युद्ध करो, इन प्रश्नों से तुम्हें क्या मतलब ?" किन्तु बाद में अपनी माता का नाम बता दिया। फिर, बाल्मीकि की आज्ञा से स्वयं सीता ने कुमारों को बताया कि यही तुम्हारे पिता हैं। इस तरह सब लोगों का मिलन हुआ सीता ने राम को क्षमा कर दिया सभी लोग अयोध्या गए। कुश और लव की अध्यक्षता में अश्वमेध यज्ञ पूरा हुआ। बाल्मीकि रामायण में यह प्रसंग कुछ दूसरी प्रकार से वर्णित है। राम के अश्वमेध यज्ञ में बाल्मीकि ऋषि कुश और लव के साथ सम्मिलित हुये थे। कुश और लव ने बड़े राग के साथ रामायण गाकर सबको मुग्ध कर लिया। परिचय पूछे जाने पर इन्होंने केवल इतना कहा कि हम बाल्मीकि के शिष्य हैं। किन्तु राम ने समझ लिया कि ये उन्हीं के ही आत्मज हैं। राम ने लव को कोसल और कुश को उत्तर कोशल दे दिया। कुश ने कुशस्थली नामक नगर बसाया। दे० 'राम', 'सीता' तथा 'लव'। २. भागवत के अनुसार सुहोत्र राजा के तीन पुत्रों में से द्वितीय पुत्र का नाम। इनके पुत्र का नाम प्रतिनामक था। कुश वंश का प्रारंभ इन्हीं से हुआ। ३. ये अजक राजा के पुत्र थे। कुशांब, अमूर्तरजस, वसु तथा कुशनाम के इनके चार पुत्र थे। ये चारों कौशिक नाम से प्रसिद्ध हुये। नामांतर कुशिक। ४. एक दैत्य का नाम जिसे शिव की कृपा से अमरत्व मिला था। यह विष्णु को ही मारने को उद्यत हुआ, पर उन्होंने इसके मस्तक को पृथ्वी में गाड़कर उस पर शिव लिंग की स्थापना कर दी। तब यह शरणागत हुआ। ५. विदर्भ राजा के तीन पुत्रों में से पहले का नाम।

कुशध्वज–रथध्वज राजा के पुत्र का नाम। इनकी कन्या का नाम वेदवती था। २. ह्रस्वरोमा जनक के कनिष्ट पुत्र का नाम। ये सीरध्वज जनक के छोटे भाई थे। माडवी और श्रुतकीर्ति इनकी दो कन्याएँ क्रम से भरत तथा शत्रुघ्न को ब्याही थीं। इनके बड़े भाई सीरध्वज जनक की पुत्री सीता और उर्मिला क्रम से राम और लक्ष्मण को ब्याही थीं। सीरध्वज ने प्रसिद्ध राजा सुधन्वा को जीता था। इनके राज्य का नाम सांकाश्य था जिसे इन्होंने अपने छोटे भाई कुशध्वज को दे दिया था। ३. बृहस्पति के पुत्र का नाम। ४. एक प्राचीन राजा का नाम जो पूर्वजन्म में बानर था।

कुशनाभ--१. कुश अथवा कुशिक राजा के चार पुत्रों में से कनिष्ठ पुत्र का नाम। इन्होंने महोदय नामक एक नगर की स्थापना की। २. एक मनु पुत्र का नाम।

कुशरीर--वेदशिरस् नाम के शिवावतार के शिष्य का नाम।

कुशल--एक ब्राह्मण का नाम। ये और इनकी पत्नी दोनों दुराचारी थे जिसके कारण नरक में पड़े। पर इनके पुत्रों ने गया में पिंडदान किया जिसके फल से इनका उद्धार हो गया।

कुशांब--कुश (कुशिक) राजा के ज्येष्ठ पुत्र का नाम। ये चार भाई थे। इन्होंने ही कौशांबी नामक नगरी की स्थापना की थी। इनके पुत्र का नाम गाधि था। दे० 'कुशिक'। २. उपरिचर वसु नामक राजा के पुत्र का नाम। ये चेदि नामक राजा के पुत्र थे। इनका नामांतर मणिवाहन था।

कुशाग्र--बृहद्रथ के कनिष्ठ पुत्र का नाम। इनके बड़े भाई का नाम जरासंध था। ये दोनों उपरिचर वसु के पौत्र थे। भागवत के अनुसार इनके पुत्र का नाम ऋषभ था।

कुशाल--अशोक के पुत्र का नाम।

कुशावर्त -ऋषभदेव तथा जयंती के पुत्र का नाम।

कुशिक--विश्वामित्र के पितामह तथा गाधि के पिता का नाम। एक समय महर्षि च्यवन को ध्यानबल से भान हुआ कि कुशिक वंश के संयोग से इनके वंश में वर्णसंकरता का प्रवेश होकर क्षत्रियत्व की प्राप्ति होगी। इसे अवांछनीय समझकर इन्होंने कुशिक वंश के नाश का प्रयत्न किया; परन्तु असफल रहे। च्यवन के वंशज ऋचीक मुनि ने गाधिराज की कन्या का पाणिग्रहण किया। इसी संबंध से महर्षि जमदग्नि का जन्म हुआ जिनके पुत्र परशुराम ब्राह्मण कुलोत्पन्न होते हुये भी क्षात्रधर्म में प्रवृत्त हुये। कुशिक महोदयपुर में रहते थे। उनके यहाँ एक बार च्यवन ऋषि गये थे। कुशिक तथा उनकी स्त्री ने बड़ी सेवा-सुश्रूषा की थी जिसके फलस्वरूप यह वर मिला कि इनके वंश में ब्राह्मणत्व का प्रवेश होगा। कुशिक का उल्लेख वैदिक ग्रंथों में भी मिलता कुशिक है। कुलोत्पन्न मंत्रकारों के नाम भी मिलते हैं।

कुशिक ऐषारथि--एक सूक्तद्रष्टा का नाम।

कुशिक सौभट--एक सूक्तद्रष्टा का नाम।

कुशीलव--भार्वशर्मा नामक ब्राह्मण ताड़ी पीने के कारण ताड़ के पेड़ के रूप में जन्मा। उस ताड़ पर कुशीलव नामक एक ब्राह्मण सकुटम्ब राक्षस होकर रहता था क्योंकि उसने कभी किसी को दान नहीं दिया था। अंत में गीता के आठवें अध्याय का पाठ करने से उसका उद्धार हुआ।

कुशुंभ--भविष्य पुराण के अनुसार शकुनी के पुत्र का नाम।

कुशुमित्--व्यास की सामशिष्य परंपरा में पौष्यंजी के शिष्य का नाम।

कुश्रि वाजश्रवस्--एक ऋषि जिन्हें अग्निचयन का ज्ञान था। ये यज्ञवचस् के शिष्य थे। इनके शिष्य उपवेशि और वात्स्य थे।

कुश्रीनक सामश्रवस्--इनको लुशाकपि श्वार्मली ने यह शाप दिया था कि कौषीतकी शाखा (सांख्यापन) के लोगों को गौरव नहीं प्राप्त होगा।

कुषंड--सर्पयज्ञ के अंत में षंड नामक ऋत्विज के साथ इनका नाम आया है। इस यज्ञ के अंत में अभिगिर (स्तुति) तथा अपगर (निंद) नामक कर्मों का उल्लेख है।

कुसीदकि--अंगिरस् कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।

कुसीहि--एक ऋषि का नाम जो व्यास की परंपरा में पौष्यंजी के शिष्य थे।

कुसु--मणिवर तथा देवजनी के पुत्र का नाम।

कुसुदिन काव्य--एक सूक्त द्रष्टा का नाम।

कुसुमायुध--कामदेव का नामांतर। दे० 'कामदेव'।

कुसुमि--एक सामवेदी श्रुतर्षि का नाम।

कुसुरुबिंद औद्दालकि--एक ऋषि जिन्होंने पशु-संपत्ति की प्राप्ति के लिये सप्तरात्र नामक यज्ञ किया था जिसके फल से इन्हें चौपायों की प्रचुर सम्पत्ति प्राप्त हुई थी।

कुस्तुक शार्कराक्ष्य--श्रवणदत्त के शिष्य का नाम। इनके शिष्य का नाम भवजात था।

कुस्तुबुरु--एक यज्ञ का नाम।

कुहर--१. महाभारत युद्ध में कौरवपक्षीय एक राजा का नाम। २. कश्यप तथा कद्रू के एक पुत्र का नाम।

कुहुन--सौवीर देस के एक राजपुत्र का नाम। वह जयद्रथ के भाई थे।

कुहूहू--अंगिरा तथा श्रद्धा की एक कन्या का नाम।

कूचीमुख--विश्वामित्र मुनि के पुत्र का नाम।

कूट--कंस के एक सभासद का नाम।

कूपकर्ण--एक रुद्रगण। बाणासुर के साथ युद्ध के प्रसंग में बलराम के साथ इनके युद्ध का वर्णन है।

कूबाजी--मध्यकालीन वैष्णव भक्त केवलदास जी का एक नामांतर। दे० 'केवलदास'।

कूर्च--मीडवान राजा के पुत्र का नाम। इनके पुत्र का नाम इंद्रसेन था।

कूर्म--विष्णु के द्वितीय अवतार का नाम। प्रजापति ने संतति-उत्पादन करने के अभिप्राय से कूर्म का रूप धारण किया था। इस कूर्म की पीठ का घेरा एक लाख योजन का था। कूर्म की पीठ पर मंदराचल पर्वत को स्थापित करने पर ही समुद्र-मंथन संभव हो सका था। पद्मपुराण के अनुसार इसीलिये विष्णु ने कूर्म का अवतार लिया था। दे० 'कच्छप'।

कूर्म गात्सर्मद--एक सूक्तद्रष्टा का नाम।

कूर्मपुराण--अष्टादश महापुराणों में से एक जिसकी श्लोक संख्या १७००० तथा प्रकृति तामसी कही गई है। पुराण के अंतर्साक्ष्य से ज्ञात होता है कि इसमें भगवान विष्णु ने अपने कच्छपावतार में इंद्रद्युम्न तथा अन्य ऋषियों से इंद्र के सामने जीवन के चार लक्ष्यों—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—का वर्णन किया है; किंतु वास्तव में यह बात उक्त पुराण में पूर्ण रूप से चरितार्थ नहीं होती। वस्तुतः यह वैष्णव पुराण है भी नहीं। इसमें प्रमुख रूप से शैव सिद्धांत ही प्रतिपादित हुए हैं और इसके अधिकांश भाग में शिव तथा दुर्गा की उपासना का ही प्रतिपादन है। इस पुराण की रचना बारहवीं शताब्दी के बाद हुई है।

कूष्मांड--एक दैत्य का नाम जिसका बध विष्णु ने कार्तिक शुक्ला नवमी को किया था।

कृणु--एक ऋषि का नाम। दे० 'वाल्मीकि'।

कृतंजय--१. भागवत के अनुसार ये बर्हिराज के पुत्र थे। अन्य पुराणों में यह धर्म तथा बृहद्राज के पुत्र कहे गये हैं। २. व्यास का नाम।

कृतस्यती--एक प्रसिद्ध अप्सरा का नाम।

कृत--१. जय राजा के पुत्र का नाम। २. वसुदेव और रोहिणी के सातवें पुत्र का नाम।

कृतक--वसुदेव और मदिरा के चार पुत्रों में से तृतीय का नाम।

कृतद्युति--चित्रकेतु राजा की एक करोड़ स्त्रियों में से ज्येष्ठा का नाम। अंगिरा ऋषि की कृपा से इन्हें पुत्र हुआ था, जिसे इनकी सपत्नी ने विष देकर मार डाला। पर अंगिरा ऋषि ने उसे पुनर्जीवित कर दिया। दे० 'चित्रकेतु'।

कृतध्वज--१. दे० 'प्रतर्दन'। २. धर्मध्वज जनक के दो पुत्रों में से एक का नाम।

कृतप्रज्ञ--राजा भगदत्त के पुत्र का नाम जिसे नकुल ने भारत-युद्ध में मारा था।

कृतयशस् आंगिरस्--एक सूक्तद्रष्टा का नाम।

कृतयुग--पुराणों के अनुसार चार युगों में से सर्वप्रथम का नाम जिसका आरंभ सृष्टि के आदि से ही होता है। इसका दूसरा नाम सत्ययुग है।

कृतवर्मन--१ हृदीक राजा के पुत्र, एक प्रसिद्ध वीर राजा। भारतयुद्ध में एक अक्षौहिणी सेना लेकर दुर्योधन के पक्ष में सम्मिलित हुये थे। बलराम ने रैवतक पर्वत पर एक बहुत बड़ा उत्सव किया था, जिसमें आमंत्रित होकर ये आये थे। भारत-युद्ध में भीम ने इन्हें तीन बाणों से बिद्ध किया था। दुर्योधन पक्ष के बचे हुये तीन वीरों में से ये भी एक थे। युधिष्ठिर के अश्वमेध के समय रक्षक सैन्य के अधिपति अर्जुन के साथ ये भी थे। इनकी मृत्यु यादव वीर सात्यकी के हाथ से हुई। २. भागवत के अनुसार धनक के पुत्र का नाम। दे०। 'कृतवीर्य'।

कृतवाक्--(कृतवाच्) आंगिरस् कुलोत्पन्न एक मंत्रद्रष्टा का नाम।

कृतवीर्य--भागवत तथा विष्णु-पुराण के अनुसार धनक राजा के ज्येष्ठ पुत्र का नाम। ये चार भाई थे। कृतवीर्य के पुत्र का नाम अर्जुन था जो कृतवीर्य तथा सहस्रार्जुन आदि नामों से प्रसिद्ध हैं। धनक का नामांतर कनक भी मत्स्य आदि पुराणों में मिलता है। संकष्टी चतुर्थी व्रत के प्रभाव से कृतवीर्य को सहस्रार्जुन ऐसा अपूर्व पराक्रमी तथा प्रतापी पुत्ररत्न प्राप्त हुआ था।

कृताश्व--संहूताश्व राजा के दो पुत्रों में से पहले का नाम। कृशाश्व इनका नामांतर है।

कृति--१. राजा नहुष के एक कनिष्ठ पुत्र का नाम। २. बहुलाश्व जनक के पुत्र का नाम। ये निमि के वंशज थे।

इस वंश में इस नाम दो राजे हुये हैं। ३. भागवत के अनुसार च्यवन ऋषि के पुत्र। इनके पुत्र का नाम उपरिचर वसु था। ४. राजा वभ्रु के पुत्र का नाम। इनके पिता का नाम रोमपाद तथा पुत्र का नाम उशिक था।

कृतेयु--भागवत तथा विष्णु पुराण के अनुसार रौद्राश्व तथा घृताची के पुत्र का नाम।

कृतौजस्--राजा कनक के पुत्र का नाम। भागवत तथा विष्णु पुराण के अनुसार ये धनक के पुत्र थे।

कृत्तिका--१. एक नक्षत्र का नाम। २. प्राचेतस् दक्ष की सत्ताइस कन्याओं में से एक। ३. अग्नि नामक वसु की पत्नी का नाम। इनके पुत्र का नाम स्कंद था।

कृप--शारद्वत ऋषि के पुत्र का नाम। ऋषि की तपस्या से भयभीत होकर इन्द्र ने उनका तप भंग करने के लिए जालवती (भागवत तथा मत्स्य पुराण के अनुसार उर्वशी) नामक अप्सरा को भेजा था। वह अपने उद्देश्य में असफल रही, किंतु ऋषि का वीर्य एक सरकंडे पर स्खलित हो जाने से एक पुत्र तथा एक पुत्री की उत्पत्ति हुई। संयोगवश मृगयार्थ आये हुये शांतनु ने इन अरक्षित शिशुओं को अपने साथ ले लिया और कृपापूर्वक उनका पालन किया। कृपा से पोषित होने के कारण इनका नाम क्रमशः कृप तथा कृपी रखा गया। कालांतर में कृप धनुर्विद्या के आचार्य हुये और धृतराष्ट ने अपने पुत्रों को उक्त विद्या की शिक्षा देने के लिए इन्हें नियुक्त किया था। भारत युद्ध में इन्होंने कौरवों का पक्ष लिया और पांडव पक्ष के अनेक उद्भट योद्धाओं का वध किया। कुछ व्यक्तिगत कारणों से इनका कर्ण से वैमनस्य हो गया था। युद्ध के अनंतर कौरव पक्ष के जो तीन वीर बच रहे थे उनमें एक कृपाचार्य भी थे। विष्णुपुराण के अनुसार कृप तथा कृपी सत्यधृति की संतान थे, जो शारद्वत के पौत्र थे।

कृपा--कृप की बहन का नाम। इनका विवाह द्रोणाचार्य से हुआ था, जिनसे अश्वत्थामा की उत्पत्ति हुई थी। विष्णुपुराण के अनुसार ये सत्यधृति की कन्या थी जो शारद्वत के पौत्र थे। दे० 'कृप'।

कृपाचार्य--महाभारत कालीन एक प्रसिद्ध धनुर्धर का नाम दे० 'कृप'।

कृपी--कृपाचार्य की बहन का नाम। दे० 'कृप' तथा 'कृपा'।

कृमि--१. विष्णु तथा वायु पुराणों के अनुसार उशीनर के पुत्र का नाम। २. मत्स्यपुराण के अनुसार महर्षि च्यवन के पुत्र का नाम। कृत, कृतक तथा कृति इनके अन्य नामांतर हैं।

कृश--१. ऋग्वेद के अनुसार एक सूक्तद्रष्टा का नाम, जिन्होंने यज्ञ द्वारा इन्द्र को प्रसन्न किया था। ये बड़े सत्यवादी थे और अश्विनीकुमारों के विशेष कृपा-पात्र थे। २. एक प्राचीन ऋषि का नाम जो उग्र तप के कारण अत्यंत कृश रहा करते थे। ये शृंग ऋषि के मित्र थे। इनका एक नामांतर 'कृशतनु' भी है।

कृशानु--सोमरक्षक गंधर्वों में से एक का नाम जिन्हें देवासुर संग्राम के अनन्तर अश्विनी कुमारों ने अच्छा किया था।

कृशाश्व--१. पाणिनि के अनुसार नाट्यकला के एक आचार्य का नाम। दे० 'शिलालिन्' २. एक ऋषि तथा प्रजापति का नाम जिनके साथ दक्ष ने अर्चि तथा धिषणा नामक अपनी दो कन्याओं का विवाह किया था। ३. सहदेव के पुत्र का नाम। इनके पुत्र का नाम सोमदत्त था।

कृष्ण--भारतीय वाङ्मय में यह नाम सर्वाधिक पूज्य है। आज इस नाम में वैदिक, पौराणिक और ऐतिहासिक कृष्ण के व्यक्तित्व निहित हैं। अतएव कृष्ण अब केवल भावजगत के व्यक्ति रह गये हैं। ऋग्वेद में इस नाम का उल्लेख हुआ है। कृष्ण आंगिरस एक मंत्रद्रष्टा थे, किन्तु संहिता साहित्य से स्पष्ट है कि कृष्ण आंगिरस् तथा कृष्ण एक ही व्यक्ति के नाम नहीं हैं। छांदोग्य उपनिषद में सर्व प्रथम देवकी-पुत्र कृष्ण का वर्णन एक आचार्य के रूप में हुआ है। विश्वक के पुत्र, एक ऋषि का नाम भी कृष्ण था। कृष्ण नाम का एक असुर भी हुआ है जिसने दस सहस्र सेना के साथ त्रिलोक में हाहाकार मचा रक्खा था। अंत में इंद्र ने इसे परास्त करके इसका नाश किया। एक अन्य वैदिक मंत्र में ५०००० कृष्णों के वध का उल्लेख है। अन्यत्र वंश-परंपरा को रोकने के लिये कृष्ण की गर्भवती स्त्रियों के बध का उल्लेख है। संभवतः श्वेतवर्ण आदिम आर्यों और कृष्ण (काला) वर्ण अनार्यों के युद्ध की ओर इस वर्णन का संकेत है। पुराणों के अनुसार कृष्ण विष्णु की पूर्ण कला से सम्पन्न उनके आठवें अवतार थे। महाभारत में स्पष्टतः परमदेव के रूप में नहीं, किन्तु कुछ रहस्यात्मकता से युक्त राजा कृष्ण को देखते हैं। सर्वशक्तिमान ईश्वर के रूप में कृष्ण का वर्णन भगवद्गीता में मिलता है, जो निर्विवाद रूप से महाभारत में बाद को जोड़ी गई है। महाभारत के द्वितीय और तृतीय संस्करणों के प्रक्षिप्त अंशों में इनकी ईश्वरीय सत्ता उत्तरोत्तर परिवर्धित होती चली गई। हरिवंश पुराण में जो बहुत बाद में महाभारत के साथ संयुक्त किया गया तथा भागवत पुराण में इनकी ईश्वरीय सत्ता पूर्णता को प्राप्त हुई। उपर्युक्त दोनों ग्रंथों के आधार पर इनकी कथा संक्षेप में निम्नलिखित है :—इनके पिता वसुदेव तथा माता देवकी थीं। देवकी कंस की बहन थीं और वसुदेव से इनके विवाह के समय यह आकाशवाणी हुई कि देवकी के आठवें गर्भ से जो संतान होगी वही कंस का बध करेगी, इसी कारण से कंस ने देवकी और वसुदेव को कारागार में डाल रक्खा था और जो संतान उनसे होती थी उसे चट्टान पर पटक कर मार डालता था। भाद्रपद कृष्णाष्टमी को, अर्धरात्रि के समय कारागार में ही कृष्ण का जन्म हुआ। उस समय दैवयोग से सभा पहरेदार सो गये थे। मूसलाधार वृष्टि हो रही थी। पूर्व निश्चय के अनुसार वसुदेव सद्यःजात कृष्ण को लेकर बढ़ी हुई यमुना को पार करके वृन्दावन में यशोदा के पास रख आये और यशोदा की नवजात कन्या को लाकर देवकी की गोद में बिठा दिया। प्रातःकाल कंस ने ज्यों ही चट्टान पर पटक कर उसको मार डालना चाहा, त्यों ही वह कन्या यह कहती हुई आकाश में उड़ गई—'अरे दुर्मति कंस ! तेरा मारनेवाला प्रकट हो

गया है। यह कन्या योगमाया थी। इसके अनन्तर कंस को शिशु कृष्ण का पता चला और उसके बध के लिये उसने अनेकानेक प्रयत्न किये। सर्वप्रथम पूतना नाम की राक्षसी भेजी गई कि वह विषाक्त स्तन्य-पान करा कर कृष्ण को समाप्त कर दे, किन्तु वह खुद ही मारी गई। इसी प्रकार कागासुर, बकासुर, वृषासुर आदि राक्षस छद्मवेश में कृष्ण को मारने के लिये भेजे गये, किन्तु सभी कृष्ण के द्वारा मार डाले गये। कालियनाग तथा कुबलयापीड़ नामक मदोद्धत हाथी आदि का भी कृष्ण ने वध किया। कंस के द्वारा भेजे गये प्रलंभ, नरक, जंभ, पीढ़ तथा मुरु नामक अन्य राक्षस भी मारे गये। बड़े होने पर कृष्ण ने अपने बड़े भाई बलराम की सहायता से कंस के भाई सुनामन को मारा और जरासंध ऐसे पराक्रमी राजा के सहायक होने पर भी कंस का बध किया। तत्पश्चात् जरासंध और शिशुपाल जैसे अन्य अत्याचारी राजाओं को मारा। अंग-वंग आदि देशों को जीत कर पाताल लोक में पंचजन नामक राक्षस को मारा और पांचजन्य नामक दिव्यशंख प्राप्त किया। अर्जुन की सहायता से इन्होंने खांडव बन जलाने में अग्नि की सहायता की जिससे प्रसन्न होकर अग्नि ने कृष्ण को सुदर्शन चक्र और कौमोदकी गदा अथा अर्जुन का गांडीव धनुष दिया। इन्होंने गांधार नरेश की कन्या का स्वयंवर-सभा से अपहरण किया और राजा को अपने पथ के पहिये से बाँधकर अपने यहाँ ले गये। विदर्भराज भीष्मक के पुत्र रुक्म के घोर विरोध करने पर भी उसकी बहन रुक्मिणी के साथ इन्होंने विवाह किया, जिससे प्रद्युम्न, चारुवेष्ण आदि दस पुत्र तथा चारुमती नाम की एक कन्या उत्पन्न हुई। रुक्मिणी को लक्ष्मी का अवतार माना गया है। सत्यभामा, जांबवती, सुशीला तथा लक्ष्मणा इनकी अन्य प्रधान महिषियाँ थीं। कहा जाता है कि इनके १६०००स्त्रियाँ थीं। पांडवों के साथ इनका घनिष्ठ संबंध था। द्रौपदी के स्वयंवर में सम्मिलित होकर मत्स्यवेध-प्रतियोगिता में इन्होंने अर्जुन के पक्ष में अपना निर्णय दिया। पांडवों के हस्तिनापुर में राज्य करते समय ये अतिथि के रूप में उनके यहाँ गये। कुछ दिन बाद अर्जुन द्वारका गये। कृष्ण ने उनका बड़ा स्वागत किया। वहीं कृष्ण की बहन सुभद्रा से अर्जुन का प्रेम हो गया और बलराम की असम्मति होने पर भी कृष्ण की सहायता से अर्जुन सुभद्रा को लेकर निकल गये। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के समय कृष्ण ने जरासंध के बध करने की सलाह दी, क्योंकि जरासंध के कारण ही कृष्ण को मथुरा छोड़कर द्वारका जाना पड़ा था। भीम द्वारा जरासंध का वध हुआ। राजसूय यज्ञ में कृष्ण को सम्मानित होते देख शिशुपाल ने उनका अपमान किया। उस पर कृष्ण ने अपने चक्र से उसका शिरश्छेदन किया। कौरवों और पांडवों के बीच द्यूत क्रीड़ा के अवसर पर भी कृष्ण वर्तमान थे। जब सर्वस्व हारने के बाद युधिष्ठिर द्रौपदी को भी दाँव पर लगा कर हार गये, तब दुश्शासन द्रौपदी को उसके केश पकड़कर खींच लाया और नग्न करने लगा। किंतु कृष्ण की कृपा से उसकी साड़ी इतनी बढ़ गई कि वह उसे नग्न न कर सका। पांडवों के अज्ञातवास के बाद और पारस्परिक महायुद्ध के पूर्व कृष्ण ने दुर्योधन की सभा में जाकर युद्ध न करने की सम्मति दी थी किंतु दुर्योधन ने इनकी बात न मानी। युद्ध के पूर्व इनकी सहायता लेने के लिए पहिले अर्जुन और फिर दुर्योधन एक ही समय पहुँचे। कृष्ण ने एक को अपना तटस्थ व्यक्तिगत साथ, तथा दूसरे को अपनी सेना लेने के लिए कहा। दुर्योधन ने इनकी सेना को लेना स्वीकार किया। कृष्ण ने तब अर्जुन के आग्रह से उसका सारथी होना स्वीकार किया। युद्धारम्भ के समय युद्ध-क्षेत्र में अर्जुन को मोह उत्पन्न हुआ और उन्होंने युद्ध करना अस्वीकार कर दिया। वहीं पर कृष्ण ने अर्जुन को विश्व प्रसिद्ध 'भागवत गीता' का उपदेश दिया और उनको कर्तव्य का ज्ञान कराया। सारथी-रूप से कृष्ण युद्ध में अर्जुन की आद्यंत सहायता करते रहे। दो एक स्थानों में अनुचित रूप से भी अर्जुन की सहायता की। जैसे, १. गुरु द्रोण को विरत करने के लिए 'अश्वत्थामा हतो' वाले अर्धसत्य के प्रयोग में और २. भीम और दुर्योधन के गदायुद्ध में—दुर्योधन के मर्मस्थल पर आघात करने के लिए संकेत करने में। युद्धपरांत ये विजयी पांडवों के साथ हस्तिनापुर गये और उनके अश्वमेघ यज्ञ में सम्मिलित हुए। तदनंतर ये द्वारका लौट गये। वहाँ इन्होंने मद्यपान का निषेध कर दिया। इसके बाद द्वारका में बहुत से अपशकुन होने लगे। कृष्ण ने समस्त यादवों को समुद्र-तट पर जाकर देवताओं को प्रसन्न करने की आज्ञा दी। इन्होंने मद्यपान करने का एक दिन निश्चित कर दिया था। इसके फलस्वरूप मदोन्मत्त यादवों में भयानक युद्ध हुआ, जिसमें समस्त यादव-गण इनके पुत्र प्रद्युम्न के साथ मारे गये। बलराम इस युद्ध से अलग रहे और शांति के साथ एक वृक्ष के नीचे शरीर त्याग दिया। कृष्ण स्वयं जरस नामक एक ब्याध के तीर से आहत होकर दिवंगत हुये, क्योंकि भूल से इन्हें हरिण समझकर उसने इन पर तीर चला दिया था। यह समाचार पाकर अर्जुन द्वारका गये और इनका अन्त्येष्टि संस्कार किया। पाँच मुख्य रानियाँ इनके साथ सती हो गईं। द्वारका समुद्र में जलमग्न हो गई। भागवत आदि पुराणों में कृष्ण के बाल्य तथा शैशव की कथाओं का विशेष रूप से वर्णन किया गया है। हिंदी के प्रधान कवि विद्यापति, सूर, तुलसी आदि ने कृष्ण चरित सम्बन्धी कथावस्तु भागवत आदि पुराणों से ही प्रधान रूप से ली है। काव्योचित रूप देने के लिये तथा धार्मिक महत्व की स्थापना के लिये कृष्ण के महत्व का अतिरंजित वर्णन भी किया गया है। सूरसागर और प्रेमसागर आदि पुस्तकों में कृष्ण का यही अतिरंजित रूप हमें मिलता है। काले बादल के रंग का होने के कारण इनका एक नाम घनश्याम हो गया। इसी प्रकार ऊखल-बंधन के समय यशोदा ने इनके पेट में रस्सी बाँधी थी जिससे इनका एक नाम दामोदर भी पड़ा। गोवर्धन धारण करने के कारण इनका एक नाम गिरधारी या तुंगीश हुआ मथुरा-निवास के समय जरासंध और कालयवन नाम का एक विदेशी के आक्रमण का वर्णन भी मिलता है। काल-

यवन की कल्पना पौराणिकों ने संभवतः कृष्ण की गौरव रक्षा के लिये की है। कृष्ण चरित के साथ सम्मिलित होने वाली घटनाओं में राधा की उद्भावना अत्यंत महत्वपूर्ण एवं मौलिक है। भागवत में राधा का उल्लेख नहीं है। राधा संभवतः आभीरों की वनदेवी और गोपाल बाल देव थे। राधा का उल्लेख सर्वप्रथम ब्रह्मवैवर्त पुराण में हुआ है। (दे० राधा) यही भावना जयदेव, विद्यापति से आती हुई हिंदी साहित्य में पल्लवित हुई। भागवत में गोपी-कृष्ण के प्रेम का उल्लेख है। साथ ही उसमें एक प्रधान गोपी की आराधना का भी उल्लेख है। 'भ्रमरगीत' की निर्गुण-सगुण-विवाद की उद्भावना हिंदी साहित्य के कवियों की मौलिकता है। विष्णु पुराण के अनुसार विष्णु ने अपने दो केश उत्पन्न किये। एक सफ़ेद और दूसरा काला। ये दोनों केश क्रम से रोहिणी तथा देवकी के गर्भ में स्थापित हुए। स्वेत केश से बलराम और काले से कृष्ण की उत्पत्ति हुई। केश से उत्पन्न होने के कारण इनका नाम 'केशव' पड़ा। कृष्ण पांडवों के फुफेरे भाई भी कहे गये हैं। मतान्तर से कृष्ण और अर्जुन नरनारायण के अवतार माने गये हैं। जैकोबी तथा भंडारकर आदि विद्वानों की धारणा है कि कृष्ण नाम 'क्राइस्ट' के आधार पर रक्खा गया है, किन्तु यह धारणा अब असत्य सिद्ध की जा चुकी है। २. दे० सहस्रार्जुन। ३. कद्रू-पुत्रों में एक पुत्र का नाम। ४. हविधान राजा के एक पुत्र का नाम। ५. सिंधुक के एक भाई का नाम। ६. एक ऋषि का नाम। ७. शुक्राचार्य के चार पुत्रों में से एक नाम।

कृष्ण आग्नेय--आयुर्वेद को पृथ्वी पर लाने वाले एक महर्षि का नाम। चरक-संहिता के अनुसार इन्होंने ही सर्वप्रथम अग्निवंश भंड, तथा हारित आदि छः शिष्यों को आयुर्वेद की शिक्षा दी।

कृष्णकर्णामृत--बिल्वमंगल सूरदास रचित एक वैष्णव ग्रंथ का नाम जिसमें श्रीकृष्ण तथा ब्रजवंधुओं के पारस्परिक प्रेम तथा रसकेलि आदि का वर्णन है। दे० 'बिल्व मंगल'।

कृष्णकिंकर--एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त जो संभवतः चैतन्य महाप्रभु के समकालीन तथा उनके शिष्य थे।

कृष्ण चैतन्य--इनका वास्तविक नाम निमाई था। दे० 'चैतन्य'।

कृष्ण जीवन--एक प्रसिद्ध हरिभक्त तथा कथा वाचक।

कृष्णदत्त लौहित्य--ये और कृष्ण कान्त लौहित्य श्याम जयंत लौहित्य के शिष्य थे। दे० 'त्रिवेद'।

कृष्णदास--१. स्वर्णकार जाति के एक मध्यकालीन वैष्णव भक्त जो गायन तथा नृत्य में कुशल थे। भक्तमाल के अनुसार स्वयं कृष्ण ने अपना नूपुर निकाल कर इन्हें पहनाया था। २. एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त तथा नाभाजी के यजमान। ३. सनातन नामक एक विख्यात वैष्णव आचार्य के शिष्य जो चैतन्य महाप्रभु के शिष्यों में थे। नारायण भट्ट नामक इनके एक भट्ट शिष्य भी प्रसिद्ध वैष्णव भक्त थे। कृष्णदास जी मदनमोहन विग्रह के उपासक थे। ४. एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त जिन्होंने रासपंचाध्यायी गोवर्धनचरित्र तथा भगवद्भोजन-विधि नामक तीन ग्रन्थों की रचना की थी।

कृष्णदास पयहारी--गलता गद्दी के एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त का नाम। ये अतिथि-सत्कार को इतना महत्त्व देते थे कि एक बार अपनी कुटी के सामने आये हुए एक बाघ को इन्होंने अपने शरीर का मांस काट-काटकर खिलाया था। ये बाल ब्रह्मचारी थे और परोपकार में दूसरे दधीचि माने जाते थे।

कृष्ण द्वैपायन--दे० 'व्यास'।

कृष्णधृतिसात्यकि--सत्यश्रवा के शिष्य का नाम।

कृष्ण पराशर--पराशर कुलोत्पन्न एक ब्रह्मर्षि का नाम। कार्ष्णायन, कपिस्राव, काकेयस्थ, अंतःयाति तथा पुष्कर इस कुल में उत्पन्न मुख्य ऋषियों के नाम हैं।

कृष्णमिश्र--संस्कृत के प्रसिद्ध पंडित (१०४२ ई०) तथा कवि। ये चंदेल-राजा कीर्तिवर्मा के सभा पंडित थे। इन्होंने 'प्रबंध-चंद्रोदय' नामक नाटक लिखा था।

कृष्णहारित--एक प्रसिद्ध आचार्य जिन्होंने अपने शिष्यों को वाग्देवता संबंधी उपासना के एक प्रकार की शिक्षा दी थी। इन्होंने कालात्मक प्रजा उत्पन्न की थी जिसके कारण विकलांग हो गये पर प्रयत्न करके अपने शरीर को पुनः ठीक कर लिया।

केकय--एक प्राचीन राज्य तथा उसके राजा का नाम। रामायण के अनुसार इस राज्य की राजधानी गिरिव्रज अथवा राजगृह थी। इनका वास्तविक नाम विवादास्पद है। एक मत के अनुसार इनका नाम धृष्टकेतु था और यह कृष्ण के श्वसुर थे। इनके पाँच पुत्रों ने महाभारत-युद्ध में भाग लिया था। दशरथ की प्रिय पत्नी तथा भारतमाता कैकेयी का संबंध इसी राज्य से था। कैकेयी अश्वकेतु की पुत्री थी।

केतव--वायु पुराण के अनुसार व्यास की शिष्य परंपरा में शाकपूर्ण स्थविर के एक शिष्य का नाम।

केतु--१. नवग्रहों में से एक ग्रह। इसके रथ को लाख के रंग के आठ घोड़े खींचते हैं। प्रति संक्रांति यह सूर्य को ग्रसित करता है। मतांतर से यह एक दैत्य का नाम है, जिसके धड़ मात्र है। समुद्र-मंथन के बाद सब देवता अमृतपान करने के लिये बैठे। यह भी अमरत्व की इच्छा से देवताओं की पंक्ति में देवता-वेष में बैठ गया। पर सूर्य और चंद्र ने इसे पहचान लिया और इसके रहस्य को खोल दिया। तत्काल विष्णु ने इसका सिर काट दिया, किंतु अमृत इसके गले में जा चुका था, फलस्वरूप कटे होने पर भी इसके सिर और धड़ अलग-अलग अमर हो गये। मस्तक का नाम राहु पड़ा और धड़ का नाम केतु। सूर्य और चंद्र से अपना वैर चुकाने के लिए राहु और केतु सूर्य चंद्रमा को ग्रसित करते हैं। ज्योतिष में ये पाप-ग्रह माने गये हैं। विंशोत्तरी गणना के अनुसार केतु की दशा का फल सात वर्ष तक रहता है। केतु की दशा के पहिले बुध और उसके बाद शुक्र की दशा आती है। केतु की माता का नाम सिंहिका था। मतांतर से यह कश्यप तथा दनु का पुत्र था। २. ऋषभदेव तथा जयंती के १०० पुत्रों में से

एक। ३. यह तामस मनु के एक पुत्र थे। नामांतर से यह तपोधन भी कहे गये हैं। ४. ब्रह्मा ने अपनी प्रजा की अत्यधिक वृद्धि होते देख मृत्यु नाम की एक कन्या उत्पन्न की। उससे असंख्य प्रजा का संहार होते देखकर वह रोने लगी। उसके आँसुओं से हजारों रोग पैदा हुये। फिर उन्होंने तप किया जिससे उनको यह वर मिला कि इस नाश से उनको कोई पाप न लगेगा। इस आश्वासन से उन्होंने एक लम्बी साँस ली जिससे केतु उत्पन्न हुआ। इसके एक शिष्य था जो धूमकेतु के नाम से प्रसिद्ध है।

केतुआग्नेय–एक सूक्तद्रष्टा का नाम।

केतुमत्–१. धन्वन्तरि के एक पुत्र का नाम। इनके एक पुत्र का नाम भीमरथ उपनाम भीम था। २. एकलव्य नामक प्रसिद्ध व्याध का पुत्र। यह निबध देश का राजा था। महाभारत युद्ध में दुर्योधन के पक्ष से लड़ा और भीम के द्वारा मारा गया। ३. भागवत के अनुसार अंबरीष के एक पुत्र का नाम।

केतुमती–सुमाली राक्षस की स्त्री, रावण की मातामही का नाम।

केतुमात–अग्नीध्र राजा के नौ पुत्रों में से कनिष्ठ का नाम। इनकी माता का नाम उपचिति तथा स्त्री का नाम देववीति था जो मेरु की कन्या थी।

केतुवर्मन्–तिर्गत राजा सूर्यवर्मा के भाई का नाम। इन्हें अर्जुन ने मारा था।

केदार–एक राजर्षि का नाम।

केदारा–संगीत-शास्त्र के अनुसार एक राग का नाम। भरत मत से यह मेघ राग का चौथा पुत्र है। प्रचलित केदारा रात्रि के दूसरे प्रहर का एक श्रुतिमधुर राग है जो कल्याण ठाट के अंतर्गत गाया जाता है। पहले यह राग विलावल ठाट के ही अंदर था। इसमें विलावल का मुख्य अंग—ग म रे सा—अब भी प्रयुक्त होता है और गंधार का प्रयोग विकृत अथवा दुर्बल रूप में किया जाता है। पहले के शुद्ध मध्यम स्वर माधुर्य के लिये मध्यम में लगाये जाने लागे और यह राग विलावल से कल्याण मेल में गाया जाने लगा। यह तंत्र, ध्रुपद तथा बिलंबित ख्याल तीनों के उपयुक्त है। वीररस प्रधान होने के कारण ठुमरी, ठप्पा आदि क्षुद्र प्रकृति का गायन इस राग में असंभव है। केदारा राग के कुछ लोकप्रिय रूप भी प्रचलित हैं जिनमें जलधर तया मलुहा केदारा मुख्य हैं।

केदारेश्वर--शिव के एक अवतार का नाम। नर-नारायण इन्हें पृथ्वी पर लाये थे। काशी में इनके नाम से एक घाट है।

केरल--१. कश्यपगोत्री गोत्रकारों का नाम। २. दक्षिणी भारत में एक प्रांत का नाम।

केलि--ब्रह्मधान के पुत्र का नाम।

केवट–निषाद राज गुह की उपाधि जो आजकल साधारणतया जाति का बोधक है। दे० 'गुह'।

केवल--नर राजा के पुत्र का नाम।

केवलदास–एक मध्यकालीन वैष्णव भक्त जो भिक्षा वृत्ति द्वारा संत-सेवा किया करते थे। कुबड़े होने के कारण इनका एक नामांतर 'कूबा जी' भी था। एक बार ऋण चुकाने के लिये महाजनों का कुवाँ इन्हें अकेले खोदना पड़ा जिसमें ऊपर से मिट्टी गिरने के कारण ये दब गये। किंतु जब एक महीने बाद मिट्टी हटाई गई तो राम-राम करते हुये ये जीवित निकले। अयोध्या के लक्ष्मण किला के संस्थापक यही माने जाते हैं। भक्तमाल के टीकाकारों ने इनकी महिमा में कई प्रसंग उद्धृत किये हैं।

केवलराम--नाभाजी के अनुसार एक योग्य वैष्णव साधु जिनके संसर्ग से अनेक नास्तिक भी हरिभक्त हो गये थे। घर-घर जाकर हरिभक्ति का प्रचार करना इनका नित्य का कार्य था।

केवलवहि–भागवत के अनुसार अंधक के पुत्र का नाम।

केशरि औरस--ऋक्षराज जाँबवान का एक पर्याय। दे० 'जाँबवान'।

केशव--१ नाभादास जी के अनुसार एक मध्यकालीन वैष्णव भक्त। २. कृष्ण का पर्याय। दे० 'कृष्ण'।

केशव (लहेरा)--नाभा जी के अनुसार एक वैष्णव भक्त और स्वामी सुरसुपनंद के शिष्य।

केशव दंडवती--नाभा जी के अनुसार 'मथुरा मंडल' के विशिष्ट भक्त तथा वैष्णव भक्ति-प्रचारक। अपना अधिकांश समय कृष्ण को दंडवत करने में ही बिताने के कारण इन्हें 'केशवदंडवती' कहा जाता था।

केशवदास--२. नाभा जी के अनुसार एक मध्यकालीन वैष्णव भक्त।

केशवभट्ट--नाभादास जी के अनुसार एक मध्ययुगीन वैष्णव भक्त जिसका शास्त्रार्थ श्री 'चैतन्यमहाप्रभु' से हुआ था। शास्त्रार्थ में पराजित होने से ये बहुत दुखी थे, किंतु देवी ने इन्हें स्वप्न दिया कि तुमको हरानेवाले साक्षात् कृष्ण के अवतार हैं। तब से ये कृष्ण के अनन्य भक्त हो गए। यह प्रसिद्ध है कि मथुरा के विश्राम घाट पर वहाँ के काजी और सूबेदार के कुचक्र से वहाँ पहुँचने वाले हिंदुओं की सुन्नत कर ली जाती थी, किंतु इनके प्रभाव से यह अत्याचार बंद हो गया।

केशिध्वज--कृतध्वज अथवा कीर्तिध्वज के पुत्र का नाम। इनके पुत्र का नाम भानुमत् जनक और चचेरे भाई का नाम खांडिक्य था। खांडिक्य धार्मिक तत्वज्ञान के विशेषज्ञ थे। प्रतियोगिता के कारण दोनों में वैमनस्य हो गया, जिनके फलस्वरूप केशिध्वज ने खांडिक्य को निकाल दिया। किंतु एक कठिन समस्या के सुलझाने के लिये फिर उन्हें बुलवाया गया। इसके पुरस्कार-स्वरूप केशिध्वज ने खांडिक्य को अज्ञान का यथार्थ स्वरूप बतला कर योग और तत्वज्ञान की शिक्षा दी। दे० 'खांडिक्य'।

केशिन् (केशी)--१. कंस की आज्ञा से घोड़े का रूप धारण कर कृष्ण पर आक्रमण करने वाले एक राक्षस का नाम जो कृष्ण द्वारा मारा गया। २. कश्यप तथा दनु के एक पुत्र का नाम। प्रजापति को देवसेना और दैत्य सेना नाम की दो कन्याओं में से दूसरी का भार इसको समर्पित किया गया था। इसने इंद्र से युद्ध किया था।

एक राजा का नाम। ३. यह उच्चैःश्रवा कौण्टोप के भागिनेय थे। नामांतर से इन्हें दाल्म्य भी कहते हैं।

केशिन सात्यकाम—इन्होंने केशिन दार्म्य से सप्तपदा शाक्टी नामक मंत्र की शिक्षा ली थी।

केशिनी—१. एक अप्सरा, जो कश्यप तथा प्राधा की कन्या थी। २. राजा सगर की दो स्त्रियों में से एक का नाम। शैव्या, भानुमती तथा सुमति इनके अन्य नाम हैं। ३. सुहोत्रपुत्र अजमीढ़ की तीन स्त्रियों में से एक का नाम। जन्हु, जन तथा रुषिन इनके तीन पुत्र थे। ४. रावण की माता, विश्रवा ऋषि की एक पत्नी का नाम। रावण, कुंभकर्ण तथा विभीषण इनके तीन पुत्र थे। नामांतर केसकी। दे० 'केकसी'। ५. एक असाधारण लावण्यवती राजकन्या का नाम। इसने अपना स्वयंवर स्वयं किया था, जिसमें अंगिरा ऋषि के पुत्र सुधन्वा तथा प्रह्लाद पुत्र विरोचन उपस्थित हुये थे। दोनों में कौन श्रेष्ठ है, इस पर विवाद छिड़ा। दोनों ने अपने प्राणों की बाजी लगाई। अंत में सर्वसम्मति से निर्णय धर्मात्मा प्रह्लाद के ऊपर छोड़ दिया गया। उन्होंने सुधन्वा का पक्ष लिया। इससे प्रभावित हो सुधन्वा ने उदारता पूर्वक विरोचन को ही वरे जाने की सम्मति दी। केशिनी ने विरोचन को पति रूप वरण किया। ६. नल द्वारा परित्यक्ता होने के बाद दमयंती की एक दूती का नाम।

केशी—१. कृष्ण को मारने के लिए अत्याचारी कंस द्वारा भेजे हुए एक राक्षस का नाम जो एक वृहदाकार अश्व का रूप धारण कर ब्रह्मवासियों की गायों को मार कर खा जाता था। इसके भय से गोपों का गाय चराना बंद हो गया था। अंत में कृष्ण ने उसका वध करके ब्रजवासियों को उसके आतंक से मुक्त किया। २. नाभा जी के अनुसार एक मध्यकालीन हरिभक्ति-परायणा महिला।

केसरी—एक वीर वानर का नाम जो अंजनी के पति थे और गोकर्ण नामक पर्वत पर रहते थे। शंबसादन नामक एक असुर ऋषियों को सताया करता था। इन्होंने ऋषि की आज्ञा से युद्ध करके उसका बध किया। इससे संतुष्ट हो ऋषि ने आशीर्वाद दिया कि इनके एक भगवद्भक्त तथा अति पराक्रमी पुत्र होगा फलतः मारुति (हनुमान) की उत्पत्ति हुई।

केसि (केसी)—एक दैत्य, कंस का अनुचर। यह कंस की आज्ञा से एक अश्व का रूप बना कर कृष्ण का बध करने के लिए वृंदावन गया था। अपनी लातों के आघात से इसने वहाँ के गोपों तथा जीव-जंतुओं को विशेष कष्ट दिया था। कृष्ण ने यह देखकर उसके पिछले पैर पकड़ कर उसे चार सौ हाथ दूर फेंक दिया था, जिससे यह कुछ देर के लिए मूर्छित हो गया था। सचेत होने पर उसने फिर कृष्ण से युद्ध किया था, जिसमें कृष्ण ने उसके मुख में अपना हाथ डाल कर उसका वध कर डाला था।

कैकय—केकय देश (वर्तमान काश्मीर) के एक प्राचीन राजा जो कोसलेश दशरथ के समकालीन थे। उनकी कन्या कैकेयी (जो सुन्दरता में अद्वितीय थी) का विवाह दशरथ के साथ हुआ था। ये उनकी प्रिय महिषी और भरत की जननी थीं।

कैकयसुता—दशरथ की दूसरी रानी कैकेयी का नामांतर। दे० 'कैकेयी'।

कैकसी—सुमाली राक्षस की कन्या का नाम जो विश्रवा ऋषि की पत्नी थी और जिससे रावण, कुंभकर्ण, विभीषण तथा सूर्पणखा ये चार संतानें हुई थीं। सुमाली कुबेर से ईर्ष्या करता था। इसी से उसकी यह इच्छा थी कि उसे ऐसी संतान हो जो ऐश्वर्य में कुबेर का दर्प चूर्ण करे। अन्य राक्षसों के विवाहेच्छुक होने पर भी सुमाली ने इसी उद्देश्य से कैकसी का विवाह स्थगित रक्खा था। अंत में जब कैकसी की यौवनावस्था ढलने लगी तब इसे सुमाली ने विश्रवा को सौंप दिया। दे० 'केशिनी' (४)।

कैकेयी—महाराज कैकय की पुत्री तथा दशरथ की तृतीय रानी का नाम। वाल्मीकि रामायण के अनुसार ये अपने समय में सुन्दरता में अद्वितीय थीं। इनके गर्भ से भरत की उत्पत्ति हुई थी। एक बार देवासुर संग्राम में आहत हुए दशरथ की इन्होंने बड़ी सेवा-शुश्रूषा की थी, जिससे प्रसन्न होकर दशरथ ने इन्हें दो वरदान देने का वचन दिया था। राम के राज्याभिषेक का अवसर निकट आने पर इन्होंने अपनी मंथरा नामक एक दासी के बहकावे में आकर राम के लिए चौदह वर्ष का वनवास और भरत के लिए राज्य का उत्तराधिकार वरदान रूप में माँग लिया। दशरथ ने प्राण देकर वचन पूरा किया। राम स्वयं सहर्ष वन चले गये और भरत ने भी चौदह वर्ष राम की उपासना में बिता कर उनके लौटने पर राज्य पुनः उन्हीं को सौंप दिया। दे० 'राम' तथा 'दशरथ'।

कैटभ—मधु नामक दैत्य का भाई। विष्णु जब एकार्णव में सोते थे, उनके कर्णमूल से कई बलवान असुर निकले, जिनमें एक का नाम कैटभ था। मार्कण्डेय पुराण के अनुसार विष्णु से इन दोनों का ५००० वर्षों तक युद्ध होता रहा। अंत में महामाया इनके गले में बैठ गई और विष्णु ने इनसे ही वरदान पाकर इन्हें मार डाला। हरिवंश के अनुसार ब्रह्मा ने मिट्टी के दो खिलौने बनाये। बाद में ब्रह्मा के आदेश से उनमें वायु ने प्रवेश किया और वे दोनों बलवान असुर हो गये।

कैतव—शकुनि के एक पुत्र का नाम। नामांतर 'उलूक'।

कैरात (कैराति)—कश्यप तथा अंगिरा-कुलोत्पन्न गोत्रकारों का नाम।

कैलास—हिमालय स्थित एक पर्वतश्रृंग का नाम जो शिव तथा कुबेर का निवास-स्थान माना जाता है।

कैलासक—एक सर्प का नाम।

कोक—सत्रासह नामक पांचाल राजा के पुत्र का नाम।

कोचरस—एक प्रसिद्ध राजा जिनकी स्त्री का नाम सुप्रज्ञा था। ये नियम से एकादशी व्रत करती हुई रात्रि जागरण किया करती थीं। पूर्व जन्म की ये वेश्या थी। इसी के पुण्य-प्रताप से कोचरस ने राजवंश में जन्म ग्रहण किया। एक दिन एकादशी को यह बात किसी ब्राह्मण को सुनाया, सुनकर वह भी व्रत करने लगा और इसे बैकुंठ की प्राप्ति हुई।

कोटरक—एक प्रसिद्ध अष्टकुंडली महासर्प।

कैटभ–मधु नामक दैत्य के अनुज का नाम जिसका वध विष्णु ने किया था। दे० 'मधु'।

कोटरा–पार्वती का अष्टमावतार। वाणासुर की माता। अनिरूद्ध के उद्धार के लिये जब कृष्ण और वाण में युद्ध हुआ और कृष्ण ने अपना चक्र उठाया उस समय नग्न होकर यह कृष्ण के सम्मुख दौड़ी थी।

कोटकृष्ण (कौटकृष्ण)–वसिष्ठ कुलोत्पन्न ऋषिगण का सामूहिक नाम।

कोटिक (कोटिकाश्य)–सुरथ के पुत्र का नाम। जयद्रथ के कहने से इसने द्रौपदी को सताया था। भारत युद्ध में भीम ने इसका वध किया।

कोटिश–एक महारथी का नाम।

कोपचप–एक गोत्रकार ऋषि का नाम।

कोपवेडा–पांडव-सभा के एक ऋषि का नाम।

कोमलक–राजा जनमेजय के सर्पयज्ञ में सम्मिलित होने वाले एक सर्प का नाम।

कोलासुर–एक दैत्य का नाम। इसका वध कहोड ऋषि ने कराया था। कहोड के पिता पिप्पलाद जब तपश्चर्या में ध्यानस्थ थे, उस समय इसने उन्हें कष्ट दिया था।

कोलाहल–सभानर के एक पुत्र का नाम।

कोसल–भारतवर्ष का एक प्राचीन विस्तृत जनपद। वाल्मीकि रामायण के अनुसार इसकी स्थिति सरयू नदी के तट पर थी और अयोध्या इसकी राजधानी थी। इससे वर्तमान अवध प्रदेश का बोध होता है। महाभारत तथा रघुवंश में इसे 'उत्तर कोसल' कहा गया है। सुप्रसिद्ध चीनी परिव्राजक ह्वेनच्वांग के अनुसार कोसल राज्य कलिंग के उत्तर-पश्चिम लगभग १८०० 'लि' (डेढ़ सौ कोस) के अंतर पर था। इसका परिमाण ५००० लि और राजधानी का परिमाण लगभग ४० लि था। यह चारों ओर पहाड़ और जंगलों से घिरा था और इसके दक्षिण में लगभग ६०० 'लि' पर आंध्र राज्य था। उसके वर्णनों से यह भी विदित होता है कि उक्त प्रदेश के तत्कालीन राजा का नाम सदवह (सातवाहन ?) था। उसके पीछे यह विस्तृत जनपद हैहय वंशी क्षत्रियों के हाथ में चला गया। विष्णुपुराण के अनुसार प्राचीन काल में देवरक्षित नाम का कोई वीर राजा इस पर शासन करता था। सूर्य वंशियों का यह प्रधान केंद्र था।

कोसला–कोसल देश की राजधानी अयोध्या का एक नामांतर। दे० 'अयोध्या'।

कोसली–एक रागिणी का नाम। इसमें ऋषभ नहीं लगता।

कोहल–व्यास की शिष्य-परंपरा में लांगली के शिष्य का नाम जो जनमेजय के नागयज्ञ में सम्मिलित हुए थे।

कौकुसंडि–उत्तम मन्वंतर में सप्तर्षियों में से एक।

कौटरूय–एक वैदिक आचार्य का नाम जिन्होंने अक्षरोपासना तथा अक्षर ब्रह्म संबंधी माहात्म्य का प्रचार किया था।

कौटिल्य–दे० 'चाणक्य'।

कौडिन्य–प्रसिद्ध आचार्य जो एक वृत्तिकार थे। हिरण्य केशिशाखा की पितृ तर्पण शाखा में इनका उल्लेख है। २. शांडिल्य ऋषि के शिष्य का नाम। इनके शिष्य कौशिल्य थे। दे० 'विदमिन्'। ३. कुंडिन कुलोत्पन्न एक ब्रह्मर्षि का नाम जो युधिष्ठिर के अश्वमेधयज्ञ में सम्मिलित हुये थे।

कौणकुत्स्थ–एक ऋषि का नाम।

कौणाप–एक सर्प का नाम।

कौत्स–१. निरुक्तकार यास्क के पूर्व, महित्थ ऋषि के शिष्य। इनके शिष्य माण्डव्य थे। यह वेद को निरर्थक और ब्राह्मणों को कपोलकल्पित व्याख्या मानते थे। इनके इस मत का खंडन यास्क ने किया था। २. विश्वामित्र के शिष्य का नाम जिन्होंने रघु से चौदह कोटि स्वर्णमुद्रा लेकर गुरु दक्षिणा दी थी। ३. रघुवंश में वटतंतु शिष्य कौत्स का उल्लेख है। ४. एक ब्रह्मर्षि जिन्हें राजा भगीरथ ने अपनी कन्या हंसी समर्पित की थी।

कौथुमिन्–१. हिरण्यनाभ नामक ब्राह्मण के शिष्य का नाम। ये एक बार जनक के आश्रम में गये, जहाँ ब्राह्मणों और पंडितों से इनका किसी बात पर विवाद हो गया। क्रुद्ध हो इन्होंने एक ब्राह्मण की हत्या कर डाली। इस पाप से इन्हें महारोग और कुष्ट हो गया। सब तीर्थों में घूमने पर भी यह पाप से मुक्त न हुये। अंत में अपने पिता के परामर्श से स्नाव्य नामक सूत्र का सूर्योदय के समय जप तथा पुराण-श्रवण से इनका उद्धार हुआ। २. सामवेद की एक शाखा का नाम। इस वेद की अब दो ही शाखायें उपलब्ध हैं—एक कौथुमी और दूसरी कारावायन।

कौपथेय–उच्चैःश्रवा का पैतृक नाम।

कौरव–कुरु के वंशजों की सम्मिलित संज्ञा। किंतु वास्तव में धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों के लिए ही इस शब्द का प्रयोग होता है। धृतराष्ट्र और पांडु क्रमशः अंबिका और अंबालिका के गर्भ से उत्पन्न हुए थे जो विचित्रवीर्य की पत्नियाँ थीं। इन दोनों को सत्यवती-पुत्र व्यास का औरस पुत्र माना जाता है। धृतराष्ट्र के दुर्योधन आदि सौ पुत्र हुए जो कौरव कहलाए और पांडु के युधिष्ठिर आदि पाँच पुत्र हुए जो पांडव कहलाए। इनमें परस्पर कुरुक्षेत्र का प्रसिद्ध महाभारत युद्ध हुआ। दे० 'सत्यवती', 'व्यास', 'कुरु' और 'पांडु'।

कौरव्य–१. एक कौरव राजा का नाम। ये परीक्षित के समय में स्त्री-सुख में रत हो, जीवन व्यतीत करते थे। राजा बाल्हिक प्रातिपीय ने इन्हें कौरव्य कहा है। २. ऐरावत कुलोत्पन्न एक नाग का नाम। यह उलूपी का पिता था।

कौलायन–वसिष्ठ कुलोत्पन्न एक ऋषि का नाम।

कौलिनर–एक दास का नाम। यह कुलिनर का पुत्र था। ऋग्वेद में इसका उल्लेख हुआ है।

कौशल–इस नाम के राजा के वंश का नाम। ये सात थे।

कौशल्य–१. इस नाम के कई ऋषि हो गये हैं। ये गोत्रकार थे। २. सुकर्म नामक ब्राह्मण के शिष्य का नाम, जिन्होंने सामवेद का अध्ययन किया था। ३. पिप्पलाद के शिष्य का नाम। ये आश्वतापन कुल के थे।

कौशल्या–दे० 'कौशल्य'।

कौशिक–१. दे० 'विश्वामित्र'। २. कौडिन्य के शिष्य का नाम। यह एक शाखा प्रवर्तक ऋषि थे। अथर्ववेद के गृहसूत्रों के रचयिता भी यही थे। कौशिकस्मृति तथा कौशिक गृहसूत्र का उल्लेख हेमाद्रि ने परिशेष खंड में किया है। ३. एक सत्यवादी ब्राह्मण का नाम। ४. एक गायक का नाम। ये सिवा विष्णु के और किसी का गुणगान नहीं करते थे। ५. एक राजा जिनकी स्त्री का नाम विशाला था। ६. प्रतिष्ठान नगरी के एक ब्राह्मण का नाम जो कुष्ट रोगी और वेश्यागामी थे। इनकी स्त्री आदर्श पतिव्रता थी। एक बार अपनी स्त्री के कंधे पर चढ़कर ये वेश्या के यहाँ जा रहे थे, रास्ते में इनसे मांडव्य ऋषि को धक्का लग गया। रुष्ट हो उन्होंने शाप दिया कि सूर्योदय तक इसकी मृत्यु हो जायगी, किंतु स्त्री के पातिव्रत के प्रभाव के कारण सूर्योदय रुक गया। तब देवताओं ने इन्हें संतुष्ट किया और इनके पति को रोग मुक्त कर दिया। ७. इंद्र का एक पर्याय।

कौशिकपति–एक आचार्य का नाम। ये कौशिक के शिष्य थे। इनके शिष्य बैजयायन तथा सायकायन थे।

कौशिकी–जमदग्नि की माता सत्यवती का नामांतर।

कौशिल्य–सामवेदी श्रुतीर्ष का नाम।

कौशिविक–एक ऋषि का नाम। इन्होंने बकुलासंगम पर ईश्वरावराधन किया था।

कौशीति–एक ऋग्वेदी ब्रह्मचारी का नाम।

कौषारब–एक प्रसिद्ध भक्त ऋषि जिनके पिता का नाम कुषारु तथा माता का नाम मित्रा था। इसी कारण इनका दूसरा नाम मैत्रेय भी है। भक्तमाल के अनुसार जब श्री कृष्ण विदुरजी के लिए अपने सखा उद्धव को ज्ञान भक्ति का उपदेश दे रहे थे उस समय मैत्रेय जी भी वहाँ उपस्थित थे। इसके उपरांत ही श्रीकृष्ण गोलोकवासी हुए और उनके विरह में उद्धव जी बदरिकाश्रम चले गये और विदुर के पास श्रीकृष्ण का उपदेश पहुँचाने का भार इन्हीं पर छोड़ गये जिसका इन्होंने भली-भाँति निर्वाह किया।

कौषी–१. एक प्रसिद्ध ऋषि तथा आचार्य का नाम। इनके नाम से प्रसिद्ध ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद, सांख्यापन, श्रौत तथा गृहसूत्र आदि अनेक ग्रन्थ उपलब्ध हैं। कौषीतकि तथा कौषीतकेय कहोड ऋषि का पैतृक नाम है। लुंशाकपि नामक ऋषि ने इन्हें तथा इनके शिष्यों को शाप दिया था। सर्वजित इनके एक शिष्य थे। २. ऋग्वेद की एक शाखा का नाम। यही ऋग्वेद के ब्राह्मण के नाम से भी प्रसिद्ध है।

कौसल्या–कोसल देश के राजा भानुमान की कन्या तथा दशरथ की पटरानी का नाम। स्त्री धन के रूप में एक सहस्र गाँव इन्हें मिले थे। रामचंद्र इन्हीं के पुत्र थे। इनकी सपत्नी भरत-माता कैकेयी को राजा अधिक प्यार करते थे। उन्हीं के कहने से राज्याधिकारी राम को चौदह वर्ष का वनवास हुआ था। कौसल्या आदर्श पत्नी तथा आदर्श माता थीं। कैकेयी से कई बार अपमानित होने पर भी इन्होंने उनके प्रति कोई प्रतिहिंसा का भाव नहीं रक्खा था और कैकेयी के प्रति वचनबद्ध पति के प्रति भी उदासीन नहीं हुईं। २. काशिराज की एक कन्या अंबिका का नाम। ३. कृष्ण के पिता वसुदेव की एक पत्नी का नाम। ४. पुरुराज की पत्नी का नाम। ५. जनमेजय की माता का नाम। ६. सत्यवान की पत्नी का नाम। ७. सात्वतों की माता का नाम कौशल्या था।

कौसि–भृगु कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।

कौसिक–दे० 'विश्वामित्र'।

क्रंचु आंगरिस्–सामवेद के द्रष्टा ऋषि का नाम।

क्रतु–१. स्वायंभुव मन्वंतर में ब्रह्मा के एक मानस पुत्र का नाम जो सप्तर्षियों में से एक हैं। इनकी स्त्री का नाम संतति था जो दक्ष प्रजापति की एक कन्या थीं। इनके बालखिल्य नाम के साठ हजार पुत्र हुए थे। ये सब उर्ध्वरेता ब्रह्मचारी थे, अतः इनका वंश नहीं चला। भागवत के अनुसार कर्दम प्रजापति की नौ कन्याओं में से क्रिया इनकी स्त्री थीं जिन्होंने साठ सहस्र बालखिल्यों को जन्म दिया। विष्णु पुराण के अनुसार सन्नति नाम की स्त्री से इनको बालखिल्य नामक साठ सहस्र पुत्र उत्पन्न हुए। २. एक क्षत्रिय। ३. एक राक्षस जिसकी स्त्री वैश्वानर की कन्या हयशिरा थी। ४. पर्जन्य नामक एक यज्ञ जो फाल्गुन मास में सूर्य की परिक्रमा किया करता है। ५. कृष्ण और जांबवती से उत्पन्न एक पुत्र का नाम।

क्रतुस्मृति--अष्टादश स्मृतियों में से एक जो इस समय अप्राप्य है। इसके रचयिता क्रतु ऋषि माने जाते हैं। दे० 'क्रतु'।

क्रथ–१. एक प्राचीन राजा जो शुलिमान नामक पर्वत पर रहते थे। इन्होंने भारत युद्ध में कौरवों का पक्ष लिया था। २. विदर्भ राजा के चार पुत्रों में से एक का नाम। इनके पुत्र का नाम कुंति अथवा कृति था। भविष्य पुराण में इनका नाम क्राथ है।

क्रथन--अमृत की रक्षा करनेवाले एक देवता का नाम।

क्रिया–स्वायंभुव मन्वंतर में दक्ष प्रजापति की एक कन्या का नाम। ये धर्मऋषि की पत्नी थीं। इनके पुत्र का नाम योग था। इन्होंने साठ सहस्र बालखिल्य नामक ऋषियों को जन्म दिया। मतांतर से यह कर्दम प्रजापति की एक कन्या थीं और क्रतु को ब्याही थीं। यही बालखिल्यों की जननी थीं।

क्रैव्य पांचाल–क्रिवी के राजा का नाम। इन्होंने अश्वमेध यज्ञ किया था। दे० 'क्रिवि'।

क्रोध--१. यह ब्रह्मा की भृकुटी से उत्पन्न हुआ था। एक समय जब जमदग्नि ऋषि श्राद्ध कर रहे थे, उनके आश्रम में जाकर इसने कामधेनु के दुग्ध से बनाई खीर को सर्प का रूप धारण करके पी लिया। पर इससे ऋषि क्रुद्ध नहीं हुये, क्योंकि वह जान गये, कि यह क्रोध है। इससे भयभीत होकर यह उनके शरणागत हुआ और बोला, 'मैं तो जानता था कि सभी भार्गव क्रोधी होते हैं। आप मुझे क्षमा कर अभयदान दें।' जमदग्नि ने अभयदान देकर क्षमा तो कर दिया, पर जिन पितरों के अंश की खीर वह पी गया था, उनके शाप से इसे नकुल की

योनि प्राप्त हुई। पितरो को संतुष्ट करके इसने शाप का प्रतीकार पूछा। उन्होंने कहा कि जब धर्मसभा में कृष्ण के पास अंधवृत्ति ब्राह्मण जायगा तब तुम्हारी मुक्ति होगी। २. कश्यप तथा काला के एक पुत्र का नाम।

क्रोधदान–भविष्य के अनुसार शाक्यवर्धन के पुत्र का नाम।

क्रोधन–१. कौशिक ऋषि के सात पुत्रों में से एक का नाम। २. अयुत राजा के पुत्र का नाम। इनके पुत्र देवातिथि थे।

क्रोधवश–कश्यप तथा क्रोधा (क्रोधवशा) के ज्येष्ठ पुत्र का नाम। क्रोधा के सभी पुत्र 'क्रोधवश' इस सामान्य नाम से प्रसिद्ध थे। इनके वंशजों का भी यही नाम था। इनके वंशजों में से एक को कुबेर ने सौगंधिक नाम के सरोवर की रक्षा का भार सौंपा था। इसी सरोवर में सौगंधक नामक कमल लेने एक बार भीम आये थे जिसके कारण भीम से इसका युद्ध हुआ और यह मारा गया। २. महातल वासी एक सर्प का नाम। यह कद्रू का वंशज था। ३. इन्द्रपति राक्षस का एक अनुचर। यह अदृश्य विद्या में पटु था। यह राम-रावण-युद्ध में अदृश्य होकर युद्ध करता था, पर विभीषण ने वानरों को इसे दिखाया, जिससे बानरों ने इसे मार डाला।

क्रोधवशा–दे० 'क्रोधा'।

क्रोधशत्रु–कश्यप तथा काला के एक पुत्र का नाम।

क्रोधहंता–१. कश्यप तथा काला के एक पुत्र का नाम। २. पांडवपक्षीय एक रथी का नाम।

क्रोधा–दक्ष प्रजापति की एक कन्या तथा कश्यप की एक पत्नी। इनके पुत्र तथा वंशज 'क्रोधवश' नाम से प्रसिद्ध हैं। दे० 'क्रोधवश'।

क्रोष्टु–यदु के पुत्र का नाम। इनके पुत्र का नाम वृजिन था। हरिवंश, पद्म तथा ब्रह्म पुराण में इनको वृष्णि कहा गया है। क्रोष्टु के कुल में ज्ञानदा, यजमान, वृष्णि तथा अंधक अलग-अलग वंश चले।

क्रौंच–हिमवान पर्वत तथा मेना के पुत्र का नाम। इनके निवासस्थान का नाम क्रौंच द्वीप पड़ा। हिमवान की पत्नी मेना ने मैनाक तथा क्रौंच दो पुत्र तथा अपर्णा, एकपर्णा, एकपाटला और मेनका को जन्म दिया। मतांतर से मेनका ही मेना का नामांतर था।

क्रौष्टुकि–एक आचार्य जिन्होंने द्रविणोदस् शब्द का अर्थ इंद्र किया है। ये एक विद्वान् वैयाकरण थे। नामांतर क्रोष्टकि है।

क्षत्त–विदुर का नाम। ये दासीपुत्र के नाम से भी उल्लिखित हुए हैं। दे० 'विदुर'।

क्षत्रंजय–धृष्टद्युम्न के पुत्र का नाम। द्रोण के हाथ से इनकी मृत्यु हुई थी।

क्षत्र–एक प्राचीन सूर्यवंशी राजा जो वैवस्वत मनु के पौत्र और राजा धृष्ट के पुत्र थे।

क्षत्रदेव–शिखंडी के पुत्र एक उच्च कोटि के रथी।

क्षत्रधर्मन्–धृष्टद्युम्न के पुत्र का नाम। महाभारत युद्ध में द्रोणाचार्य के हाथ से इनकी मृत्यु हुई।

क्षत्रबंधु–एक प्राचीन राजा जो बड़े क्रूर और हिंस्र प्रकृति के थे। अंत में ज्ञान प्राप्त होने पर इनकी मृत्यु हुई।

क्षत्रवृद्ध–आयुराज के द्वितीय पुत्र तथा प्रसिद्ध राजा पुरूरवा के पौत्र और नहुष राजा के भाई का नाम। काश्य वंश इन्हीं से आरम्भ हुआ। इनके पुत्र का नाम सुहोत्र था।

क्षत्रश्री–राजा प्रवर्दन के पुत्र। ऋग्वेद में इनके पुत्र का उल्लेख हुआ है।

क्षत्रौनस–वायुपुराण के अनुसार ये अजातशत्रु के पुत्र थे।

क्षपणक–महाराजा विक्रम की सभा के कथित नवरत्नों में से एक। संभवतः यह बौद्ध या जैन थे; क्योंकि 'क्षपणक' शब्द कालांतर में बौद्ध या जैन संन्यासियों की साधारण उपाधि के रूप में व्यवहृत होने लगा। इनका रचित कोई ग्रंथ उपलब्ध नहीं है। केवल काव्य-संग्रह में एक श्लोक उद्धृत है।

क्षमा–दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो सप्तर्षियों में से एक ऋषि पुलह की पत्नी थीं।

क्षमावत्–देवल ऋषि के पुत्र का नाम।

क्षिप्र प्रसादन–प्रियव्रत के पुत्र का नाम।

क्षीर–१. अंगिरा कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम। २. एक समुद्र का नाम जहाँ विष्णु शेषनाग की शय्या पर विश्राम करते हैं।

क्षुद्रक–सूर्यवंशी इक्ष्वाकुवंश कुलोत्पन्न प्रसेनजित के पुत्र का नाम। यह अजातशत्रु का समकालीन था।

क्षुद्रमृत–१. वसुदेव तथा देवकी के एक पुत्र का नाम। इनका जन्म कृष्ण के पहले हुआ था। कंस ने इन्हें मरवा डाला था। २. मरीचि ऋषि के एक पुत्र का नाम।

क्षुधि–कृष्ण के एक पुत्र का नाम।

क्षुप–१. एक प्रजापति का नाम। एक बार ब्रह्मा को यज्ञ करने की इच्छा उत्पन्न हुई पर उन्हें अपने से योग्यतर ऋत्विज नहीं मिल रहा था। अतः क्षुप प्रजापति की सृष्टि की जिन्होंने यज्ञ के पौरोहित्य का कार्य किया। रामायण, उत्तरकांड के अनुसार ये पृथ्वी के आदि राजा थे। २. एक राजा का नाम। इन्होंने महर्षि दधीचि से इस विषय पर विवाद किया था कि ब्राह्मण बड़े हैं या कि क्षत्रीय। इसके अनंतर इन्होंने दधीचि पर चढ़ाई की। शिवभक्ति के प्रताप से दधीचि ने इन्हें परास्त किया। ३. खनित्र के पुत्र का नाम। एक बार नारद ने युधिष्ठिर से यम की सभा का वर्णन किया था जिसमें राज्य के स्वामी से संबंधित वर्णन में इनका नाम आया है।

क्षेम–इध्मजिह्वा के पुत्र का नाम। २. कौरवपक्षीय एक राजा का नाम। यह क्रोध वंशोत्पन्न एक राजा के अंशावतार थे। ३. शुचि के पुत्र का नाम।

क्षेमक–१. पांडवपक्षीय एक राजा का नाम। २. भागवत् के अनुसार निमि के पुत्र का नाम। अन्य पुराणों के अनुसार ये खनित्र, निरामित्र अथवा खंडवारित के पुत्र थे। ३. कद्रू पुत्र एक सर्प का नाम। ४. एक राक्षस का नाम। यह निर्जन वाराणसी में रहता था। अलर्क ने इसको मारकर इस नगरी को बसाया था।

क्षेमकर–१. सोमकांत राजा के मंत्री का नाम। २. पश्चिम के त्रिगर्तदेशीय राजा का नाम। महाभारत में

नकुल से युद्ध करते हुये यह परास्त हुआ था।

क्षेम गुसाईं–एक मध्यकालीन वैष्णव भक्त जो धनुर्धर राम की उपासना किया करते थे।

क्षेपजित–मत्स्य के अनुसार क्षेमधर्म के पुत्र का नाम।

क्षेमदर्शिन्–उत्तर कोशल देश के राजा का नाम। दुर्बल होने के कारण ये राज्य-भ्रष्ट हो गये थे। कालकवृक्षीय नामक ऋषि की शरण में जाकर उनसे कपटनीति तथा सुनीति की शिक्षा ली, जिससे इनमें धर्मबुद्धि ही प्रबल हुई। विदेहवंशीय राजा जनक से इनकी मित्रता थी।

क्षेमधर्मन्–भागवत और विष्णु पुराण के अनुसार ये काकवर्ण के पुत्र थे।

क्षेमधी–चित्रस्थ जनक के पुत्र का नाम। विष्णु पुराण में इनको क्षेमारि कहा गया है।

क्षेमधूर्ति–१. वह साल्व राजा के मंत्री तथा सेनापति थे। इनको सांब ने परास्त किया था। महाभारत युद्ध में कौरवों के पक्ष से युद्ध करते हुए वृहत्क्षत्र ने इनका वध किया था। २. एक क्षत्रिय वीर का नाम। ये वृहंत के भाई थे। सात्यकी से इनका युद्ध हुआ था।

क्षेममूर्ति–धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। इसकी मृत्यु भीम द्वारा हुई थी। पाठान्तर से इसे क्षेमधूर्ति भी कहते हैं।

क्षेमवर्मन्–दे० 'क्षेमधर्मन'।

क्षेमवृद्धि–साल्व राजा के सेनापति का नाम।

क्षेमशर्मन्–दुर्योधनपक्षीय एक राजा का नाम। जिस समय द्रोणाचार्य दुर्योधन की सेना का सेनापतित्व कर रहे थे, उस समय इसने अपनी सेना की व्यूह-रचना सुपर्णाकार की थी।

क्षेमा–१. एक अप्सरा का नाम जो कश्यप तथा मुनि की कन्या थी। २. एक बौद्ध भिक्षुणी, जिससे कोसलराज प्रसेनजित ने अनेक धर्म-संबंधी प्रश्न किये थे।

क्षेम्य–१. राजा उग्रायुध के पुत्र का नाम। इनके पुत्र का नाम सुवीर था। २. दे० 'क्षेम'।

क्षेमेन्द्र–१. (समय लगभग १०५० ई०) एक सुविख्यात कश्मीरी, कवि, लेखक तथा आचार्य। इनके पिता का नाम प्रकाशेन्द्र और पितामह का नाम सिंधु था। इनका जन्म त्रिपुरशलशिखर पर हुआ था। इन्होंने अभिनवगुप्त के निकट साहित्य, अलंकार तथा भागवताचार्य सोमपाद के निकट धर्मशास्त्र का अध्ययन किया था। इनके उपाध्याय का नाम गङ्गक था। निश्चय रूप से यह नहीं कहा जा सकता कि ये किस धर्म के मानने वाले थे। हि० वि० कोबकार इन्हें हिन्दू ही मानते हैं। इन्होंने हिंदू होते हुये भी बौद्ध शास्त्र को माना था तथा बुद्धदेव को भगवद्‌वतार स्वीकार किया। मतांतर से ये पहले शैव, फिर वैष्णव और अंत में बौद्धमतावलंबी हो गये थे। इनकी रचित ३६ संस्कृत पुस्तकों का पता मिलता है। जिनमें से निम्नलिखित अति प्रसिद्ध हैं—(१) औचित्य विचार चर्चा, (२) कला विलास, (३) दर्प दलन, (४) वृहत्कथा मंजरी, (५) भारत मंजरी, (६) रामायण मंजरी, (७) समय मातृका, (८) सुवृत्त तिलक, (९) दशावतार चरित तथा (१०) अवदान कल्पलता। इनके रचित ग्रंथों के द्वारा काश्मीर के इतिहास पर भी प्रकाश पड़ता है। निरपेक्ष भाव से इन्होंने शैव, वैष्णव और बौद्ध ग्रंथों की आलोचना की थी। २. मदन-महार्णव नामक संस्कृत ज्योतिशास्त्रकार। ३. लोकप्रकाश नामक संस्कृत ग्रंथ के रचयिता। ४. गुर्जर निवासी यदुशर्मा के पुत्र तथा हस्तजनप्रकाश नामक संस्कृत-ग्रंथ के रचयिता। ५. एक ग्रंथकार जो राजनगरवासी ब्राह्मण थे। पितलद नरेश शंकरलाल के आदेश से क्षेमेन्द्र ने संस्कृत भाषा में लिपि-विवेक और मातृका-विवेक की रचना की थी।

क्षैमि–१. सुदक्षिणा का पैतृक नाम। २. श्याम पराशर कुलोत्पन्न एक ऋषि का नाम।

खंगसेन–ये जाति के कायस्थ थे। अच्छे लेखक थे। गोपी तथा गोपों के माता-पिता के नाम ग्रंथों से ढूंढ़कर इन्होंने एक ग्रंथ बनाया था जिसमें श्रीकृष्ण की लीलाओं का विशद वर्णन है।

खंडपाणि–ये अहीर के पुत्र थे। अन्य पुराणों में इनको दंडपाणि कहा गया है।

खंडिक औद्‌भाटि–केशिन के गुरु का नाम। केशिन के यज्ञ में एक व्याघ्र ने एक गाय मार डाली। केशिन ने सभा बुलाकर इनसे प्रायश्चित पूछा था। ये एक शाखा-प्रवंतक भी थे। दे० 'पाणिनि'। खंडिक और खांडिक्य पर्यायवाची हैं। दे० 'केशिध्वज'।

खगड़–बज्रनाभ के पुत्र का नाम। विष्णु पुराण के अनुसार इनका नाम खंखनाभ और वायु पुराण के अनुसार खंखण था। इनके पुत्र का नाम विधृति था।

खगपति–गरुड़ का एक पर्याय।

खगम–एक तपस्वी ब्राह्मण का नाम। एक समय जब ये अग्निहोत्र में संलग्न थे, इनके एक मित्र सहस्रपाद ने विनोदार्थ तिनके का एक सर्प बनाकर इनके अंग पर डाल दिया, जिससे ये मूर्छित हो गये। इन्होंने शाप दिया, "जिस प्रकार का सर्प मेरे शरीर पर डाला है, वैसा ही सर्प तू स्वयं हो जा।" मित्र के अत्यंत करुण विलाप करने पर इन्होंने कहा कि भृगुकुलोत्पन्न रुरु से जब तेरी भेंट होगी तब मुक्ति होगी और फिर तुझे पूर्व रूप मिल जायगा।

खगराय–दे० 'गरुड़'।

खट्‌वांग–विश्वसह राजा के पुत्र का नाम। इन्होंने देवासुर संग्राम में देवताओं की बड़ी सहायता की थी। प्रसन्न होकर देवताओं ने इनसे वर माँगने को कहा। इन्होंने उनसे केवल यह जानना चाहा कि अभी इनकी कितनी आयु शेष है। उत्तर मिला—'केवल एक मुहूर्त' (एक घड़ी या एक घंटा)। तत्काल ही मृत्युलोक में अपनी राजधानी अयोध्या में आकर अपने ज्येष्ठ पुत्र दीर्घबाहु को सिंहासनारूढ़ कर, ये ध्यानस्थ हो आत्म-स्वरूप में लीन हो गये। भविष्य पुराण के अनुसार खट्‌वांग के समान कोई ऐसा न होगा जो स्वर्ग से आकर घड़ी भर में अपने दान और ज्ञान के बल से परब्रह्म में लीन हो। मतांनर से दिलीप और खट्‌वांग एक ही व्यक्ति थे। दे० 'दिलीप'।

खड़गबाहु–एक प्राचीन राजा जिसको सिंहल देश के राजा

ने एक हाथी दिया था। इनके पुत्र दुःशासन के एक सेनापति इस हाथी पर सवारी करते समय गिर कर मर गये।

खड़गधर–सौराष्ट्र देश के एक राजा का नाम, जिन्होंने गीता के १६वें अध्याय के पाठ द्वारा एक ब्राह्मण को मद से मुक्त किया था।

खड़िगन–धृतराष्ट्र के पुत्र का नाम। भारतयुद्ध में ये भीम के हाथ से मारे गये।

खनक–विदुर के मित्र का नाम। ये खोदने के काम में अत्यंत निपुण थे। जब दुर्योधन ने पांडवों को मारने के लिये लाक्षागृह में भेज दिया था, उस समय विदुर के आग्रह से इन्होंने एक बड़ी सुरंग खोद डाली थी, जिससे पांडव निकल सके थे।

खनपान–भागवत के अनुसार अंगराज के पुत्र का नाम। इनके पुत्र दिविरथ थे।

खना–एक विदुषी स्त्री का नाम। महाराज विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नों में से एक रत्न मिहिर की यह स्त्री थीं। मिहिर के पिता का नाम बराह था। अतः उनके पुत्र वराहमिहिर के नाम से प्रसिद्ध हुये। वराह ने गणना करके यह समझा था कि उनके पुत्र का एक वत्सर मात्र परमायु था। इसलिये एक ताम्रपात्र में रखकर समुद्र में बहा दिया जिससे अपने पुत्र की मृत्यु अपनी आँखों से न देखें। बहते-बहते वह पात्र लंका पहुँचा। वहाँ उसे लंकावासियों ने पकड़कर पाला-पोसा और अंत में खना नाम की कन्या से विवाह कर दिया जो स्वयं ज्योतिष शास्त्र में प्रवीण थी। खना से अपने जन्म का समाचार सुनकर मिहिर पत्नी सहित समुद्र के मार्ग से उज्जयिनी की ओर चल पड़े। एक सद्यःजात बछड़े की आयु गणना में अपनी भूल समझ कर मिहिर ने अपने सब ज्योतिष-ग्रंथ समुद्र में फेंक दिये, परन्तु खना ने पुनः गणना करके सिद्ध किया कि उन्होंने भूल नहीं की थी। अतः मिहिर ने अपने सब ग्रंथ समुद्र से निकाल लिये। केवल पाताल गणना नामक ग्रंथ समुद्र के अथाह जल में जा चुका था। उसका उद्धार न हो सका। उज्जयिनी पहुँचकर खना ने अपने श्वसुर को सप्रमाण सिद्ध करके दिखा दिया कि उन्होंने अपने पुत्र की आयु-गणना में भूल की थी। पुत्र की आयु १ वर्ष न होकर १०० वर्ष की थी। एक बार महाराज विक्रमादित्य ने बराह से नक्षत्रों की गणना करने का आग्रह किया, पर इसे असंभव समझकर ये बड़े चिंतित हुये। तब खना ने नक्षत्रों की गणना की सरल-विधि इन्हें समझा दी। खना की विद्वता सुनकर महाराज ने दरबार में इसे आने की आज्ञा दी। राजा खना का सम्मान करने को उत्सुक थे, किन्तु बराह ने पुत्रवधू के दरबार में जाने से अपना अपमान समझकर मिहिर को उसकी जीभ काटने की आज्ञा दी। मिहिर ने इसका विरोध किया। किंतु खना ने कहा कि मेरी आयु पूरी हो चुकी है। अतः जीभ काटने में कोई हानि नहीं है। जीभ काटने के साथ ही खना की मृत्यु हो गई।

खनित्र–भागवत के अनुसार राजा प्रभात के पुत्र। इनके पुत्र का नाम चाक्षुष था। विष्णु और वायु पुराणों के अनुसार ये प्रजानि के पुत्र थे और इनके पुत्र का नाम क्षुप था।

खनिनेत्र–रंभ के पुत्र का नाम। यह अत्यंत दुष्ट प्रकृति के थे जिससे राज्य से पदच्युत कर दिये गये थे। इनके बाद इनके पुत्र सुवर्च गद्दी पर बैठे।

खर–१. एक राक्षस। यह रावण तथा सूर्पणखा का भाई कहा जाता है। सुमाली राक्षस की कन्या राखा तथा विश्ववसु मुनि का यह पुत्र था। वनवास के समय पंचवटी में जब लक्ष्मण ने सूर्पणखा के नाक-कान काट लिये थे तब अपनी बहन के लिये यह रामचंद्र जी से युद्ध करने के लिये आया था। उसी समय राम ने इसका वध किया। २. एक राक्षस जो कंस का अनुचर था। ३. रावणपक्षीय एक अन्य राक्षस का नाम। ४. लंबासुर के एक भाई का नाम। ५. त्रिजटा के एक पुत्र का नाम।

खशा–प्राचेतस् दक्ष प्रजापति तथा आसक्री की कन्या जो कश्यप की पत्नी और यक्ष गण की जननी थीं।

खांडव–१. एक ब्रह्मर्षि का नाम। इनका जन्म भृगुशाखा के अंतर्गत गात्रपृकुल में हुआ था। २. एक वन का नाम जिसे अग्नि को संतुष्ट करने के लिये अर्जुन ने श्रीकृष्ण की सहायता से जलाया था। यज्ञ घृतपान करते-करते अग्नि को अजीर्ण हो गया था और इसी से उस वन को आत्मसात कर वह स्वस्थ होना चाहते थे। इंद्र ने इसका विरोध किया था, क्योंकि उस वन में उसका मित्र तक्षक नामक सर्प रहता था।

खांडवायन–परशुराम ने एक महान यज्ञ किया था। उसमें एक सुवर्णमय वेदिका बनवाकर कश्यप को अर्पित की। कश्यप की अनुमति से जो ब्राह्मण यज्ञभाग के अधिकारी समझकर उस पर बैठ गये थे खांडवायन समझे गये।

खांडिक्य–मृतध्वज के पुत्र का नाम। ये केशिध्वज के सौतेले भाई थे। दे० 'केशिन्दार्मि'।

खाटिक–एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त, कवि तथा मत-प्रचारक का नाम।

खातादास–एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। ये टीका जी की पद्धति के अनुयायी थे।

खादित–द्राह्मयाण का नामांतर। दे० 'द्राह्मायाण'।

खार्गलि–लुशा कपि का पैतृक नाम।

खिलि--(खिलिखिलि)--विश्वामित्र कुलोत्पन्न गोत्रकार तथा प्रवर के नाम।

खीचनि–एक प्रसिद्ध हरिभक्त।

खीची--एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। ये अग्रदास जी के शिष्य तथा नाभादास जी के गुरुभाई थे।

खुर्दक--भविष्यकालीन तिमिरलिंग वंशोत्पन्न म्लेच्छ राजा।

खेता--एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। इन्होंने चारों धामों में हरिभक्ति का प्रचार किया।

खेम--एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। नाभादास जी के अनुसार ये एक दिग्गज भक्त थे तथा अन्य भक्तों के रक्षक थे। नामांतर खेमदास है।

खेम (पंडा) एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। ये 'गुनौरा' नामक

स्थान के निवासी थे। भिक्षावृत्ति द्वारा संत-सेवा में रत रहते थे।

खेम बैरागी–एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त।

खेमाल रत्न–राठौरवंशीय एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त।

खेल–एक प्राचीन राजा का नाम। इनकी स्त्री का नाम विश्वला था। युद्ध में जब इनका पैर टूट गया, तब अश्विनीकुमारों ने रात ही भर में दूसरा पैर लगा दिया। दूसरे दिन पुनः ये युद्ध में सम्मिलित हुये।

खोजी–एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त तथा साधक। इनके विषय में यह जनश्रुति प्रसिद्ध है कि इन्होंने अपनी कुटी में एक घंटा बाँध रक्खा था और कह रक्खा था कि जब हम प्रभु के समीप होंगे तो यह घंटा स्वयं बजने लगेगा। कहते हैं, इनके देह-त्याग के अवसर पर वह घंटा स्वयं बजा था।

खोरा जी–मथुरा निवासी एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। ये भिक्षावृत्ति-द्वारा जीविका निर्वाह तथा संतसेवा करते थे।

ख्याति–भागवत के अनुसार उल्मुक तथा पुष्करणी के पुत्र का नाम। मतांतर से यह कर्दम तथा देवहूति की कन्या थीं जिनके पति भृगु थे।

ख्यातेय–एक प्राचीन ऋषि का नाम। इनका जन्म नील-पराण कुल में हुआ था।

गंग–अकबरी दरबार के एक प्रसिद्ध हिंदी कवि। इनके एक छप्पय पर रहीमखानखाना ने ३६ लाख रुपये पारितोषिक रूप में दिये थे। इनकी भाषा-प्रौढ़ता के लिये ही संभवतः यह उक्ति प्रसिद्ध है—'तुलसी गंग दुहूँ भये कवियन के सरदार।' इनका वास्तविक नाम गंगा प्रसाद था।

गंग ग्वाल–एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त जो जाति के ग्वाल तथा ब्रजवासी थे। राधा जी की सखियों एवं ब्रज की गायों के नाम ढूँढ़ कर उनकी महिमा का गान करते फिरते थे।

गंगल–प्रसिद्ध वैष्णव भक्त तथा कथक जो अन्य प्रसिद्ध वैष्णव कथावाचक के भाई तथा भीष्मभट्ट के पुत्र थे। नाभा जी के अनुसार ये दोनों भाई हरिभक्ति के कथास्तंभ थे।

गंगा–एक अति पुण्य सलिला नदी जो पुराणों में देवी रूप में वर्णित हैं। ऋग्वेद में भी दो स्थानों पर इनका उल्लेख मिलता है। इनकी स्थिति के संबंध में दो प्रकार की कथाएँ प्रचलित हैं–१. विष्णु के चरणों से इनकी उत्पत्ति हुई थी और ब्रह्मा ने इन्हें अपने कमंडल में भर लिया था। कहा जाता है कि विराट अवतार के आकाश-स्थित तीसरे चरण को धोकर ब्रह्मा ने अपने कमंडल में रख लिया था। कुछ लोग अन्य प्रकार से इसकी व्याख्या करते हैं। उनके अनुसार समस्त आकाश मंडल में स्थित मेघ का ही पौराणिक गण विष्णु जैसा वर्णन करते हैं। मेघ से वृष्टि होती है और उसी से गंगा की उत्पत्ति है। २. इनका जन्म हिमालय की कन्या के रूप में सुमेरु-तनया मनोरमा अथवा मैना के गर्भ से हुआ था। देवता-गण किसी कारण इन्हें हिमालय से माँग लाये थे। किसी विशेष कारण से ये ब्रह्मा के कमंडल में जा छिपी थीं। देवी भागवत के अनुसार लक्ष्मी, सरस्वती और गंगा तीनों नारायण की पत्नी हैं। पारस्परिक कलह के कारण तीनों ने एक दूसरे को नदी रूप में अवतरित होकर मृत्युलोक में निवास करने का शाप दिया, जिससे तीनों पृथ्वी पर अवतरित हुईं। पुराणों में गंगा शांतनु की पत्नी और भीष्म की माँ कही गयी हैं। पृथ्वी पर गंगा-वतरण की कथा इस प्रकार है। कपिल मुनि के शाप से सगर के साठ सहस्र पुत्र भस्म हो गये। उनके वंशजों ने गंगा को पृथ्वी पर लाने के लिये घोर तपस्या आरंभ की। अंत में भगीरथ की घोर तपस्या से ब्रह्मा प्रसन्न हुये और उन्होंने गंगा को पृथ्वी पर भेजने की अनुमति दे दी। किंतु ब्रह्मलोक से आनेवाली गंगा का भार सहन करने में पृथ्वी असमर्थ थी। भगीरथ ने अपनी तपस्या से महादेव जी से गंगा को धारण करने की प्रार्थना की। ब्रह्मा के कमंडल से निकल कर गंगा महादेव की जटाओं में खो गईं। भागीरथ के तपस्या करने पर गंगा जी को शंकर जी ने निचोड़ दिया। मार्ग में जह्नु ऋषि अपने यज्ञ की सामग्री नष्ट हो जाने के कारण गंगा को पार कर गये। भगीरथ के प्रार्थना करने पर फिर उन्होंने गंगा को अपने कर्णरंध्र से निकाल दिया। तभी से गंगा का नाम जाह्नवी पड़ा। भगीरथ ने आगे-आगे चलकर अपने पूर्वजों की मातृभूमि तक उन्हें ले जाकर उनको मुक्ति दिलाई। भगीरथ के प्रयत्न से प्रवाहित होने के कारण गंगा को भागीरथी भी कहते हैं। इनके अन्य पर्याय निम्नलिखित हैं–विष्णुपदी, मंदाकिनी, सुरसरि, देवापगा, हरिनदी, तथा ध्रुवनंदा आदि।

गंगागान--एक प्रसिद्ध भक्त कवि।

गगाजी--धृषेत निवासी एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त तथा नाभा जी के यजमान।

गंगादास--रामानंदी संप्रदाय के एक प्रमुख भक्त तथा प्रसिद्ध पयहारी जी के २४ प्रधान शिष्यों में से एक। ये नाभा जी के गुरु और अग्रदास जी के गुरु-भाई थे।

गंगासिंह--अग्निवंशीय कश्यपसिंह राजा के पुत्र का नाम। ये कल्प क्षेत्र में रहते थे। इनकी बहिन का नाम वीरमती था जो रत्नभानु की स्त्री थीं। इन्होंने ९० वर्ष की अवस्था में कुरुक्षेत्र में प्राणत्याग किया।

गंडकी--एक नदी का नाम। प्रसिद्ध राजा भरत का जन्म इसी नदी के किनारे हुआ था। दे० 'भरत'।

गंधमादन--१. एक प्रसिद्ध बानर वीर जो राम के मुख्य सहचरों तथा सामंतों में से थे। इनका स्थान अंगद, नल, नील आदि के समकक्ष था। २. एक प्रसिद्ध पर्वत का नाम।

गंधर्व--१. वेदों में गंधर्व एक देवता का नाम है, जिन्होंने स्वर्ग तथा विश्व के रहस्य को जानकर सर्वसाधारण पर व्यक्त किया। २. कद्रू पुत्र एक सर्प का भी यह नाम है। ३. देवताओं की एक जाति-विशेष जिसका निवास स्वर्ग तथा अंतरिक्ष था और जिनका मुख्य कार्य देवताओं के लिए सोमरस तैयार करना था। ये स्त्रियों के विशेष अनुरागी तथा उन पर अपूर्व अधिकार रखते थे। अथर्ववेद में ६३३३ गंधर्वों का उल्लेख है, ये औषधि तथा वनस्पति के विशेषज्ञ कहे गये हैं। विष्णु पुराण के अनुसार इनकी उत्पत्ति ब्रह्मा से तथा हरिवंश के अनुसार ब्रह्मा की नाक से हुई। चित्ररथ प्रधान गंधर्व थे। मतांतर से

इनकी उत्पत्ति कश्यप की स्त्री मुनि से हुई। गंधर्वों और नागों का युद्ध प्रसिद्ध है। महाभारत में गंधर्व एक जाति विशेष के लिये कहा गया है जो जंगलों में रहती थी। नागों ने विष्णु की अनुमति से अपनी भगिनी नर्मदा को पुरुकुत्स के पास भेजकर इनका संहार करवाया।

गंधर्वराज--दे० 'नारद'।

गंधर्वसेन--अग्निवंशोत्पन्न देवदूत का पुत्र। इन्होंने ५० वर्ष राज्य करने के बाद ईश्वराधन के द्वारा मोक्ष प्राप्त किया।

गंधर्वसेना--धन वाहन नामक गंधर्व की कन्या। यह गंधर्व कैलास के पास स्वयंप्रभा नामक नगरी में रहता था। इस कन्या को कुष्ट रोग था। सोमवार-व्रत करके वह इस रोग से मुक्त हुई।

गंधवती--सत्यवती का नामांतर।

गंभीर--१. रसभ राजा के पुत्र का नाम। इसके एक पुत्र का नाम अक्रिय था। २. भौत्य मनु के पुत्र का नाम।

गंभीरबुद्धि--इन्द्र सावर्णि मनु के एक पुत्र का नाम।

गज--१.शकुनि के एक भाई का नाम जो दुर्योधन के मामा थे। भारत में अर्जुन के पुत्र इरावान के हाथ से इनकी मृत्यु हुई। २. एक वीर वानर का नाम था जो राम-सेना के सेनापतियों में से एक थे। ३. गजासुर नाम से प्रसिद्ध एक दैत्य।

गजकर्ण--एक यक्ष का नाम।

गजपति--एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त जिन्होंने चारों धाम में हरि भक्ति का प्रचार किया था।

गजमुक्ता--गजसंग की एक कन्या का नाम जो बलाखान की स्त्री थी। सामंतपुत्र रक्तबीज चामुंड और बलाखान का युद्ध हुआ था जिसमें बलाखान वीरगति को प्राप्त हुये और गजमुक्ता उनके साथ सती हो गई।

गजसेन--दे० 'गजमुक्ता'।

गजासुर--१. वारक नाम प्रसिद्ध असुर का एक सेनापति। कपाली नामक रुद्र ने इसका बध किया। यह शिव का बड़ा भक्त था। काशी में शिवलिंग की स्थापना भी इसने की थी। २. महिषासुर का पुत्र।

गजेंद्र--त्रिकूट पर्वत पर रहनेवाला एक प्रसिद्ध गज। पूर्व जन्म में यह राजा इंद्रद्युम्न था और ऋषि अगस्त्य के शाप से हाथी होकर जन्मा था। जलक्रीड़ा करते समय इसने ऋषि के प्रति सम्मान नहीं प्रकट किया था, इसीलिए शाप का भागी हुआ। यह एक बार एक तालाब में स्नान कर रहा था। वहीं इसे एक ग्राह ने पकड़ लिया। घमासान युद्ध हुआ। अंत में हार मानकर गज ने हरि को पुकारा। भगवान ने प्रकट होकर इसका छुटकारा किया, तभी पशुयोनि से इसकी मुक्ति हुई। भागवत के अनुसार भगवान का इस प्रकार प्रकट होना 'गजेंद्र-मोचन' अवतार के नाम से प्रसिद्ध है। दे० 'इंद्रद्युम्न' तथा 'देवल'।

गणिका--जीवन्ती नाम की एक वेश्या जो अपने तोते को बहुत प्यार करती थी। एक दिन उसी रास्ते से एक महात्मा निकले। उन्हें मालूम न था कि वह वेश्या का घर है। वे वहाँ भिक्षा के लिए चले गये। जब उन्हें वास्तविकता मालूम हुई और साथ ही उन्होंने यह भी जाना कि यह वेश्या अपने तोते से बहुत प्रेम करती है, तब उन्होंने वेश्या से कहा कि तुम इसे रामनाम पढ़ाया करो। उसी दिन से वेश्या तोते को रामनाम पढ़ाने लगी। यद्यपि उसे मालूम न था कि राम नाम का क्या प्रभाव है किंतु उसकी जीभ राम नाम के उच्चारण में इतनी अभ्यस्त हो गई थी कि मृत्यु के समय भी अनजान में ही उनके मुख से राम नाम निकलता रहा और वह भव-सागर पार हो गई।

गणेश--१. एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। नाभा जी ने इनका नाम देश प्रसिद्ध भक्तों में गिनाया था। २. शिव के गणों के अधिपति इन्हें शिव तथा पार्वती का पुत्र कहा जाता है। इनका समस्त शरीर मनुष्य का और मुख हाथी का है। कहा जाता है कि इनके जन्म के समय शनि भी इन्हें देखने आये थे। शनि जिसे देख लेते थे, उसका सिर धड़ से अलग हो जाता था। शनि के देखते ही गणेश का सिर अलग हो गया। उस समय विष्णु के कहने पर उत्तर दिशा में सर किये हुए इंद्र के हाथी ऐरावत का सिर काटकर गणेश को लगा दिया गया। इनके एक दन्त होने के लिए यह प्रसिद्ध है कि एक बार शंकर और पार्वती निद्रा मग्न थे। गणेश उस समय द्वारपाल थे। परशुराम शंकर से मिलने आये। गणेश ने उन्हें रोका जिससे क्रुद्ध होकर परशु से उन्होंने इनका एक दाँत काट डाला। कहा जाता है कि एक बार देवताओं ने पृथ्वी की परिक्रमा करनी चाही। सभी लोग पृथ्वी के चारों ओर गये। गणेश ने सर्वव्यापी राम नाम लिखकर उसी की परिक्रमा कर डाली, जिससे देवताओं में सर्वप्रथम उन्हीं की वन्दना या पूजा होती है। कहा जाता है कि व्यास के बोलने पर गणेश ने ही महाभारत को लिपिवद्ध किया था। इनका वाहन मूषक है। लंम्बोदर, हेरंब, द्वैमातुर, इकदंत, मूषकवाहन, गजवदन, गणपति तथा विनायक आदि इनके अन्य नाम हैं।

गणेश देईरानी--एक प्रसिद्ध, हरिभक्तिपरायणा मध्यकालीन महिला। ये ओड़छा नरेश मधुकरशाह की पटरानी थीं। इनके संबंध में कई विचित्र कहानियाँ प्रसिद्ध हैं। भक्तों के लिए इनके यहाँ कोई परदा न था। एक बार भक्त वेष में कोई डाकू वहाँ घुस गया और उसने रानी से धन माँगा। रानी ने कहा—'धन तो सब भक्तों की सेवा में लग गया।' इससे क्रुद्ध होकर डाकू रानी को छुरी मारकर भाग गया। रानी ने घाव को छिपा लिया और राजा से इसलिए नहीं बताया कि फिर भविष्य में भक्तगणों के आने में रुकावट होगी।

गति--भागवत के अनुसार पुलह ऋषि की स्त्री का नाम।

गद--१. भागवत के अनुसार वासुदेव की पत्नियाँ। देवकी तथा देवरक्षिता नामक स्त्रियों से जो बच्चे हुए थे वे गद कहलाये। महाभारत के अनुसार ये कृष्ण के सौतेले भाई थे और भारतयुद्ध में पांडवों के पक्ष में थे। २. एक असुर का नाम जिसे मारकर विष्णु ने इसकी हड्डियों से एक गदा बनाई थी। इसी गदा को धारण करने के कारण उनका नाम गदाधर हुआ था।

गदगद--जांबवान तथा केसरी नामक विख्यात बानर वीरों के पिता का नाम।

गदांदयौवन--भागवत के अनुसार देवरक्षिता से उत्पन्न एक पुत्र का नाम।

गदाधर--एक प्रसिद्ध हरिभक्त तथा कथावाचक।

गदाधरदास--एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। बुरहानपुर के निकट इनकी गद्दी थी। ये सदा 'लाल विहारी' नाम से कृष्ण की उपासना करते थे।

गदाधर भट्ट--एक प्रसिद्ध वैष्णव, भागवत के प्रसिद्ध कथावाचक तथा वृंदावनबासी भक्त। ये अकबर सम्राट के समकालीन थे। इनके जीवन की कई रोचक कथाएँ भक्तमाल की टीकाओं में मिलती हैं। नाभाजी ने इस नाम के कई भक्त गिनाये हैं। एक बंगाली, एक बाँदेवाले और एक बल्लभाचार्य जी के शिष्य गदाधर मिश्र।

गदाभक्त--एक प्रसिद्ध मध्यकालीन वैष्णव भक्त।

गभस्तिनी--लोपामुद्रा की बहिन तथा दध्यंच् ऋषि की पत्नी। इसका नामांतर आतिथेयी भी था।

गयंती--नल पुत्र गय की स्त्री का नाम।

गय--इस नाम के कई प्राचीन राजा हो गये हैं। १. भागवत के अनुसार उलूक तथा पुष्करणी के पुत्र का नाम। २. हविधन के पुत्र का नाम। ३. आयु के पुत्र का नाम। ४. अमूर्तरय के पुत्र का नाम। ये शत वर्ष तक केवल यज्ञाहुति की राख खाकर रहे थे। अग्नि के वरदान से ये वेदज्ञान के अधिकारी हुये। एक बार इन्होंने एक महान् यज्ञ किया। इस यज्ञ फल से एक वट वृक्ष चिरजीवी हुआ, जो अक्षयवट नाम से प्रसिद्ध है। इसके द्वारा आमंत्रित होने पर सरस्वती नदी प्रादुर्भूत होकर विशाला नाम से प्रसिद्ध हुई। ५. रामायण के अनुसार एक वानर का नाम जो रामचंद्र की सेना का एक सेनापति था। ६. नल तथा द्रुति के पुत्र। इनकी स्त्री का नाम गयंती था। चित्ररथ, सुगत्ति तथा अवरोधन इनके तीन पुत्र थे। इन्होंने एक बार ऐसा यज्ञ किया कि इनके कठिन प्रण के अनुसार सब देवताओं ने प्रत्यक्ष होकर अपना-अपना भाग ग्रहण किया। नाभाजी के अनुसार ये एक प्रमुख हरिभक्त थे। ७. इल अथवा सुद्युम्न राजा के मध्यम पुत्र। यह गयाकुटी में राज्य करते थे।

गयआत्रेय--एक सूत्रद्रष्टा का नाम।

गयप्लात--एक सूक्तद्रष्टा का नाम। यह प्लती के पुत्र थे।

गयासुर--एक राक्षस जिसका वध विष्णु ने कैकट देश में किया था। इसका शरीर पाँच कोस लम्बा था।

गर--सुबाहु का पुत्र। इसने हैहय, तालजंघ, शक, यतन, पारद, कांबोज तथा पल्लव राजाओं का राज्य अपहरण किया था। एक बार यह सपरिवार भार्गव ऋषि के आश्रम में गया था वहाँ अल्पकालांतर ही मरण को प्राप्त हुआ। इसकी स्त्री का नाम कल्याणी तथा पुत्र का नाम सागर था।

गरिष्ठ--एक ऋषि का नाम जो इंद्र सभा में सम्मिलित हुये थे।

गरुड़--एक पौराणिक पक्षी, जिनका आधा शरीर मनुष्य का और आधा पक्षी का है। ये विष्णु के वाहन माने जाते हैं। पुत्रेष्ठि यज्ञ के पश्चात् बालखिल्यों की तपस्या के फलस्वरूप कश्यप और बनिता से पक्षिराज गरुड़ की उत्पत्ति हुई। कद्रू और बनिता की शत्रुता के कारण कद्रू पुत्र सर्पों के ये बहुत बड़े शत्रु हैं। इनका मुख श्वेत, पंख लाल और शरीर सुनहला है। इनके पुत्र का नाम संपाती और पत्नी का नाम विनायका है। अपनी माता को कद्रू से स्वतंत्रता दिलाने के लिये इन्होंने पाताल लोक से अमृत की चोरी की जिससे इंद्र से घोर युद्ध हुआ। अंत में अमृत को इंद्र ने ले लिया। मानस के अनुसार एक बार गरुड़ के मन में राम के परम-ब्रह्मत्व पर संदेह उत्पन्न हुआ क्योंकि लंका युद्ध में मेघनाद ने उनको नागपाश में बाँध लिया और गरुड़ को उनका बंधन काटने के लिये जाना पड़ा। इस संदेह को गरुड़ ने नारदादि से कहा। किसी प्रकार भी संदेह दूर न हुआ। अंत में शंकर जी ने इनको काकभुशुंडि के पास भेजा। वहाँ जाते ही इनका संदेह दूर हो गया। रामचरित मानस के चार वक्ता और श्रोता वर्ग में से काकभुशुंडि और गरुड़ भी एक वर्ग हैं। इनके अन्य पर्याय हैं :—गरुत्वान्, तार्क्ष्य, वैनतेय, खगेश्वर, नागान्तक, विष्णुरथ, सुपर्ण, पन्नगाशन, पक्षिसिंह उरगाशन, विष्णुरथ, शाल्मलीस्थ तथा खगेन्द्र आदि।

गरुड़ पुराण--अष्टादस महापुराणों में से एक, जिसकी श्लोक संख्या १६००० तथा प्रकृति सात्विक कही गई है। गरुड़ कल्प में विष्णु भगवान ने इसे सुनाया जिसमें विनतानंदन गरुड़ के जन्म की कथा कही गई है। इस पुराण में तंत्रों के मंत्र और औषधियों का वर्णन अधिक है। रत्न, धातु आदि की परीक्षाविधि विस्तार से दी गयी है। इसके पश्चात् सृष्टि-प्रकरणसे लेकर सूर्य तथा यादुवंशी राजाओं का इतिहास तक का वर्णन किया गया है। पाश्चात्य विद्वान् विल्सन गरुड़ गुराण के अस्तित्व पर ही संदेह प्रकट करते हैं।

गर्ग--यदु-वंश के पुरोहित। कृष्ण का नामकरण करने के लिए वसुदेव ने इन्हें गोकुल भेजा था। नंद ने इनका विशेष आदर-सत्कार किया था। सर्व-प्रथम इन्होंने रोहिणी-पुत्र का नाम 'संकर्षण' रक्खा था। फिर राम की परम अभिरामता बता कर, अति बलयुक्त होने के कारण उनका नामकरण 'बलराम' भी किया था। देवकी-पुत्र का नाम इन्होंने ही 'कृष्ण' रक्खा था तथा वसुदेव का पुत्र होने के कारण उन्होंने उसे वासुदेव भी कहा था एवं उसमें नारायण से अधिक गुण बताए थे। इस प्रकार नामकरण के बाद वे मथुरा वापस चले गये थे।

गर्ग भारद्वाज--एक सूक्तदृष्टा का नाम।

गर्ग भूमि--वायुमत से गार्ग्य के पुत्र का नाम।

गर्दभी मुख--कश्यप कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।

गर्दभी मुख शांडिल्यायन--एक आचार्य का नाम। इनके गुरु का नाम उदरशांडिल्य था।

गवय--रामसेना में एक बानर का नाम। ये अश्वमेध के समय अश्वरक्षा के लिए शत्रुघ्न के साथ गये थे।

गविजान--एक ब्रह्मर्षि का नाम।

गविष्ट--कश्यप तथा दनु के एक पुत्र का नाम।

गविष्ठिर आत्रेय--एक सूक्तद्रष्टा का नाम।

गांगेय--१. भीष्म का मातृक नाम। दे० 'भीष्म'। २. एक बार पार्वती ने अपने शरीर का मैल छुड़ा कर उसकी एक मूर्ति बनाकर गंगा में डाल दी जो सजीव हो गई। और देवताओं ने उसका नाम गांगेय रखकर उसे गणों का आधिपत्य प्रदान किया।

गांगोदधि--अंगिरा कुलोत्पन्न एक गोत्रकार। गंगोदधि नामांतर है।

गांदिनी--काशिराज की एक कन्या का नाम जो यदुवंशी श्वफल्क को व्याही थी अक्रूर आदि इन्हीं के पुत्र थे। गांदिनी शब्द का अर्थ है--प्रतिदिन गाय देने वाली। कहा जाता है कि ये १२ वर्षों तक माता के गर्भ में रहीं। भूमिष्ट होने की प्रार्थना किये जाने पर इन्होंने कहा कि तीन वर्ष तक प्रतिदिन ब्राह्मणों को गो-दान करो। ऐसा ही किया गया और तब ये उत्पन्न हुईं। इन्होंने प्रतिदिन एक गऊ-दान करने की प्रथा जारी रक्खी।

गांधार--भागवत के अनुसार आरब्ध के पुत्र का नाम। मत्स्य के अनुसार ये शरद्वान् के तथा वायु के अनुसार अरुद्ध के पुत्र थे। गांधार देश के राजाओं मुख्यतः शकुनि का यही नाम था। दे० 'गांधारनग्नजित्'।

गांधार नग्नजित्--एक गांधार राजा का नाम। इनको सोम के संबंध में विशेष जानकारी थी। एक समय इन्होंने प्राण शब्द के अर्थ के संबंध में अपना स्वतंत्र मत प्रकाशित किया था।

गांधार कायन--अगस्त कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।

गांधारी--१. गांधार देश के राजा सुबल की कन्या का नाम। इन्होंने बाल्यकाल में शिव की आराधना की थी, जिससे इन्हें १०० पुत्र होने का वरदान मिला था। कुरुवंश में पुत्रों की कमी थी, अतएव भीष्मादि ने धृतराष्ट्र के लिये गांधारी को माँगा। गांधारी का विवाह धृतराष्ट्र से हो गया। यह जानकर कि पति अन्धे हैं, गांधारी ने अपनी आंखों में सदा के लिये पट्टी बाँध ली। कालक्रम से इनसे दुर्योधनादि सौ पुत्र हुये। उनके उत्पत्ति की कथा इस भांति है :--गांधारी १०० पुत्रों का वरदान पाकर गर्भवती हुई, किंतु दो वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी किसी प्रकार गर्भ बाहर नहीं निकला। बलपूर्वक बाहर निकालने से शिशु के स्थान पर केवल एक मांसपिंड निकला। व्यास ने उस मांसपिंड के सौ टुकड़े कर अलग अलग घृतकुंभों में रख दिया। समय पर उसमें से दुर्योधन उत्पन्न हुआ, किंतु वह ऐसे अशुभ लक्षणों से प्रकट हुआ कि धृतराष्ट्र ने अगत्या उसे त्याग दिया। उसके बाद अन्य निन्यानबे पुत्र उत्पन्न हुये। एक घड़े से दुःशला नाम की कन्या उत्पन्न हुई। ये आदर्श पत्नी तथा आदर्श माता थीं। पतिव्रताओं में इनका स्थान अग्रगण्य है। पारस्परिक युद्ध के ये अत्यंत विरुद्ध थीं। अपने सामने ही जब इनके १०० पुत्र मारे गये, तब कृष्ण को बुलाकर इन्होंने उनकी बहुत भर्त्सना की और युद्ध होने का उत्तरदायित्व उन्हीं पर डालकर उन्हें शाप दिया कि वे भी अपने सभी पुत्रों की मृत्यु देखें, और परिवार-रहित हो बनचारी होकर मारे जावें। पतिव्रता गांधारी का यह शाप अक्षरशः सत्य हुआ। युधिष्ठिर के राज्याभिषेक के अवसर पर इन्होंने दस दिनों तक हस्तिनापुर में अपने मृतपुत्रों का अंतिम संस्कार किया, और फिर कार्तिकी पूर्णिमा को पति के साथ वन चली गईं। एक बार वेदव्यास इनके आश्रम में गये। उनके प्रभाव से कुरुक्षेत्र में मृत द्रोण और भीष्म आदि के इनको दर्शन हुये। व्यास के प्रभाव से इनके सब मृत पुत्र भी दिखाई पड़े। इन्हें इस बात से बहुत संतोष हुआ। इस घटना के ६ महीने के बाद उस वन में एक भयानक आग लग गई। धृतराष्ट्र, कुंती तथा गांधारी आदि की दावानल में अग्नि-समाधि हुई। भाग्यवश संजय भागकर बच गये। २. क्रोष्टू की कन्या का नाम। ३. अजमीढ़ की तीसरी स्त्री का नाम। ४. कश्यप तथा सुरभि की एक कन्या का नाम।

गातु आत्रेय--एक सूक्तद्रष्टा का नाम।

गात्र--उत्तम मन्वंतर में सप्तर्षियों में से एक का नाम।

गात्रवत्--कृष्ण के एक पुत्र का नाम।

गाथिन्--विश्वामित्र के पिता तथा कुशिक के पुत्र का नाम। गाथिन कौशिक मंत्रद्रष्टा भी थे। यह अंगिराकुलोत्पन्न एक गोत्रकार तथा (वेदार्थदीपिका के अनुसार) इंद्र के अवतार थे। इन्हीं को पुराणों में गाधि कहा गया है। दे० 'गाधि'।

गाधि--विश्वामित्र के पिता। वायु पुराण के अनुसार ये कुशाश्व के पुत्र थे। इनकी माता पुरुकुत्सु की कन्या थी। ऋचीक ऋषि के दिये हुये चरु के प्रभाव से इनके विश्वामित्र नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। इस बालक में क्षत्रिय और ब्राह्मण दोनों के गुण विद्यमान थे। इनकी कन्या का नाम सत्यवती था। ये कान्यकुब्ज देश के राजा थे। नाभाजी के अनुसार इन्हीं के नाती (कन्या के पुत्र) प्रसिद्ध यमदग्नि मुनि हुये जिनके आत्मज परशुराम थे।

गानबंधु--एक अत्यन्त प्रसिद्ध गायनाचार्य का नाम। इनकी उत्पत्ति वाराह-कल्प के पूर्व घोरकल्प में हुई थी। नारद ने इन्हीं से गान-विद्या सीखी थी। कालांतर में किसी कारण से इन्हें उलूक योनि प्राप्त हुई।

गामटी--(गाँवरीदास) एक प्रसिद्ध मध्यकालीन वैष्णव भक्त। ये जातियाने के निवासी थे।

गायत्री--ब्रह्मा की स्त्री का नाम। कहा जाता है कि एक बार ब्रह्मा ने एक यज्ञ आरंभ किया। यज्ञ में अर्धांगिनी का होना परमावश्यक है। अतः ब्रह्मा ने अपनी प्रथम पत्नी सावित्री को बुला भेजा, किंतु सावित्री ने कहा कि अभी हमारी सहेलियाँ नहीं आई हैं। अतः इंद्र मृत्युलोक से एक ग्वालिन लाये जिसके साथ ब्रह्मा ने गंधर्व विवाह किया। इसी का नाम गायत्री पड़ा। गायत्री के एक हाथ में मृग-श्रृंग और दूसरे में पद्म है। वस्त्र लाल रंग का है। गले में मुक्ताहार और सिर पर मुकुट है। एक बार बृहस्पति ने पाद-प्रहार द्वारा इनका सिर तोड़ दिया। इससे इनकी मृत्यु नहीं बल्कि देवों की उत्पत्ति हुई। गायत्री मंत्र वेद का सबसे प्रचलित मंत्र और गायत्री छंद सबसे प्रसिद्ध छंद है। गायत्री को वेदमाता भी कहा गया है। यह मंत्र सबसे अधिक पुनीत तथा पावन माना

गया है। प्रत्येक ब्राह्मण के लिये त्रिसंध्या में इसका जप करना अनिवार्य माना गया है। गायत्री मंत्र इस प्रकार है :—ओ३म् भूः भुवः स्वः तत्सवितुः वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्। मंत्र का मौलिक आशय इस भाँति है—'हम उस परम तेजमय सूर्य (सविता) के उस तेज की उपासना करते हैं कि वह हमारे मन और बुद्धि को प्रकाशमान करे।'

गायन--भृगु कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।

गार्ग--विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

गार्गी वाचक्नवी--१. एक अत्यन्त ब्रह्मनिष्ठ तथा पंडिता वैदिक स्त्री का नाम। जनक की सभा में इन्होंने याज्ञवल्क्य मुनि के साथ शास्त्रार्थ किया था। यह वचक्र ऋषि की कन्या थीं। पाणिनि ने इनका उल्लेख किया है। २. दुर्गा का एक पर्याय।

गार्ग्य--१. महर्षि गर्ग के पुत्र। अपनी अत्यधिक ब्रह्मनिष्ठा से इन्होंने गर्ग से स्वतंत्र अपना गोत्र चलाया। पाणिनि ने इनका उल्लेख किया है। ये यादवों के कुलगुरु थे। एक बार यादवों ने सभा में नपुंसक कहकर इनका उपहास किया जिससे रुष्ट होकर इन्होंने लोहचूर्ण खाकर शिव की तपस्या की और यह वर प्राप्त किया कि यादवों का विनाश करनेवाला पुत्र इन्हें प्राप्त हो। इन्होंने गोपाली नामक अप्सरा से विवाह करके कालयवन नामक महापराक्रमी पुत्र उत्पन्न किया जिसने यदु कुल का नाश किया। २. एक तत्वज्ञानी महर्षि। यह गार्ग्य तथा गौतम के शिष्य थे। ३. एक प्रसिद्ध धर्मशास्त्रकार तथा वैयाकरण ऋषि। इनका उल्लेख यास्क तथा पाणिनि ने किया है। हेमाद्रि ने इन्हें एक ज्योतिषी माना है। यही गार्ग्य बालाकि के नाम से प्रसिद्ध हैं।

गार्ग्यहरि--आंगिरस् कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम। गार्गिहर नाम से भी ये प्रसिद्ध हैं।

गार्ग्यायण--उषालकायन के शिष्य का नाम इनके शिष्य पाशशर्यायण थे।

गार्याहण--भृगु कुलोत्पन्न एक ऋषि का नाम।

गाल--एक राजा का नाम। इन्होंने नील पर्वत पर एक मंदिर बनवाया गया था।

गालव--१. विश्वामित्र के प्रिय शिष्य, एक प्रसिद्ध ऋषि। शिक्षा समाप्त होने पर विश्वामित्र इनसे गुरु दक्षिणा लिये बिना ही प्रसन्न थे, किंतु इन्होंने दक्षिणा देने का आग्रह किया, अतएव रुष्ट होकर इन्होंने ८०० श्यामकर्ण घोड़े माँगे। इसे अपनी शक्ति से बाहर की बात समझकर इन्होंने विष्णु की आराधना की। प्रसन्न होकर विष्णु ने इनकी सहायता के लिये गरुड़ को भेजा। सब दिशाओं में घुमाकर गरुड़ इन्हें राजा ययाति के यहाँ ले गये और उन्हें अपनी समस्या बताई। ययाति भी असमर्थ हो रहे थे। उन्होंने अपनी परम सुन्दरी कन्या माधवी गालव को सौंपकर कहा कि इसे योग्य वर को सौंपकर उससे घोड़े प्राप्त कर सकते हो। माधवी को यह वर प्राप्त था कि पति-समागम होने पर भी उसका कौमार्य नष्ट नहीं होगा। उसे लेकर ये हरीश्व, दिवोदास, और उशीनर तीन राजाओं के पास गये। इन तीनों ने बारी-बारी से माधवी से विवाह करके पुत्र प्राप्त किया और उसके बदले दो-दो सौ घोड़े दिये। इस प्रकार गालव ऋषि ने ६०० घोड़े विश्वामित्र को दे दिये और २०० के लिये उस कन्या को ही विश्वामित्र को सौंप दिया। इसे पाकर गुरु संतुष्ट हुये और उनसे भी माधवी को अष्टक नामक एक पुत्र हुआ। दे० 'माधवी'। २. विदर्भ कौंडिन्य के शिष्य का नाम। इनके पुत्र कुमार हारित थे। ३. वायु के अनुसार याज्ञवल्क्य के शिष्य। ४. विश्वामित्र के पुत्र का नाम। इनका नाम 'गालव' क्यों पड़ा, इसकी एक कथा हरिवंश में इस प्रकार दी हुई है—राजा सत्यव्रत के निन्द्य आचरण के कारण राज्य में घोर अकाल पड़ा और सब अन्न के अभाव में त्राहि त्राहि करने लगे। विश्वामित्र ने निरुपाय हो इन्हें गले से बाँध कर बेचने के लिये खड़ा किया। इसी से इनका नाम गालव पड़ा। राजा सत्यव्रत ने इन्हें बंधन मुक्त करके इनके पिता के हवाले किया। ये वैय्याकरण थे। पाणिनि ने इनका उल्लेख किया है।

गालवि--अंगिरा कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम। गालवित् इनका नामांतर है।

गावलाणि--संजय का नामांतर है। दे० 'संजय'।

गिरधर--एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य, पुष्टिमार्ग के अनुयायी तथा प्रचारक। ये गोस्वामी बिट्ठलनाथ जी के सात पुत्रों में से एक तथा श्री बल्लभाचार्य जी के पौत्र थे।

गिरपति--हिमालय का एक पर्याय।

गिरा--सरस्वती का एक पर्याय। दे० 'सरस्वती'।

गिरापति--दे० 'ब्रह्मा'।

गिरिका--उपरिचर वसु राजा की स्त्री। इससे वृहद्रथ आदि छः पुत्र तथा काली अथवा मत्स्यगंधिनी नाम की एक कन्या उत्पन्न हुई थी।

गिरिक्षत्र--विष्णु पुराण के अनुसार श्वफल्क के पुत्र का नाम।

गिरिजा--उमा का एक पर्याय। दे० 'उमा'।

गिरिधर--कृष्ण का एक पर्याय। कृष्ण ने इंद्र की उपासना बंद करके गोकुल निवासियों को गोवर्धन की पूजा करने की सम्मति दी। सभी लोगों ने ऐसा ही किया, जिससे क्रुद्ध होकर इंद्र ने मूसलाधार वर्षा प्रारंभ कर दी। अति वृष्टि से पीड़ित गोकुल निवासियों के रक्षार्थ कृष्ण ने अपनी छिगुनी पर गोवर्धन धारण किया। इसी से उनका नाम गिरधर या गिरधारी हुआ। दे० 'कृष्ण'।

गिरिधरग्वाल--एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त जो मालपुरना नामक गाँव में रहते थे। इस नाम के कई भक्तों का उल्लेख भक्तमाल में किया गया है। बल्लभाचार्य के पौत्र का नाम भी गिरधर था जो इनसे भिन्न था।

गी--वाणी की अधिष्ठात्री सरस्वती का नामांतर। दे० 'सरस्वती'।

गीतविद्याधर--एक गंधर्व का नाम।

गुणकेशी--इंद्र सारथि मातलि की कन्या का नाम। इसकी माता का नाम सुधर्मा था। इसके अनुकूल कोई वर नहीं मिल रहा था। अंत में नागलोक के त्रिकूट नाग का पुत्र मनोनीत हुआ। किंतु नागों को गरुड़ का बहुत भय

था, अतएव मातलि ने इंद्र से पहिले अमृत दिलाकर उसे अमरत्व दिलाया और तब गुणकेशी का उससे विवाह किया।

गुणनिधि–१. यज्ञदत्त नामक एक वैदिक ब्राह्मण का पुत्र। यह अत्यंत दुर्गुणी तथा व्यसनी था। पर शिव पूजा के प्रताप से इसे मुक्ति मिली। अनंतर कुबेर ने इसे उत्तर-दिशा का अधिपति बना दिया। २. एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। इन्होंने चारों धाम में हरिभक्ति का प्रचार किया।

गुणवती–१. सिंहल देश के चंद्रसेन राजा की स्त्री। २. दे० 'सत्राजित'।

गुण शेखर–गौड़ देश के राजा। इन्हें अभयानंद ने जैन मत में दीक्षित किया था।

गुणाकर–१. अक्षदीप के एक प्रतापी तथा परमैश्वर्यवान राजा। इनकी स्त्री का नाम सुशीला था जिससे सुलोचना नाम की एक कन्या उत्पन्न हुई थी। २. पुलह तथा श्वेता के पुत्र का नाम।

गुपाल–दे० 'गोपाल'।

गुप्तक–पांडवों के समकालीन सिंधु-देशीय एक राजा का नाम।

गुरु--१. दे० 'वृहस्पति'। २. भागवत के अनुसार सांकृति के पुत्र का नाम। मत्स्य में इनको गुरुधि, विष्णु में रुचिरधि तथा वायु में गुरुवीर्य कहा गया है। दे० 'सांकृति'। ३. भौत्य मनु के पुत्र का नाम।

गुरुक्षेप–विष्णु के अनुसार ये वृहत्क्षण के पुत्र थे।

गुरुधि--दे० 'गुरु'।

गुरुभार–गरुड़ के पुत्र का नाम।

गुरुवीर्य--दे० 'गुरु'।

गुर्वक्ष--वशि दैत्य के एक पुत्र का नाम।

गुलाम चिश्ती--एक प्रसिद्ध सूफी विचारक तथा पहुँचे हुए फ़कीर जो हिंदी के प्रसिद्ध कवि मलिक मुहम्मद जायसी के गुरु थे। जायसी ने इनके विषय में लिखा है—"वेइ मखदूम जगत के हउँ उनके घर बाँद।"

गुह–१.(निषाद) प्रसिद्ध राम-भक्त निषादराज गुह जो शृंगवेरपुर के स्वामी थे। बनवास के समय इन्होंने राम, सीता और लक्ष्मण को गंगा पार कराया था। नाव पर बैठाने के पूर्व इन्होंने राम के चरण धोये थे। राम के चित्रकूट निवास के समय भरत जब उनसे मिलने जा रहे थे उस समय उनको राम का शत्रु समझकर ये युद्ध करने को प्रस्तुत हो गये थे। इन्होंने द्रुमिदा नामक एक राक्षस का वध किया था जो अयोध्यावासियों को दुख देने के लिए भेजा गया था। २. कार्तिकेय का नामांतर।

गहवासिन्--वैवस्वत मन्वंतर के वाराह कल्पांत में शंकर के एक अवतार का नाम। इनका स्थान हिमालय के महोत्तुंग शिखर पर है। उतथ्य, वामदेव, महायोग तथा महाबल नाम के इनके चार पुत्र थे।

गुहिल--एक यवन राजा का नाम। ये न्यूह वंश में उत्पन्न हुए थे। इनके पुत्र का नाम वाष्यकर्मा था। इन्होंने ५० वर्ष तक राज्य किया।

गुह्यकपति--दे० 'कुबेर'।

गृत्समद--१. एक ऋषि का नाम। यह इनका अपना तथा इनके कुल, दोनों का नाम है। ये आंगिरस् कुलोत्पन्न शुनहोत्र के पुत्र थे। विष्णु पुराण के अनुसार ये चंद्रवंशी पुरुरवा के वंशोत्पन्न एक क्षत्रिय थे। प्रसिद्ध शौनक ऋषि जिन्होंने चारो वर्णों की व्यवस्था की, इन्हीं के वंशज थे। वायु पुराण के अनुसार शुनक इनके पुत्र थे और शौनक इनके पौत्र। ये इतने पराक्रमी थे कि इनको देखकर लोगों को इंद्र का भ्रम हो गया अतएव लोग इन्हें उठा ले गये, पर इंद्र ने इन्हें छुड़ाया और इनका नाम गृत्समद रक्खा। अनुक्रमणी के अनुसार ये एक आंगिरस् थे जो भृगु के कुल में उत्पन्न हुये थे। महाभारत के अनुसार ये हैहयराज वीतहव्य के पुत्र थे जो ब्राह्मण हो गये थे। महाभारत की एक कथा के अनुसार एक बार इन्होंने इंद्र का रूपधारण किया और इंद्र को असुरों के बंधन से निकल भागने का अवसर दिया। कुछ परिवर्तन के अनुसार यह कथा कई पुराणों में मिलती है। असुरों द्वारा बद्ध होने पर एक मंत्र-पाठ द्वारा इन्होंने मुक्ति पाई जिसमें इन्होंने दिखाया था कि इंद्र एक दूसरे व्यक्ति हैं। ऋग्वेद के द्वितीय मंडल में इनके अनेक मंत्र हैं।

गृध्र–श्री कृष्ण के एक पुत्र जो उनकी मित्रविदा नाम की स्त्री से उत्पन्न हुए थे।

गृध्रिका--१. कश्यप की एक कन्या का नाम जो तमश की स्त्री थीं और जिन्होंने गृध्रों की सृष्टि की थी।

गृहपति--विश्वानर नामक एक मुनि-पुत्र का नाम। इनकी माता का नाम शुचिष्मती था। विश्वानर सपत्नीक नर्मदा तट पर नर्मपुर नामक स्थान में रहते थे। ये बड़े कर्मनिष्ठ तथा वेदाध्ययन में रत रहते थे। पर इनके कोई पुत्र नहीं था। स्त्री के आग्रह से इन्होंने काशी जाकर वीरेश्वर महादेव की उग्र तपस्या की। उन्होंने प्रत्यक्ष दर्शन देकर वर दिया और इन्हें गृहपति नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। बालक के नवें वर्ष में नारद ने आकर कहा कि विद्युत अथवा अग्नि इस बालक को घातक है। इन्होंने शिव की कठिन तपस्या आरंभ की। शिव ने प्रसन्न हो इन्हें वर दिया और अग्नि की पदवी दी। इनका स्थापित किया हुआ शिवलिंग काशी में अग्नीश्वर नाम से प्रसिद्ध है। २. दे० 'अग्नि'।

गो--१. राजा ब्रह्मदत्त की स्त्री का नाम। ये देवल ऋषि की कन्या थीं। इनको सरस्वती अथवा सन्नत भी कहते हैं। २. मानस नाम के पितरों की कन्या का नाम। ३. शमीक ऋषि की स्त्री। प्रसिद्ध शृंगी ऋषि इन्हीं के पुत्र थे। ४. शुक्र की स्त्री का नाम।

गोकर्ण--१. वैवस्वत मन्वंतर के सातवें वाराह कल्प में गोकर्ण नामक शिव का एक अवतार हुआ था। इनके चार पुत्र थे—काश्यप, उशनस्व, च्यवन तथा वृहस्पति। २. दे० 'आत्मदेव'। ३. काश्मीर के एक राजा का नाम। ये गोपादित्य के पुत्र थे। इन्होंने गोकर्णेश्वर महादेव की स्थापना की थी। इन्होंने ५८ वर्ष तक राज्य किया था।

गोकुलनाथ (गोस्वामी)--प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य, कवि तथा मत प्रचारक। ये विट्ठलनाथ के सात पुत्रों में से एक तथा वल्लभाचार्य के पौत्र थे। ये स्वयं भी एक कवि तथा विद्वान् थे। कहा जाता है कि 'दो सौ बावन

वैष्णवों की वार्ता' और 'चौरासी वैष्णवों की वार्ता' के संकलन या प्रणयन इन्होंने ही कराये थे। बिना जाति-पाँति का विचार किये केवल हरिभक्ति के आधार पर ही ये दीक्षा दिया करते थे। एक बार इन्होंने 'कान्हा' नामक एक भंगी को श्रीनाथ जी के मंदिर में गले लगाया था, जिससे उनका दर्शन पा सके।

गोखल–विष्णु के अनुसार व्यास की शिष्य-परंपरा में वेदमित्र के शिष्य। मतांतर से ये देव मित्र के पुत्र थे। भागवत में इनका नाम गोखल्य लिखा हुआ है।

गोखल्य–शाकष्य ऋषि के शिष्य का नाम। इन्होंने उनसे ऋग्वेद की एक शाखा का अध्ययन किया था। दे० 'गोखल'।

गोणीपति–१. अंगिरा कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम। २. अत्रि कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।

गोतम (गौतम) –शतपथ ब्राह्मण के अनुसार सप्तऋषियों में से एक ऋषि और न्याय दर्शन के प्रणेता। ये एक धर्मशास्त्र के भी रचयिता हैं, जिसका नाम गर्ग संहिता हैं। इसका संपादन स्टेज़नर नामक एक पाश्चात्य विद्वान् ने किया है। इन्हें गौतम भी कहते हैं। पंच कन्यायों में से प्रथम अहिल्या इनकी ही स्त्री थीं। चंद्रमा और इंद्र से उनका अवैध संबंध प्रसिद्ध है। दे० 'चंद्रमा', 'इंद्र' तथा 'अहिल्या'।

गोदावरी–दक्षिण प्रान्त की एक पवित्र नदी का नाम।

गोधन–दे० 'गोवर्धन'।

गोपति–१. कश्यप तथा प्राध के एक पुत्र का नाम। २. पांचाल देश के एक राजा का नाम। भारतयुद्ध में ये पांडवों के पक्ष में थे। ३. राजा शिवि के पुत्र का नाम। ४. विश्वभुज नामक अग्नि का नामांतर। इनकी स्त्री का नाम नदी था।

गोपानंद–एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त तथा नाभा जी के यजमान।

गोपन–एक गोत्रकार का नाम। ये अत्रि के कुल में उत्पन्न हुये थे।

गोपवन आत्र य–एक सूक्तद्रष्टा का नाम।

गोपा–सिद्धार्थ या बुद्ध की पत्नी। राहुल नामक एक पुत्र उत्पन्न होने पर गौतम इन्हें छोड़ कर विरक्त हो गये थे। यशोधरा इन्हीं का नाम है। मैथिलीशरण के 'यशोधरा' नामक खण्ड काव्य की नायिका ये ही हैं।

गोपाजी–एक प्रसिद्ध हरिभक्ति परायणा महिला। इनका निवास संभवतः नाभाजी के आस-पास था।

गोपाल–१. एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त जो नागूजी के पुत्र थे। नाभाजी के अनुसार ये एक दिगन्त वैष्णव आचार्य तथा असंख्य भक्तों के पालक हुए। २. जयपुर नामक स्थान के रहनेवाले एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। ये ऐसे भक्तों में थे जिनके विषय में भगवान् ने स्वयं कहा है कि भगवान् की पूजा से अधिक महत्वपूर्ण भक्तों की पूजा का है। ये इतने क्षमाशील थे कि किसी ने इनके एक गाल पर एक थप्पड़ मारा तब दूसरा गाल दिखाकर इन्होंने कहा यह तो इस कृपा से वंचित रह गया। (भक्तमाल में गोपाल नाम के कुल छः भक्तों के उल्लेख हैं) ३. सलखान नामक स्थान के रहने वाले एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त।

गोपाल जी (ग्वाल)–एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। ये चेता के रहनेवाले थे।

गोपाल भट्ट–महात्मा व्यंकट भट्ट के पुत्र, प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। ये चैतन्य महाप्रभु के प्रधान शिष्यों में से एक थे। सर्वस्व त्याग कर वृन्दावन में इन्होंने निवास किया। कहा जाता है कि इनकी सेवा वाली शालिग्राम की मूर्ति में से ही वैशाखी पूर्णिमा को राधारमण की सुंदर मूर्ति प्राप्त हुई जिसे इन्होंने मंदिर में स्थापित किया, जो अभी तक विद्यमान है।

गोपल भक्त–एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। काशी के पास बबुलिया नामक गाँव के रहने वाले थे।

गोपाली–१. एक अप्सरा का नाम। गार्ग्य ऋषि ने इससे विवाह कर कालयवन नामक महापराक्रमी पुत्र उत्पन्न किया था, जिसने यदुवंश का नाश किया। दे० 'गार्ग्य' तथा 'कालयवन'। २. एक प्रसिद्ध हरिभक्तिपरायण महिला। इन्हें नाभाजी ने यशोदा का अवतार माना है।

गोपीनाथ (पंडा)–एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। इन्होंने चारों धाम में हरिभक्ति का प्रचार किया था।

गोभानु–राजा वह्नि के पुत्र और तुर्वसु के पौत्र। हरिवंश के अनुसार ययाति के शाप से इनके वंश का यह नाम हो गया।

गोभिल–१. एक गोत्रकार ऋषि जो वत्समित्र के शिष्य तथा कश्यप कुलोत्पन्न एक प्रसिद्ध आचार्य थे। इनके द्वारा रचित कई ग्रंथ प्रसिद्ध हैं। जैसे—गोभिल गृहसूत्र, गोभिल गृह कारिका तथा गोभिल परिशिष्ट इत्यादि। गोभिल को हेमाद्रि ने नारायणीय तथा कौथुमी शाखा का गोत्रकार माना है। २. कुबेर के एक दूत का नाम। एक बार विमान से यह आकाशमार्ग से यात्रा कर रहा था, उस समय इसने सत्यकेतु की कन्या तथा उग्रसेन की स्त्री पद्मावती को जल-क्रीड़ा करते हुए देखा। पद्मावती असाधारण सुंदरी थी। उसके सौंदर्य से यह मोहित हो गया और उग्रसेन का रूप धारण करके एक वृक्ष के नीचे बैठ गया। इसे देखकर पद्मावती भी कामवश होकर पतित हुई।

गोमती–अवध प्रांत की एक नदी का नाम।

गोमुख–मातलि के पुत्र का नाम। मातलि इंद्र का विमान वाहक था और गोमुख इंद्र-पुत्र जयंत का सारथि।

गोरख–(गोरखनाथ) नाथ संप्रदाय के संस्थापक, एक महान योगी। इनके गुरु मत्स्येन्द्र (मछिंदरनाथ) थे। एक बार हिमालय स्थित वीरसिंह नगर पर कृष्णांश ने चढ़ाई की थी उस समय गोरख ने उस नगर की रक्षा की। वहाँ के राजा के छोटे भाई प्रवीर और कृष्णांश में घोर युद्ध हुआ। प्रवीर के पक्ष के सभी वीरों को गोरख ने संजीवनी मंत्र से जीवित कर दिया जिससे कृष्णांक को विजय प्राप्त न हो सकी। फिर गोरख को प्रसन्न करके उन्होंने इनकी सब विद्या सीख ली। गुरु गोरख ज्ञानाश्रयी शाखा के जन्मदाता माने जाते हैं। इसी शाखा में हिंदी साहित्य में निर्गुणपंथी कई कवि आते हैं। इसी पंथ के निर्माण में नाथ पंथ का बहुत बड़ा श्रेय है। गोरखनाथ के संप्रदाय में जाति-पाँति का विचार नहीं होता था। यह एक प्रकार से मानव मात्र का धर्म था।

गोरखनाथ के समय के विषय में विद्वानों में मतभेद है। 'नाथ संप्रदाय' नामक अपनी पुस्तक में श्री हजारी प्रसाद जी द्विवेदी इनका समय विक्रम सं० की दसवीं सदी मानते हैं। इनकी जाति और जन्म स्थान के विषय में भी निश्चित मत नहीं है। द्विवेदी जी का अनुमान है कि गोरखनाथ जाति के ब्राह्मण थे और ब्राह्मण वातावरण में पले थे। इनके गुरु मत्स्येन्द्र कभी बौद्ध साधक थे। गोरखनाथ के नाम से २८ संस्कृत ग्रंथ प्रसिद्ध हैं, जिनमें अमनस्क, अमरौघशासनम् गोरक्ष पद्धति, गोरक्ष संहिता, तथा सिद्ध सिद्धान्त पद्धति बहुत महत्वपूर्ण हैं। हिंदी में भी गोरखनाथ की कई पुस्तकें मिलती हैं। डा० बड़थ्वाल की खोज से ४० पुस्तकों का पता चला है। 'सबदी' को वे सबसे अधिक प्रामाणिक मानते हैं यद्यपि सबसे अधिक प्रचलित 'गोरखबोध' है। शंकराचार्य के बाद भारत में इतना महिमावान पुरुष नहीं हुआ। नाथ संप्रदाय किसी न किसी रूप में महाराष्ट्र प्रदेश में कर्नाटक में अब भी प्रचलित है।

गोलम–एक गंधर्व योद्धा का नाम। लगातार १५ वर्षों तक बालि से युद्ध करने के बाद यह वीरगति को प्राप्त हुआ।

गोवर्धन–ब्रज में स्थित गोकुल के समीप के एक प्रसिद्ध पहाड़ का नाम। व्रजवासी पहिले इंद्र की पूजा करते थे। कृष्ण ने इंद्र की पूजा छोड़ गोवर्धन की पूजा करने की सलाह दी। इससे अप्रसन्न हो इन्द्र ने व्रज को डुबाने के लिये मूसलाधार वर्षा की। गोकुल में त्राहि-त्राहि मच गई। तब भगवान कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को अपने बायें हाथ की छिगुनी पर उठा लिया, जिससे एक भी बूंद पानी व्रजवासियों के ऊपर नहीं पड़ा। अन्त में इन्द्र को हार मान लेनी पड़ी। इसी से कृष्ण का एक नाम गिरधर पड़ा।

गोवर्धनाचार्य–एक प्रसिद्ध संस्कृत कवि। गीतगोविंदकार जयदेव ने इनका उल्लेख किया है। 'आर्या सप्तशती' नामक इनका प्रसिद्ध ग्रन्थ है। इनके पिता का नाम नीलाम्बर था। इनके एक शिष्य उदयन थे जो संभवतः नैयायिक उदयनाचार्य थे।

गोवासन–एक क्षत्रिय वीर जो शैब्य नाम से प्रसिद्ध हैं। भारत युद्ध में वे कौरवों के पक्ष से लड़े थे।

गोविंद–१. एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त तथा कथावाचक। २. एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। ये मथुरा-मंडल के प्रसिद्ध भक्तों में से एक थे। ३. एक प्रसिद्ध मध्यकालीन वैष्णव भक्त। ४. दे० 'विष्णु'।

गोविंद (दास)–रामानंदी संप्रदाय के एक प्रमुख भक्त तथा प्रचारक। ये बाबा पैहारी जी के प्रधान शिष्यों में से एक थे। नाभा जी इनके गुरु अग्रदास जी के गुरुभाई थे।

गोविंद गोस्वामी--गोस्वामी विट्ठलनाथ जी के सात पुत्रों में से एक पुत्र जो प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य तथा मठाधीश थे। गोस्वामी जी के सातो पुत्रों ने अलग-अलग गद्दियाँ स्थापित कीं। दे० 'विट्ठलनाथ'।

गोविंद ठक्कर--काव्यप्रकाशकार मम्मट के समकालीन एक प्रसिद्ध आचार्य। ये अलंकारशास्त्री थे। चंद्रदत्त मैथिलकृत भक्तमाला में इनको काव्य-प्रदीप का रचयिता कहा गया।

गोविंददास--एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। ये नाभा जी के समकालीन (संभवतः उनके शिष्य) थे। इन्हें पूरी भक्तमाल कंठ थी जिसका ये नित्य परायण करते थे। भक्तमाल पूरा होने के बाद नाभा जी ने एक छप्पय उनके विषय में भी लिखा है।

गोविंद ब्रह्मचारी--एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। इन्होंने चारो धाम में हरि-भक्ति का प्रचार किया।

गोविंद शर्मन्--भास्करांश निंबादित्य के पिता का नाम।

गोविंद स्वामी--प्रसिद्ध 'अष्टछाप' के आठ कवियों में से एक कवि। ये महाप्रभु वल्लभाचार्य के शिष्य, अनन्य हरिभक्त तथा उच्चकोटि के ब्रजभाषा-कवि थे।

गोवृषध्वज--कृपाचार्य का नामांतर। दे० 'कृप' तथा 'कृपी'।

गोशर्य--ऋग्वेद में इनका उल्लेख ऋषि कण्व, पक्थ तथा वसुदस्यु के साथ हुआ है।

गोश्रु जाबाल--एक यज्ञकर्ता ऋषि का नाम। ये सुदक्षिण क्षौम् प्राचीन शालि तथा शुक्र जाबाल के समकालीन थे।

गोष्ठायन--एक गोत्रकार ऋषि।

गोसू--एक प्रसिद्ध हरिभक्त तथा कथावाचक।

गोहिल–गिल्होत वंश के आदि पुरुष का नाम। ये सूर्यवंशी राजा शिलादित्य के पुत्र थे। इनके पिता शिलादित्य युद्ध में मारे गये। उस समय इनकी माता पुष्कलावती गर्भवती थीं और वे भाग कर पर्वत की ओर जा छिपीं। वहीं गुहा में इनका जन्म हुआ। इसीलिए इनका नाम गोहिल हुआ।

गौडिनि--एक गोत्रकार ऋषि।

गौतम आंध्र--वायुपुराण के अनुसार ये शिव स्वामी के पुत्र थे।

गौतम आरुणि--एक ऋषि। ब्रह्मज्ञान के संबंध में इनका वशिष्ठ के साथ संवाद हुआ था।

गौतम कुष्मांड--कक्षीवत की संतति का यह साधारण नाम हैं। वायु पुराण में कूष्मांड के स्थान में कूष्मांग पाठ हैं। कूष्मांग को देव सदृश मानकर गृहस्थ के लिये नित्य तर्पण का विधान है।

गौतम स्मृति--अष्टादश स्मृतियों में से एक। इसके रचयिता गौतम ऋषि हैं।

गौतमी--अश्वत्थामा की माता तथा द्रोणाचार्य की स्त्री का नाम।

गौरदास--एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। ये कील्ह जी के शिष्य थे।

गौरमुख--१. उग्रसेन के उपाध्याय। सांब के साथ सूर्य के संबंध में इनका संवाद हुआ था। २. शमीक ऋषि के शिष्य। ३. एक राजा। इनके पास चिंतामणि थी, जिसकी सहायता से इन्होंने सुप्रतीक पुत्र दुर्जय की सैन्य समेत मेहमानी की थी। दुर्जय ने लोभवश इनसे चिंतामणि चाही पर इन्होंने देना अस्वीकार कर दिया। तब दुर्जन से इनका भीषण युद्ध हुआ, जिसमें इनका सर्वस्व नाश हुआ।

गौर वर्मन--अथर्ववेद के आचार्य परिहर का पुत्र। ये बौद्ध नेता थे। इन्होंने गौड़वंश में राज्य किया।

गौर वाहन--पांडवों के समय के एक राजा।

गौर वीति--अंगिरस् कुलोत्पन्न एक गोत्रकार तथा प्रवर का नाम।

गौर शिरस्--एक प्राचीन ऋषि का माम।

गौरि--दे० 'पार्वती'।

गौरिक--मांधाता का मौलिक नाम। वायु के अनुसार युवनाश्व के पुत्र का नाम।

गौरिवीति--एक सूक्तद्रष्टा का नाम। यह शक्ति के पुत्र थे। एक मत से पाराशर और ये एक ही थे।

गौरी--१. मांधता की माता का नाम। मत्स्य के अनुसार यह अंतिनार की कन्या थीं। २. देवकी का नामांतर। ३. दे० 'सीता'। ४. हरिभक्ति-परायण मध्यकालीन एक प्रसिद्ध महिला। ५. एक प्रसिद्ध राग। सूर आदि कवियों ने इसका प्रयोग प्राय: किया है। ६. दे० 'उमा,।

गौरीस--दे० 'शिव'।

ग्रंथिक--विराट के यहाँ अज्ञातवास के समय नकुल ने यह धारण किया था।

ग्रसन--तारकासुर के सेनापति का नाम। यह तारकासुर और इंद्र के युद्ध के समय उपस्थित था। तारकासुर के युद्ध के अनंतर यह विष्णु के हाथ से मारा गया।

ग्रामद--भृगु कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।

ग्राम्यायणि--भृगु कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।

ग्रावा--कश्यप की एक स्त्री तथा दक्ष की एक कन्या का नाम।

ग्लावमैत्रेय--बकदाल्म्य का नामांतर।

ग्वाल भक्त--एक प्रसिद्ध अहीर भक्त। एक बार बन में भैंसे चराते हुए इन्हें एक साधु मिले। भैंसे वहीं छोड़कर ये घर चले आये और घर में कह दिया कि उन्हें एक भिक्षुक को दे आये हैं जो घी-सहित दे जायेंगे। उधर भैंसों को चोर हाँक कर चले गये। परन्तु दिवाली के दिन सब भैंसे वहाँ पहुँच गईं। उसी दिन चोरों ने इन भैंसों के गले में चाँदी की हँसुली बाँधी थी। वह हँसुली भी साथ में चली आई। इस प्रकार हरि ने अपने भक्त की सहायता की।

घंट--वसिष्ट कुलोत्पन्न एक ब्राह्मण। इन्होंने बेलपत्रों से शिव की १०० वर्ष तक पूजा की थी।

घंटाकर्ण--शिव के एक गण का नाम। यह शाप का प्रभाव से मनुष्य योनि में उज्जयिनी में प्रकट हुआ और विक्रम की सभा के सब पंडितों को परास्त करने की महत्वाकांक्षा से शिव की उग्र तपस्या करने लगा। अंत में इसे वर मिला कि कालिदास को छोड़कर सब तुमसे परास्त होंगे। ऐसा ही हुआ। इसने शिव से कालिदास को भी परास्त करने का वर चाहा था। शिव ने यह स्वीकार नहीं किया। इसलिए इसने भविष्य में शिव का नाम न लेने कीं प्रतीज्ञा की। सब पंडितों को परास्त करने के बाद इसने कालिदास को चुनौती दी। कालिदास ने इससे यह कहलाया कि यदि बड़े छंदों में यह शिव की स्तुति बनाकर पाठ करे तो मैं हार मान लूँगा। वह जानते थे कि यह शिव का नाम न लेने की प्रतीज्ञा कर चुका है। पर घंटाकर्ण ने ऐसे छंद बनाकर सबको चकित कर दिया जिसमें शिव का नाम आये बिना ही उनकी पूरी अस्तुति विद्यमान थी। इसके प्रभाव से वह शाप मुक्त हुआ और शिव ने बुलाकर उसे अपने गणों में स्थान दिया। हरिवंश में कुछ भिन्न रूप में घंटाकर्ण की कथा वर्णित है। यह बड़ा शिव-भक्त और विष्णु का द्रोही था। विष्णु का नाम इसके कानों में न पड़े, इसलिए इसने अपने कानों में घंटे लटका रक्खे थे। इसी से इसका नाम घंटाकर्ण पड़ा। शिव से मुक्ति की उपासना करने पर दूतों ने विष्णु की उपासना करने को कहा। ऐसा ही करने पर इसकी मृत्यु हुई। यह स्कंद का पार्षद था।

घंटामुख--दे० 'विभावसु'।

घंटेश--मंगल के पुत्र का नाम।

घटकर्पर--महाराजा विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नों में से एक। ये एक कवि तथा नीतिशास्त्र-विशारद थे। कूट और यमक अलंकारों में ये सिद्धहस्त थे। इन्होंने राजसभा में यह चुनौती दी थी कि यदि कोई इन्हें यमक में परास्त कर देगा तो ये उसकी दासता स्वीकार कर लेंगे। महाकवि कालिदास ने 'नलोदय' नामक काव्य लिखकर इन्हें परास्त किया। इनका रचित २२ श्लोकों का 'घटकर्पर' नामक काव्य तथा नीति-साहित्य का 'नीतिसार' ग्रंथ प्रसिद्ध है। 'राक्षस' नामक एक और ग्रंथ इनका माना जाता है। इनके 'घटकर्पर' का अनुवाद जर्मन भाषा में प्रसिद्ध जर्मन प्राच्यवेत्ता डूर्श ने किया है। घटकर्पर इनका कल्पित नाम या छद्म है।

घट जानुक--एक ऋषि का नाम।

घटोत्कच--द्वितीय पांडव भीम के एक पुत्र का नाम इसकी माता हिडिंबा एक राक्षसी थी। जन्मकाल में इसका मस्तक घटक के सदृश्य था और सिर केश रहित था। इससे इसका नाम घटोत्कच (घट+उत्कच) पड़ा। यह महापराक्रमी योद्धा था। इसका शरीर पर्वताकार था। यह देखने में अत्यंय विकराल लगता था। माता-पिता का बड़ा भक्त था। उत्पन्न होते ही इसने माता-पिता के चरण छुये थे। घटोत्कच का रथ आठ चकों का था और उसमें १०० घोड़े जुते थे। इसके रथ में गृध्र-पक्ष का झंडा था। इसका सारथी बिरूपाक्ष नाम का राक्षस था। यह रात्रि-युद्ध तथा माया-युद्ध में पारंगत था। अलंबुश नामक राक्षस को मारकर इसने दुर्योधन को भेंट किया था। महाभारत युद्ध में यह पांडवों की ओर से लड़ा था। दुर्योधन के वीर इसके द्वारा आहत होकर त्राहि-त्राहि करने लगे। अंत में विवश होकर कर्ण ने अर्जुन को मारने के लिये जो अमोघ शक्ति प्राप्त की थी उसे इस पर चलाया। इसे मारकर शक्ति अपना तेज सब दिशाओं में फैलाती हुई इंद्रलोक चली गई। इस शक्ति के रहते अर्जुन की विजय में आशंका थी। इसीलिये पांडवों की ओर से घटोत्कच को बुलाया गया था।

घटोदर--रावण-पक्षीय एक राक्षस का नाम।

घन--लंका के एक राक्षस का नाम।

घननाद--दे० 'मेघनाद'।

घनश्याम—(गोस्वामी)—प्रसिद्ध मठाधीश वैष्णव आचार्य तथा पुष्टिमार्गीय कृष्णोपासना पद्धति के प्रचारक। पुष्टिमार्गीय पद्धति के आदि प्रचारक महाप्रभु वल्लभाचार्य के पौत्र तथा गोस्वामी विट्ठलनाथ जी के पुत्र।

घमंडी—प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। वृन्दावन-निवासी विख्यात हरिसेवकों में से एक। ये महाप्रभु चैतन्य के समकालीन तथा उनकी शिष्यमंडली में से थे।

घर्मतापस—एक सूक्तद्रष्टा ऋषि का नाम।

घर्मसौर्य—एक मंत्रद्रष्टा का नाम।

घुश्मेश्वर शिव के एक अवतार का नाम। इसका उपलिंग व्याघ्रेश्वर नाम से प्रसिद्ध है। यह शिव के बारहवें अवतार थे।

घूटी—एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। नाभा जी ने प्रसिद्ध वैष्णव भक्तों में इनका उल्लेख किया है।

घृणिका—देवयानी की दासी का नाम।

घृणि—१. स्वायंभुव मन्वंतर में मरीचि के पुत्रों में से एक का नाम। दे० 'मरीचि'। २. घुंघुमान के पुत्र का नाम।

घृतकौशिक—१. पाराशर्यायण के शिष्य का नाम। इनके शिष्य कौशिकायनि थे। २. दे० 'विश्वामित्र'।

घृतपृष्ट—भागवत के अनुसार प्रियव्रत और बर्हिष्मती के पुत्र। यह क्रौंच द्वीप के अधिपति थे। इन्होंने अपने द्वीप के सात भाग किये थे—आम, मधुरुह, मेघवृष्ट, सुधामा, भ्राजिष्ट, लोहितार्ण तथा वनस्पति।

घृताची—स्वर्ग की एक अप्सरा का नाम। यह अत्यत सुंदरी थी। इसे देखकर वेदव्यास मोहित हो गये थे, जिसके फलस्वरूप शुकदेव का जन्म हुआ। च्यवन ऋषि के पुत्र प्रमिति ने भी घृताची से संबंध किया जिसके फल से इनको कुरु नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। एक बार प्रसिद्ध ऋषि भरद्वाज ने अपने आश्रम के समीप घृताची को गंगा में स्नान करते देखा। उस पर मोहित होने से इनका वीर्यपात हो गया जिसको इन्होंने एक द्रोणि (मिट्टी का एक बर्तन) में रख दिया जिससे प्रसिद्ध धनुर्धर द्रोणाचार्य की उत्पत्ति हुई। महापेय (कन्नौज) के राजा कुशनाभ ने भी घृताची से विवाह किया जिससे १०० कन्यायें हुईं। घृताची उत्पत्ति कश्यप की स्त्री प्राधा से हुई थी।

घृताशिन्—एक ऋषि का नाम। इन्होंने गोपी मोहन कृष्ण की तपस्या की थी जिससे इनको एक सुंदर गोपी का जन्म मिला था।

घृतेयु—रौद्राश्व के पुत्र का नाम।

घोटम—एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। पहले यह एक डाकू थे। कालांतर में ज्ञान प्राप्त कर एक पहुंचे हुये भक्त हो गये।

घोर—हिरण्याक्ष की सेना का एक असुर।

घोरअंगिरस्—एक मंत्रद्रष्टा का नाम। छांदोग्य के अनुसार इन्होंने कृष्ण को ब्रह्मज्ञान का उपदेश दिया था। ये अंगिरा ऋषि के पुत्र थे।

घोरवर्म—परिहार के पुत्र का नाम।

घोष—कक्षिवान की कन्या घोषा के पुत्र का नाम।

घोषा—कक्षिवान की कन्या। इसे कुष्ट रोग था, अतएव दीर्घकाल तक अविवाहित रूप में पिता के यहाँ रही। अंत में इसके पिता ने अश्विनीकुमारों को प्रसन्न किया जिन्होंने इसे रोगमुक्त किया और इसका विवाह हुआ। इससे घोष और सुहस्त्य नाम के दो पुत्र हुये।

घ्राण—तुषित देवों में से एक का नाम।

चंचला—१. एक गोपी। राधा की सखी। २. एक वेश्या का नाम। यह विष्णु-भक्त थी जिसके प्रभाव से बैकुंठ गई।

चंचु—विष्णु, वायु तथा भविष्य पुराण के अनुसार यह हरितपुत्र थे। भागवत में इनका नाम चंप है। भविष्य पुराण के अनुसार इन्होंने ३००० वर्षों तक राज्य किया था और चंपा नामक नगरी बसाई थी।

चंचुलि—विश्वामित्र-कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।

चंड—१. एक प्रसिद्ध राक्षस का नाम। शुंभ-निशुंभ नामक विख्यात राक्षस बंधुओं का यह सेनापति था। चंड और मुंड दोनों भाई दुर्गा के हाथ से मारे गये थे और इसी से उनका नाम चंडी, चंडिका तथा चंडा आदि पड़ा। २. त्रिपुरासुर के एक अनुयायी का नाम। जिस समय त्रिपुर शिव के साथ युद्ध कर रहा था, उस समय इसने नंदी के साथ युद्ध किया था। ३. एक व्याध का नाम। शिवरात्रि के दिन शिव पर बेलपत्र चढ़ाने के कारण इसकी मुक्ति हुई। ४. एक प्रसिद्ध चारण भक्त। ईश्वर का गुणगान इसका एक मात्र कार्य था।

चंडकौशिक—१. कक्षीवान राजा के पुत्र का नाम। उनके प्रसाद से राजा वृहद्रथ को जरासंध नामक पुत्र हुआ था। २. एक प्रसिद्ध संस्कृत नाटक जिसके आधार पर भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने अपने 'सत्यहरिश्चद्र' नाटक की रचना की थी।

चंडतुंडक—गरुड़ के पुत्र का नाम।

चंडबल—राम की सेना के एक विख्यात बानर सेनापति का नाम। कुंभकर्ण से युद्ध करता हुआ यह वीरगति को प्राप्त हुआ।

चंद भार्गव—महर्षि च्यवन के वंशज एक ऋषि का नाम। ये जनमेजय के सर्पयज्ञ के होता था।

चंडमुंड—दे० 'चंड'।

चंडश्री—मत्स्य पुराण के अनुसार ये विजय के पुत्र थे। इनके नामांतर चंद्रविज्ञ, चंद्रश्री तथा दंसश्री आदि हैं।

चंडा—दे० 'चंड'। दुर्गा का एक नामांतर है।

चंडाश्व—कुवलयाश्व के पुत्र का नाम। इनका नामांतर भद्राश्व है।

चंडिका—दुर्गा तथा उमा का पर्याय है। नंददास ने 'दशम स्कंध' में, इस नाम का योगमाया के लिए प्रयोग किया है।

चंडी—१. दुर्गा का नाम। दे० 'चंड'। २. महर्षि उद्दालक की पत्नी का नाम।

चंडीश—रुद्र गणों में से एक का नाम। गणों ने जब दक्ष प्रजापति का यज्ञ विध्वंस किया था तब उन्होंने पूषा नामक ऋत्विज को बाँधा था। नामांतर-चंडी, चंड, चंडेश्वर, तथा चंदघंट आदि।

चंडीस–दे० 'शिव'।

चंडोदरी–अशोक वाटिका में वंदिनी सीता की रक्षा के लिये नियुक्त एक राक्षसी का नाम।

चंदनि–एक गोपी। राधा की सखी।

चंद्र (चंद्रमा)–१. रात को प्रकाशित होने वाले एक ग्रह जो एक देवता के समान पूजे जाते हैं। चंद्रमा को लक्ष्मी का भाई भी कहा जाता है, क्योंकि दोनों की उत्पत्ति समुद्र-मंथन से मानी जाती है। चंद्रमा और राहु में शत्रुता है। इसी से राहु सदैव चंद्रमा को ग्रसता है। चंद्रमा की उत्पत्ति ब्रह्मा के मानस-पुत्र अत्रि से भी मानी गई है। कहा जाता है कि एक सहस्र वर्षों की तपस्या के बाद महर्षि अत्रि का वीर्य ही सोम में परिवर्तित हो गया। ब्रह्मा ने उसे अपने रथ पर रख लिया। चंद्रमा ने इसी रथ पर बैठ कर २१ बार पृथ्वी की प्रदक्षिणा की थी। इसी प्रदक्षिणा में उनका जो तेज क्षरित होकर पृथ्वी पर गिरा था वह औषधियों के रूप में संसार को निरोग करता है। कहा जाता है कि एक शत पद्म वर्ष तक चंद्रमा शिव की तपस्या में लीन रहे। इसी तपस्या से प्रसन्न हो शंकर ने चंद्र की कला को अपने मस्तक पर धारण किया था। चंद्रमा को एक राज्य भी मिला जो चंद्रलोक के नाम से प्रसिद्ध है। चंद्रमा ने दक्ष की कन्याओं से विवाह किया था, किंतु एक कथा के अनुसार रोहिणी से अधिक स्नेह रखने के कारण दक्ष ने उन्हें यक्ष्मा रोग से पीड़ित कर दिया था। दिन-दिन चंद्रमा के क्षीण होने पर देवताओं ने दक्ष से उन्हें क्षमा करने की प्रार्थना की। दक्ष ने कहा कि चंद्रमा को अपनी सभी पत्नियों से समानता का व्यवहार करना चाहिये। उसी दिन से चंद्रमा की कलायें एक पक्ष में क्षीण हो जाती हैं और एक पक्ष में शिव के मस्तक की कला को लेकर पूर्ण हो जाती हैं। चंद्रमा के गोले पर एक कालिमा दिखाई पड़ती है जिसे चंद्रमा का कलंक कहते हैं। इसके विषय में कई कथाएँ प्रसिद्ध हैं। कहा जाता है कि दक्ष से शापित होने पर चंद्रमा ने हिरन को अपनी गोद में बिठा लिया था। इसके अतिरिक्त देवों के गुरु बृहस्पति की पत्नी तारा से संभोग करने के कारण उनके शरीर में वह कलंक हो गया। तारा के गर्भ से 'बुध' की उत्पत्ति हुई। इन्द्र-अहिल्या व्यभिचार में मुर्गा बन कर इन्द्र की सहायता करने के कारण गौतम ने उन्हें मार दिया। वह घाव अभी तक कलंक के रूप में मौजूद है। चंद्रमा के निम्नलिखित पर्याय मिलते हैं :—इन्दु, सुधानिधि, कलानिधि, जैवात्रिक, शशि, सोम, अंज, अमीकर, छपाकर, विधु, हिमकर तथा हिमरोम आदि। दे० 'केतु' तथा 'अहिल्या'। ६. कश्यप की पत्नी के पुत्र। ३. दाशरथि राम के एक सुज्ञ नामक मंत्री के पुत्र का नाम।

चंद्रकला–१. सुबाहु की स्त्री। यह एक बार स्नान करने गई थी। वहाँ विक्रम का पुत्र माधव इस पर मोहित हो गया; पर इसने यह परामर्श दिया कि आप पक्षद्वीप वासी गुणाकर की कन्या सुलोचना से ब्याह कीजिये। उसने वैसा ही किया। २. एक गोपी। यह राधा की सखी थी।

चंद्रकांत–एक गंधर्व का नाम। इसकी कन्या का नाम सुतारा था।

चंद्रकांति–यह पूर्वजन्म में एक वारांगना थी जो पुण्य-फल से वाण की कन्या ऊषा हुई और अनिरुद्ध से इसका विवाह हुआ। अगले जन्म में यह जंबुक राजा की कन्या विजयैषिणी हुई।

चंद्रकेतु–१. हंसध्वज राजा का भाई। २. लक्ष्मण के पुत्र का नाम। ३. दुर्योधनपक्षीय एक राजा। यह कृपाचार्य का चक्ररक्षक था। भारतयुद्ध में यह अभिमन्यु के हाथ से मारा गया।

चंद्रगिरि–तारापीड के पुत्र का नाम।

चंद्रगुप्त (मौर्य)–मौर्य साम्राज्य का संस्थापक और भारतीय इतिहास का प्रथम सम्राट्। नंदवंश के नष्ट होने के बाद यह गद्दी पर बैठा। इसके जाति के विषय में मतभेद है। पाश्चात्य विद्वान् मुरा नाम की दासी (शूद्राणी) से इसका जन्म मानते हैं, किंतु भारतीय विद्वानों का मत है कि पिप्पलीकानन के क्षत्रिय वंश में इसका जन्म हुआ था। किन्हीं कारणों से इसका पिता नंद का सेनापति था जो बाद को बंदी कर लिया गया। चाणक्य की सहायता से नंदवंश का नाश कर इसने मौर्य वंश की नींव डाली थी। भविष्य पुराण के अनुसार यह काश्यप और बुद्धिसिंह का वंशज था। इसने यवन सेनापति सुकून (सेल्यूकस) को परास्त करके उसकी कन्या हेलेन से विवाह किया था। इसके पुत्र का नाम बिंदुसार था। लगभग ६० वर्षों तक इसने राज्य किया।

चंद्रचूड़–महादेव का पर्याय। मस्तक पर चन्द्रमा को धारण करने के कारण उनका यह नाम पड़ा।

चंद्रदेव–१. पांचाल के एक क्षत्रिय राजा का नाम। यह युधिष्ठिर का चक्ररक्षक था और युद्ध में कर्ण के हाथ से मारा गया। २. दुर्योधन-पक्षीय एक राजा जो युद्ध में अर्जुन के हाथ से वीरगति को प्राप्त हुआ।

चंद्रभानु–सत्यभामा द्वारा श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

चंद्रवर्मा–कांबोज देश के एक क्षत्रिय राजा का नाम।

चंद्रवाह–कुकुत्स्थ राजा का नामांतर।

चंद्रविज्ञ–भागवत के अनुसार विजय के पुत्र का नाम। दे० 'चंडश्री'।

चंद्रशर्मन्–मायापुरी के एक ब्राह्मण का नाम। यह अग्नि गोत्रज थे और इनके गुरु देवशर्मा थे। देवशर्मा की कन्या गुणवती इनकी स्त्री थीं।

चंद्रशेखर–पुवन के नाती तथा पोष्य के पुत्र का नाम।

चंद्रश्री–विष्णु पुराण के अनुसार विजय के पुत्र का नाम। दे० 'चंडश्री'।

चंद्रसावर्णि–चतुर्दश मनु का नाम।

चंद्रसेन–सिंहल द्वीप के राजा का नाम। ये रावण की महिषी मंदोदरी के पिता थे।

चंद्रहास–१. केरल देश के राजा सुधार्मिक के पुत्र। इनका जन्म मूल नक्षत्र में हुआ था। दरिद्रता सूचक इनके छः अँगुलियाँ थीं। शत्रुओं ने इनके पिता को मारकर इनकी माता के साथ सहवास किया। ये अनाथ हो गये। छिपा-कर एक दाई इनको बन ले गई। पर वह वहाँ स्वयं मर गई। बन में ये अकेले पड़े थे। संयोग से राजमंत्री उधर से जा निकले। शत्रुतावश मंत्री ने इन्हें मारना चाहा;

किंतु उसी का पुत्र मारा गया और ये बच गये। बड़े होने पर मंत्री की कन्या ने इन्हें देखा और इनके सुन्दर स्वरूप पर मुग्ध होकर इनके साथ विवाह कर लिया। २. केरल देश के मेधावी नामक एक राजा के पुत्र। जब ये बहुत छोटे थे तभी इनके माता-पिता स्वर्ग सिधारे। अपने पिता के मंत्री के यहाँ ये अनाथ की तरह रहते थे। देवर्षि नारद ने एक बार इन्हें शालिग्राम की एक मूर्ति दी और उसी की पूजा करने को कहा। उन्हें खिलाकर खाने का उपदेश देकर वे अंतर्ध्यान हो गये। तब से आजन्म इन्होंने ऐसा ही किया। कई बार ये घोर विपत्ति में पड़े। घातकों ने इनके प्राण लेने का भी आयोजन किया पर भगवान की कृपा से सर्वत्र इनकी रक्षा विचित्र प्रकार से होती रही। इनके महत्त्व को पहचानने पर अपने शत्रुओं में भी ये पूज्य हो गये। ३. श्रीकृष्ण के षोडश सखाओं में से एक। सर्वदा श्रीकृष्ण की सेवा में लीन रहने के कारण ये पूज्य कहे गये हैं।

चंद्रा–१. कृष्ण के समय की एक गोपी का नाम। २. वृषपति दानव की कन्या तथा शर्मिष्ठा की बहिन।

चंद्रावती–अनंगपाल राजा की कन्या तथा जयचंद्र (संयोगिता के पिता) की माता।

चंद्रावली–एक गोपी जो राधा की एक सखी थी। भारतेन्दु रचित चंद्रावली नाटिका की नायिका यही है।

चंद्राश्व–कुवलाश्व के पुत्र।

चंद्रोदय–राजा विराट के भाई।

चंपक मालिनी–१. चंद्रहास की स्त्री तथा कौतलंक देश के राजा की कन्या। २. दाशरथि राम के पुत्र कुश की स्त्री चंपिका की नौ कन्याओं में से एक का नाम।

चक–एक ऋत्विज का नाम। सर्प यज्ञ में इन्होंने उन्नेतृत्व नामक आर्त्विज्य कराया था। इनके साथ विशंग का उल्लेख है।

चकोर–सुनंदन के पुत्र का नाम। वायु, विष्णु तथा ब्रह्मांड में ये क्रम से सातकर्णि, चकोर शातकर्णि, तथा शातकर्णि कहे गये हैं।

चक्र–रावण की सेना के एक राक्षस योद्धा का नाम।

चक्रक–विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

चक्रदेव–एक यादव का नाम।

चक्रधनु–कपिल ऋषि का नामांतर।

चक्रधर्मन्–विद्याधर का नामांतर।

चक्रपाणि–१. कृष्ण का नामांतर। सिंधु नामक दैत्य के पिता का नाम। ३. एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त और प्रचारक।

चक्रबात–तृणावर्त नामक राक्षस का नामांतर।

चक्रमाली–रावण के एक मंत्री का नाम।

चक्र सुदर्शन–भगवान श्रीकृष्ण के एक हाथ का अस्त्र। यह फेंककर चलाया जाता था। श्रीकृष्ण ने इसी चक्र से शिशुपाल का वध किया था।

चक्रायण–उषस्त नामक मुनि के पिता का नाम।

चक्षुस् मानव–एक सूक्तद्रष्टा का नाम।

चक्षुस् सौर्य–एक सूक्तद्रष्टा का नाम।

चक्षु–१. छठवें मनु का नाम। भागवत के अनुसार यह सर्वचेतस् तथा आकृति के पुत्र थे। इनकी स्त्री का नाम नड्वला था। २. विष्णु पुराण के अनुसार ये पुरुजाक के पुत्र थे। भागवत के अनुसार अर्क तथा मत्स्य और वायु के अनुसार पृथु और दिक्ष ये सब एक थे।

चतुरंग–चित्ररथ अथवा रोमय राजा के पुत्र का नाम। ऋष्यश्रृंग ने पुत्रेष्ठि यज्ञ किया था जिसके फल-स्वरूप इनका जन्म हुआ। इनके पुत्र का नाम पृथुलाश्व था।

चतुरदास–एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। ये कील्ह जी के शिष्य थे।

चतुर्भुज–दे० 'विष्णु'।

चतुर्भुज (कीर्तननिष्ठ)–एक प्रसिद्ध वैष्णवभक्त, कीर्तनिया तथा कवि। ये हरिवंश जी के शिष्य तथा 'गोंडवाना' देश के रहनेवाले थे। उक्त स्थान में पहिले वैष्णवमत का अभाव था पर इनके प्रचार के फल से वहाँ के अधिकांश निवासी वैष्णव हो गये। यह स्थान भी तब से वैष्णवों के लिये एक तीर्थ सा हो गया।

चतुर्भुज–(नृपति) बिट्ठलनाथ जी के शिष्य तथा पुष्टिमार्ग के अनुयायी, एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त कवि। ये करौली के राजा थे। नाभाजी ने इस नाम के तीन व्यक्तियों के उल्लेख किये हैं। १. चतुर्भुज नृपति, २. चतुर्भुज मिश्र, जो भाषा दशमस्कंध भागवत के प्रणेता थे और ३. चतुर्भुज वैष्णव कवि, जिनकी कविता वल्लभीय मंदिरों में गाई जाती है। ये हरिवंश जी के शिष्य थे।

चतुर्भुज स्वामी–'अष्टछाप' के कवियों में से मथुरामंडल के एक विशिष्ट भक्त तथा कवि। ये महाप्रभु वल्लभाचार्य के शिष्यों में से एक थे। इनका विशेष वर्णन 'वार्तारहस्य' तथा वैष्णव वार्ताओं में मिलता है।

चतुर्मुख–ब्रह्मा का एक नामान्तर। दे० 'ब्रह्मा'।

चतुर्वेदिन्–काश्यप तथा आर्यावती के दस पुत्रों में से एक का नाम। सरस्वती ने इनको अपनी कन्या दी थी जिससे इनको १६ पुत्र हुये। कश्यप, भारद्वाज, विश्वामित्र, गोतम, जमदग्नि, वशिष्ट, वत्स, गौतम, पराशर, गर्ग, अत्रि, भृगु, अंगिरा, श्रृंगी, कात्यायन और याज्ञवल्क्य। ये सब गोत्रकार हुये।

चमस–एक महायोगी जो ऋषभ और जयंती के पुत्र थे। इन्होंने विदेह को तत्वज्ञान दिया था।

चमस जी–नाभादास जी के अनुसार एक प्रमुख भक्त। नवयोगीश्वरों में से एक। दे० 'योगीश्वर'।

चमहूर–एक विश्वदेव।

चयंदसेन–यह वृहत्कल्पांत इन्द्र थे। इन्होंने गौतम पत्नी अहिल्या से संबंध किया था।

चयहानि–एक कान्यकुब्ज ब्राह्मण ने आर्बुद शिखर पर ब्रह्मयज्ञ किया था, जिसके प्रभाव से उन्होंने चार क्षत्रिय निर्माण किये थे। चयहानि उनमें से एक थे।

चरक–एक महर्षि। यह एक महान् आयुर्वेद विशारद थे। चरक संहिता इनका प्रसिद्ध ग्रंथ है। इनके ग्रंथ के अंतसाक्ष्य से यह विदित होता है कि इनको यह विद्या अग्निवेश से मालूम हुई और उन को यह विद्या आत्रेय भरद्वाज से मिली थी। चरक को शेषनाग का अवतार

भी कहा गया है । ८वीं सदी में इनके ग्रंथ का अरबी में अनुवाद हुआ था ।

चरित्र भक्त–मथुरा-मंडल के विशिष्ट भक्त ।

चर्मवत–शकुनि के छोटे भाई का नाम । महाभारत के युद्ध में इरावान के हाथ से ये मारे गये ।

चलुरो 'नगन'–एक प्रसिद्ध वैष्णवभक्त तथा नाभा जी के यजमान । ये सदा नग्न रहते थे । भक्तमाल की टीकाओं में इनके विषय में अनेक विचित्र कथायें मिलती हैं ।

चाँदन–रामानंद संप्रदाय के एक प्रमुख भक्त जो पैहारी जी के शिष्य तथा नाभा जी के गुरु अग्रदास जी के गुरु भाई थे ।

चाँदा–एक वैष्णव भक्त । नाभा जी ने इनका उल्लेख किया है ।

चांद्रमसी–बृहस्पति की स्त्री का नाम ।

चांद्रायण–एक प्रसिद्ध व्रत जिसमें पूर्णिमा को १५ ग्रास, अमावस्या को निराहार तथा अन्य तिथियों में चंद्रमा की कला के घटने-बढ़ने के अनुसार ग्रास भी घटता बढ़ता है । इस व्रत का माहात्म्य लोकप्रसिद्ध है । इसका करने वाला स्वर्ग का अधिकारी कहा गया है ।

चाक्षुष–१. दे० 'क्षुप' । २. चक्षु के पुत्र का नाम । भागवत के अनुसार चक्षु एक मनु थे । ये सर्वतेजस् तथा आकृति के पुत्र थे । इनकी स्त्री का नाम नड्वला था ।

चाचागुरु–एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त जिनका उल्लेख नाभा जी ने किया है ।

चाणक्य–एक विख्यात विद्वान् तथा कूटनीतिज्ञ ब्राह्मण । इसने प्रसिद्ध नंदवंश का नाश करके चंद्रगुप्त मौर्य को गद्दी पर बिठाया था । चाणक्य का 'अर्थशास्त्र' बहुत प्रसिद्ध ग्रंथ है । 'चाणक्य सूत्र' नामक ग्रंथ भी इनका रचा हुआ कहा जाता है । वेबर ने इनका अनुवाद किया था ।

चाणूर(चानूर)–कंस के एक असुर अनुचर का नाम । हरिवंश और भागवत के अनुसार यह पूर्व जन्म में मय दानव था । यह मल्लयुद्ध में पारंगत था । कृष्ण को मारने के लिए कंस द्वारा रचे गये धनुष यज्ञ में इसने कृष्ण को युद्ध में ललकारा था । कृष्ण ने वहीं पर इसका वध किया । इसलिए कृष्ण का एक नाम 'चाणूरसूदन' भी है ।

चापेरा–विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम ।

चामुंड–देवकी के एक पुत्र का नाम । यह कुलांगार था, अतएव देवकी ने इसे कल्पक्षेत्र के पास यमुना में डाल दिया । पृथ्वीराज के पुरोहित सामंत ने इसको बाहर निकाला । १२ वर्ष तक इसने चंडिका की घोर तपस्या की । देवी ने प्रसन्न हो वरदान दिया । अनंतर सामंत की आज्ञा से रक्तबीज चामुंड ने बलखानी से युद्ध किया जिसमें उनके अंग से गिरे हुए रक्त से अनेक वीर उत्पन्न होने लगे; परन्तु बलखानी के भाई खानी ने आग्नेयशर से उनको जला डाला । अंत में बलखानी और चामुंड में भयानक युद्ध हुआ जिसमें बलखानी मारा गया ।

चामुंडा–दुर्गा का एक पर्याय । दे० 'चंडी' तथा 'दुर्गा' ।

चारु–१. रुक्मिणी द्वारा श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम । २. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम । भीम ने इनका वध किया ।

चारुगुप्त–रुक्मिणी द्वारा श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम ।

चारुचंद्र–रुक्मिणी द्वारा श्रीकृष्ण का एक पुत्र ।

चारुचित्रांगद–धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।

चारुदेष्ण–रुक्मिणी द्वारा श्रीकृष्ण का एक पुत्र । इसकी भगिनी का नाम चारुमती था ।

चारुदेह–रुक्मिणी द्वारा श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम ।

चारुनेत्रा–एक अप्सरा का नाम ।

चारुमती–रुक्मिणी द्वारा कृष्ण की एक कन्या जो कृतवर्मा के पुत्र बलि को ब्याही थी ।

चारुमत्स्य–विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम ।

चारुयश–रुक्मिणी द्वारा कृष्ण के एक पुत्र का नाम ।

चारुवेश–कृष्ण और रुक्मिणी के एक पुत्र का नाम ।

चारुशीर्ष–एक राजर्षि का नाम । ये इंद्र के घनिष्ठ मित्र थे । आलंब के गोत्रज होने के कारण ये आलंबायन कहलाते थे ।

चारुश्रवा–श्रीकृष्ण और रुक्मिणी के एक पुत्र ।

चार्वाक–१. एक राक्षस । यह दुर्योधन का मित्र था । जब युधिष्ठिर ने महाभारत युद्ध के बाद विजेता के रूप में हस्तिनापुर में प्रवेश किया, तब इसने छद्मवेशी ब्राह्मण के रूप में युधिष्ठिर को उनके किये पापों के लिए दोषी ठहराया, पर अन्य ब्राह्मणों ने वास्तविक बात को जानकर अपने नेत्र की ज्योति से इसे भस्म कर दिया । इसके द्वारा भाइयों की हत्या का दोष लगाये जाने पर इनको इतना क्षोभ हुआ कि ये वनवास के लिए प्रस्तुत हो गये । ब्राह्मणों ने समझा-बुझाकर इन्हें इस विचार से विरत किया । २. एक नास्तिक तत्वज्ञानी मुनि । अवंती देश की क्षिप्रा और चामला नदी के संगम पर स्थित शंखोद्वार नामक क्षेत्र में इनका जन्म हुआ था । इनके पिता का नाम इंदुकांत और माता का रुक्मिणी था । पुष्करतीर्थ के यज्ञगिरि नामक पर्वत पर इनकी मृत्यु हुई थी । वंचनाशास्त्र के रचयिता श्री बृहस्पति के ये शिष्य थे । यह चार्वाक ध्वनि के रचयिता थे ।

चिंतामणि–१. एक प्रसिद्ध वारांगना । विख्यात वैष्णव कवि बिल्वमंगल जी दीर्घकाल तक इसके प्रेमी रहे । एक बार उन्होंने बरसाती नदी को एक मुरदे के सहारे पार किया और इस वेश्या के यहाँ पहुँचे; किंतु इसने कहा कि जितना प्रेम अस्थि चर्ममय शरीर से है उतना यदि भगवान श्रीकृष्ण से करते तो कृतार्थ हो जाते । उसी समय से बिल्वमंगल जी को वैराग्य हो गया । अपनी आँखें फोड़कर वे हरिभक्ति में लीन हो गये । 'कृष्ण-करुणामृत' नामक एक बड़े सरस ग्रंथ की रचना इन्होंने की है । २. एक मणि का नाम । इसको धारण करनेवाला अभिलषित वस्तु प्राप्त कर सकता है ।

चिति–स्वायंभुव मन्वंतर में अथर्वण ऋषि की स्त्री का नाम । इनके पुत्र का नाम दध्यंच था जो अश्वमुखी था ।

चिकुर–एक सर्प का नाम । इसके पिता का नाम आर्यक और इसके पुत्र का नाम सुमुख था ।

चिक्षुर–महिषासुर के सेनापति का नाम ।

चितसुखानंद–प्रसिद्ध वैष्णव भक्त तथा संन्यासी। इन्होंने गीता आदि की टीका की थी।

चित्तउत्तम–एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त।

चित्र–१. एक सर्प का नाम। २. दुर्योधन पक्षीय एक राजा। इसको प्रतिबिंध्य ने मारा था। ३. पांडव पक्षीय एक राजा। महाभारत युद्ध में कर्ण ने इनका बध किया। ४. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम जो भीमसेन के हाथ से मारा गाया। ५. वृष्णि राजा के पुत्र। भागवत में इनको चित्ररथ और वायु पुराण में चित्रक कहा गया है। ६. एक दिग्गज का नाम।

चित्रक–वृष्णि के पुत्र का नाम।

चित्रकुंडल–धृतराष्ट्र के एक पुत्र।

चित्रकेतु–१. एक पौराणिक राजा जिनके लाखों स्त्रियाँ थीं। नारद और अंगिरा के यज्ञ कराने से 'कृतदूती' नामक स्त्री से एक पुत्र हुआ जिसे अन्य सपत्नी रानियों ने विष देकर मार डाला। स्नेहवश राजा उसका दाह कर्म नहीं करना चाहते थे। अंत में उस मृत बालक के उपदेश से ही उनका मोह छूटा और तब इन्होंने उसकी अंत्येष्टि क्रिया की। नारद ने चित्रकेतु को संकर्षण भगवान का मंत्र दिया जिसके प्रभाव से सात ही दिन में इन्होंने अप्रतिहत गति पाई और सर्वत्र इनकी अबाध गति हो गई। एक दिन ये विमान पर बैठकर कैलाश में शिवजी के यहाँ पहुँचे और शिवजी को अपनी जंघा पर पार्वती को बैठाये देख उन्हें ज्ञानोपदेश करने लगे। शिव जी मुसकराये, पर पार्वती जी ने उनको राक्षस योनि में जन्म लेने का शाप दे दिया, जिसके फलस्वरूप यह वृत्रासुर होकर उत्पन्न हुए। दे० 'वृत्रासुर' तथा 'दधीचि'। २. स्वायंभुव मन्वंतर में वशिष्ठ ऋषि के एक पुत्र का नाम। इनकी माता का नाम अर्जा था। ३. सूरसेन देश के राजा। इनके एक करोड़ स्त्रियाँ थीं, परंतु तो भी ये निस्संतान रहे। अंत में अंगिरा ऋषि की कृपा से पुत्र हुआ। ४. राम के भाई लक्ष्मण के दूसरे पुत्र का नाम। यह चंद्रकांत नामक नगर में रहते थे। ५. पांचाल देश के राजा द्रुपद के पुत्र का नाम। द्रोणाचार्य ने इसके भाई वीरकेतु को मँगाया जिससे क्रुद्ध हो इन्होंने द्रोणाचार्य पर आक्रमण किया पर उनके हाथ के ही इसकी मृत्यु हुई।

चित्रगंधा–गोकुल की एक गोपी। जाबलि ऋषि ने श्री कृष्ण की उपासना की जिसके फलस्वरूप गोकुल के प्रचंड नामक गोप के घर चित्रलेखा नाम की गोपी का जन्म हुआ।

चित्रगुप्त–एक बार जब ब्रह्मा ध्यान कर रहे थे तो उनके अंग से अनेक वर्णों से चित्रित, लेखनी और मसि पात्र लिये एक पुरुष उत्पन्न हुआ। इन्हीं का नाम चित्रगुप्त हुआ। ब्रह्मा की काय से उत्पन्न होने के कारण इन्हें कायस्थ कहते हैं। उत्पन्न होते ही इन्होंने ब्रह्मा से पूछा कि मुझे कौन कार्य करना है। ब्रह्मा पुनः ध्यानस्थ हो गये। योग निद्रा के अवसान के बाद ब्रह्मा ने इनसे कहा कि यम लोक में जाकर मनुष्यों के किये गये पाप और पुण्य का हिसाब लिखो तभी से ये यम लोक में पुण्य और पाप के गणक हैं। अंबष्ट, माथुर तथा गौड़ आदि इनके बारह पुत्र हुए थे। गरुड़ पुराण के अनुसार यमलोक के पास चित्रलोक भी है। कार्तिक मास की शुक्ल द्वितीया को इनकी पूजा होती है। इसी से इस द्वितीया का नाम यम द्वितीया पड़ा है। शापग्रस्त राजा सुदास इसी तिथि को इनकी पूजा करके स्वर्ग के भागी हुये थे। भीष्म पितामह ने भी इनकी पूजा करके इच्छा-मृत्यु का वर प्राप्त किया था। मतांतर से इनके पिता मित्र नाम के एक कायस्थ थे। इनकी बहन का नाम चित्रा था। पिता के मरने के बाद प्रभास क्षेत्र में जाकर इन्होंने सर्प की तपस्या की जिसके फल से इन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई और तब यमराज ने इन्हें अपनी कचहरी में लेखक का पद दिया। तब से यह चित्रगुप्त के नाम से प्रसिद्ध हुये। यम ने इन्हें धर्म का रहस्य समझाया। चित्रलेखा की सहायता से इन्होंने अपने चित्रविचित्र भवन की इतनी अभिवृद्धि की कि दैवी शिल्पी विश्वकर्मा भी स्पर्धा करने लगे। चित्रलेखा चित्रकला में अद्वितीय थी।

चित्रचाप–धृतराष्ट्र के एक पुत्र जो भीम द्वारा मारे गये।

चित्रदर्शन्–धृतराष्ट्र के एक पुत्र।

चित्रधर्मन्–महाभारतकालीन एक क्षत्रिय राजा जो युद्ध में दुर्योधन के पक्ष में थे। ये विरुपाक्ष नामक असुर के अंशावतार थे।

चित्रध्वज–चंद्रप्रभ नामक राजा का पुत्र। इन्होंने कृष्ण की बड़ी स्तुति की थी जिसके फल से एक गोप कन्या के रूप में इन्हें जन्म मिला।

चित्रबर्ह–गरुड़ के पुत्र का नाम।

चित्रबाण–धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

चित्रबाहु–१. धृतराष्ट्र का एक पुत्र। २. श्री कृष्ण का एक पुत्र। यह एक महारथी था।

चित्रभानु–श्रीकृष्ण के पौत्र। ये एक महारथी थे।

चित्रमुख–यह एक वैश्य थे। बाद में अपनी तपस्या के प्रभाव से ब्राह्मण होकर ब्रह्मर्षि पद प्राप्त किया।

चित्ररथ–१.हरिवंश के अनुसार धर्मरथ के पुत्र का नाम। यह अंग देश के राजा थे इनकी वंशावली इस प्रकार है- अंग → दधिवाहन → धर्मरथ → चित्ररथ। २. एक गंधर्व का नाम। इनका वास्तविक नाम अंगपर्ण था। इनकी स्त्री का नाम कुंभीनसी था। दे० 'अंगारपर्ण' तथा 'कुंभीनसी'। ३. तुर्वंश के शत्रु जिनका इंद्र ने वध किया था। ४. रोमपाद राजा का नामांतर। यह दशरथ के मित्र थे। ये निस्संतान थे। अतएव दशरथ ने अपनी कन्या शांता को दत्तक के रूप में इन्हें दी जिसे इन्होंने ऋष्यश्रृंग को ब्याह दी। फिर इन्होंने पुत्रेष्ठि यज्ञ किया जिसके फल से चतुरंग नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ। ५.राजा द्रुपद के एक पुत्र।

चित्ररेखा–१. कृष्ण की एक प्रेयसी गोपी। २ वाणासुर के कुमार नामक प्रधान की कन्या। यह ऊषा की सहेली थी और चित्रकला में प्रवीण थी। इसी ने योगबल से कृष्ण के पुत्र अनिरुद्ध को ऊषा के पास ला दिया था। नामांतर 'चित्रलेखा'। दे० 'चित्रगुप्त'।

चित्ररेफ–मेधा तिथि के सात पुत्रों में से एक।

चित्रलेखा–१. एक अप्सरा। राज पुरुवरा ने केशी नामक दैत्य को मारकर इससे संबद्ध किया २. बाल्मीक राजा की कन्या। ३. दे० 'चित्ररेखा'।

चित्रवती–वसु की पत्नी।

चित्रवर्मन्–१ धृतराष्ट्र का एक पुत्र जो भीम द्वारा मारा गया। २. द्रुपद पुत्र जो महाभारत में द्रोणाचार्य के हाथ से मारा गया।

चित्रवाहन–मणलूर नामक नगर के पांडव राजा का नाम। इनके आदि पुरुष प्रभंजन थे। मलयध्वज और प्रवीर इनका नामांतर है। यह स्थान वर्तमान मणिपुर राज्य में था जो बर्मा आसाम की सीमा पर है। चित्रांगदा इन्हीं की कन्या थी जिसका विवाह अर्जुन से हुआ था जब कि वह एकाकी तपस्या के लिए गये हुए थे इससे अर्जुन को वभ्रुवाहन नामक पुत्र उत्पन्न हुआ।

चित्र वेग–एक सर्प। यह जनमेजय के सर्प-यज्ञ में जला।

चित्र शिखंडी–मरीचि तथा अग्नि आदि सप्तर्षियों का सामूहिक नाम।

चित्रसेन–१. धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक, जिसे भारत युद्ध में भीम ने मारा था। २ एक यक्षराज का नाम। ३. गंधर्वराज चित्रसेन। यह विश्वावसु के पुत्र थे। इनकी गणना देवर्षियों में होती थी। देवलोक में अर्जुन को इन्होंने संगीत और नृत्य की शिक्षा दी जिसका प्रयोग अज्ञातवास में वृहन्नला के रूप में उन्होंने किया। जब पांडव बन में अपना कालयापन कर रहे थे उस समय ससैन्य दुर्योधन उनको अपना वैभव दिखाने के लिये गये और उसी वन में एक सरोवर-तट पर डेरा डाल दिया। दुर्योधन ने गंधर्वों को हटा देने की आज्ञा दी। अंततः चित्रसेन से कौरवों का घमासान युद्ध हुआ, जिसमें चित्रसेन ने कौरवों की स्त्रियों को बाँध लिया। दुर्योधन के मंत्री युधिष्ठिर की शरण आये। युधिष्ठिर के कहने से अर्जुन आदि ने गंधर्वों को परास्त किया। अंत में चित्रसेन स्वयं आये। अर्जुन से उन्होंने युद्ध नहीं किया। युधिष्ठिर के कहने से कौरवों की स्त्रियों को सादर मुक्त कर दिया गया। ४. द्रुपद के पुत्र का नाम। भारत-युद्ध में इसे कर्ण ने मारा था। ५. कर्ण के पुत्र का नाम जो भारत-युद्ध में नकुल के हाथ से मारा गया। ६. एक पापी राजा। एक बार वन में मृगया के समय इसे भूख लगी। वन में अनेक अन्त्यज स्त्रियाँ मिलीं जो जन्माष्टमी का व्रत कर रही थीं। क्षुधार्त होने के कारण इसने उनसे अन्न माँगा; किंतु व्रत समाप्त होने के पहले अन्न देना उन्होंने स्वीकार नहीं किया। राजा को भी धर्मबुद्धि जागृति हुई। राजा ने भी जन्माष्टमी का व्रत किया जिससे उसका उद्धार हुआ। ७. कर्ण के पुत्र। ८. परीक्षित के पुत्र। ९. जरासंध के सेनापति।

चित्रसेना–एक अप्सरा का नाम।

चित्रांग–१. धृतराष्ट्र का एक पुत्र जो भारतयुद्ध में भीम द्वारा मारा गया। २. एक वीर पुरुष का नाम। राम ने जब अश्वमेध यज्ञ किया था उस समय चित्रांग ने अश्व को रोक कर युद्ध किया था, पर वह पुष्कल के हाथ से मारा गया।

चित्रांगद–१. महाराज शांतनु के पुत्र जो सत्यवती के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। इनके छोटे भाई का नाम विचित्रवीर्य था। भीष्म इनके सौतेले भाई थे। चित्रांगद नामक गंधर्व से इनका तीन वर्ष तक युद्ध होता रहा जिसमें ये मारे गये। ये निस्संतान थे, अतएव इनके छोटे भाई विचित्रवीर्य गद्दी पर बैठे। २. एक गंधर्व का नाम जिससे शांतनु पुत्र चित्रांगद से तीन वर्षों तक युद्ध होता रहा। ३. द्रौपदी-स्वयंवर में उपस्थित एक राजा। ४. कलिंग के राजा, जो दुर्योधन के श्वसुर थे। ५. दशार्ण देश के राजा। इन्होंने अर्जुन से युद्ध किया था।

चित्रांगदा–चित्रवाहन राजा की कन्या तथा अर्जुन की स्त्री। इनके पुत्र का नाम बभ्रुवाहन था। चित्रवाहन को कोई पुत्र न होने से यही उनका उत्तराधिकारी बना।

चित्रा–१. सोम की सत्ताइस स्त्रियों में से एक। २. चित्रगुप्त की स्त्री। चित्रगुप्त ने महामाया को प्रसन्न करके इसे प्राप्त किया। ३. वाराणसी निवासी सुर्वीर नामक वणिक की स्त्री। ४. एक अप्सरा का नाम।

चित्राक्ष–धृतराष्ट्र का एक पुत्र जो भीम द्वारा मारा गया।

चित्रायुध–१. पांचाल देश के एक महारथी राजा जो द्रौपदी के स्वयंवर में उपस्थित थे। भारतयुद्ध में कर्ण के हाथ से ये मारे गये। २. धृतराष्ट्र के एक पुत्र जो भीम के हाथ से मारे गये।

चित्राश्व–१. शाल्य देश के एक राजा। ये घोड़े के शौकीन थे इसीलिये इनका यह नाम पड़ा। इन्होंने मिट्टी से अश्व के चित्र बनाये थे। २. एक राजर्षि। ३. सत्यवान का नामांतर।

चित्रिणी–कामसेन राजा की कन्या। काव्य-सौन्दर्य-प्रेमी मित्रशर्मा नामक ब्राह्मण से इसका प्रेम हो गया। दोनों ने सूर्य की बड़ी तपस्या की जिससे चित्रिणी के माता-पिता ने दोनों के विवाह कर देने का स्वप्न देखा। दोनों पति-पत्नी-रूप में एक दूसरे को पाकर अति प्रसन्न हुये।

चित्रोपचित्र–धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक जो भीम के द्वारा मारा गया।

चिरकारिक (चिरकारिन्)--मेधातिथि गौतम के दो पुत्रों में से कनिष्ठ पुत्र। दीर्घसूत्री होने के कारण इनका यह नाम पड़ा। अपनी स्त्री के प्रति व्यभिचार का संदेह होने के कारण गौतम ने उनसे माता का बध करने को कहा। एक तो दीर्घसूत्री दूसरे मातृ-हत्या के भय से उनसे तत्काल शस्त्र न उठा। पितृ-भय से ये बाहर रहने लगे। क्रोध शांत होने पर गौतम को पत्नी के मृत्यु पर अत्यंत पश्चाताप हुआ, किन्तु पत्नी को जीवित देखकर अति आनंद हुआ। उसी समय पुत्र भी शस्त्र उठाये तैय्यार थे। उन्हें रोककर पिता अत्यंत प्रसन्न हुये।

चिरांतक--गरुड़ के एक पुत्र का नाम।

चीधड़--प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। ये भिक्षावृत्ति द्वारा जीवन-निर्वाह तथा संत-सेवा करते थे।

चीरवासस्--१. एक यक्ष का नाम। २. कौरव-पक्षीय एक राजा।

चूडाला--शिखिध्वज राजा की स्त्री।

चूड़ामणि–चूड़ापुर के राजा। इनकी स्त्री का नाम बिशा-

लाक्षी था जिसने शिव की प्रबल उपासना कर हरिस्वामी नामक बलवान पुत्र प्राप्त किया।

चेकितान–१. वृष्णि वंशीय एक पांडवपक्षीय क्षत्रिय राजा। इनकी मृत्यु दुर्योधन के हाथ से हुई। २. पांडवपक्षीय एक यादव राजा। इनके रथ के घोड़े पीले रंग के थे। भारतयुद्ध में सुशर्मा के साथ घोर युद्ध करने के अनंतर द्रोण के हाथ से ये मारे गये। ३. एक ब्राह्मण का नाम।

चेदि–एक यादव। दे० 'चिदि'।

चैतन्य--बंगदेश के प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य, प्रचारक तथा मतप्रवर्तक। इनका जन्म १४८५ ई० में नवद्वीप में हुआ था। आरम्भ में इनका नाम विश्वम्भर था। अपने असाधारण सौन्दर्य और उज्ज्वल गौर वर्ण होने के कारण इनका नाम गौराङ्ग पड़ गया। प्रारम्भिक यौवन काल में ही ये प्रकांड पंडित हो गये। पिता का श्राद्ध करने के लिए जब ये गयाधाम गये तभी से भक्ति का एक असाधारण स्रोत फूट निकला। ये रात-दिन श्रीकृष्ण का नाम जपते थे। भावावेश में कभी-कभी मूर्च्छित हो जाते थे। मध्व संप्रदायी एक संन्यासी 'ईश्वर पुरी' के प्रभाव से इनकी दैवी भक्ति-प्रेरणा उमड़ पड़ी। बंगाल में इन्होंने वैष्णव मत का प्रचार किया। इनकी उपासना-पद्धति मधुरभाव, की कही जाती है, जिसमें कांतासक्ति ही प्रधान मानी जाती है। छः वर्षों तक पूर्वी भारत और पच्छिमी भारत का पर्यटन करके इन्होंने अपने मत का प्रचार किया। वृन्दावन में भी आप ने कई वर्षों तक निवास किया। जगन्नाथ की मूर्ति के सामने प्रायः भावावेश में ये मूर्च्छित हो जाते थे। वहीं पर सार्वभौम राजा को अपना शिष्य बनाया। 'सनातन गोस्वामी' और 'रूप गोस्वामी' इनके शिष्य थे। पुरी में ही समुद्र को श्रीकृष्ण की यमुना समझ प्रेमोन्मत्त हो उसमें ये कूद पड़े और फिर इनका कहीं पता नहीं चला। इनकी मधुर भक्ति पद्धति ने हिंदी साहित्य के मध्ययुग के उत्तरकालीन कृष्ण भक्तों को प्रभावित किया है।

चैत्ररथ–कुरु के पुत्र।

चैद्य–चेदिराज्य धृष्टकेतु का नाम। ये शिशुपाल के पुत्र थे।

चोल--द्रविड़ देश के एक क्षत्रिय राजा।

चौड़ा--एक प्रसिद्ध चारण भक्त।

चौमुख--एक प्रसिद्ध चारण भक्त।

चौरासी--एक प्रसिद्ध चारण भक्त। ये अभिनय-कला तथा वर्णन-कला में सिद्धहस्त थे।

च्यवन-ऋग्वेद में च्यवन और अश्विनीकुमारों का आख्यान है। महाभारत के अनुसार इनकी माता फलोमा और पिता भृगु थे। 'च्यवन' का शब्दार्थ है 'गिरा हुआ'। कहा जाता है, जब इनकी माँ गर्भवती थीं तभी एक राक्षस उन्हें ले भागा। मार्ग में भय से इनका गर्भपात हो गया। द्रवीभूत हो राक्षस ने उनको सद्य.जात पुत्र के साथ चले जाने की आज्ञा दे दी। उसी पुत्र का नाम च्यवन हुआ। च्यवन बहुत बड़े ऋषि हो गये हैं। एक बार नर्मदा तट पर घोर तप करते हुए ये बहुत दिनों तक समाधिस्त रहे। इनके सारे शरीर को दीमकों ने ढक लिया केवल आँखें ही चमकती रहीं। उनके इस आश्रम में एक बार राजा शर्याति की कन्या सुकन्या पहुँची और इनकी आँखों को जुगनू समझकर खोद दिया जिससे आँखों से रक्त बहने लगा। राजा शर्याति क्षमा माँगने आये, पर स्त्री रूप में सुकन्या को देने पर ही च्यवन क्षमा करने को प्रस्तुत हुए। च्यवन अति वृद्ध और जीर्णकाय थे। सब लोग सुकन्या पर हँसते थे। एक बार च्यवन के बुढ़ापे की हँसी उड़ाकर अश्विनीकुमारों ने सुकन्या को विचलित करना चाहा। कुमारों ने उनके सतीत्व की परीक्षा ली। एक बार एक सरोवर में कुमारों के साथ च्यवन को स्नान कराया गया। दिव्य देह धारण किये वे सभी एक ही रूप धारण किये हुए निकले। सुकन्या को उनमें से एक को चुनने को कहा गया। उसने इन्हीं को चुना इससे कुमार सुकन्या से अत्यंत प्रसन्न हुये और दिव्य औषधि से च्यवन को स्थायी यौवन प्रदान किया। यह औषधि अब भी च्यवनप्राश के नाम से प्रसिद्ध है। इस उपकार के कारण च्यवन ने इंद्र से कहकर कुमारों को यज्ञ भाग दिलवाया।

छंदोग माहकि--ब्रह्मवृद्धि का पैतृक नाम।

छंदोगेय–अत्रिकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

छंदोदेव--इंद्र की कृपा से प्राप्त मतंग का नाम। यह उनका जन्मांतरगत नाम था।

छंगल–१. एक शाखा-प्रवर्तक ऋषि। २. दंडी मुंडीश्वर नामक शिवावतार के शिष्य।

छद्मकारिन्--भविष्य पुराण के अनुसार दलपाल के पुत्र। इन्होंने चौदह हजार वर्षों तक राज्य किया।

छमा--पृथिवी का एक पर्याय। दे० 'पृथिवी'।

छाया--सूर्य की स्त्री का नाम। सूर्य की पहली पत्नी का नाम संज्ञा था। उससे सूर्य को यम नामक एक पुत्र और यमुना नाम की एक कन्या उत्पन्न हुई। सूर्य के तेज को सहने में असमर्थ हो संज्ञा उन्हें छोड़कर चली गई और अपनी छाया से एक स्त्री बनाकर सूर्य के पास रख गई। अपनी संतति की देख-रेख का भार भी वह उसी पर छोड़ गई थी। सूर्य को छोड़कर वह अपने पिता विश्वकर्मा के यहाँ गई किंतु पति का त्याग करने के कारण पिता ने उसकी भर्त्सना की और पुनः पति के पास जाने की आज्ञा दी। पर वह कुरुवर्ष मे चली गई और वहाँ अश्विनी के रूप में इधर-उधर विचरण करने लगी। इधर सूर्य की छाया से सावर्णि और शनैश्चर नामक दो पुत्र हुए। इसके बाद स्वभावतः छाया अपनी संतानों के सामने सपत्नी की संतानों की अवहेलना करने लगी। अप्रसन्न हो छाया ने यम को यह शाप दिया कि तुम्हारे पाँव गिर पड़ें। इस पर सूर्य ने छाया की बहुत भर्त्सना की। यम से कहा कि तुम्हारे पाँव का मांस कीड़े पृथ्वी पर ले जायेंगे। आवेश में आकर छाया ने अपनी सारी कथा कह सुनाई। संज्ञा के लुप्त होने से सूर्य बहुत दुखी हुए और विश्वकर्मा के पास गये। दिव्यचक्षु से यह जानकर कि वह अश्विनी के रूप में इधर-उधर विचरण कर रही है, सूर्य स्वयं अश्वरूप में उसके पास गये और उसके साथ संभोग किया, जिससे अश्विनीकुमारों की उत्पत्ति हुई। जब सूर्य ने अपना

तेज कम करने का वचन दिया, तब फिर संज्ञा उनके पास गईं। दे० 'संज्ञा', 'यम' तथा 'विवस्वान'।

छीतम--एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। नाभा जी के अनुसार ये एक दिग्गज वैष्णव भक्त थे तथा साधारण भक्तों की रक्षा में सदैव लगे रहते थे।

छीतर--एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त।

छीतर जी--एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। ये कील्ह जी के शिष्य थे।

छीरसागर--(क्षीर सागर) पुराणों के अनुसार सात सागरों में से एक। यह दूध से भरा माना जाता है। विष्णु इसी सागर में लक्ष्मी के साथ शेष-शय्या पर शयन करते हैं।

छीरस्वामी--एक प्रसिद्ध हरिभक्त तथा कथावाचक।

जंगारि--विश्वामित्र कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।

जंगी--एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। ये स्वामी अग्रदास जी के शिष्य तथा नाभादास जी के गुरुभाई थे।

जंघ--रावण की सेना का एक प्रसिद्ध राक्षस।

जंघपूत--एक ऋषि का नाम। इन्होंने गोपी-भाव से कृष्ण की उपासना की जिससे गोपी रूप से इनका जन्म हुआ।

जंघाबंधु--युधिष्ठिर की सभा के एक ऋषि।

जंबुक--एक राजा। इनके कालिय नामक पुत्र तथा विजयैषिणी नामक कन्या थी। पृथ्वीराज के भय से ये नर्मदा तट पर पार्थिव-पूजन करने चले गये और वहाँ शिव को प्रसन्न करके वर प्राप्त किया।

जंबुमालिन्--रावण के मंत्री प्रहस्त के पुत्र का नाम। हनुमान ने जिस समय लंका में अशोक वाटिका विध्वंस की रावण की आज्ञा से ये वहाँ गये और हनुमान के हाथ से मारे गये।

जंभ--१. बलि का मित्र। यह जंभासुर के नाम से प्रसिद्ध है। जिस समय इंद्र और बलि से युद्ध हो रहा था और वज्र के प्रहार से बलि मूर्छित हो गये, उस समय इसने इंद्र से युद्ध किया और मारा गया। २ रावणपक्षीय एक राजा। ३. राम पक्षीय एक बानर।

जगतसिंह (नृपमणि)--प्रसिद्ध वैष्णव भक्त राजा। इनके पिता का नाम आनंद सिंह तथा माता का नाम बासोदेई था। ये बड़े बीर, प्रतापी तथा बद्रीनारायण के परम भक्त थे। इन्हें संतनृपति कहा गया है।

जगदंबा--दे० 'पार्वती' तथा 'सीता'।

जगदानंद--एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त तथा संन्यासी।

जगदीश दास--एक प्रसिद्ध मध्यकालीन वैष्णव भक्त।

जगन--एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त।

जगन्नाथ थानेश्वरी--प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। ये चैतन्य महाप्रभु के प्रधान शिष्यों में से थे। इनके सम्बन्ध में जनश्रुति है कि इन्होंने अपने घर में ही भगवान का प्रकाशमान रूप तीन दिन देखा और फिर चैतन्य के शिष्य हो गये। इनका नाम चैतन्य जी ने कृष्णदासी रक्खा था।

जगन्नाथदास--एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। ये अग्रदास स्वामी के शिष्य तथा नाभा जी के गुरु-भाई थे।

जगन्नाथ पारीष--रामानुजाचार्य के श्री मार्ग के अनुयायी एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। ये पारीष ब्राह्मण श्री रामदास जी के पुत्र थे। नाभा जी ने इन्हें 'धर्म की सीमा' कहा है।

जघन--धूम्राक्ष के पुत्र का नाम।

जटायु--एक प्रसिद्ध गृद्धराज। ये दशरथ के मित्र थे। इनके पिता विनतानंदन, सूर्य-सारथि अरुण थे। इनके भाई का नाम संपाती था। दोनों प्रबल पराक्रमी थे और एक बार इन्होंने आकाश-मार्ग में उड़कर सूर्य का रथ रोकने का दुस्साहस किया था। जटायु पंचवटी में निवास करते थे। सीता का अपहरण कर आकाश-मार्ग से जाते हुये रावण से इन्होंने युद्ध किया और प्रारम्भ में रावण को पछाड़ भी दिया; किन्तु अंत में रावण ने इनके पंख काट डाले और मुमूर्षु अवस्था में छोड़कर भाग गया। सीता को खोजते हुये राम ने मूर्छितावस्था में इन्हें देखा। इन्होंने राम के सामने ही प्राण त्याग दिये। राम ने अपने हाथों से इनकी अंत्येष्टि क्रिया की।

जटासुर--१. एक प्रसिद्ध राक्षस। पांडवगण बनवास के समय जब बद्रिकाश्रम में रहते थे उस समय द्रौपदी के हरण करने की भावना से इसने युधिष्ठिर आदि को बंदी कर लिया। उस समय भीम मृगयार्थ अन्यत्र गये थे और अर्जुन इन्द्रलोक में थे। हरण करके जाते हुये मार्ग ही में इसे भीम मिल गये और युद्ध में परास्त करके द्रौपदी आदि का उद्धार किया। इसके पुत्र अलंबुश ने भारत-युद्ध में कौरवों की ओर से युद्ध किया। २. युधिष्ठिर की सभा का एक राजा।

जटिन्--पाताल का एक जटाधारी सर्प।

जटिल--एक ऋषि जिन्होंने कृष्ण की उपासना करके गोपी का जन्म प्राप्त किया। एक बार शिव इनका रूप धारणकर ब्रह्मचारी वेष में शिव के लिए तपस्या करती हुई पार्वती के पास गये और शिव की अत्यंत निंदा की पर पार्वती के ऊपर उसका जब तनिक भी प्रभाव न पड़ा, तब संतुष्ट हो शिव ने अपना रूप दिखलाया।

जटिला--गौतम के वंश की एक स्त्री। इनके पति सप्तर्षि थे।

जटी मालिन--एक शिवावतार का नाम। ये वाराहकल्पांत वैवस्वत मन्वंतर में प्रकट हुये थे। इनके चार पुत्र थे--हिरण्यनाभ, कौशल्य, लोकाक्षी तथा प्रीधाय।

जठर--एक ऋषि। ये जनमेजय के सर्पयज्ञ में उपस्थित थे।

जड़--कौशिक गोत्री एक दुराचारी ब्राह्मण। एक बार जब ये व्यापार करने बाहर गये तभी चोरों ने इनका बध कर डाला और पूर्व जन्म के पापों से ये पिशाच योनि को प्राप्त हुये। इनका पुत्र परम धार्मिक था। काशी जाकर उसने इनका विधिवत् अंतिम संस्कार किया जहाँ ये पिशाच हुये थे वहाँ गीता के तृतीय अध्याय का पाठ किया और तब इनकी मुक्ति हुई। मार्कंडेय पुराण में भी एक जड़ का उल्लेख है।

जड़ भरत--एक प्राचीन राजा। परम विद्वान् तथा शास्त्रज्ञ होते हुये भी ये सांसारिक वासनाओं से पीछा न छुड़ा सके थे। वानप्रस्थ होने पर भी सद्यःजात एक मृग शावक को पालकर उससे अत्यंत स्नेह किया। अंत में ईश्वर के स्थान में उसी का ध्यान करते हुए मरे, जिसके

फलस्वरूप पशु-योनि में उत्पन्न हुये। चौरासी योनियाँ भोगते हुये पुनः मनुष्य योनि में आये, किन्तु फिर भी इनकी जड़ता नहीं गई जिसके कारण ये जड़ भरत नाम से प्रसिद्ध हुये। परम विद्वान् होते हुये भी इन्हें लोग मूर्ख समझते थे और केवल भोजन देकर इनसे खूब काम लेते थे। एक बार राजा सौवीर ने इन्हें पालकी ढोने में लगाना चाहा। इसी अपमान से इन्हें आत्मज्ञान हुआ। पालकी ढोना इन्होंने अस्वीकार किया जिससे इनके ऊपर मार पड़ी, किंतु फिर भी ये टस से मस न हुए। अंत में राजा सौवीर ने इन्हें पहिचाना और क्षमा माँगते समय इनसे ज्ञानोपदेश प्राप्त किया। भरत ने भी ज्ञानो-द्रेक द्वारा मोक्ष प्राप्त किया।

जदु (सं० यदु)--देवयानी के गर्भ से उत्पन्न महाराज ययाति के ज्येष्ठ पुत्र। इनके छोटे भाई का नाम तुर्वसु मिलता है। इनके पिता ने अपने श्वसुर शुक्राचार्य के शाप से जराग्रस्त होकर एक बार इनसे कहा था कि मुझे अपना यौवन दे दो। एक सहस्र वर्ष भोग करने क बाद मैं उसे तुम्हें वापस कर दूंगा। इन्होंने इस विषय में नकारात्मक उत्तर दिया था, जिससे क्रोधित होकर इनके पिता ने कहा था : "तुम्हारा तथा तुम्हारे वंशजों का आज से राज्य पर कोई अधिकार नहीं है।" फिर इनके पिता ने अपने राज्य का दक्षिण भाग इन्हें दिया था उस पर इन के वंशजों ने भी राज्य किया। कृष्ण का जन्म इन्हीं के वंश में हुआ था। यही यादव जाति के प्रथम पुरुष कहे जाते हैं।

जदुनाथ (सं० यदुनाथ)--यदुवंश के सबसे अधिक प्रतिभा-शाली व्यक्ति होने के कारण ही संभवतः कृष्ण को इस संज्ञा से संबोधित किया गया है। दे० 'कृष्ण'।

जनक--अपने अध्यात्म तथा तत्वज्ञान के लिए प्रसिद्ध एक विख्यात पौराणिक राजा, जो राजा निमि के पुत्र थे। एक समय निमि ने कई सौ वर्षों में समाप्त होने-वाले एक महायज्ञ की तैयारी की और उसका पौरो-हित्य करने के लिये वशिष्ठ से अनुरोध किया, परन्तु उस समय वह इंद्र के यज्ञ में व्यस्त थे। वशिष्ठ ने उनसे इंद्र का यज्ञ पूरा हो जाने तक के लिए रुक जाने को कहा। निमि मौन रहे और वहाँ से चले आये। वशिष्ठ ने समझा कि निमि ने सुझाव मान लिया; पर निमि ने गौतम आदि ऋषियों की सहायता से यज्ञ आरम्भ कर दिया जिससे रुष्ट हो वशिष्ठ ने इन्हें शाप दिया, प्रत्युत्तर में निमि ने भी शाप दिया। दोनों के शरीर भस्म हो गये। ऋषियों ने एक विशेष उपचार से निमि का शरीर यज्ञ समाप्ति तक सुरक्षित रक्खा। निमि निस्संतान थे। अतएव ऋषियों ने अरणि से इनके शरीर का मंथन किया जिससे एक पुत्र उत्पन्न हुआ। मृतदेह से उत्पन्न होने के कारण यही पुत्र जनक कहलाया। शरीर मंथन से उत्पन्न होने के कारण इनका एक नाम मिथि भी पड़ा। इन्होंने ही मिथिलापुरी बसाई। नकी सत्ता इसवीं पीढ़ी में सीरध्वज जनक उत्पन्न हुये जिनकी कन्या सीता थीं जो रामचंद्र की पत्नी हुईं। राजा निमि का वास सबकी पलकों पर माना जाता है।

जनगोपाल--एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त तथा कवि। ये 'नर-हड़' नामक गाँव के निवासी थे। ये भागवत के विशे-षज्ञ थे। इनसे आविष्कृत 'जत्तरी' नामक एक छंद की चर्चा नाभादास जी ने की है।

जनदयाल--एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त तथा कवि।

जनदेव--जनक के वंशज एक ज्ञानी राजा। दे० 'धर्मध्वज'।

जनभगवान--एक प्रसिद्ध हरि-भक्त तथा कथावाचक।

जनमेजय-१. एक महान् राजा। अर्जुन के प्रपौत्र, तथा परीक्षित और माद्रवती के पुत्र ब्रह्महत्या-दोष से मुक्त होने के लिये इन्होंने वैशंपायन से महाभारत सुना था। इनके पिता तक्षक नामक सर्प से मारे गये, अतएव सर्पों का नाश करने के लिये इन्होंने एक महान् सर्प-यज्ञ किया जिसमें समस्त सर्प और नाग मंत्राहूत होकर यज्ञाग्नि में भस्म हो गये। इनका और आस्तीक ऋषि का संवाद प्रसिद्ध है। इन्हें सरमा ने शाप दिया था। २. नीप के वंशज एक कुलघातक राजा। ३. राजा दुर्मुख के पुत्र और युधिष्ठिर के सहायक। ४. चंद्रवंशी राजा कुरु के पुत्र। इनकी माता वाहिनी थीं। ५. राजा कुरु के पुत्र। इनकी माता कौशल्या तथा स्त्री अनंता थीं। इनके पुत्र का नाम प्राचीन्वस था। ये भी ब्रह्महत्या पाप के भागी हुए थे और यज्ञ द्वारा पाप-मुक्त हुए थे। ६. चंद्रवंशी राजा अविक्षित् के वंशज। ७. एक नाग-विशेष।

जनशर्कराक्ष्य--अश्वपति कैकेय, अरुण औपवेशि तथा उद्दालक आरुणि के समकालीन थे। इन्होंने उद्दालक से तत्वज्ञान की शिक्षा पाई थी।

जनार्दन--प्रसिद्ध मध्यकालीन वैष्णव भक्त।

जमदग्नि--एक प्रसिद्ध महर्षि। ऋग्वेद में इनका कई बार उल्लेख हुआ है। ये महर्षि ऋचीक के पुत्र थे। इनका विवाह राजा प्रसेनजित की कन्या रेणुका के साथ हुआ था। एक दिन इनकी स्त्री गंगा-स्नान करने गईं। वहाँ उन्होंने राजा चित्ररथ को अपनी स्त्रियों के साथ जलक्रीड़ा करते देखा जिससे उनका मन विचलित हो गया और चित्ररथ के साथ व्यभिचार में प्रवृत्त हुईं। जब ये लौटीं तो ज्ञानबल से जमदग्नि सब जान गये। एक-एक करके पुत्रों को उनका बध करने को कहा; किन्तु पिता के क्रोध से सब जड़ हो गये। अंत में पिता की आज्ञा से परशुराम ने माता का बध कर डाला। इससे प्रसन्न होकर उन्होंने वर माँगने को कहा। परशुराम ने माता को पुनर्जीवित करने का वर माँगा। जमदग्नि ने ऐसा ही कर दिया। जमदिग्न की मृत्यु कार्तवीर्य के द्वारा हुई जब कि ये ध्यानमग्न अवस्था में थे। ये भी विश्वामित्र के विरोधी थे।

जमराज(सं०यमराज)--सूर्य के पुत्र तथा यमुना के भाई। ऋग्वेद में इन्हें पितृ-लोक में जानेवाला प्रथम पिता कहा गया है। एक स्थान पर यम तथा यमी (यमुना) से पारस्परिक बातचीत भी है जिसमें यमी इससे अपने साथ संभोग करने के लिए कह रही है। ऋग्वेद में यम का पाप तथा पुण्य के निर्णायक का भयंकर रूप कहीं भी नहीं है, फिर भी भयंकरता है। उनके साथ दो भीषण कुत्तों का वर्णन मिलता है जिनके चार आँखें हैं तथा चौड़ी-

सी नाकें हैं। ये यम निवास-स्थान के द्वार पर खड़े रहते हैं और पथचारियों के हृदय में भय उत्पन्न करते हैं। मनुष्यों के बीच भी ये अपने स्वामी के संदेश वाहकों के रूप में देखे जाते हैं। महाकाव्यों में इनको संज्ञा के गर्भ से उत्पन्न सूर्य-पुत्र कहा गया है। पुराणों में इनका मृत आत्माओं के बाद पुण्य के निर्णायकों के रूप में वर्णन है। मृत्यु-लोक में अपने शरीर-रूपी परिधान को छोड़कर आत्मा यमलोक जाती है और वहाँ यम अपने लेखक चित्रगुप्त की सहायता से उसके जीवन का विवरण ज्ञात कर उसके संबंध में अपना निर्णय सुनाते हैं। यम के दूत जो आत्माओं को मृत्यु-लोक से ले जाते हैं, बड़े भयंकर बताए गये हैं। यम की पत्नियों का नाम हेममाला, सुशीला तथा विजया मिलता है। इनका निवास-स्थान पाताल में स्थित यमपुर कहा जाता है। इनके दो मुख्य अनुचरों का नाम चंड अथवा महाचंड तथा कालपुरुष है। यम दक्षिण के दिक्पाल भी कहे जाते हैं। कुंती के गर्भ से उत्पन्न युधिष्ठिर इन्हीं के पुत्र थे।

जमल–(यमल-अर्जुन)–नलकूबर और मणिग्रीव नामक कुबेर के दो पुत्र नारद के शाप से यमलार्जुन के वृक्ष में परिणत होकर गोकुल में उगे। नारद के वरदान के कारण जड़ वृक्ष होने पर भी पूर्व जन्म की बातें इन्हें स्मरण थीं। बाल कृष्ण के ऊधम से ऊब कर एक बार यशोदा ने उन्हें ऊखल में बाँध दिया था। संयोग से श्री कृष्ण ऊखल को घसीटते हुए वहाँ जा पहुँचे जहाँ यमलार्जुन वृक्ष थे। श्रीकृष्ण का चरण स्पर्श होते ही वे दोनों वृक्ष लुप्त हो गये और उनके स्थान पर दो सिद्ध पुरुष उपस्थित हुये जो श्री कृष्ण की स्तुति करते हुए उत्तर की ओर चले गये।

जमुना–१. एक प्रसिद्ध मध्यकालीन हरिभक्ति-परायणा महिला। २. दे० 'यमुना'।

जयंत–१. एक प्रसिद्ध मध्यकालीन वैष्णव भक्त। २. श्री रामचन्द्र के एक सचिव तथा भक्त। ३. पांचाल देश के एक क्षत्रिय राजा। ये पांडव सेना के महारथी थे। ४. पौलोमी द्वारा इंद्र के एक पुत्र का नाम। देवासुर-संग्राम में इन्होंने कालेय नामक राक्षस का बध किया था। ५. राजा दशरथ के आठ महामात्यों में से एक। ६. अज्ञातवास के समय भीम का छद्म नाम। ७. अष्ट वसुओं में से एक। ८. द्वादश आदित्यों में से एक।

जयंती–राजा ऋषभदेव की स्त्री। इनके गर्भ से ऋषभदेव को निन्यानवे पुत्र उत्पन्न हुए और प्रत्येक नौ-नौ खंड पृथ्वी के स्वामी हुये। इनके ज्येष्ठ पुत्र का नाम भरत था जो भरत-खंड के स्वामी हुये थे। भरत परम धार्मिक, शास्त्रज्ञ और परम पराक्रमी राजा हुए। इन्होंने बहुत दिनों तक अपने स्वामी के साथ तप किया था। दे० 'भरत' तथा 'ऋषभदेव'।

जय–१. विजय का भाई। ये दोनों भाई विष्णु के द्वारपाल थे। एक बार इन्होंने सनकादिकों को विष्णु के पास जाने से रोका जिससे क्रुद्ध होकर उन्होंने शाप दे दिया। बहुत प्रार्थना करने पर उन्होंने कहा कि विष्णु से या तो शत्रु भाव या मित्र-भाव करके ही ये मुक्त हो सकते हैं। वीर-

१०

गति पाने के लिए इन्होंने शत्रुता को ही श्रेयस्कर समझा अतः ये सतयुग में हिरण्याक्ष-हिरण्यकशिपु, और त्रेता में रावण-कुंभकर्ण के रूप में प्रकट हुए। वायु मत से जय विजय का पुत्र था। दे० 'विजय'। २. उत्तानपाद वंश में ध्रुव के पुत्र का नाम। ३. विदेह वंश में श्रुत नामक जनक के पुत्र। ४. धृतराष्ट्र के एक पुत्र। भीमसेन द्वारा इनकी मृत्यु हुई।

जयन्तसेन–१. जरासंध का पुत्र। यह भरत-युद्ध में पांडवों की ओर से लड़ा था। २. अज्ञातवास के समय नकुल का छद्म नाम। ३. सार्वभौम राजा का पुत्र। इनकी माता सुनंदा तथा स्त्री सुश्रुवा थीं। इनके पुत्र का नाम अवाचीन था। ४. धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

जयदेव–प्रसिद्ध संस्कृत कवि। इनकी माता का नाम वामा देवी तथा पिता का नाम भोजदेव था। बंगाल के वीरभूमि जिले में केदुला नामक स्थान इनकी जन्म-भूमि थी। इनका 'गीत गोविंद' संगीत और साहित्य का अनुपम ग्रंथ है। भाषा-लालित्य और काव्य-माधुर्य के लिये यह अति प्रसिद्ध है।

जयद्रथ–१. महाभारत युद्ध में दुर्योधन-पक्षीय एक राजा। शंकर से इन्हें यह वर मिला था कि अर्जुन के अतिरिक्त और कोई इन्हें युद्ध में नहीं हरा सकता है। एक बार जब अर्जुन संसप्तकों की ओर युद्ध करने चले गये उस समय द्रोणाचार्य ने चक्रव्यूह की रचना की जिसकी भेदन क्रिया केवल अर्जुन को ज्ञात थी। अर्जुन-पुत्र अभिमन्यु ने गर्भ में ही भेदन-क्रिया सीख ली थी; लेकिन लौटने की विधि नहीं सीख पाये थे। चक्रव्यूह के समय यह निश्चित हुआ कि जब अभिमन्यु व्यूह तोड़ देगा तो अन्य पांडव विजय कर लेंगे। जयद्रथ प्रथम द्वार पर था। इसलिए अभिमन्यु के अतिरिक्त चक्रव्यूह में कोई प्रवेश न कर सका। अभिमन्यु चक्रव्यूह में मारा गया। जयद्रथ उसका मूल कारण ठहराया गया। अर्जुन ने दूसरे दिन सूर्यास्त के पूर्व जयद्रथ के मारने की प्रतिज्ञा, अन्यथा स्वयं चिता में जल जाने का प्रण किया। संध्या तक जयद्रथ छिपा रहा। कृष्ण ने सूर्य को अपने चक्र से ढक कर संध्या कर दी। इस संध्या काल में जब अर्जुन चिता बनाने लगे तब जयद्रथ उन्हें चिढ़ाने के लिए निकला। उसी समय श्रीकृष्ण ने चक्र का आवरण हटा लिया। सूर्य का प्रकाश सबको दिखाई पड़ा। अर्जुन ने जयद्रथ का वध किया। उसका सिर उड़कर कुरुक्षेत्र के निकट ही तपस्या करते हुये उसके पिता की गोद में जा गिरा। तपस्या करने के बाद ज्योंही वह उठे त्योंही जयद्रथ का सिर पृथ्वी पर गिर पड़ा जिससे उसके पिता का सिर टुकड़े-टुकड़े हो गया क्योंकि उसके पिता ने जयद्रथ को वरदान दिया था कि जिसके द्वारा जयद्रथ का सिर पृथ्वी पर गिरेगा उसका सिर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा। इसी कारण अर्जुन ने शंकर द्वारा पाये गये पाशुपत वाण से इसका सिर उड़ा दिया था। २. राम की सभा का एक राजा।

जयद्वल–अज्ञातवास के समय सहदेव का छद्म नाम।

जयमल–१. मेड़ता के राजा, एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। नाभा जी ने इनको मीराबाई का भाई कहा है। २.

मध्यकालीन भक्त राजा। एक बार प्रबल शत्रु ने उसे घेर लिया। इन्होंने कहा, 'प्रभु सब भला ही करेंगे' और सबको रणक्षेत्र में सुसज्जित होने की आज्ञा दी। स्वयं तैय्यार हो अपना युद्धाश्व मँगवाया। जब उसे लाया गया तब वह पसीने से तर था। फिर पता लगाने पर मालूम हुआ कि कोई श्याम वर्ण वीर अकेले सारी शत्रु सेना को परास्त करके चला गया। इस प्रकार प्रभु ने अपने भक्त की रक्षा की। देखिए 'कामध्वज', 'ग्वालभक्त' तथा देवा'।

जयरात–कलिंग के राजकुमार का भाई। भारत-युद्ध में यह कौरवों के पक्ष में था।

जयशर्मन–एक प्रसिद्ध ब्राह्मण। इंद्रप्रस्थ के राजा अनंगपाल ने अपनी चंद्रकांति नाम की कन्या इन्हें व्याह दी थी। ये जब हिमालय पर समाधिस्थ थे तो इन्हें राज्योपभोग की लालसा उत्पन्न हुई। देहत्याग कर ये चंद्रकांति के गर्भ से उत्पन्न हुये और जयचंद्र के नाम से प्रसिद्ध हुए। देखिये 'जयचंद्र'।

जयसिंह–अजमेर के चौहान राजा के वंशोत्पन्न मद्रदेव के पुत्र। इन्होंने ५० वर्षों तक राज्य किया।

जयसेन–मत्स्य, वायु तथा महाभारत के अनुसार कैकेयी के द्वारा सार्वभौम के पुत्र। इनका नाम जयत्सेन भी प्रसिद्ध है। विष्णुपुराण के अनुसार ये अहीन के पुत्र थे :

जयानीक–१. द्रुपदपुत्र पांचाल। महाभारत-युद्ध में ये द्रोण पुत्र अश्वत्थामा द्वारा मारे गये। ३. मत्स्य देश के राजा जो विराट के भाई थे।

जयाश्व–१. जयानिक के भाई और द्रुपद के पुत्र का नाम। इनकी मृत्यु द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा के हाथ से हुई। विराट के भाई।

जयेश–विराट नगर में अज्ञातवास के समय भीम का गुप्त नाम।

जरत्कारु–१. नागराज वासुकि के बहनोई एक प्रसिद्ध सर्प का नाम। इनकी स्त्री का नाम भी जरत्कारु था। इनके पुत्र का नाम 'आस्तीक' था। एक बार इनकी पत्नी ने इन्हें सोते से जगा दिया, जिससे अप्रसन्न हो, ये उसे छोड़ कर चले गये। चलते समय इन्होंने 'अस्ति' (गर्भ है) कहा था। इस कारण जो संतान हुई उसका नाम आस्तीक पड़ा। २. नागराज बासुकी की भगिनी और जरत्कारु की स्त्री का नाम।

जरद्गौरी–वासुकि की भगिनी जरत्कारु का नामांतर। दे० 'जरत्कारु'।

जरस्–वसुदेव की रथराजी नाम की स्त्री से उत्पन्न द्वितीय पुत्र का नाम। क्षत्रिय कुलोत्पन्न होकर भी दुष्कर्मों के कारण ये व्याध हो गये थे। इन्हीं के बाण से श्रीकृष्ण की मृत्यु हुई। कालांतर में भल्लतीर्थ में इनकी मृत्यु हुई। इनका नामांतर 'जरा' है। ये पूर्व जन्म में बालि थे।

जयस्तोभ–एक प्रसिद्ध राजा। ये कुष्ट रोग से पीड़ित थे। सूर्यदेव की आराधना से रोगमुक्त हुए।

जरा–एक राक्षसी का नाम। यह जरासंध की उपमाता थी। राजा वृहद्रथ की दो रानियों को आधा-आधा पुत्र हुआ जिससे राजा ने दोनों को श्मशान भूमि में फेंकवा दिया। यह राक्षसी श्मशान भूमि में रहती थी। इसने दोनों भागों को जोड़कर पूर्ण कर दिया। पूर्णाङ्क बनाकर राजा से कहा कि जब तक इसके बीच की संधि नहीं टूटेगी तब तक इसे कोई मार नहीं सकता। दे० 'जरासंध'।

जरासंध–१. मगधाधिपति वृहद्रथ के पुत्र का नाम। वृद्रदथ ने पुत्र-प्राप्ति के लिए चंड कौशिक की आराधना की। एक फल देकर राजा से कहा कि इसे रानी को खिला दो। राजा के दो रानियाँ थीं। अत: फल को बीचोबीच से काटकर उन्होंने एक-एक टुकड़ा रानियों को दे दिया। समय पर दोनों रानियों को आधा-आधा पुत्र हुआ। राजा ने उन्हें फेंकवा दिया किंतु श्मशान निवासनी 'जरा' नाम की राक्षसी ने दोनों को जोड़ (संधि) दिया। इसलिए उसका नाम जरासंध पड़ा। कालांतर में यह एक महान् योद्धा हुआ। अस्ति और प्राप्ति नाम की कंस की दोनों कन्याएँ इसी को ब्याही थीं। कृष्ण के द्वारा कंस के मारे जाने के बाद जरासंध ने कृष्ण को अपने आक्रमणों के कारण मथुरा छोड़ने के लिए बाध्य किया। कृष्ण द्वारका में रहने लगे। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के पूर्व जरासंध और भीम में द्वन्द्व युद्ध कराया गया। कृष्ण के संकेत से भीम ने जरासंध के शरीर की संधि तोड़ दी और वह मर गया। दे० 'जरा'। २. धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

जरितारि–मंदपाल ऋषि के पुत्र। इनकी माता का नाम जरिता शार्ङ्गी था।

जरिता शार्ङ्गी–१. एक मंत्रद्रष्टा। २. मंदपाल ऋषि की पत्नी।

जरुथ–एक राक्षस। यह जल में रहता था। वशिष्ठ मुनि ने अग्नि प्रज्वलित करके इसे भस्म किया था।

जर्तिका–बाह्लीकों का एक गण।

जलंधर–कश्यप कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

जलंधरा–काशिराज की कन्या व भीमसेन की पत्नी। इसके पुत्र का नाम शर्वत्रात था।

जल जातूकर्ण्य–एक प्रसिद्ध ब्राह्मण पुरोहित का नाम। यह काशी, विदेह तथा कोसलाधीश के पुरोहित थे। दे० 'जातूकर्ण्य'।

जलद–अत्रि कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।

जलसंध–१. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम जिसे भीम ने मारा था। २. मगध के एक प्राचीन राजा। महाभारत युद्ध में ये दुर्योधन के पक्ष में थे और सात्यकी के हाथ से इनकी मृत्यु हुई। यह बड़े शूरवीर तथा पवित्रकर्मा थे। ३. अंगिरा कुलोत्पन्न एक ब्रह्मर्षि। इनका नामांतर जलसंधि था।

जलेफ–एक पुरुवंशी राजा।

जल्प–तामस मन्वंतर में सप्तर्षियों में से एक।

जव–दंडकारण्य वासी एक राक्षस। विराध नामक राक्षस इसी का पुत्र था।

जवीनर–भद्राश्व के पुत्र का नाम। भागवत में इनका नाम यवीनर है। अन्यत्र प्रवीरन नाम से भी ये प्रसिद्ध हैं।

जसवंतसिंह–एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त और जयमाल सिंह

नाम के विख्यात राजपूत भक्त के छोटे भाई। ये हरिदास जी के शिष्य थे।

जस गोपाल—एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। इन्होंने चारों धामों में हरिभक्ति का प्रचार किया।

जसू स्वामी—एक अनन्य हरिभक्त। एक बार ब्रजवासी इनके बैल खोल ले गये। इन्हे दुखी देख श्री कृष्णजी ने इन्हें दो नये बैल भेज दिये जिससे ये हल जोतते रहे। नाभा जी ने इस घटना को ब्रह्मा द्वारा वच्छ-हरण की कोटि में रक्खा है।

जसोधर—एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। इनकी उत्पत्ति दिवदास के वंश में हुई थी। भक्तमाल में इनके विषय में एक विलक्षण कथा मिलती है। कहा जाता है कि एक बार इनके यहाँ 'रामायण' की कथा हो रही थी। विश्वामित्र के यज्ञरक्षण के लिए राम-लक्ष्मण जा रहे थे। इस प्रसंग को सुन, भाव विभोर हो ये कहने लगे—'मैं भी साथ चलूंगा।' यह कहकर ध्यान में तन्मय हो गये। प्रभु ने इनको प्रत्यक्ष दर्शन दिये और कहा—'तुम यहीं रहो, यज्ञ रक्षण करके हम यहीं आते हैं।' यह वियोग बचन सुन इन्होंने अपने प्राण ही न्यौछावर कर दिये।

जहु—भागवत के अनुसार सत्यहित के पुत्र का नाम।

जह्नु—१. पुरुरवा वंश में उत्पन्न एक प्रसिद्ध राजर्षि। इनके पिता का नाम अजमीढ़ तथा माता का नाम केशिनी था। एक बार ये यज्ञ कर रहे थे। उसी समय भगीरथ गंगा को लेकर उसी मार्ग से निकले। इनका सारा आश्रम जलमग्न हो गया। क्षुब्ध हो इन्होंने गंगा को पी लिया। भगीरथ आदि के बहुत प्रार्थना करने पर इन्होंने अपनी जाँघ से गंगा को निकाल दिया। इसी कारण गंगा का एक नाम जाह्नवी पड़ा। गंगा इनसे विवाह करना चाहती थीं; किन्तु इन्होंने युवनाश्व की कन्या कावेरी का पाणिग्रहण किया। इनके पुत्र का नाम पुरु था। २. विश्वामित्र वंश के आदि पुरुष 'जाह्नव' विश्वामित्र का पैत्रिक नाम है। 'जाह्नवी, शब्द ऋग्वेद में आया है जिसका अर्थ जह्नु की स्त्री तथा जह्नु का वंश दोनों हो सकता है।

जांबवंत—ऋक्षराज जांबवान ब्रह्मा के पुत्र थे। त्रेता में राम-रावण युद्ध में इन्होंने राम की सहायता की थी। द्वापर में स्यमंतक मणि के लिये श्रीकृष्ण ने इनसे युद्ध किया। अंत में स्यमंतक मणि के साथ-साथ इन्होंने अपनी कन्या जांबवती श्रीकृष्ण को सौंप दी। संभवतः जांबवान कोई प्रतापी अनार्य राजा थे। नाभाजी ने राम के अग्रगण्य भक्तों के साथ इनका उल्लेख किया है। दे० 'जांबवती'।

जांबवती—ऋक्षराज जांबवान की कन्या जो कृष्ण को ब्याही थी। यह कृष्ण की अष्ट पटरानियों में से एक थीं। इनके सांब, सुमित्र, वसुमत्, पुरजित, शतजित्, सहस्त्रजित, विजय, चित्रकेतु, द्रविड़ तथा ऋतु नामक दस पुत्र तथा एक कन्या थी। अंत में इन्होंने अग्नि समाधि ली थी।

जाड़ा—एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। ये संभवतः 'खोजी' आदि पहुँचे हुए साधकों के समकक्ष थे।

जातकि—एक राजा। यह चंद्र विनाशन असुर का अंशावतार था।

जातिस्मर—(कीट) एक कीड़ा जिसे पूर्व जन्म का वृत्तांत याद था। इससे व्यास का संवाद हुआ था। व्यास के उपदेशानुसार यह युद्ध में मरकर मोक्ष को प्राप्त हुआ।

जातूकर्ण्य—एक प्रसिद्ध पुरोहित। यह कात्यायनी के पुत्र तथा असुरायण और यास्क के शिष्य थे। इनके शिष्य पारागर्व थे। अलीकयु तथा वाचस्वत्य आदि ऋषि इनके समकालीन थे। संधि-नियमों के संबंध में इन्होंने विचार किया था। सांख्यायन श्रौत सूत्रों में इनका नाम जातूकर्ण कहा गया है। आचार तथा श्राद्ध के संबंध में इन्होंने सूत्र लिखे हैं। श्रौतसूत्रों में एक उपस्मृतिकार के रूप में इनका उल्लेख है। इनका समय २००-४०० ई० के बीच में अनुमान किया जाता है।

जानुजंघ—एक राजा।

जाबालि—१. एक प्रसिद्ध ऋषि। महाराजा दशरथ के मंत्री और पुरोहित। ये एक महान् दार्शनिक थे। इन्होंने राम को निज मतावलम्बी बनाने की चेष्टा की किंतु राम ने इनके मत का विरोध किया। ये एक नैय्यायिक थे। किसी विशेष कारण से इन्होंने अनीश्वरवाद संबंधी अपने मत प्रकट किये। वास्तव में ये एक बड़े हरिभक्त थे। नाभादास जी ने इन्हें प्रमुख हरिभक्तों की श्रेणी में रक्खा है। २. मंदराचल पर तपस्या करनेवाले एक ऋषि। इनके एक लाख शिष्य थे। ऋतुंभर नामक एक निस्संतान राजा को इन्होंने विष्णुसेवा, गोसेवा और शिव की आराधना का उपदेश दिया था। एक बार ये वन में गये। वहाँ इन्होंने एक परम सुन्दरी स्त्री को तपस्या करते देखा। उससे प्रश्न करना चाहा किंतु उसका ध्यान नहीं हटा। अंत में इन्हें मालूम हुआ कि वह कृष्ण की आराधना में मग्न थी। इनके मन में कृष्णोपासना की भावना जगी और गोकुल में चित्रगंधा नामक गोपी के रूप में ये जन्मे। ३. भृगु-कुलोत्पन्न एक ऋषि स्मृतिकार। हेमाद्रि और हलायुध ने इन्हें आधार माना है। ४. एक प्रसिद्ध ऋषि। ये विश्वामित्र के एक पुत्र थे।

जालंधर—(जलंधर) शिव के तृतीय नेत्र की अग्नि से उत्पन्न एक अति पराक्रमी राक्षस। एक समय इंद्र शिव के दर्शन के लिए कैलाश गये। वहाँ उन्होंने एक भयंकर पुरुष को बैठे देखा। उससे उन्होंने पूछा कि तू कौन है। कुछ भी उत्तर न मिलने पर देवराजने अपना वज्र-प्रहार किया जिस कारण उस पुरुष का कंठ नीलवर्ण हो गया और भाल स्थित तृतीय नेत्र खुल गया। अग्नि की ज्वाला निकल कर इंद्र को भस्म करने लगी। इन्द्र की समझ में अब आ गया कि वे साक्षात् शिव हैं। इन्द्र प्रार्थना करने लगे। शंकर ने वह अग्नि समुद्र में फेंक दी जिससे एक बालक उत्पन्न हुआ और घोर रव के साथ रोने लगा। वह रव इतना भयानक था कि सारा संसार बहरा हो गया। ब्रह्मा के आने पर समुद्र ने उन्हें बालक को सौंप कर उसकी रक्षा करने के लिए कहा। ब्रह्मा ने उसे अपनी गोद में ले लिया पर गोद में लेते ही, उसने इतने जोर से ब्रह्मा की मूँछ नोचनी शुरू की कि उनके नेत्रों से जल बहने लगा। तब ब्रह्मा ने उसका नाम जालंधर रख दिया और वर दिया कि शिव के सिवाय उसे कोई मार न सके। मतांतर से

इसकी उत्पत्ति स्वर्ग-नदी गंगा तथा समुद्र के संयोग से हुई। पैदा होते ही यह त्रैलोक्य भेदी भयानक स्वर से रोने लगा। संसार काँपने लगा। ब्रह्मा स्वयं आये और उसे असुरों का राज्य दिया। वर दिया कि वह स्वर्ग और पाताल का राजा हो। इसने इन्द्र को परास्त किया। मय दैत्य ने इसकी राजधानी की रचना की। शुक्राचार्य ने इसे संजीवनी विद्या दी। इसने बृन्दा नामक कन्या से विवाह किया था। देवताओं ने इसके अत्याचारों से तंग आकर विष्णु से प्रार्थना की। लक्ष्मी के रोकने पर भी विष्णु गये। बहुत दिनों तक युद्ध होता रहा। अंत में प्रसन्न हो विष्णु वरदान देकर चले गये। कालांतर में इसने नारद से पार्वती की सुन्दरता सुनी। पार्वती को स्त्री रूप में ग्रहण करने की इसमें इच्छा उत्पन्न हुई। निशुंभ, शुंभ, कालनेमि आदि राक्षसों को साथ ले इसने कैलाश पर आक्रमण किया। शङ्कर की सेना से पार न पाकर गांधर्वी विद्या से शिव को मोहित कर स्वयं शिव रूप धारण कर पार्वती के पास गया। पार्वती को जब यह ज्ञात हुआ कि यह राक्षस है, तब वह गुप्त हो गईं और विष्णु की शरण में गईं। जालंधर को यह वर था कि जब तक उसकी पत्नी का पातिव्रत धर्म नष्ट नहीं होगा तब तक कोई उसे मार नहीं सकेगा। विष्णु ने जालंधर का रूप धारण करके उसका सतीत्व नष्ट किया। ज्ञात होने पर बृन्दा ने विष्णु को शाप दिया कि त्रेतायुग में उनकी पत्नी राक्षस के द्वारा अपहृत की जायेगी और वह बन-बन भटकते फिरेंगे। बृन्दा ने अपने पति को प्राप्त करने के लिए घोर तपस्या की। जिस स्थान पर उसने तपस्या की थी, उसका नाम वृन्दावन हो गया। एक बार फिर उसे पति के दर्शन हुए और अंत में विष्णु ने चक्र से उसका सिर धड़ से अलग कर दिया। इसके शव के स्थान पर एक अपूर्व तेज निःसृत हुआ जो शिव के तेज में मिल गया। वृन्दा ने अग्नि में प्रवेश किया।

जालधि—भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।

जालमती—म्लेच्छराज बादल की कन्या। इसके वाह्लिक नामक पुत्र ने बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त की थी। वह नागपूजा में बहुत तत्पर रहता था।

जालवती-एक देवकन्या। इसके ऊपर मोहित हो शरद्वत का रेतस्खलन हो गया था जिससे कृप और कृपी का जन्म हुआ। दे० 'कृप'।

जितराम—शकुनि नामक ऋषि के पुत्र। यह अत्यंत विरक्त थे और संन्यस्त रूप से मधुवन नामक स्थान में एकांत वास करते थे।

जितवती—उशीनर की एक कन्या का नाम। यह द्यू नामक वसु की पत्नी थी।

जितव्रत—हविधीन के पुत्र। इनकी माता का नाम हविधीनी था।

जितशत्रु—एक ऋषि।

जितात्मा—एक विश्वदेव।

जितारि—अविक्षित नामक विख्यात सूर्यवंशी राजा के एक पुत्र का नाम।

जित्वन् शैलिनि—शिलीन ऋषि के पुत्र। ये शैलिन नाम से भी प्रसिद्ध हैं। ये जनक तथा याज्ञवल्क्य के समकालीन थे और वाग्देवता को ब्रह्म मानते थे। इनके भाई का नाम जिन था।

जिन—दे० 'जित्वनशैलिनि'।

जिष्णु—१. विष्णु, इन्द्र तथा अर्जुन का नामांतर। २. भौत्य मन्वंतर में मनु के पुत्र। ३. महाभारत युद्ध में पांडवों के एक मित्र राजा जिन्हें कर्ण ने मारा था।

जीमूत—१. एक मल्ल जिसे विराट के यहाँ अज्ञातवास काल में भीम ने मारा था। २. भीम के एक पुत्र का नाम। ३. भागवत, विष्णु तथा मत्स्य के अनुसार व्योम के पुत्र।

जीमूतवाहन—१. यह पूर्व जन्म में मध्य देश के अधीश्वर शूरसेन नामक राजा थे। २. शब्दार्थ=जीमूत (बादल) जिसके वाहन हैं। इन्द्र की एक उपाधि। इस नाम के कई व्यक्ति हैं, जिनमें 'दायभाग' के लेखक प्रसिद्ध हैं।

जीवंती—परशु नामक एक वैश्य की स्त्री का नाम। युवावस्था में ही इन्हें वैधव्य प्राप्त हुआ और कालांतर में इसने वैश्यावृत्ति स्वीकार कर ली। पर एक समय इसके मुख से 'राम' ये दो अक्षर निकले जिसके प्रभाव से यह पाप मुक्त हो अपने जार के सहित विष्णुलोक को चली गई।

जीव गुसाईं—प्रसिद्ध वैष्णव भक्त, विद्वान् तथा लेखक। ये वैष्णव 'भक्त बंधु' रूपसनातन के भतीजे तथा शिष्य थे। ये लेखन कला में अद्वितीय थे एवं प्रसिद्ध दार्शनिक तथा संदेह ग्रंथियों के खोलने में सिद्ध थे। दे० 'रूपसनातन'।

जीवनाथ—अंगिरा कुलोत्पन्न एक गोत्रकार। पाठांतर से इनका नाम युवनाश्व भी मिलता है।

जीवल—अयोध्यापति ऋतुपर्ण राजा के अश्वपाल का नाम। अज्ञातवास काल में जब राजा नल ऋतुपर्ण के सारथी बने थे तब उन्होंने इसकी प्रशंसा की थी।

जीवा—१. प्रसिद्ध दाक्षिणात्य भक्त ब्राह्मण। ये कबीर के शिष्य थे तथा प्रसिद्ध भक्त तत्वा जी के भाई थे। दे० 'तत्वा'। २. एक प्रसिद्ध मध्य कालीन वैष्णव भक्त।

जीवानंद—प्रसिद्ध भक्त तथा चारण।

जुम्र—याकूत नामक म्लेच्छ का पुत्र। याकूत के पिता का नाम न्यूह था।

जुहू—बृहस्पति की स्त्री का नाम। सर्वानुक्रमणी के अनुसार ये ब्रह्मदेव की स्त्री थीं।

जूज—न्यूह नामक विख्यात म्लेच्छराज के वंशज, और म्लेच्छराज चरल का पुत्र। इसने दो सौ सैंतीस वर्ष तक राज्य किया।

जूजुवा—एक प्रसिद्ध चारण भक्त। ये कुशल गायक थे। नाभादास जी ने इस प्रकार के १५ गायकों का उल्लेख किया है।

जूति—वातरशन के पुत्र। ऋग्वेद की एक ऋचा के रचयिता।

जंभक—एक यज्ञ। यह बड़ा अत्याचारी था। धर्मारण्य के ऋषिगण इससे संत्रस्त रहते थे।

जेवाबाई—एक प्रसिद्ध हरिभक्ति-परायणा महिला।

जैगीषव्य–१. एक प्रसिद्ध ऋषि। इनके शिष्य देवल इनके असाधारण तेज और तप से प्रभावित थे। अश्वशिरस् राजा की सभा में कपिल ने विष्णु का तथा इन्होंने गरुड़ का रूप ग्रहण किया था। २. कृतयुग में शतकलाक नामक ऋषि के पुत्र का नाम। इन्होंने प्रभास क्षेत्र में बड़ी उग्र तपस्या की थी। ३. देवीभागवत में इस नाम के कई ऋषियों का उल्लेख मिलता है। इनसे शिक्षा प्राप्त करके ब्रह्मदत्त पुत्र विश्वक सेन ने योग शास्त्र पर ग्रन्थ लिखा था।

जैतारन–एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त, जो भिक्षावृत्ति द्वारा जीविका-निर्वाह कर संत-सेवा करते थे।

जैत्र–१. कृष्ण के अनुचर का नाम। २. धृतराष्ट्र का एक पुत्र जिसे भीम ने मारा।

जैत्रायण सहोजित–एक प्रसिद्ध राजा जिन्होंने राजसूय यज्ञ किया था।

जोईसिन–एक प्रसिद्ध हरिभक्ति-परायणा महिला।

ज्ञानदेव–(ज्ञानेश्वर) एक महान् महाराष्ट्री भक्ति कवि मराठी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ 'ज्ञानेश्वरी' की रचना इन्होंने १५ वर्ष की अवस्था में की। इनके पिता ने पत्नी के रहने पर भी गुरु से झूठ बोलकर संन्यास ले लिया। इनके गुरु जब दक्षिण गये तब इनकी माता को उन्होंने पुत्रवती होने का आशीर्वाद दे दिया। माता ने पति के संन्यास लेने की गाथा कह सुनाई। गुरु के कहने से इनके पिता को गृहस्थाश्रम स्वीकार करना पड़ा। इनके जाति भाइयों ने इन्हें ब्राह्मणत्व से भ्रष्ट ठहराकर अपमान के साथ इनका वहिष्कार किया। 'गैनीनाथ' और 'ज्ञानेश्वर' नामक दो पुत्र और 'मुलाबाई' नामक एक कन्या उत्पन्न हुई। ज्ञानदेव को वेद की शिक्षा देने से इंकार किया गया। इस पर इन्होंने कहा कि मनसा, वाचा, कर्मणा भगवान को जानने वाला ही ब्राह्मण है क्योंकि वेद तो एक भैंसा भी पढ़ सकता है। ऐसा कहकर वहीं उपस्थित एक भैंसे सेइन्होंने शुद्ध शुद्ध वेदोच्चारण करवाया। सब लोग आश्चर्य में पड़कर इन्हें एक सिद्ध महात्मा मानने लगे। इनके विषय में अनेक विलक्षण कथायें प्रसिद्ध हैं। अपने मत का प्रचार करके कुछ दिनों के बाद इन्होंने ज्ञानतः चिर समाधि ले ली।

ज्ञानभद्र–द्वापर युग में सौराष्ट्र देश में रहनेवाले एक महारथी का नाम। एक बार वहाँ दुर्भिक्ष पड़ा। इन्हें सपत्नीक उपवास करना पड़ा। ये पर्वत पर चले गये और दोनों की वहीं पर मृत्यु हो गई। इनको सायुज्य मुक्ति प्राप्ति हुई।

ज्ञानश्रुति–एक पुण्यात्मा राजा। गोदावरी तट पर स्थित प्रतिष्ठान नामक नगरी में इनकी राजधानी थी। इन्हें आकाश में एक विचरणशील हंस द्वारा ज्ञात हुआ कि रैक्व नामक ब्रह्मवेत्ता इनसे अधिक पुण्यशील हैं। यह सुन कर रथ पर आरूढ़ होकर ये उनके पास गये। उपहार रूप में बहुत सी सामग्री रक्खी पर उन्होंने अस्वीकार किया। उन्होंने पूरी गीता का माहात्म्य उनसे प्राप्त किया।

ज्योति–१. एक वसु-पुत्र। इनके पिता का नाम अह था। २. कार्तिकेय का एक भृत्य जो उन्हें अग्निदेव से मिला था।

ज्योतिक–एक सर्प।

ज्योतिष्क–एक सर्प।

ज्योतिष्मत–१. मधुवन-निवासी शाकुनि नामक ऋषि के पुत्र। २. एक अग्नि।

ज्योतिस्–कश्यप तथा कद्रू के एक पुत्र का नाम।

ज्योत्स्ना–सोम की कन्या, तथा वरुण-पुत्र पुष्कर की स्त्री।

ज्वर–१. कश्यप तथा सुरभि के पुत्र। २. एक रोग जिसकी उत्पत्ति शिव के प्रस्वेद से हुई थी। यह दैत्यराज बाणासुर के सेनापतियों में से एक था। इसके तीन पैर, तीन मस्तक, ६ बाहु और ९ आँखें थीं। अनिरुद्ध-उद्धार के लिए बलराम आदि के साथ श्रीकृष्ण ने जब बाणासुर पर चढ़ाई की तब वे ज्वराक्रांत हुये। उसे नष्ट करने के लिए श्रीकृष्ण ने एक शीतज्वर की सृष्टि की। ज्वर कृष्ण को छोड़कर अलग हो गया और उनकी स्तुति करने लगा जिससे संतुष्ट हो इन्होंने उसको क्षमा कर दिया और यह वर दिया कि पृथ्वी पर तुम्हें छोड़कर और दूसरा ज्वर नहीं रहेगा। भागवत में केवल त्रिपाद और त्रिशिर ज्वर का उल्लेख है।

ज्वलंती–तक्षक की कन्या तथा ऋक्ष की स्त्री। अत्यंतार इसके पुत्र का नाम था।

ज्वलना–प्रसिद्ध सर्प तक्षक की कन्या तथा सोमवंशीय औचेयु अथवा ऋचेयु की स्त्री।

झाभू–एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त।

झाजी–एक प्रसिद्ध हरिभक्ति-परायण महिला। ये विख्यात भक्त रैदासजी की शिष्या थीं और मारवाड़ प्रांत की रहनेवाली थीं।

झिल्ली–वृष्णिवंशीय एक यादव। यह द्रौपदी-स्वयंवर में उपस्थित था। नामांतर झिल्लीबभ्रु है।

झिल्लीरव–एक यादव।

टण्ड–एक शाखा-प्रवर्तक ऋषि। दे० 'पाणिनि'।

टीला–एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। ये भक्तों में टीला (शिखर) के समान ही उच्च थे।

टीला जी–रामानंदी संप्रदाय के एक प्रमुख भक्त तथा प्रचारक, जो पैहारी जी के २४ प्रधान शिष्यों में से एक एवं नाभा जी के गुरु अग्रदास-जी के गुरुभाई थे।

टेकराम–रामानंदी संप्रदाय के एक प्रसिद्ध भक्त। ये पैहारी जी के शिष्य तथा नाभा जी के गुरु अग्रदास जी के एक गुरु भाई थे।

डंबर–कार्तिकेय का एक अनुचर जो उन्हें धाता से मिला था।

डगर–एक प्रमुख वैष्णव भक्त। नाभा जी ने इनका उल्लेख चैतन्य द्वारा प्रभावित अष्टादश प्रधान वैष्णव प्रचारकों के साथ किया है।

डिडिक–एक मूषक।

डिभ–जरासंध का प्रधान सेनापति और हंस का छोटा

भाई। हंस और डिंभ शिव के वर से अजेय और अवध्य हो गये थे। विरूपाक्ष और कुंडोदर शिव के दो गण भी सदैव इनकी सहायता करते थे। तपस्या में तल्लीन दुर्वासा ऋषि का इसने अपमान किया। मुनि के शिकायत करने पर श्रीकृष्ण ने इससे घोर युद्ध किया। वे युद्ध करते-करते इसे बहुत दूर हटा ले गये। इसी बीच उसे ज्ञात हुआ कि उसका भाई हंस मारा गया। इससे भयभीत होकर वह यमुना में कूद पड़ा और वहाँ आत्महत्या कर ली। इस पाप से दीर्घकाल तक उसे नरक-यातना भोगनी पड़ी।

तंडि–अंगिरा-गोत्रीय एक कृतयुगीन विख्यात ऋषि। इन्होंने दीर्घकाल तक शिव की तपस्या करके शिव सहस्र नाम योग से उन्हें प्रसन्न किया। वरदान मिला कि तुम्हारा पुत्र सूक्तकार हो। सूर्यवंशी त्रिधन्वा राजा इनके शिष्य थे। शिव पुराण में इनका नाम दंडी मिलता है, यद्यपि शिव सहस्र नाम में तंडि शब्द ही मिलता है

तंति–धूम्र पराशर कुलोत्पन्न एक प्रख्यात ऋषि।

तंतिपाल–अज्ञातवास-काल में सहदेव द्वारा गृहीत छद्म नाम। महाभारत के कुंभकोणम् संस्करण में तंत्रीपाल नाम है।

तंतुमान–अग्नि का एक नाम। नामांतर 'उत्तराग्नि' है।

तंत्रीपाल–दे० 'तंतिपाल'।

तंबि–अंगिरस् कुलोत्पन्न एक गोत्रकार ऋषि।

तंस–भविष्य के अनुसार समुत्तेस के पुत्र।

तंसु–एक पुरुवंशी राजा। इनके पिता का नाम मतिनारथा था।

तकिविद–अग्निकुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।

तक्ष–दाशरथि भरत के पुत्र। इनकी माता का नाम मांडवी था। अपने पुष्कर नामक भाई के साथ इन्होंने गांधार की यात्रा की और उस देश को जीतकर तक्षशिला नाम की नगरी बनाई।

तक्षक–अष्टकुली महासर्पों में एक प्रसिद्ध सर्पराज। इसके माता का नाम कद्रू तथा पिता का कश्यप था। शृंगी ऋषि के शाप से इसने ही राजा परीक्षित को काटा था। अन्य सर्पों के साथ तक्षक भी बैकुंठ के द्वारपाल माने गये हैं। इसीलिये हरिदर्शन की इच्छा रखनेवालों के लिये इन्हें प्रसन्न रखना अनिवार्य है।

तत्पुरुष–शिव के एक अवतार का नाम।

तत्वा–प्रसिद्ध दाक्षिणात्य ब्राह्मण भक्त जो कबीर के शिष्य थे। इनके एक भाई का नाम जीवा था। जुलाहे का शिष्यत्व ग्रहण करने के कारण लोगों ने इन्हें जाति-बहिष्कृत कर दिया। एक भाई को एक कन्या और एक को एक पुत्र था। इन दोनों का कहीं ब्याह नहीं हो रहा था। कबीरदास ने आज्ञा दी कि एक का दूसरे से ब्याह कर दो। इस उपक्रम से घबराकर विरादरी के सब लोगों ने दोनों का अलग-अलग विवाह करा देने का बचन दिया किंतु ये लोग गुरु आज्ञा का उल्लंघन कैसे करते। अंत में कबीरदास ने कहा कि यदि सभी भगवत्-भक्ति करें, तो सबका कहा मानो। अंत में ऐसा ही हुआ।

तनु–एक महर्षि। दे० 'कृष'।

तप–१.तामस मनु के पुत्र। २. एक अग्नि का नाम ।

तपती–सूर्य और छाया की कन्या। इसके सावित्री नाम की अति रूपवती एक बहन थी। एक समय ऋक्षपुत्र संवरण मृगया खेलने निकले। उनका अश्व भटकता हुआ एक पर्वत पर पहुँचा, जहाँ तपती आई थी। इसके सौंदर्य से मुग्ध होकर संवरण ने तत्काल गंधर्व-विवाह की प्रार्थना की। किन्तु पिता की सम्मति के बिना वह तैय्यार न हुई। अनंतर सूर्य की तपस्या करने पर तपती के साथ विवाह करने की आज्ञा मिली। विवाह होने पर इनके कुरु नाम का एक पुत्र हुआ जिसने कुरु बंश की स्थापना की।

तपन–१. पांडव पक्षीय एक पांचाल वीर जिसे युद्ध में कर्ण ने मारा। २. एक देव जिन्हें अमृत-रक्षा का कार्य सौंपा गया था। ३. रावणपक्षीय एक राक्षस जिसे गज नामक बानर ने मारा था।

तपस–वाराह कल्प में शिव का एक अवतार। इनके लंबोदर, लंबाक्ष, केशलंब तथा प्रलंबक नामक चार पुत्र थे।

तपस्विन–मत्स्य पुराण के अनुसार नड्वला से चक्षुर्मनु के एक पुत्र।

तपोद्युति–तामस मनु के एक पुत्र।

तपोधन–तामस मनु के एक पुत्र।

तपोभागिन्–तामस मनु के एक पुत्र।

तपोभूत–तामस मनु के एक पुत्र।

तपोमूर्ति–रुद्र सावर्णि मन्वंतर में सप्तर्षियों में से एक।

तपोयोगिन्–तामस मनु के पुत्रों में से एक।

तपोरति–तामस मनु के एक पुत्र।

तपोराशि– तामस मनु के एक पुत्र का नाम।

तम–गृत्समदवंशीय श्रव नामक एक ब्राह्मण के पुत्र का नाम। इनके पुत्र का नाम प्रकाश था। विष्णु पुराण के अनुसार ये पृथुश्रव्या के पुत्र थे।

तमस्य–तामस मनु के एक पुत्र।

तमौजस–असमंजस् राजा के पुत्र। मत्स्य के अनुसार ये देवाई के पुत्र थे।

तम्र–महिषासुर नामक प्रसिद्ध राक्षस का कोषाध्यक्ष।

तरंत–ऋग्वेद के अनुसार तरंत और पुरुमी दोनों श्यवाश्व के आश्रयदाता थे।

तरण्यिक–एक प्रसिद्ध राजा जिन्होंने ३६०० वर्षों तक राज्य किया। भविष्य के अनुसार ये द्युमणि वत्सल राजा के पुत्र थे।

तरस–राम सेना के एक बानर योद्धा। यह हनुमान के साथ पच्छिम द्वार की रक्षा करते थे।

तरुक्ष–ऋग्वेद में दानस्तुति के सिलसिले में इनका उल्लेख हुआ है।

तरुणक–एक सर्प का नाम।

तर्ज–उत्तम मनु के एक पुत्र का नाम।

तल–एक शाखा प्रवर्तक ऋषि। दे० 'पाणनि'।

तलवकार–एक शाखा प्रवर्तक ऋषि।

तांडय–एक आचार्य का नाम। ये वैशंपायन के नव शिष्यों

में से एक थे। सामवेदांतर्गत कौथुमी शाखा का तांडय ब्राह्मण इनका रचा हुआ है।

तांडविंद—एक आचार्य।

ताडिन—एक आचार्य जिन्होंने महावृहती छन्द को सतो-वृहती कहा है।

ताडकायन—१. विश्वामित्र के एक पुत्र। २. वादरायण ब्यान्स के एक शिष्य अंगिरा गोत्र के प्रवर थे।

ताड़का—(ताटका) यक्ष सुकेतु की कन्या (मतांतर से सुंद नामक दैत्य की कन्या), तथा मारीच-सुबाहु की माता, एक प्रसिद्ध राक्षसी। वह अगस्त ऋषि के शाप से राक्षसी हो गई थी और सरयू के किनारे ताड़क नामक बन में निवास करती थी। उस प्रदेश में इसके उत्पात से त्राहि-त्राहि मची थी। यह विश्वामित्र के दैनिक यज्ञ-विधान में बाधा डालती थी। अत: उसका बध करने के लिये वह दशरथ के किशोर राम और लक्ष्मण को ले गये। पहिले तो स्त्री जानकर उसका बध राम को अनुचित प्रतीत हुआ, किन्तु माया के बल से जब वह उपल वृष्टि करने लगी तब विश्वामित्र की आज्ञा से राम ने उसका वध कर डाला।

तामस—दत्त का नामांतर। यह सर्पयज्ञ में एक होता थे।

तामरसा—अत्रिमुनि की स्त्री का नाम।

तापस—१. धर्म तथा हिंसा के पुत्र। २. भविष्य के अनुसार श्रवस के पुत्र। ३. प्रियव्रत के तृतीय पुत्र तथा उत्तम के भाई। इन्होंने नर्मदा के दक्षिण तट पर शिव की पूजा की थी। यह चतुर्थ मन्वंतर में मनु थे और अपनी स्त्री के साथ स्वर्ग गये।

ताम्रतप्त—कृष्ण और रोहिणी के एक पुत्र।

ताम्रध्वज—प्रसिद्ध दानवीर राजा मोरध्वज का पुत्र। यह भी पिता के समान त्यागी और धार्मिक था।

ताम्रलिप्त—त्रंग देशीय एक क्षत्रिय।

ताम्रा—१. वसुदेव की एक स्त्री। इनके पुत्र सहदेव थे। २. प्राचेतस दक्ष प्रजापति तथा आसिक्री की कन्या जो कश्यप को ब्याही थी।

ताम्रायण—यजु की शिष्य-परम्परा में व्यास के एक शिष्य। वायु के अनुसार ये याज्ञवल्क्य के वाजसनेय शिष्य थे।

तार—१.मय दानव का एक साथी। २. राम सेना के प्रसिद्ध वानर वीर। सुग्रीव की स्त्री रम्या इसकी कन्या थी। ३. मधुवन निवासी शकुती नामक एक ऋषि का पुत्र।

तारक—एक प्रसिद्ध असुर। इसने परियात्र पर्वत पर बड़ा उग्र तप किया और ब्रह्मा से अमरत्व का वर माँगा पर वह संभव नहीं था। अंत में उसे यह वर मिला कि सात दिन के बच्चे के हाथ से उसकी मृत्यु होगी। १०,००० वर्ष तप करके त्रैलोक में यह अजेय हो गया। इसने इंद्रादि देवताओं को परास्त कर त्रैलोक में अपना वैभव-विस्तार किया। देवताओं ने शिव से यह प्रार्थना की कि आपके नव-जात शिशु के द्वारा ही राक्षस का वध होगा। देव-ताओं की रक्षा के विचार से शंकर ने पार्वती से विवाह किया जिसके फलस्वरूप देव-सेनापति स्कंद का जन्म हुआ। जन्म के सांतवें दिन इन्होंने राक्षस का वध किया। त्रिपुर के जन्मदाता तारकाक्ष (ताराक्ष) कमलाक्ष तथा विद्युन्मानी इसके पुत्र थे।

तारा—१. वृहस्पति की दो स्त्रियां में से दूसरी। दे० 'सोम' तथा 'बुध'। २. वानरराज बालि की स्त्री। यह सुषेण नामक वानर की पुत्री थीं जो पंच-कन्याओं में से एक गिनी जाती हैं। अंगद इन्ही के पुत्र थे। बलि की मृत्यु के बाद ये अपने देवर सुग्रीव के साथ पत्नी रूप में रहने लगी थीं। ३. सूर्यवंशी हरिश्चन्द्र राजा की स्त्री। इनका नाम तारामती भी पाया जाता है। रोहित इनके पुत्र थे। दे० 'तारामती'। ४. दस महाविद्याओं में से एक का नाम। ५. एक ब्रह्म-वादिनी का नाम।

ताराक्ष—तारकासुर के एक पुत्र का नाम। दे० 'तारक'।

तारापीड—१. काशी का राजा जो कादंबरी की कथा का नायक, प्रसिद्ध राजा चन्द्रपीड का भाई और प्रतापादित्य का पुत्र था। राज्यलोभ से अपने बड़े भाई को इसने मरवा डाला था। इसके शासन-काल में कश्मीर तो समृद्ध हुआ पर प्रजा दुखी रही। राजतरंगिणी के अनुसार इसने ४ वर्ष २४ दिन राज्य किया। २. मत्स्य पुराण के अनुसार चन्द्रालोक राजा के पुत्र का नाम। इनके पुत्र चंद्रगिरि थे।

तारामती—ये शैव्य देश के राजा की कन्या थीं इसीलिये इनका नाम शैव्या भी है। ये राजा हरिश्चंद्र की पटरानी थीं। वरुण की कृपा से इनको रोहित नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ। विश्वामित्र की दक्षिणा पूरी करने के लिए राजा पत्नी को एक बुढ्ढ ब्राह्मण के हाथ-बेंच दिया। रोहित ब्राह्मण के यहाँ सर्प-दंश से मर गया। उसे लेकर ये श्मशान पर गई। हरिश्चंद्र को उनके खरी-दार ने श्मशान में डोम का कार्य दिया था। हरिश्चंद्र ने पत्नी से कर रूप में कफन माँगा। पत्नी देने में असमर्थ थी। डोम-सरदार ने तारामती के वध करने की आज्ञा दी। रानी ने अग्नि-प्रवेश किया। इसी समय इंद्र ने प्रकट होकर सब को जीवित किया। विश्वामित्र के आर्शीवाद से रोहित बड़ा प्रतापी हुआ। कहा जाता है कि रोहितास्वगढ़ का किला उसी का बनाया हुआ है। संस्कृत नाटक 'चंडकौशिक' और हिंदी नाटक 'हरिश्चंद्र' में यही कथा वर्णित है।

तार्क्षी—कंधर की कन्या। इनकी माता पक्षिरूपधारिणी मदनिका थीं। यह पूर्व जन्म में वसु थी और दुर्वासा के शाप से पक्षियोनि को प्राप्त हुई। यह द्रोण नामक पक्षी को ब्याही गई और गर्भवती हुई। महाभारत-युद्ध में एक बार यह आकाशमार्ग में उड़ी जा रही थी। अर्जुन ने एक ऐसा बाण मारा कि इसका उदर विदीर्ण हो गया और उससे चार अंडे गिरे। उन अंडों को शमीक ऋषि ने ले लिया। उनसे पिंगाक्ष, विर्बाध, सुपुत्र तथा सुमुख ये चार पुत्र हुए।

तार्क्ष्य—१.अश्व अथवा पक्षी के रूप में सूर्य का एक रूपांतर। ये अत्यंत पराक्रमी थे। इनकी दृष्टि अत्यंत प्रबल थी। गरुड़ और सोम के लिये भी यह शब्द प्रयुक्त हुआ है। नामांतर तार्क्ष अथवा तारुक्ष्य है। दे० 'सुपर्ण'। २. एक आचार्य का नाम। एक विशेष विद्या की प्राप्ति के

लिये यह अपने गुरु के यहाँ रहते थें। इस काल में इन्होंने अपने गुरु के गाय की रक्षा की थी। ३. अरिष्ठ-नेमि के पैतृक नाम के रूप में भी यह शब्द प्रसिद्ध है। ४. कश्यप प्रजापति का नामांतर। दक्ष ने अपनी वह कन्या इन्हें ब्याही थी जिसका सरस्वती के साथ संभाषण हुआ था। ५ गरुड़ के भाई का नाम। ये कश्यप और विनता के पुत्र थे। ६. एक यज्ञ का नाम।

तार्क्ष्यपुत्र–दे० 'सुपर्ण'।

तार्क्ष्य वैपश्चित–एक आचार्य का नाम।

तालक–एक आचार्य। ये व्यास की शिष्य-परंपरा में थे और हिरण्यनाभ के शिष्य थे।

तालकृत–अंगिरस् कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

तालकेतु–१. एक राक्षस जिसे कृष्ण ने मारा था। २. भीष्म का एक नाम। इनकी पताका ताल-चिह्नत थी, अतः यह नाम पड़ा। ३. एक राक्षस जिसे कुवलयाश्व ने मारा था।

तालजंघ–१. राजा जयध्वज के पुत्र तथा अर्जुन कार्तवार्य के पौत्र। इनके वंशज तालजंघ नाम से प्रसिद्ध हुए। जब परशुराम ने कार्तवीर्य के सहस्रबाहुओं को काट डाला तो ये लोग छिपकर हिमालय में रहने लगे। त्रेता में जब राम उधर तप करने गये तब उनके दर्शन से अभय होकर ये फिर अपनी राजधानी मातृष्मती को लौट आये। कालांतर में राजा सागर के पुत्र ने इनको जीता और एक वीतिहोत्र को छोड़कर ये सदलबल नष्ट हो गये। वीतिहोत्र, शर्यात्, तुडिकर, भोज तथा अवंती इन पाचों वंशों का सम्मिलित नाम तालजंघ है। ये हैहयवश के हैं। महाभारत के अनुसार इनके आदि पुरुष मनु के पुत्र शर्यात थे। ये संभवतः विंध्यगिरि के आस-पास रहते थे। कर्नल टाड के अनुसार हैहयों की एक शाखा बघेल-खड की तराई में सोहागपुर में रहती है। ये अपनी प्राचीन वंशावली से भी परिचित हैं। अल्पसंख्यक होते हुए भी ये अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध हैं। २. महा-भारत के अनुसार शर्यात के पुत्र का नाम। ३. सुरनाभ दैत्य के पिता का नाम।

तालक–१. एक कलियुगी राजा। इन्होंने अपना बनरस (बनारस् ?) अपने पुत्रों को दिया था। इनकी संतति के नाम थे—अलिक, अल्लामति, काल, पत्र, पुषोदरी, बरीकरी, नरी, और सूललित। ये म्लेच्छ पद्धति के अनु-सार राक्षसमय देवों की पूजा करते थे। २. तालन महोबा खंड में वर्णित आल्हा और ऊदल की युद्धविद्या के आचार्य थे। ये घुड़सवारी में पांरगत थे और लिल्ली नामक घोड़ी पर सवार होते थे।

तिगम–मत्स्य पुराण के अनुसार उर्व के पुत्र और विष्णु के अनुसार मृदु के पुत्र का नाम। इनका नामांतर तिमि-तिग्मज्योति अथवा तिग्मकेतु है।

तितिक्षा–स्वायंभुव मन्वंतर में दक्ष प्रजापति की कन्या और धर्म की स्त्री। इनके पुत्र का नाम क्षेम था।

तितिक्षु–भागवत, मत्स्य और वायु के अनुसार महामनस् राजा के पुत्र। मतांतर से इनके पिता महामणि थे। दे० 'उशीनर'।

तित्तिर– १. कपोतरोमन के पुत्र। इनके पुत्र का नाम बहु-पुत्र था। नामांतर तित्तिरि है। २. एक सर्प का नाम। ये कश्यप के पुत्र थे। इनकी माता कद्रू थीं। ३. एक ऋषि का नाम। ये अंगिरस् कुलोत्पन्न एक शाखा के प्रवर थे। यजुर्वेद की एक शाखा तैत्तिरीय नाम से प्रसिद्ध है। इसके आदि आचार्य यही थे। इस शाखा का अन्य प्रवर कापिभुवा था। याज्ञवल्क्य नाम के वैशंपायन के एक शिष्य द्वारा यह शाखा निकाली गई। उसका शेष अंश ८५ शिष्यों ने धारण किया। धारण करते समय उन्होंने तित्तिरि पक्षी (तीतर) का रूप ग्रहण किया था इसलिए उक्त शाखा का यह नाम पड़ा।

तिथि–१. एक गोत्र का नाम। २. कश्यप तथा क्रोधा की कन्या। ये महर्षि पुलह की स्त्री थीं।

तिमिंगल–एक राजा का नाम जो रामक नामक पर्वत पर रहते थे। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में सहदेव ने इन्हें परास्त किया।

तिमि–१. दक्ष प्रजापति तथा आसक्री की कन्या। ये कश्यप की स्त्री थीं। २. भागवत के अनुसार ये दुर्वा के पुत्र थे। दे० 'निम्म'।

तिमिध्वज–दशरथ के समकालीन, एक वीर राजा जो प्रसिद्ध वैजयंत नामक नगरी में रहते थे। ये शंकर नाम से विशेष प्रसिद्ध हैं। एक बार देवासुर-संग्राम में इन्द्र के विरुद्ध असुरों की ओर से ये लड़ने गये। इंद्र ने सहायता के लिए दशरथ को बुला भेजा। इनसे लड़ते समय आहत हो दशरथ मूर्च्छित हो रथ में गिर पड़े। उस समय बड़ी चतुरता से कैकेयी ने उनकी सेवा की। इसीलिये दशरथ ने कैकेयी को दो अभीष्सित वर दिये। पर इसके बाद तिमिध्वज का क्या हुआ इसका पता नहीं चलता।

तिमिर्ध दौरेश्युत–अग्नीध्र का नामांतर। सर्पों के कल्याण के लिये किये गये यक्ष में ये ऋत्विज थे।

तिरश्चि आंगिरस्–एक सूक्तदृष्टा का नाम।

तिरहुत–वर्तमान मिथिला प्रदेश का एक प्राचीन नाम।

तिरिंदर पारशव्य–एक वैदिक कालीन राजा। सायणा-चार्य ने इनको पर्शु का पुत्र कहा है। तिरिंदर ने वत्स कण्व को बहुत सा धन दिया था।

तिर्यञ्च आंगिरस्–सामवेद के द्रष्टा एक ऋषि।

तिलोक(सुनार)–एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। ये सदैव संत-सेवामें तत्पर रहते थे। इनके विषय में यह कथा प्रसिद्ध है कि एक राजा के यहाँ से इन्हें बहुत-सा काम मिला। संत-सेवा में व्यस्त रहने के कारण ये कार्य न कर सके। राजा ने इन्हें प्राणदण्ड दिया। इधर श्रीकृष्ण इनका भेष धारण करके सब गहने दे आये। जब इसका पता चला तब राजा इनके पैरों पड़ा और भक्त हो गया।

तिलोत्तमा–एक अप्सरा का नाम। यह आरम्भ में एक ब्राह्मणी थी पर असमय स्नान करने के अपराध में इसे अप्सरा होने का शाप मिला। इसे जन्म देने का ध्येय सुंद और उपसुंद नामक राक्षसों को विनाश करने का था। ये दोनों भाई तिलोत्तमा के लिये भर मिटे।

तिसिर (त्रिशिरस्)–१. एक राक्षस का नाम। दूषण नामक राक्षस के चार मंत्रियों में से एक मंत्री। २. कश्यप

और खसा का पुत्र। इसका वध राम द्वारा हुआ था। ३. विश्ववसु और चवा का पुत्र। इसका नाम विश्वरूप भी कहा गया है। ४. मूर्तिमान ज्वर। गर्मी, सर्दी और पसीना, इसकी तीन अवस्थाएँ थीं। ५. धनपति कुबेर का नाम।

तिसिरा—एक राक्षसी का नाम। इसके तीन सिर थे।

तीक्ष्णवेग—एक राक्षस का नाम। राम-रावण युद्ध में यह रावण की ओर से लड़ा था।

तुंड—रावण पक्षीय एक राक्षस। राम-रावण युद्ध में इसे नल नामक बानर ने मारा था। मतांतर से यह नहुष द्वारा मारा गया। इसके पुत्र का नाम वितुण्ड था।

तुंबरु—ब्रह्मा की सभा में, नारद के साथ ईश्वर का गुणगान करनेवाले संगीत-विद्या-विशारद एक ऋषि। ये कश्यप तथा प्राधा के पुत्रों में से एक थे। इनकी स्त्री रंभा थी। यह रंभा पर आसक्त हुये जिससे कुबेर ने इन्हें शाप देकर विराध नामक राक्षस में परिवर्तित कर दिया था। त्रेता में राम से युद्ध करने पर इसकी मृत्यु हुई और यह अपने पूर्व रूप को प्राप्त हुए। तंबूरा नामक वाद्य यंत्र के आविष्कारक यही थे। अतएव इन्हीं के नाम पर इस वाद्य यंत्र का यह नाम पड़ा।

तुंबुरू—तुंबरू का पाठांतर। दे० 'तुंबरु'।

तुग्र—ऋग्वेद में उल्लिखित इन्द्र के एक शत्रु का नाम।

तुजि—ऋग्वेद में उल्लिखित, इन्द्र के एक कृपापात्र का नाम।

तुरकावषेय—जनमेजय तथा परीक्षित के पुरोहित। उनका राज्याभिषेक इन्होंने ने ही किया था। इनके शिष्य यज्ञवचस् राजस्तंबायन थे।

तुरश्रवस—एक ऋषि। इन्होंने इन्द्र को प्रसन्न किया था। इनकी दी हुई हवि इन्द्र ने स्वीकार की थी।

तुरुष्क—एक प्राचीन राजवंश का नाम। भागवत के अनुसार इस वंश में १४ राजे हुये। अन्यत्र ये तुषार नाम से भी पुकारे गये हैं। संभवतः आधुनिक तुर्किस्तान राज्य इन्होंने ही स्थापित किया था।

तुरु—एक राक्षस। देवासुर-संग्राम में यह हिरण्याक्ष की ओर से लड़ा और वायु द्वारा मारा गया।

तुर्व—एक राजा का नाम। यह मनु के अनुयायी थे।

तुर्वश—एक वैदिक राजा। यह प्राचीन राजा सुदास के विरोधी थे पर इन्द्र की कृपा से सुदास ने इन्हें पराजित किया। इन्होंने इंद्र की बड़ी स्तुति की। ऋग्वेद में इनकी इंद्र संबंधी स्तुति के कई मंत्र हैं। यदुतुर्वश के पुरोहित कण्व ऋषि थे।

तुर्वसु—राजा ययाति और देवयानी के पुत्र। राजा ययाति ने इनके यौवन से अपना वृद्धत्व परिवर्तन करना चाहा था पर ये तैयार नहीं हुए। इस कारण उन्होंने शाप दे दिया जिससे छत्र, चामर आदि राजचिह्न इन्हें नहीं मिले और ये म्लेच्छों के अधिपति हुये। इनके वंशजों ने अनेक स्थानों में राज्य स्थापित किए। वायु के अनुसार इन्होंने पौरव दुष्यंत को दत्तक पुत्र के रूप में ग्रहण किया। इनके वंशजों ने दक्षिण में पांड्य तथा चोल आदि राज्य स्थापित किये। अग्नि पुराण के अनुसार गांधार देश का द्रुत्म्य वंश भी इन्हीं के वंश की शाखा थी। वायु, ब्रह्मांड, गरुड़ आदि के अनुसार इनका राज्य विस्तार तुरस्क (वर्तमान तुर्किस्तान) तक था।

तुलसीदास—१. हिंदी के सुप्रसिद्ध भक्त कवि, राम के अनन्य उपासक, और राम-काव्य के सर्वश्रेष्ठ स्रष्टा। अशुभ मुहूर्त्त में जन्म लेने और असाधारण शिशु होने के कारण पिता ने इनका परित्याग कर दिया और माँ मर गई बचपन घोर दरिद्रता और तज्जन्य कष्टों में बीता। छोटी अवस्था में ही साधुओं की संगति मिल जाने से राम-कथा पर अनन्य आस्था हो गई। योग्य गुरु ने इन्हें प्रकांड पंडित बना दिया। फिर ये एक योग्य कथा-वाचक के रूप में प्रसिद्ध हुए। शादी हुई और पत्नी में एकांत आशक्ति। एक बार जब वह इनसे बिना बताये हुए अपने पितृगृह चली गई तो भरी-चढ़ी जमुना को मुर्दे के सहारे तै करके साँप को रस्सी समझकर उसके सहारे ऊपर चढ़कर ये पत्नी के पास जा पहुँचे। तभी पत्नी ने व्यंग्य कर दिया जिसने इन्हें इतना आहत किया कि ये उल्टे पाँव लौट पड़े। घर बार त्याग दिया। तीर्थं-यात्राएँ कीं। भगवान राम के दर्शन प्राप्त किये। घूम-घूम कर रामभक्ति का प्रचार किया। हिंदू जाति और हिंदी साहित्य के अमूल्य रत्न 'रामचरित-मानस' के प्रणेता ये ही हैं। 'विनय-पत्रिका' इनकी दूसरी प्रसिद्ध पुस्तक है। इनके अतिरिक्त कवितावली, गीतावली, पार्वती-मंगल, जानकी-मंगल आदि अनेक काव्य-ग्रंथ भी इन्हीं के लिखे हुए हैं। इनके जीवन की सभी बातों के संबंध में केवल रामभक्ति को छोड़कर बहुत मत-भेद है। जनश्रुतियों और चमत्कारों ने मिलकर वास्तविकता को बहुत छिपा लिया है। २. एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। ये महाकवि तुलसीदास जी से भिन्न थे। ३. एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। इनका स्थान होशंगाबाद के पास था। इन्होंने अपनी कोठी हरिभक्तों को दे दी थी।

तुलाधार—काशी के रहनेवाले एक वैश्य। ये बड़े तपस्वी तथा ज्ञानी थे। जाजलि नामक एक अभिमानी वैश्य का अभिमान इनकी सत्संग से छूटा था। मतांतर से जाजलि एक ब्राह्मण थे जिन्हें आकाशवाणी द्वारा तुलाधार से ज्ञान प्राप्त करने की आज्ञा हुई थी।

तुषार—कलियुग के आरम्भ में उत्पन्न होनेवाले एक राजा। दे० 'तुरुष्क'।

तुषित—एक वैदिक देवगण का सामूहिक नाम। स्वायंभुव तथा स्वारोचिष मन्वंतर में हुये थे।

तुषिता—वेदशिर मुनि की पत्नी। इनके पुत्र का नाम विभु था।

तुष्ट—हंसध्वज के महामात्य।

तुष्टि—दक्ष की एक कन्या। दक्ष ने धर्म को दस कन्यायें दीं थीं उनमें से एक यह भी थी।

तुष्टिमान्—कंस के भाई का नाम।

तुहुंड—१. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम जो भीम द्वारा मारा गया। २. एक राक्षस, जो दनु का पुत्र था।

तूतुजि—एक वैदिक राजा। इंद्र ने द्योतन नामक राजा से तुग्र तूतुजि, वर्तस तथा दंशाणि को परास्त करवाया था।

तूर्यायण–ये अतिथिग्व, आयु तथा कुत्स के शत्रु थे।
तृक्ष–कश्यप मुनि का नामांतर।
तृक्षि–भसदस्यु के एक पुत्र का नाम।
तृणांक–एक राजा।
तृणाकर्णि–अंगिरा-कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।
तृणविंदु–१. वंधु राजा के पुत्र का नाम। इनके विशाल, शून्यवंधु तथा धूम्रकेतु नामक तीन पुत्र तथा इडविड़ा नाम की एक कन्या थी। रामायण के अनुसार ये बुध राजा के पुत्र थे। इनकी स्त्री अलंबुषा थी। २. एक अत्यंत धर्मनिष्ठ ऋषि जो द्वैतवन में पांडवों के साथ थे। ये महीने में एक बार जल में एक तिनका डुबोते थे और उससे जो जल टपकता था उसी को पान कर जीवित रहते थे, इसी से इनका नाम तृणविंदु था। ३. मतांतर से व्यास का नामांतर। इन्होंने चौबीसवें द्वापर में वेदों का विभाग करके वेदव्यास नाम से प्रसिद्धि पाई।
तृणासो मांगिरा–एक ऋषि। ये दक्षिण दिशा में रहते थे।
तृणावर्त–एक राक्षस जो कंस का एक अनुचर था। कंस ने इसे भी कृष्ण का वध करने के लिए गोकुल भेजा था। 'दशम स्कंध' में इसकी कथा इस प्रकार कही गई है : एक बार यशोदा कृष्ण को गोद में लेकर खिला रही थीं। उसी समय तृणावर्त वातचक्र का रूप धारण कर वहाँ आया। कृष्ण उसे देखते ही पहचान गये, और यह सोचकर कि यदि मैं माता की गोद में रहूँगा, तो यह उन्हें भी मेरे साथ ही उड़ा ले जायगा, जिसमें उन्हें विशेष कष्ट होगा, उन्होंने अपने शरीर का भार बढ़ा लिया। यशोदा ने उन्हें गोद से उतार दिया। तृणावर्त क्रोध से भरा हुआ तथा गोकुल के गोप-गोपियों की आँखों में धूल और कंकड़ भरता हुआ आया और कृष्ण को आकाश में उड़ा ले गया। यशोदा यह देखकर बहुत घबड़ा गईं। गोकुल के गोप-गोपी भी कृष्ण के लिए रोने-धोने लगे। कृष्ण ने तीनों भुवनों का भार अपने उदर में धारण कर लिया, जिससे तृणावर्त ने समझा कि संभवतः उसने कोई पहाड़ धोखे में उठा लिया है और डगमगाने लगा। उसने कृष्ण को गिराने का प्रयत्न किया और कृष्ण ने उसका गला पकड़ लिया और अपनी विपुल शक्ति से उसे इतना दबाया कि दृगों के मार्ग से उसके प्राण निकल गये। उसका शरीर ब्रज की एक शिला पर गिर पड़ा और कृष्ण उसकी छाती पर खेलने लगे। इस प्रकार कृष्ण के द्वारा तृणावर्त का अंत हुआ।
तेज–एक देवता। 'सुतव' नामक देवों में से एक ये भी थे।
तेजस्विन–१. एक इंद्र। इन्होंने पांडु-पुत्र सहदेव होकर जन्म ग्रहण किया था। २. गोकुल का एक गोप। यह कृष्ण का परम मित्र था।
तेजोयु–रौद्राश्व के पुत्र का नाम।
तैतिक–एक ऋषि का नाम।
तैत्तिरि–१. त्तित्तिर ऋषि के पुत्र का नाम। २. वैशंपायन के बड़े भाई का नाम। यह राजा उपरिचरि के अश्वमेघ के समय उपस्थित थे।
तैत्तिरीय-यजुः शिष्य परंपरा में वैशंपायन की याज्ञवल्क्य शाखा के शिष्यों का सामान्य नाम। इन्होंने तीतर पक्षी का रूप ग्रहण कर याज्ञवल्क्य से वेद प्राप्त किया था। दे० 'तित्तिर' तथा 'व्यास'।
तैलक–अंगिरा-कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।
तैलप–अंगिरा-कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।
तैलेय–१. धूम्र पराशर-कुलोत्पन्न ऋषिगण का सामान्य नाम। २. अंगिरा-कुलोत्पन्न एक ऋषिगण का भी यही नाम था।
तोंडमान्–सुवीर राजा तथा नंदिनी के पुत्र। इनकी स्त्री का नाम पद्मा था जो पांड्य राजा की महिषी थीं। ये पूर्वजन्म में रंगदास थे और वेंकटाचल की उपासना से ये मुक्त हुये थे।
तोशलक–कृष्ण के मामा कंस का एक दरबारी मल्ल योद्धा। कंस द्वारा आमंत्रित होकर जब कृष्ण मथुरा आये तो मुष्टिक आदि अन्य पहलवानों के साथ कृष्ण से लड़कर यह भी मारा गया।
त्यागी संत–एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। इन्होंने अपना सर्वस्व त्याग कर भिक्षाटन द्वारा हरिभक्तों की सेवा का मार्ग ग्रहण किया था।
त्याज्य–भृगु तथा पौलोमी के एक देव पुत्र।
त्योंला–एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। ये जाति के लोहार थे। इन्होंने अपने वंश का मुख उज्वल किया।
त्रयी–सविता तथा मृश्नि की एक कन्या का नाम।
त्रय्यारुण–१. त्रिधन्वा के पुत्र तथा प्रसिद्ध राजा त्रिशंकु के पिता। २. एक व्यास का नाम। भागवत में इनका नाम केवल अरुण कहा गया है। दे० 'व्यास'। ३. दुरितक्षय के पुत्र का नाम। दे० 'त्रय्यारुणि'।
त्रय्यारुणि–१. दुरितक्षय के पुत्र का नाम। क्षत्रिय होकर भी तपस्या के प्रभाव से ये ब्राह्मणत्व को प्राप्त हुए। इन्होंने रोमहर्षण से वेद तथा पुराणों की शिक्षा ली। विष्णु पुराण में इनका नाम त्रय्यारुण कहा गया है। २. एक व्यास।
त्रसद–त्रसदस्यु का नामांतर।
त्रसदस्यु (पौरुकुत्स्यु)–एक सूक्तद्रष्टा राजर्षि। इनके पिता पुरुकुत्स जब बंदी थे तभी इनकी माता ने सप्तर्षियों की ऐसी स्तुति की कि उनकी कृपा से पिता के समान ही प्रतापी पुत्र उत्पन्न हुआ। पौरकुत्सि तथा पौरकुत्स्य के नाम से ऋग्वेद में इनका उल्लेख हुआ है। ये गिरिक्षित के वंशज थे, अतएव इनका नाम गैरिक्षित हुआ। ये पुरु के राजा थे। राजा दिवोदास और सुदास पुरुवों के शत्रु थे। दीर्घकाल तक इनमें युद्ध होता रहा पर पुरुकुत्स्य के समय तक यह युद्ध समाप्त हो गया। त्रसदस्यु इस युद्ध से अलग रहे। आगे चल कर कुरु और पुत्र एक हो गये और ये लोग 'त्रासदस्यव' नाम से प्रसिद्ध हुये।
त्रसद्दस्यु–मांधाता का नामांतर।
त्राक्षायणि–विश्वामित्र कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।
त्रिशदाश्व–भविष्य पुराण के अनुसार पुरुकुत्स के पुत्र। इनके रथ में तीस घोड़े लगते थे। इनका राज्य कृतयुग के दूसरे चरण में था।
त्रिककुत–१. भागवत के अनुसार राजा शुचि के पुत्र। २. विष्णु का एक नामांतर।

त्रिकूट–१. तीन चोटीवाले एक पर्वत का नाम। इसी के एक शिखर पर लंकेश रावण की पूरी लंका बसी हुई थी। २. एक पर्वत माला का नाम, जो दक्षिण में मेरु पर्वत से आरम्भ होती है।

त्रिगुण–हिंदू शास्त्र के अनुसार सत्, रज और तम तीन गुण माने गये हैं। देवताओं में सत्, मनुष्यों में रज तथा राक्षसों में तम प्रधान रहता है। ये तीनों गुण चराचर सभी प्राणियों में पाये जाते हैं।

त्रिचक्षु–रुच के पुत्र का नाम।

त्रिजट–एक वृद्ध ब्राह्मण। ये गार्ग्य कुल में उत्पन्न हुए थे। फावड़ा और कुदाल लेकर ये विचरण करते और अपनी जीविका चलाते थे। वनवासी राम-लक्ष्मण से इनकी भेंट हुई थी। इनकी स्त्री युवती थी। राम ने इनसे कुछ विनोद भी किया था। बाद में इस विनोद के लिए उन्होंने क्षमा माँगी और इन्हें बहुत सी गायें दीं।

त्रिजटा–लंका की एक राक्षसी जो अशोकवाटिका में सीता की देख-भाल के लिए रक्खी गई थी। इसने स्वप्न में देखा कि रावण का नाश होगा। इसने ही व्यवस्था की थी कि सीता को कोई कष्ट न हो। इसका नामांतर धर्मज्ञा था।

त्रित–इंद्र के एक भक्त। निरुक्त के अनुसार ये मंत्रद्रष्टा भी थे। इंद्र ने इन्हीं के द्वारा अर्जुन को परास्त किया था। त्रिशीर्ष और त्वष्ट्रपुत्र भी इन्हीं के द्वारा परास्त हुये थे। त्रित और गृत्समद कुल का संबंध भी मिलता है। ऋग्वेद में त्रित को विभूवस का पुत्र कहा गया है। सायण के अनुसार एकत, द्वित और त्रित् को अग्नि देव ने यज्ञ में अवशिष्ट सामग्री को जल में फेंककर उत्पन्न किया था। एक बार ये तीनों भाई कुएँ में गिर पड़े। उस कुएँ को असुरों ने पाट दिया किंतु अन्त में किसी प्रकार ये बाहर निकल आये। कुएँ में गिरने के विषय में अनेक प्रकार की कथायें मिलती हैं। अपने तीनों भाइयों में ये सबसे अधिक ज्ञानी थे। इसलिए इनके भाई इनसे ईर्ष्या करते थे। इसी कारण दोनों के द्वारा इनके कुएँ में गिराये जाने की कथा भी प्रचलित है। कूएँ से सरस्वती की धारा बढ़ने पर ये बाहर निकल सके।

त्रिधन्वन–वायु तथा भविष्य आदि के अनुसार वसु मनस के पुत्र पर मत्स्य और पद्म के अनुसार ये संभूति के पुत्र थे। भागवत में वर्णित अररु पुत्र त्रिबंधन तथा ये एक ही व्यक्ति थे।

त्रिधामन–१. एक व्यास का नाम। ये वर्तमान मन्वंतर के दसवें व्यास माने गये हैं। २. शिव के दसवें अवतार का नाम। इन्होंने काशी में तप किया।

त्रिनाम–कश्यप तथा खशा के पुत्र का नाम।

त्रिनेत्र–निर्यत्ती के पुत्र का नाम। अन्य पुराणों के अनुसार इनका नाम सुन्नन, सुश्रम अथवा शम है। ये एक प्रतापी राजा थे।

त्रिपाद–ज्वर का एक नामांतर। यह तीन पैरों वाला था। ये तीनों पैर ज्वर की तीन अवस्थाओं गर्मी, सर्दी तथा पसीने के द्योतक हैं।

त्रिपुर–१. तारकासुर के तीन पुत्रों ने मय दानव द्वारा तीन मायामय नगर बनवाये थे। इन्हीं तीनों को त्रिपुर कहते हैं। तारकासुर के तीनों पुत्र—तारकाक्ष, कमलाक्ष तथा विद्युन्माली—ने घोर तप किया। उन्हें ब्रह्मा द्वारा यह वर मिला कि तीनों भाई तीन स्वतंत्र नगर बसायेंगे। एक सहस्र वर्षों के बाद ये तीनों नगर एक में मिल जायेंगे। इन तीनों पुरों को जो एक ही वाण से नष्ट कर देगा वही इनका संहार कर सकेगा। तीनों भाइयों ने मिलकर सुवर्णमय, रजतमय तथा लौहमय नगर बसाये। ब्रह्मा की घोर तपस्या करके तारकाक्ष ने हरि नामक एक पुत्र प्राप्त किया। इन वरदानों से निर्भय हो ये राक्षस मनमाने अत्याचार करने लगे। सब देवता ब्रह्मा के पास गये। इंद्रादिक के प्रार्थना करने पर शिव चले। ब्रह्मा उनके सारथी बने। तीनों पुरों के मिलने तक शिव ने प्रतीक्षा की। तीनों पुरों के मिलने पर शिव ने एक ही बाण से त्रिपुर को नष्ट कर दिया। तभी से शिव का एक नाम 'त्रिपुरारि' भी पड़ा। दे० 'मय' तथा 'शिव'। २. सहदेव द्वारा विजित एक राज्य। यह स्थान वर्तमान जबलपुर से ७ मील पश्चिम नर्मदा तट पर तेवर नाम से प्रसिद्ध है।

त्रिपुरदास–प्रसिद्ध वैष्णव भक्त तथा विट्ठलनाथ जी के प्रिय शिष्य। भक्तमाल के टीकाकार प्रियादास ने इन्हें उनका सबसे प्रिय शिष्य माना है।

त्रिपुर सुन्दरी–एक देवी का नाम। इन्होंने अर्जुन को वाण-विद्या की शिक्षा दी थी।

त्रिपुरहरि–रामानंदी सम्प्रदाय के एक प्रमुख भक्त, पैहारी जी के ८४ प्रधान शिष्यों में से एक तथा नाभाजी के गुरु अग्रदास जी के गुरुभाई।

त्रिबंधन–अरुण के पुत्र का नाम। दे० 'त्रिधन्वन'।

त्रिभंगी–कृष्ण का एक पर्याय। मुरली बजाते समय कृष्ण की एक मुद्रा के आधार पर—जिसमें उनके शरीर में तीन भंग रहते हैं—ग्रीवा, कटि तथा पद—उनका यह नामकरण हुआ है। दे० 'कृष्ण'।

त्रिभर्ष्टि–एक गोत्रकार ऋषि।

त्रिभानु–भागवत के अनुसार भानुमान राजा के पुत्र। इनके पुत्र करंधम थे। त्रैशांत, त्रिसानु, त्रिसादि तथा त्रिभानु एक ही व्यक्ति के नामांतर हैं।

त्रिभुवन–स्वर्ग, पृथ्वी तथा पाताल तीनों मिलकर 'त्रिभुवन' नाम से प्रसिद्ध हैं।

त्रिमूर्ति–१. ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव का समष्टि सूचक नाम। २. इंद्र प्रमती का नामांतर।

त्रिमूर्धन–रावण के एक पुत्र का नाम।

त्रिलोचन–१. ज्ञानदेव तथा नामदेव के प्रधान शिष्य, एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य। इन्हीं की परंपरा में श्रीवल्लभ हुये थे जिन्होंने विष्णु स्वामी सम्प्रदाय का नये सिरे से संस्कार कर 'पुष्टिमार्ग' की साधना का प्रचार किया था। कहा जाता है कि भक्तों की सेवा करने के लिए इनको एक भृत्य की आवश्यकता हुई। स्वयं भगवान इनके यहाँ भृत्य बनकर इस शर्त पर नौकर हो गये कि चाहे वे जितना भी खायें इन्हें शिकायत नहीं होगी। बहुत दिनों तक उन्होंने नौकरी की। धीरे-

धीरे उनका भोजन ६-७ सेर हो गया। उनकी पत्नी ने यह बात अपनी पड़ोसिन से कह दी। उसी दिन भगवान अन्तर्ध्यान हो गये। इनको बहुत दुःख हुआ। इन्होंने अन्न-जल ही छोड़ दिया। अन्त में आकाशवाणी हुई कि 'अन्न-जल ग्रहण करो मैं ही तुम्हारे यहाँ नौकर बनकर आया था।' यह सुन कर सारा रहस्य खुल गया। इनको और भी दुःख हुआ कि भगवान के आने पर भी ये उन्हें पहिचान न सके। २. एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त।

त्रिवची–एक ऋषि का नाम।

त्रिवक्रा–कंस की दासी कुब्जा का नामांतर। दे० 'कृष्ण'।

त्रिविक्रम–१. विष्णु का एक पर्याय। विष्णु के वामन अवतार के लिए यह नाम आता है, जिसमें उन्होंने तीन पग में स्वर्ग, मृत्यु और पाताल लोक नाप लिए थे। मतांतर से विष्णु के ये तीन पग उदय, मध्य और अस्त काल के प्रतीक हैं। एक अन्य मत से ये अग्नि, वायु तथा सूर्य तत्त्व के द्योतक हैं। दे० 'वामन', 'विष्णु' तथा 'बल'। २. एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। नाभाजी इनका नाम प्रमुख मध्यकालीन भक्तों में रखते हैं।

त्रिवृश–एक व्यास।

त्रिवेणी–तीर्थराज प्रयाग में गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम स्थल का पर्याय।

त्रिवेद कृष्ण रात लौहित्य–श्याम जयंत लौहित्य के शिष्य का नाम।

त्रिशिख–तामस मन्वंतर के इंद्र।

त्रिशिरस–१. विश्ववसु तथा चवाका के पुत्र। मतांतर से ये त्वष्टा के पुत्र थे और इनका नामांतर विश्वरूप था। इंद्र ने इनका वध किया था। दे० 'त्वष्ट्र' तथा 'विश्वरूप'। २. त्रिशीर्ष का नामांतर। दे० 'त्रिशीर्ष' ३. कश्यप तथा खंशा के एक पुत्र। ४. दूषण राक्षस के चार मंत्रियों में से एक। राम द्वारा इसका वध हुआ।

त्रिशिरस त्वाष्ट्र–एक मंत्रद्रष्टा।

त्रिशीर्ष–रावण का एक पुत्र। इसको हनुमान ने मारा था।

त्रिसानु (त्रिसारि)–गोभानु के एक पुत्र का नाम।

त्रिसिर–एक राक्षस का नाम जिसके तीन सिर थे। इसे राम ने मारा था।

त्रिस्तनी–रावण के अंतःपुर की दासी। अशोकवाटिका में वंदिनी सीता की यह भी एक रक्षिका थी।

त्रेता–सतयुग के बाद और द्वापर के पूर्व आने वाले एक युग का नाम। इसी युग में राम का अवतार हुआ। इसका काल १,२९६,००० वर्ष माना गया है।

त्रैतन–दीर्घतमस् के एक दास। यह संभवतः त्रित के संबंधी थे।

त्रैपुर–त्रिपुरी के एक राजा का नाम। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के समय सहदेव ने इन्हें मारा था।

त्रैपुरि–त्रिपुर का पुत्र। जब शिव ने इसके पिता का बधकर उसको भस्म कर डाला तब यह गणपति के पास गया किंतु उन्होंने इसका भी बध कर डाला।

त्र्यंबर–(त्र्यम्बकेश्वर) शिव के एक अवतार का नाम। इनका स्थान गोदावरी तट पर था। गौतम की प्रार्थना से ये पृथ्वी पर आये थे।

त्र्यक्षी–तीन आँख वाली रावण की एक राक्षसी दासी। यह अशोक वाटिका में वंदिनी सीता की देख-भाल के लिए नियुक्त की गई थी।

त्र्यारुण–अत्रि के वंशज एक ब्रह्मर्षि का नाम।

त्वष्टा–विश्वरूप के पिता, द्वादश आदित्यों में से ग्यारहवें आदित्य तथा नेत्र के अधिष्ठाता देवता। विराट-पुरुष की दो आँखों के डिंब अलग-अलग उत्पन्न होने पर लोकपाल त्वष्टा अपने अंश से चक्षु के साथ अधिदेवता स्वरूप उसमें प्रविष्ट हो गये। इनके पुत्र विश्वरूप देवताओं के पुरोहित थे। इंद्र द्वारा इनकी हत्या होने पर अपनी जटा से उन्होंने वृत्र नामक दैत्य को इंद्र के शत्रु के रूप में उत्पन्न किया।

त्वष्टाधर–शुक्राचार्य के एक पुत्र का नाम। यह असुरों के पुरोहित तथा अत्यंत धर्मनिष्ठ और तेजस्वी थे।

त्वष्ट्रा–देवताओं के प्रधान शिल्पी। देवताओं के वज्र तथा कुलिश आदि सब प्रकार के शस्त्र-निर्माण में कुशल, ये जीवन, जीवनी शक्ति और जननशक्ति के दाता थे। मनुष्य पशु आदि सकल प्राणियों के ये निर्माता कहे गये हैं। इनको समग्र विश्व का स्वामी गुरु, नायक और अग्नि का उत्पन्न कर्ता कहा गया है। ये अपने भक्तों की रक्षा करते हैं। इसी प्रकार की विविध शब्दावली से इनकी प्रशंसा शतपथ ब्राह्मण में की गई है। वेदों में बहुधा ये इंद्र के विरोधी के रूप में वर्णित हैं। ऋभगणों से इनका घनिष्ठ संबंध था। इनके पुत्र का नाम विश्वरूप या त्रिशिर था, जिसके तीन सिर, छः आँख और तीन मुख थे। त्वष्ट्रा की कन्या सरण्यु विवस्वत को व्याही थी इसी से अश्विनी-कुमारों की उत्पत्ति हुई। पुराणों में त्वष्ट्रा और विश्वकर्मा एक ही व्यक्ति कहे गये हैं। द्वादश आदित्यों और रूद्रों में एक का नाम त्वष्ट्रा था।

त्वाष्ट्र–त्वष्ट्रा के पुत्र का नाम। विश्वरूप का पैतृक नाम भी यही था।

त्वाष्ट्री–त्वष्ट्र की कन्या। ये आदित्य को ब्याही थीं। यही अश्विनी कुमारों की माता थीं। इनका नामांतर सरण्यु है।

दंड–१. इक्ष्वाकु के अयोग्य पुत्र। यह जन्म से मूर्ख तथा उन्मत्त थे। इस कारण पिता ने इन्हें दूरस्थ विंध्य और शैवल पर्वत के बीच में एक प्रदेश दे दिया था। वहीं मधुमत्त नामक नगर बसाकर ये रहते थे। इस नगर का नामांतर मधुमंत है। उशनस् शुक्र इनके पुरोहित थे। दीर्घकाल तक ये अविवाहित और जितेंद्रिय रहे। एक बार चैत के महीने में ये भार्गव के आश्रम में गये। वहाँ अपने गुरु की कन्या अरजा को देखा और कामातुर हो गये। अरजा ने अपने को गुरु-बहन कह कर पिता की आज्ञा के लिए इनसे याचना की किंतु इन्होंने उससे बलात्कार किया। ऋषि को जब सारा वृत्तांत ज्ञात हुआ तब उन्होंने श्राप दिया कि यह राजा अपने राज्य सहित नष्ट हो जाये। क्षमा याचना के लिए इन्होंने इंद्र के

आदेश से आश्रम के पास ही १०० वर्ष तक तपस्या की। ऋषि दिवंगत हुए और इंद्र की आज्ञा से १०० योजन पर्यंत (मतांतर से ४०० योजन) व्यापी वह प्रदेश अनावृष्टि के कारण अरण्य हो गया। तब से उस प्रदेश का नाम 'दंडकारण्य' हो गया। २. वृत्र के भाई क्रोध-हंता के अंशावतार, विदंड राजा के पुत्र तथा मगध के राजा। इनके भाई का नाम दंडधार था। भारतयुद्ध में दुर्योधन की ओर से लड़ते हुए ये अर्जुन द्वारा मारे गये। ये द्रौपदी के स्वयंवर में भी उपस्थित थे। ३. एक पांडव-पक्षीय राजा जिसे कर्ण ने मारा था। ४. उत्कल के तृतीय पुत्र जिन्होंने दंडकारण्य निर्माण किया। ५. आयु के चतुर्थ पुत्र। ६. सूर्य के एक पार्षद। ७. कुबलाश्व के पुत्र। दे० 'चंद्रप्राश्व'।

दंड औपर–तैत्तरीय संहिता में एक व्रत के संबंध में इनका उल्लेख हुआ है।

दंडक–१. एक दस्यु। कोई पाप ऐसा नहीं जो इसने न किया हो। एक बार एक विष्णु-मंदिर में चोरी करने गया। यहीं सर्प के काटने से इसकी मृत्यु हो गई। २. इक्ष्वाकु के पुत्र। दे० 'दंड'।

दंडकवन–एक प्राचीन वन। विंध्य-पर्वतमाला से गोदावरी तक इसके होने का उल्लेख मिलता हैं। रामचंद ने अपने वनवास का अधिक समय यहीं बिताया था। उस समय यहाँ कितने ही ऋषियों के आश्रम थे, तथा राक्षसों का उत्पात भी समय-समय पर होता रहता था। रामचंद ने स्वयं ही कितने ही इस प्रकार के राक्षसों का बध किया था। यहीं शबरी नामक एक भीलनी के बेर उन्होंने खाये थे, सूर्पणखा के नाक-कान काटे गये थे तथा सीता-हरण हुआ था।

दंडकार–एक चोर। विष्णु पंचक व्रत करने से इसकी मुक्ति हुई।

दंडकेतु–एक पांडव राजा। भारत युद्ध में ये पांडवों के पक्ष में थे।

दंड गौरी–एक अप्सरा।

दंडधार–१. मगध देश के गिरिव्रज के राजा। यह क्रोध-वर्धन नामक राजा के अंशावतार थे। ये एकरथी और हस्थि युद्ध में बड़े निपुण थे। भारत युद्ध में दुर्योधन की ओर से लड़ते हुए अर्जुन के हाथ मारे गये। २, पांडव पक्षीय एक चैद्य राजा। कर्ण के हाथ से इनकी मृत्यु हुई। ३. धृतराष्ट्र के एक पुत्र जो भीम द्वारा मारे एये। ४. पांचाल देशीय एक क्षत्रिय राजा जो भारत युद्ध में कर्ण द्वारा मारे गये।

दंड नायक–सूर्य के वाम-भाग में रहने वाले इंद्र। यह दंड नीतिकार थे, अतएव इनका नाम दंडनायक पड़ा।

दंडपाणि–१. भागवत के अनुसार वहीनर के पुत्र। वायु के अनुसार ये मेधावी के पुत्र थे। २. काशिराज पौंड्रक वासुदेव के पुत्र। इनके पिता को जब कृष्ण ने मार डाला तो इन्होंने महेश्वर नामक यज्ञ किया था जिससे शिव इन पर प्रसन्न हुए और इन्होंने उनसे कृष्ण के नाश का उपाय पूछा था। इससे डरकर कृष्ण द्वारका चले गये और वहाँ से उन्होंने सुदर्शन चक्र चलाया जिससे अपने नगर और सब लोगों सहित यह नष्ट हो गया।

दंडभृत्–एक क्षत्रिय वीर। राम के अश्वमेध यज्ञ के समय जब शत्रुघ्न अश्व की रक्षा के लिए चले थे तब उनके साथ यह भी गया था।

दंडश्री–वायु के अनुसार विजया के पुत्र। दे० 'चंडश्री'।

दंडी–१. धृतराष्ट्र का एक पुत्र। २. भृगु कुलोत्पन्न एक गोत्रकार। ३. संस्कृत के एक विख्यात कवि गद्य लेखक तथा रीतिग्रंथ-प्रणेता। इनका जन्म छठवीं तथा सातवीं शताब्दि के लगभग हुआ था। संभवतः ये विदर्भ देश के निवासी थे। विद्वानों का अनुमान है कि ये घर-बार छोड़कर संन्यासी हो गये थे और दंडी इनका नाम नहीं बल्कि उपाधि है। ये देश-विदेश घूमते थे और वर्षा के चार मास एक स्थान में निवास करके ग्रंथ-रचना करते थे। 'दशकुमार-चरित' और 'काव्यादिश' चौमासे में ही बने। वर्षा समाप्त होते ही ये फिर अपने अपूर्ण ग्रंथ को छोड़कर चल देते थे। यही कारण है कि इनके बहुत से ग्रंथ आदि और अंत के स्पष्ट संदर्भ से रहित हैं। इनके मुख्य ग्रंथ हैं : (१) काव्यादर्श, (२) दशकुमार चरित, (३) छंदोविचित तथा (४) कलाप-परिच्छेद। इनकी कविता के संबंध में प्रसिद्ध है–कविर्दंडी कविर्दंडी कविर्दंडी न संशय, "जाते जगति वाल्मीकौ कविरित्यविधाभवत्, कवी इति ततो व्यासे कवयस्त्वपि दंडिनि"॥ काव्यादर्श में इन्होंने शूद्रक के मृच्छकटिक से एक श्लोक उद्धृत किया है इससे सिद्ध होता है कि ये शूद्रक के बाद हुए थे, कवि राजशेखर ने इन्हें उद्धृत किया है अतएव सिद्ध है कि ये राजशेखर से पहले हुए। राजशेखर का समय ७६१ ई० माना गया है। मम्मट ने भी अपने काव्य-प्रकास में इनका उल्लेख किया है।

दंडी मुंडीश्वर–शिव का एक अवतार। यह अवतार बाराह कल्प के वैवस्वत मन्वंतर की सातवी चौकड़ी में हुआ था। इनके चार शिष्य छगल, कुंडकण, कुंभडि और प्रवाहक प्रसिद्ध हैं।

दंतक्रूर–एक वीर जिसे परशुराम ने मारा था।

दंतवक्त्र–करुष देश के राजा का अंशावतार। इनके पिता वृद्धशर्मा तथा माता श्रुतदेवी थीं। राजसूय यज्ञ के समय सहदेव ने इन्हें हराया था। कृष्ण के हाथ से इनकी मृत्यु हुई। इनका नामांतर वक्रदंत है।

दंतिल–मतंग ऋषि के पुत्र तथा कोहल के भाई।

दंदशूक–एक सर्पराज। यह क्रोधवश का पुत्र था।

दंभ–१. एक दानव। यह विप्रचित्ति का पुत्र था। २. मत्स्य के अनुसार आयु का पुत्र।

दंभोद्भव–एक अभिमानी राजा। इन्हें अपने ऐश्वर्य का इतना अभिमान था कि अपने समान किसी को भी नहीं मानते थे। एक बार इन्होंने ब्राह्मणों से यह पूछा कि पृथ्वी पर मुझसे बढ़कर कौन है। ब्राह्मणों ने कहा कि यह बात नर-नारायण से पूछनी चाहिए क्योंकि वही सबसे बड़े माने जाते हैं। यह सुन अपना दल-बल लेकर इन्होंने नर-नारायण पर चढ़ाई की, पर इन्होंने इन्हें परास्त करके इनका गर्व नष्ट कर दिया।

दंभोलि—दृढ़ास्य के पुत्र। पहले ये अगस्त्य-कुल में उत्पन्न हुये थे; पर आगे चलकर जब पुलह ने इनके पिता दृढ़स्य को पुत्र मान लिया तब से ये पौलह हो गये।

दंश--एक राक्षस। महाभारत के अनुसार इसने एक बार भृगु मुनि की स्त्री का अपहरण किया जिससे उन्होंने यह शाप दिया कि तू कीटि-योनि को प्राप्त हो। फलतः वह अलर्क नाम का कीड़ा हो गया। बहुत प्रार्थना करने पर यह आश्वासन मिला कि मेरे वंश में उत्पन्न होने वाले राम के द्वारा तेरी मुक्ति होगी। एक बार कर्ण के युद्धविद्या के गुरु परशुराम जी उसकी जाँघ पर सिर रखकर सो रहे थे। उसी समय यह कीड़ा कर्ण की जाँघ का रक्त चूसने लगा लेकिन इस डर से कि कहीं गुरु जग न जायँ वह टस से मस नहीं हुये। जागने पर क्रोध पूर्ण नेत्रों से कीड़े की ओर देखा जिससे वह भस्म हो गया और अपने पूर्व रूप को प्राप्त हुआ। फिर इसने अपनी सारी गाथा कह सुनाई। दंश का कीड़े के रूप में शूकर की भाँति आकार था जिसके आठ पैर और अनेक तीक्ष्ण दाँत थे। ऋतुध्वज और मदालसा के पुत्र अलर्क दूसरे थे। दे० 'अलर्क'।

दंष्ट्रा—कश्यप तथा क्रोधा की कन्या और पुलह की स्त्री।

दक्ष—१. एक प्रजापति। सती इनकी पुत्री थी। २. एक विश्वदेव। ३. अंगिरस् कुलोत्पन्न एक गोत्रकार। ४. अंगिरा तथा सुरूपा के देवपुत्र। ५. भृगु तथा पौलोमी के देवपुत्र। ६. बाष्कल के पुत्र। ७. देवातिथि के पुत्र। वायु तथा विष्णु में इनको ऋक्ष तथा भागवत में ऋश्च कहा गया है।

दक्ष कात्यायनि आत्रेय—शंख बाभ्रव्य के शिष्य।

दक्ष जयंत लौहित्य—कृष्णरात लौहित्य के शिष्य।

दक्ष पितर—तैत्तरीय संहिता में दक्ष प्रजापति के पुत्र इस नाम से पुकारे गये हैं।

दत्त सावर्णि—दक्ष के एक पुत्र। ये चाक्षुष मवंन्तर में प्रकट हुये। इनकी माता सव्रता थीं। यह नवम मनु थे। इनका नामांतर रोहित था।

दक्षिणा—आकूती और रुचि की कन्या। यह यज्ञ को ब्याही थी जिससे तुषित के बारह पुत्र हुये। यह दक्षिणा के भाई थे पर विष्णु के अवतार थे। इस कारण दक्षिणा ने लक्ष्मी होकर जन्म-ग्रहण किया। एक बार ये राधा के सामने कृष्ण की गोद में बैठ गईं जिससे रुष्ट हो उन्होंने इन्हें निकाल दिया। तब ये ब्रह्मा के पास चली गईं।

दत्त—सांदीपनि के पुत्र। सांदीपनि बलराम और कृष्ण के गुरु थे। दत्त को एक बार पंचजन नामक दैत्य उठा ले गया और शंख रूप धारणकर समुद्र में रहने लगा। गुरु-दक्षिणा के रूप में सांदीपन ने इस पुत्र का उद्धार करने को कहा। श्रीकृष्ण ने समुद्र में गोता लगाकर इस राक्षस का बध किया और गुरु-पुत्र का उद्धार किया। शंख-रूप पंचजन को मारकर उसकी हड्डियों से पांचजन्य नामक शंख बनवाया। दे० 'पंचजन' और 'सांदीपन'।

दत्त तापस—एक ऋषि। सर्वयज्ञ में यह होतृ नामक ऋत्विज थे।

दंत्तोत्ति—पुलस्त्य और प्रीति के पुत्र।

दधिक्रावन—मरीचि गर्भ देवों में से एक। ऋग्वेद में इनका सूक्त है।

दधिमुख—१. राम सेना के एक वीर बानर। यह सोम के पुत्र और गम्भीर प्रकृति के योद्धा थे। जिस समय ये राम-सेना में भर्ती हुये वृद्ध हो चुके थे। राम के अश्वमेध यज्ञ में शत्रुघ्न के साथ अश्वरक्षा की सेना के साथ यह भी थे। २. एक प्रसिद्ध सर्प जो कश्यप तथा कद्रू के पुत्र थे।

दधिवाहन—१. शिव के एक अवतार। वाराह कल्प के वैवस्वत मन्वंतर की आठवीं चौकड़ी में वशिष्ठ और व्यास की सहायतार्थ ये प्रकट हुये थे। इनके चार पुत्र थे— कपिल, आसुरि, पंचशिख और शाल्वल पूर्वक। ये चारों महाभोगी थे। २. मत्स्य तथा वायु के अनुसार अंग के पुत्र।

दनायु—१. दे० 'रनु'। २. दक्ष प्रजापति और आरुक्नि की कन्या और कश्यप की स्त्री।

दनु—दक्ष प्रजापति तथा आरुक्नि की कन्या, कश्यप की स्त्री तथा दानवों की माता। वृत्रासुर इन्हीं का पुत्र था जिसे दधीचि की हड्डियों से निर्मित वज्र से इंद्र ने मारा था। मतांतर से विक्षर, वल, वीर और वृत्र नामक दानवों की माता दनायु थीं। एक दूसरे मत से दनु ने वातापी, नरक, वृषवर्ग, निकुंभ, प्रलंब तथा बनायु आदि ४० दानवों को जन्म दिया। वास्तव में दिति (दैत्यों की माता) दनु और दनायु ये तीनों ही कश्यप की स्त्री और यावत् दैत्य-दानवों की जन्मदात्री थीं, जिन्होंने देवताओं से बराबर युद्ध किया। कई हार-जीत के बाद अंत में ये मारे गये।

दनुपुत्र—एक मंत्रद्रष्टा। दे० 'कश्यप'।

दभीति—एक गृहस्थ। यह इंद्र के कृपापात्र थे। इनकी प्रार्थना से इंद्र ने चुमुरि तथा धुनि का वध किया और अन्य तीस सहस्त्र दासों का नाश किया। अश्विनीकुमारों की भी इन पर कृपा थी।

दम—१. विदर्भ नरेश भीम के पुत्र तथा दमयंती के भाई। २. भागवत के अनुसार मरुत्त के और विष्णु आदि के अनुसार नरिष्यंत के पुत्र। ३. अंगिरा-कुलोत्पन्न एक ऋषि। ४. आभूत रजस् देवों में से एक।

दमघोष—चेदिराज शिशुपाल के पिता और कृष्ण के फूफा।

दमन—१. एक ऋषि। इनके आशीर्वाद से विदर्भराज भीम के दम आदि चार संतानें हुईं। २. विदर्भराज भीम के एक पुत्र तथा दमयंती के भाई। ३. पौरव के पुत्र तथा दुर्योधन-पक्षीय एक क्षत्रिय वीर। ४. अंगिरा तथा सुरूपा के पुत्र। ५. भरद्वाज के पुत्र। एक राक्षस। भृगुपत्नी पुलोम ने इसे पाला था।

दमनक—एक दानव। मत्स्यवतार में विष्णु ने इसे चैत्र शुक्ल चतुर्दशी को पृथ्वी पर गिराया। भगवान के स्पर्श के प्रभाव से यह सुगंधित तृण रूप से पृथ्वी पर रहा।

दमवाह्य—अंगिरा कुल के एक प्रवर। नामांतर चमदाह्य है।

दया—दक्ष की एक कन्या तथा कश्यप की स्त्री। इनके अभय नामक एक पुत्र था। यह बड़ी धर्मपरायणा थीं।

दरद—एक वाह्लीक राजा जो भारत युद्ध में दुर्योधन के पक्ष

में थे। वर्तमान काश्मीर के उत्तर दर्दिस्तान नाम का प्रदेश इन्हीं का था। यह क्षत्रिय जाति आगे चलकर म्लेच्छ हो गई थी।

दरि–जनमेजय के नागयज्ञ में जला एक साँप।

दरियीत–भागवत के अनुसार दुंदुभी नामक राक्षस का पुत्र। विष्णु तथा वायु आदि में इनको अभिजित कहा गया है।

दरीमुख–एक वानर वीर जो राम सेना के एक सेनापति थे।

दर्दुभ–एक ब्राह्मण। ये गोदावरी तट पर स्थित प्रतिष्ठान नामक नगरी में रहते थे।

दर्प–धर्म के पुत्र। इनकी माता का नाम उन्नति था।

दर्पणासि–एक राजा जो कारुष राजा के पुत्र थे।

दर्भक–भागवत् विष्णु तथा ब्रह्मांड आदि के अनुसार अजातशत्रु के पुत्र। वायु में इनको दर्शक कहा गया है।

दर्भवाह–एक ऋषि। ये अगस्त्य कुल में उत्पन्न हुये थे।

दर्भि–एक ऋषि। इन्होंने सातों समुद्रों से यह प्रार्थना की कि तुम लोग एक तीर्थ उत्पन्न करो और उन्होंने इनकी प्रार्थना स्वीकार कर अर्धकील नामक पापनाशक तीर्थ उत्पन्न किया।

दर्वा–राजा उशीनर की स्त्री।

दर्विन–राजा उशीनर के पुत्र।

दर्श–१. कृष्ण और मालिंदी के पुत्र। २. धाता नाम के एक आदित्य के पुत्र। इनकी माता का नाम सिनवाली था।

दर्शक–वायु के अनुसार बिंबसार के पुत्र।

दर्शनीय–मणिभद्र तथा पुण्यजनी के पुत्र।

दर्शाह–मत्स्य के अनुसार ये निर्वृती के पौत्र थे। मत्स्य के अनुसार इनके पिता विदूरथ थे।

दल–१. अयोध्यापति, इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा। इनके पिता परीक्षित थे। इनकी माता का नाम शोभना था। ये राजा पारियात्र के पुत्र थे। भविष्य में इनका नाम दलपाल दिया हुआ है। भागवत के अनुसार इनका नाम बल है। पारियात्र और परीक्षित एक ही थे। २. कश्यप तथा दनु के पुत्र।

दलवाहन–ये गोपालक देश के राजा थे। देवकी और ब्राह्मी नाम की इनकी दो कन्याएँ थीं।

दलेषु–दे० 'वलेक्षु'।

दवशत्रु–गौतम नाम के शिवावतार के पुत्र।

दशग्व–अंगिरा कुलोत्पन्न एक ऋषि। ऋग्वेदमें नवग्व के साथ इनका कई स्थानों पर उल्लेख हुआ। इंद्र द्वारा इनकी रक्षा की जाने का भी वर्णन है। अंगिरा-कुल के अंदर इन्होंने अपना अलग कुल चलाया।

दशज्योति–सुभ्राज के पुत्र। एक देवता।

दशद्यु–एक वैदिक राजा। इनका तुग्र के साथ द्वंद्व युद्ध हुआ। अंत में इंद्र ने दोनों की रक्षा की थी।

दशमी–ब्रह्मा की एक मानस कन्या।

दशव्रत एक वैदिक राजा। अश्विनीकुमारों ने इनकी रक्षा की थीं। ये इन्द्र के भी कृपापात्र थे।

दशशिप्र–ऋग्वेद के अनुसार इन्द्र इनके यहाँ सोमरस पान कर प्रसन्न होते थे।

दशारि–भविष्य के अनुसार निरावृती के पुत्र। अन्यत्र इनका नाम दर्शाह दिया हुआ है।

दशार्णा–गांधारराज सुबल की कन्या तथा धृतराष्ट्र की पत्नी।

दशावर–एक दैत्य। यह वरुण लोक में रहता था।

दशाश्व–इक्ष्वाकु के सौ पुत्रों में से दसवें। यह माहिष्मती नगर के राजा थे। इनके पुत्र का नाम मदिराश्व था।

दशोणि–पणी से इनका जब युद्ध हुआ था तब इंद्र ने इनकी सहायता की थी। ऋग्वेद के एक मंत्र के अनुसार दशोणि व्यक्ति का नाम नहीं है।

दशोण्य–इंद्र के कृपा पात्र, एक वैदिक व्यक्ति।

दस्यवेवृक–एक वैदिक व्यक्ति। यह नाम दो व्यक्तियों का सा लगने पर भी एक ही व्यक्ति का है। ऋग्वेद में इनकी उदारता का उल्लेख है। बालखिल्यों के सूक्त में भी इनका उल्लेख है। इनके पिता का नाम पूतक्रतु तथा माता का नाम पूतक्रता था।

दस्र–अश्विनीकुमारों में से एक। सहदेव इन्हीं के अंशावतार थे।

दहन–१. द्वादश रुद्रों में से एक। इनके पिता स्थाणु तथा पितामह ब्रह्मा थे। २. कुमार कार्तिकेय का एक अनुचर।

दांत–१. विदर्भ नरेश भीम के एक पुत्र तथा दमयंती के भाई। २. एक ऋषि। इन्होंने भद्रतनु नामक ब्राह्मण में काम, क्रोध, लोभ आदि का अधिकार देखकर उसे इन सबको छोड़ने का उपदेश दिया था।

दाकव्य–(दाकायन) वशिष्ठ कुलोत्पन्न गोत्रकार ऋषि गण।

दाक्षपाय–कश्यप कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

दाक्षायण–एक राजमालिका का नाम। इसमें होनेवाले राजागण संस्कार-विशेष के कारण ब्राह्मण काल पर्यंत बड़े ऐश्वर्यशाली थे। दाक्षायण शब्द का अर्थ सोना किया गया है। दाक्षायणों ने शतानीक को सोना दिया था।

दाक्षायणी–सती का नामांतर।

दाक्षि–अंगिरा कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

दान–पारावत तथा सुखदेवों में से एक।

दानपति–अक्रूर का नामांतर।

दामग्रन्थिन्–राजा विराट के यहाँ अज्ञातवासी नकुल का नाम।

दामघोषि–शिशुपाल का नामांतर।

दारुक–१. कृष्ण के सारथि का नाम। २. वैवस्वत मन्वंतर में एक शिवावतार। ३. एक राक्षस।

दारुकि–कृष्ण सारथि दारुक का पुत्र तथा प्रद्युम्न का सारथि।

दारुण–१. कश्यप तथा अरिष्टा के पुत्र। २. गरुड़ के पुत्र।

दार्म्य–ऋग्वेद की एक ऋचा में इनका उल्लेख हुआ है।

दालकि–एक ऋषि। वायु के अनुसार ये व्यास की ऋक्-शिष्य परंपरा में रथीवर के शिष्य थे।

दाल्भि–बक का पैतृक नाम।

दाल्भ्य–१. दार्भ्य का पर्याय। यह केशी, बक तथा चेकितान का पैतृक नाम है। २. उत्तम मन्वंतर में सप्तर्षियों में से एक। ३. द्युमत्सेन के मित्र।

दावसु आंगिरस्–सामवेद के एक मंत्रद्रष्टा ऋषि।

दाशर्म–एक आचार्य । ये आरुणि के समकालीन थे ।

दाशार्ह–मथुरा के एक पौराणिक राजा । यह शिवस्तुति के प्रभाव से पाप-रहित हुये । दाशार्ह व्योम का पैतृक नाम है ।

दाशूर–एक तपस्वी । यह शरलोमा के पुत्र थे । मगध देश में एक पर्वत पर रहते थे । शरलोमा की मृत्यु होने के बाद ये शोकमग्न हो गये । इनके पास अग्निदेव प्रकट हुये । यह एक कदंब के वृक्ष पर आसन जमाये बैठे रहा करते थे । अग्नि देवता ने इनको वर दिया । कदंब वृक्ष पर आसन जमाये रहने के कारण इनका नाम 'कदंब दाशूर' प्रसिद्ध हुआ । वनदेवता के प्रताप से इन्हें एक पुत्र हुआ जिसे इन्होंने ज्ञानोपदेश दिया था ।

दिंडि–सूर्य के मंत्री तथा एकादश रुद्रों में से एक । इन्होंने एक ब्राह्मण का सिर काट डाला था और सूर्य के सान्निध्य में आने के कारण इस पाप से मुक्त हुये । सूर्य के रथ के अग्रभाग में सेवक के रूप में इनका स्थान रहता था ।

दिलीवम–भविष्य के अनुसार मनुवंशी दशरथ के पुत्र । इन्होंने २९७००० वर्ष राज्य किया ।

दिवंजय–उपास्थी तथा भद्रा के पुत्र ।

दिवाकर–१. गरुड़ के एक पुत्र । २. भागवत के अनुसार भानु राजा के पुत्र और सहदेव के पिता । मतांतर से ये प्रतिव्यूह अथवा प्रतिव्योम के पुत्र थे । लोक में यह शब्द सूर्य के पर्याय रूप में प्रसिद्ध है ।

दिवस्पति–रौक्ष्य मन्वंतर में होने वाले एक इंद्र ।

दिवि–सत्यदेवों में से एक ।

दिविरथ–भागवत के अनुसार खनपान के पुत्र । इनके पुत्र का नाम पुत्ररथ था । वायु तथा मत्स्य के अनुसार ये दधिवाहन के पुत्र थे । विष्णु के अनुसार इनके पिता का नाम पार और पुत्र का नाम धर्मरथ था ।

दिवीलक–विष्णु के अनुसार लंबोदर के पुत्र । नामांतर अपीनक अथवा चिबिलक ।

दिवोदास भैससैनी–आरुणि के एक समकालीन ।

दिव्य–वायु के अनुसार सात्वन के पुत्र । अन्य पुराणों में इनका नाम अंधक अथवा दिव्यांधक दिया हुआ है ।

दिव्यजायु–पुरुरवा और उर्वशी के एक पुत्र ।

दिव्यमान–पारावत देवों में से एक ।

दिव्यांधक–दे० 'दिव्य'

दिव्या–पुलोमा की कन्या तथा भृगु की स्त्री ।

दिव्या देवी–प्लक्षद्वीप निवासी राजा दिवोदास की कन्या । दिवोदास ने इनका विवाह रूपदेश के राजा चित्रसेन से स्थिर किया, पर विवाह का लग्न उपस्थित होते ही वे मर गये । तब इनका विवाह रूपसेन राजा से निश्चय हुआ पर वह भी लग्न आते ही मर गये । इस प्रकार इनके २१ पति मरे तब इनके पिता ने स्वयंवर की विधि से इनका विवाह करने का निश्चय किया । पर स्वयंवर में आहूत सब राजे आपस में लड़कर मरने लगे । तब दिव्या देवी क्षुब्ध हो वन में चली गईं और चार वर्ष तक निरंतर व्रत करने पर उन्हें विष्णु के दर्शन हुये । फिर ये विष्णुलोक में ले ली गईं । पूर्व जन्म में यह चित्रा नाम की वणिक कन्या थीं । दे० 'चित्रा' ।

दिष्ट–वैवस्वत मनु के पुत्र । इनके भाई नाभाग थे ।

दीक्षित–कण्व मुनि के पुत्र । इनकी माता का नाम आर्यवती था । द्विविद नाम के इनके एक भाई भी थे ।

दीर्घ अवसर (औराज)–दीर्घतमस ऋषि के एक पुत्र । ये एक बार राजा की सीमा के बाहर चले गये और उपवास के कारण मरणासन्न हुये । तब साम गायन से उन्हें भोजन मिला । इन पर अश्विनीकुमारों की कृपा थी । संभवतः इनकी उत्पत्ति सुदेष्ण की दासी के गर्भ से हुई थी । दे० 'दीर्घतमस' ।

दीर्घजिह्व–१. एक दैत्य । कश्यप तथा दनु का पुत्र । २. एक अति विषाक्त सर्प । मृतसंजीवक नामक मणि के संरक्षकों में से एक यह भी था ।

दीर्घजिह्वा–अशोक-वाटिका में वंदिनी सीता की रक्षिकाओं में से एक ।

दीर्घ तपस–१. राष्ट्र का पुत्र । ब्रह्म पुराण में यह काशेय का पुत्र कहा गया है । २. जंबू द्वीप स्थित महेन्द्र पर्वत पर रहनेवाले एक ऋषि । पुण्य और पावन नाम के इनके दो पुत्र थे । सपत्नीक दीर्घ तपस के दिवंगत होने पर पावन अति शोकमग्न हुये । पुण्य ने इनको ज्ञानोपदेश देकर मोह-मुक्त किया । ३. एक व्यास । इनके पुत्र शुक्र थे ।

दीर्घ तमस् औचथ्य–ऋग्वेद के अनुसार उचथ्य के पुत्र । यह अंगिरा कुलोत्पन्न एक सूक्तद्रष्टा थे और बृहस्पति के शाप से अंधे हो गये थे, पर अग्नि देव की स्तुति से फिर उन्होंने दृष्टि प्राप्त की । त्रैतन नामक दास ने कई बार इनका हृदय विदीर्ण कर दिया किन्तु अश्विनीकुमारों ने हर बार इनकी रक्षा की । कक्षिवत् आदि पाँच पुत्र इनके ही थे । । पुराणों में ये उतथ्य तथा ममता के पुत्र माने गये हैं । गर्भावस्था से ही वेद-वेदांग का ज्ञान ये प्राप्त कर चुके थे । प्रदेवी नामक एक सुंदरी से इनका विवाह हुआ जिससे गौतम आदि कई पुत्र इनके हुये । पुत्रेच्छा से यह दिन में ही सब लोगों के समक्ष सहवास करते थे । अंत में माता की आज्ञा से इनके पुत्रों ने ही इन्हें गंगा में बहा दिया । बहते-बहते ये राजा बलि के यहाँ गये । वहाँ राजा बलि की दासी से कक्षिवान आदि पुत्र उत्पन्न हुये । इसके पश्चात् संतान-प्राप्ति की इच्छा से राजा बलि ने अपनी रानी 'सुदेष्णा' को भेजा । उससे अंग, बंग, कलिंग आदि पुत्र उत्पन्न हुये । कक्षिमान आदि इनके पुत्रों ने विद्याबल से ब्राह्मणत्व प्राप्त किया । ऋग्वेद में दीर्घ तमस का शब्दार्थ है दीर्घ दिवसानंतर अस्त होने वाले सूर्य ।

दीघनीय–यह नाम ऋग्वेद में आया है । इंद्र ने इनको बहुत सी संपति दी थी ।

दीर्घनेत्र–भीम के हाथ से मृत्यु पाने वाला धृतराष्ट्र का एक पुत्र ।

दीर्घबाहु–राजा खट्वांग के पुत्र । इनके पुत्र रघु थे । मत्स्य के अनुसार इनके पुत्र अज थे । 'हरिवंश' में 'दीर्घबाहु' शब्द रघु के विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुआ है । गरुड़ पुराण में रघु के साथ यह शब्द लगा हुआ है ।

दीर्घयज्ञ--दुर्योधन-पक्षीय एक राजा।

दीर्घरोमन--धृतराष्ट्र के एक पुत्र जिन्हें भीम ने मारा था।

दीर्घलोचन--धृतराष्ट्र के एक पुत्र जिन्हें भीम ने मारा था।

दीर्घायु--श्रुतायु के पुत्र एक क्षत्रिय योद्धा। भारतयुद्ध में ये अर्जुन के हाथ से मारे गये। ये अच्छतायु के पुत्र थे।

दीर्घिका-वीर शर्मा की कन्या। नामांतर शांडिली। यह बहुत लंबी थी। लंबी लड़की से शादी करने वाला शीघ्र मर जाता है इस धारणा से कोई इससे शादी नहीं करता था। इसलिये जंगल में वृद्धावस्था तक तपस्या करती रहीं। बहुत दिन बाद एक कोढ़ी गृहस्थ इसके आश्रम में आया और उसने विवाह की प्रार्थना की। इसने उससे विवाह कर लिया। वह पुरुष वेश्यागामी था और दीर्घिका उसे अपने कंधे पर चढ़ाकर वेश्या के यहाँ ले जाया करती थी। एक बार अँधेरे में ले जाते हुये मांडव्य ऋषि का शरीर इससे छू गया। क्रोधित हो उन्होंने शाप दिया कि सूर्योदय के साथ-साथ तू मर जायगा। दीर्घिका ने अपने पातिव्रत से सूर्योदय रोक दिया। अन्त में अनुसूया के कहने से सूर्योदय किया। प्रसन्न हो देवताओं ने इन्हें और इनके पति को पूर्ण यौवन प्रदान किया।

दुंदुभि--१. एक राक्षस। मयासुर और होमा नाम की अप्सरा के दो पुत्रों में एक। दुंदुभि दीर्घ काल तक तपस्या करके सहस्र हाथियों के बल का बरदान पाकर भैंसे के रूप में स्वतंत्र विचरण करने लगा। बानरराज बालि ने इसे मार कर मतंग ऋषि के आश्रम में फेंक दिया। मृत दुंदुभि के रक्त से आश्रम गंदा हो गया। इससे क्रुद्ध हो मतंग ने बालि को शाप दिया कि इस आश्रम में आते ही तेरी मृत्यु हो जायगी। इस कारण वह आश्रम बालि के लिये अगम्य और सुग्रीव, जो बालि से डरता था, के लिए सुगम हो गया। कालांतर में वहीं पर बनवासी राम से सुग्रीव ने मित्रता की। राम ने अपनी शक्ति का परिचय देने के लिये इसे अपने पैर के एक अँगूठे के धक्के से १६ योजन दूर फेंक दिया। कहा जाता है कि इसने १६ हजार स्त्रियों को बंदिनी बनाया था। इसने एक लाख स्त्रियों से विवाह करने की प्रतिज्ञा की थी। २. एक गंधर्वी। ब्रह्मा की आज्ञा से यह दशरथ की रानी कैकेयी की दासी हुई। ३. एक दानव। कश्यप तथा दनु का पुत्र। ४. अंधक का पुत्र। इसके पिता का नाम अनु तथा पुत्र का अरिद्योत था। ५. सुतार नामक शिवावतार के शिष्य।

दुंदुभि निह्लाद--दिति का पुत्र और प्रह्लाद का मामा। ब्राह्मणों के द्वारा राक्षसों की पराजय देख इसने काशी जाकर ब्राह्मण का नाश करने की ठानी और इस विचार से काशी-क्षेत्र में जाकर उनका बध करने लगा; किंतु शिव ने बताया कि तू ब्राह्मणों का कुछ नहीं कर सकता है। अन्त में काशी में ही इसका नाश हुआ। काशी के व्याघ्रेश्वर महादेव के महात्म्य में इसका वर्णन है।

दुःशल--धृतराष्ट्र के एक पुत्र।

दुःशला--धृतराष्ट्र की कन्या तथा दुर्योधन आदि १०० भाइयों की भगिनी। यह सिंधुराज जयद्रथ को ब्याही गई थी। इनके पुत्र का नाम सुरथ था।

दुःशीम--ऋग्वेद के एक मंत्र में इनको उदार कहा गया है।

दुःसह--१. धृतराष्ट्र का एक पुत्र जिसे भीम ने मारा था। २. पुरुकुत्स के पुत्र। इनकी स्त्री का नाम नर्मदा था।

दुःस्वभाव--दे० 'दुर्बुद्धि'।

दुरतिक्रम--शिवावतार सुहोत्र के शिष्य।

दुराचार--एक भ्रष्टाचारी ब्राह्मण। धनुष्कोटि, जाबाल तथा वेंकटाचल आदि तीर्थों की यात्रा करने से ये पवित्र हुये।

दुराधन--धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

दुराधर--धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

दुरासद--भस्मासुर का पुत्र। इसने शिव से पंचाक्षरी मंत्र प्राप्तकर उसका जप किया और शक्तिशाली हो सबको दुःख देने लगा। अंत में शक्ति पुत्र ढुंढी ने इसका बध किया।

दुरित--महावीर्य राजा के पुत्र। इनके तीन पुत्र थे।

दुर्ग--१. हिरण्याक्ष के वंशज रुरु नामक दैत्य का पुत्र। २. गुर्जर देश के राजा मूलवर्म का पुत्र।

दुर्गम--१. एक राक्षस जिसका वध दुर्गा ने किया। २. रुरु दैत्य का पुत्र। इसने सब वेदों को नष्ट कर दिया जिससे सारे वैदिक कर्म नष्ट हो गये। अंत में देवी ने इसका बध करके वेदों का उद्धार किया। ३. विष्णु के अनुसार धृत का पुत्र। नामांतर दुर्दम, दुर्मनस् और विदुष है।

दुर्गमभूत--विष्णु के अनुसार वसुदेव तथा रोहिणी के पुत्र।

दुर्गह-सायणाचार्य के अनुसार यह पुरुकुत्सु के पिता थे। पैतृक नाम दौर्गह है।

दुर्जय--१. कश्यप तथा दनु का एक दानव पुत्र। २. दशाश्व शाखा के अंतर्गत सुवीर के पुत्र। इनके पुत्र का नाम दुर्योधन था। ३. खर (दूषण के भाई) का मंत्री। ४. धृतराष्ट्र के एक पुत्र जिसे भीम ने मारा था। ५. सुप्रतीक का पुत्र। इसने हेतृप्रहेतृ की कन्या से विवाह किया। फिर चिंतामणि नामक रत्न की प्राप्ति के प्रयत्न में इसके प्राण गये। इसके मरणस्थल का नाम नैमिषारण्य है।

दुजया मित्र कर्षण--अनंत के मित्र।

दुर्दम--१. विक्रमशाली राजा के पुत्र। इनकी माता का नाम कालिंदी था। प्रमुच मुनि की कन्या रेवती इनकी स्त्री थीं। २. धृत-पुत्र दुर्गम का नामांतर। ३. रुद्रश्रेणी राजा के पुत्र। हरिवंश के अनुसार भद्रश्रेणी के पुत्र हैहय और काश्य वंश में वैमनस्य होने के कारण दिवोदास ने भद्रश्रेणी की कन्या को मार डाला और भूलकर इन्हें छोड़ दिया। फिर इन्होंने दिवोदास को हराकर बदला दिया। ४. गोदावरी तट पर प्रतिष्ठान नामक नगरी में रहनेवाला एक ब्राह्मण। ५. विश्वावसु नाम के एक गंधर्व का पुत्र। एक बार यह अपनी सैकड़ों स्त्रियों के साथ कैलाश स्थित हालास्य तीर्थ में नग्न होकर जल-विहार कर रहा था। वहीं पर अत्रि, वशिष्ट आदि ऋषि शिव की स्तुति कर रहे थे। क्रुद्ध हो उन लोगों ने शाप दिया कि तू राक्षस हो जा। उसकी स्त्रियों की बड़ी प्रार्थना से आर्द्र होकर बाद में उन्होंने कहा कि १६ वर्ष में तुम्हारा पति मुक्त

होगा। राक्षस रूप में जब इसने गालव ऋषि पर चढ़ाई की तभी चक्र से मृत्यु प्राप्त करके मुक्त हुआ।

दुर्दमन–शतानीक के पुत्र। भविष्य तथा भागवत इस संबंध में एक मत हैं। नामांतर उदयन अथवा उद्यान है।

दुर्धर–१. रावण का एक मंत्री। २. राम-सेना का एक बानर वीर। ३. धृतराष्ट्र का एक पुत्र जिसे भीम ने मारा था। ४. महिषासुर नामक राक्षस का एक अनुयायी।

दुर्धर्ष–१. एक राक्षस वीर। रावण की राक्षसी सेना का एक सेनापति था। युद्ध में यह हनुमान द्वारा मारा गया। २. रावण-पक्षीय एक राक्षस वीर जिसे राम ने मारा। ३. धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ४. हिरण्याक्ष-पक्षीय एक राक्षस वीर जिसे राम ने मारा।

दुर्बुद्धि–धृतराष्ट्र नाग के पुत्र। युद्ध में यह अपने पिता के साथ मारा गया।

दुर्बुद्धिजनमेजय–भल्लाट का पुत्र। इसके कारण उग्रायुध ने नीप का संहार किया और इसको भी मारा।

दुर्मद–१. भीम द्वारा मारा जानेवाला धृतराष्ट्र का एक पुत्र। २. मय दानव का एक पुत्र। इसने बलि को युद्ध के लिए ललकारा पर युद्ध में बलि ने इसे हरा दिया और यह भाग कर एक गुफा में छिप गया। ३. अंग देशाधिपति मायावर्म राजा का एक पुत्र। ४. वसुदेव और पौरवी का एक पुत्र।

दुर्मर्षण–१. वसुदेव के भाई जो संजय की राष्ट्रपाली नामक स्त्री से उत्पन्न हुए थे। २. धृतराष्ट्र का एक पुत्र जिसे भीम ने मारा था।

दुर्मित्र–१. पुष्यमित्र नामक राजा के पुत्र। २. भागवत के अनुसार किलकिला नगरी के एक राजा जिनका नामांतर पहुमित्र अथवा पहमित्र है।

दुर्मित्र कौत्स–एक सूक्तद्रष्टा। यह कुत्स के पुत्र थे।

दुर्मुख–१. पांचाल देश के एक राजा। सम्राट् पद के लिए बृहदुक्थ ने इनका राज्याभिषेक किया। इनके पुत्र जनमेजय ने पांडवों की ओर से युद्ध किया। २. धृतराष्ट्र का एक पुत्र तथा यशोधर का पिता। द्रौपदी के स्वयंवर में सहदेव ने इसे परास्त किया। भीम के हाथ से इसकी मृत्यु हुई। ३. कई राक्षस वीरों के नाम जो हिरण्याक्ष, महिषासुर और रावण के पक्ष के थे। ४. राम-पक्षीय एक वानर। ५. सुहोत्र नामक शिवावतार के एक शिष्य। ६. अंग देशाधिपति मायावर्म और उनकी प्रमदा नामक भार्या से उत्पन्न दस पुत्रों में से एक। देवी के वरदान से यह कौरव वंश में उत्पन्न हुआ था। ७. कद्रू-पुत्र एक सर्प। ८. कश्यप तथा खशा का एक पुत्र। ९. दे० 'दुर्मद'।

दुर्मुखी–अशोकवाटिका की एक राक्षसी।

दुर्मुष–एक असुर। समुद्र-मंथन के अवसर पर इसने देवताओं से युद्ध किया।

दुर्मेधस–हिरण्याक्ष का अनुयायी एक राक्षस। युद्ध में यह वायु द्वारा मारा गया।

दुर्लिहुह–अनमित्र के पुत्र। यह बड़े तत्वज्ञानी थे।

दुर्व–नृपंजय राजा के पुत्र। विष्णु के अनुसार इनका नाम मृदु तथा मत्स्य के अनुसार इनका नाम उर्व था।

दुर्वाक्षी–वसुदेव के भाई वृक की पत्नी का नाम।

दुर्वार–कुंडल नगर के अधिपति राजा सुरथ के पुत्र। राम के अश्वमेधीय अश्व के पकड़ने के कारण शत्रुघ्न ने युद्ध में इन्हें परास्त किया था।

दुर्वावरण–जालंधर नामक दैत्य का दूत। समुद्र-मंथन के बाद जालंधर की आज्ञा से यह १४ रत्न माँगने गया। इंद्र ने इसे वापस कर दिया। इससे देवताओं और दैत्यों में युद्ध छिड़ गया। दुर्वावरण ने यम के साथ युद्ध किया।

दुर्विगाह–धृतराष्ट्र का पुत्र।

दुर्विनीत–पांडय देशीय इध्यवाहन के पुत्र। धनुष्कोटि तीर्थ में स्नान करके ये मुक्त हुये।

दुर्विमोचन–धृतराष्ट्र के एक पुत्र।

दुर्विरोचन–धृतराष्ट्र के एक पुत्र।

दुर्विवह–धृतराष्ट्र के एक पुत्र। यह भीम के हाथ से मारे गये।

दुषण्य–पशुमान के पुत्र। इन्हें एक ऋषि ने पिशाच होने का शाप दिया था, किंतु अग्नितीर्थ पर तपस्या करके ये शाप-मुक्त हुये।

दुष्कृत–रावण-कालीन एक राजा, जिन्हें रावण ने परास्त किया था।

दुष्कर्ण–धृतराष्ट्र के एक पुत्र। इन्हें शतानीक ने परास्त किया था। भारतयुद्ध में ये भीम द्वारा मारे गये।

दुष्टरीतु पौस्त्यायन–सृंजय के राजा। यह शब्द ऋग्वेद में दो बार आया है। किंतु यह निश्चय नहीं है कि वहाँ यह व्यक्ति-वाचक संज्ञा के रूप में प्रयुक्त है या नहीं।

दुष्प्रधर्ष–धृतराष्ट्र के एक पुत्र, जिन्हें भीम ने मारा था।

दुष्प्रधर्षण–धृतराष्ट्र के एक पुत्र। द्रौपदी स्वयंवर में ये उपस्थित थे। भारतयुद्ध में भीम के हाथ से इनकी मृत्यु हुई।

दूर्व–गौड़-देशोत्पन्न एक ब्राह्मण।

दूषणा–ऋषभदेव के वंश में उत्पन्न भौवन राजा की स्त्री। इनके पुत्र का नाम त्वष्टा था।

दृढ़–१. धृतराष्ट्र के १०० पुत्रों में से एक। इनको भीम ने मारा था। २. दुर्योधन पक्षीय एक राजा।

दृढ़क्षत्र–धृतराष्ट्र के एक पुत्र।

दृढ़द्युम्न–१. दृढ़स्यु का नामांतर। २. अगस्त्य-गोत्रीय एक मंत्रकार जिनका नामांतर 'दृढ़ायु' है।

दृढ़धनु–सेनजित के पुत्र। इनका नामांतर 'दृढ़रथ' या 'दृढ़हनु' है।

दृढ़धन्वा–धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दृढ़नेमि–भागवत, वायु तथा मत्स्य पुराणों के अनुसार सत्यधृति, तथा विष्णु पुराण के अनुसार धृतिमान के पुत्र का नाम।

दृढ़मनि–एक शूद्र। इसे एक ब्रह्म राक्षस लगा हुआ था। वेंकटाचल जाने पर इसका उससे छुटकारा हुआ।

दृढ़रथ–१. धृतराष्ट्र के एक पुत्र। २. मत्स्य पुराण के अनुसार नवरथ के पुत्र का नाम। मतांतर से ये सेनजित के पुत्र थे।

दृढ़रुचि–हिरिण्यरेता के पुत्र तथा प्रियव्रत के पौत्र।

दृढ़वर्मन–धृतराष्ट्र के एक पुत्र नाम।

दृढ़संध--धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।

दृढ़सेन--१. पांडव-पक्षीय राजा जिसे द्रोण ने मारा था। २. विष्णु तथा ब्रह्मांड पुराण के अनुसार सुव्रत के पुत्र। इनका नामांतर द्युमत्सेन है।

दृढ़स्थाश्रय--धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दृढ़स्यु--अगस्त्य तथा लोपामुद्रा के पुत्र। यह उग्र तपस्वी तथा गम्भीर विद्वान् थे। ऋतुऋषि ने निस्संतान होने के कारण इन्हें गोद ले लिया था।

दृढ़हनु--भागवत के अनुसार सेनजित राजा के पुत्र।

दृढ़हरत--धृतराष्ट्र के पुत्र।

दृढ़ाच्युत--अगस्त्य के पुत्र। इनका एक नाम दृढ़ास्यु भी था।

दृढ़ायु--१. पुरुरवा और उर्वशी के पुत्र। २. अगस्त्य के पुत्र। दे० 'दृढ़स्यु'।

दृढ़ायुध--धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

दृढ़ाश्व--कुवलयाश्व या कुवलाश्व के पुत्र, एक राजा जिन्होंने ३४२०० वर्षों तक राज्य किया। पद्म पुराण के अनुसार यह कुवलाश्व के पौत्र और धुंधमार के पुत्र थे।

दृषद्वती--१. हर्यश्व राजा की स्त्री। २. विश्वामित्र की पत्नी। ३. काशी के प्रथम दिवोदास की पत्नी।

दृष्टरथ--महाभारत कालीन एक राजा।

दृष्टशर्मन--विष्णु के अनुसार श्वफलक के पुत्र।

देवक--१. युधिष्ठिर के एक पुत्र। इनकी माता का नाम पौरवी था। २. यदुवंश के महाराज आहुक के पुत्र और कंस के पिता उग्रसेन के भाई। यह पूर्व जन्म में गंधर्व-राज थे। इनकी कन्या देवकी वसुदेव को ब्याही थीं जो श्रीकृष्ण की माँ थीं। अपनी अन्य कन्याओं का विवाह भी इन्होंने वसुदेव के साथ ही किया था। उग्रसेन इनके छोटे भाई थे। इनके पुत्र देववान् उपदेव, सुदेव तथा देवरक्षित थे।

देवकद--भविष्य के अनुसार प्रतिव्योम के पुत्र। इनके पुत्र सहदेव थे।

देवक मान्यमान--यह तृत्सु के शत्रु तथा शंबर के मित्र थे।

देवकी--१. मथुरा के महाराज उग्रसेन के छोटे भाई देवक की पुत्री। वसुदेव की स्त्री तथा कृष्ण की माता। वसुदेव के साथ इनके विवाह के बाद नारद ने आकर इनके चचेरे भाई कंस से कहा था कि इनके आठवें गर्भ से उत्पन्न होनेवाली संतान ही तुम्हारा वध करेगी। कंस ने यह सुनकर इनको इनके स्वामी वसुदेव के साथ ही कारागृह में बंद करा दिया था। इनकी छः संतानों को उसने एक-एक करके स्वयं अपने हाथों से मार डाला था। इनके सातवें गर्भ के शिशु को विष्णु की आज्ञा से योगमाया नंद के यहाँ रहनेवाली वसुदेव की पत्नी रोहिणी के गर्भ में रख आई थीं। आठवें गर्भ में कृष्ण की उत्पत्ति हुई थी। वसुदेव अष्टमी की उस अँधेरी तथा बादलों से भरी रात को कृष्ण को नंद के यहाँ यशोदा के पास छोड़ आए तथा अपने साथ यशोदा की, उसी रात में उत्पन्न हुई, कन्या को लेते आए थे। प्रातः-काल जब कंस को यह ज्ञात हुआ कि देवकी के गर्भ से अब की बार एक कन्या हुई है तो वह उसका भी वध करने के लिए आया। किंतु जैसे ही उसने पत्थर पर पटकने के लिए उसे ऊपर उठाया वह आकाश में उड़ गई और कहती गई कि तुम्हारे वध करनेवाले का जन्म हो चुका है। कंस ने यह सुनकर वसुदेव तथा देवकी को मुक्त कर दिया था तथा सभी प्रतिभावान दीखनेवाले शिशुओं के वध की आज्ञा दे दी। कंस के कारागृह से मुक्त होने के बाद देवकी अपने स्वामी वसुदेव के साथ सुख-पूर्वक रहने लगी, किंतु कृष्ण गोकुल में ही रह कर यशोदा के द्वारा पोषित होकर बड़े हुए। आगे भी माता तथा पुत्र के मिलने का कोई उल्लेख नहीं मिलता है। २. शैब्य की कन्या तथा युधिष्ठिर की एक पत्नी। इसे यौधेय नामक एक पुत्र था। ३. ऋषभदेव के कुल में उत्पन्न उद्गीथ ऋषि की पत्नी।

देवकुल्या--१. स्वायंभुव मन्वंतर में मरीचि ऋषि के पुत्र की कन्या। पूर्व जन्म में श्रीकृष्ण के पाँव धोने के कारण इस जन्म में यह स्वर्धुनी (स्वर्ग की नदी) हुई। २. भागवत के अनुसार पूर्णिमा की कन्या।

देवक्षत्र--देवरात के पुत्र। नामांतर देवक्षेत्र है।

देवगर्भ--ब्रह्मदेव के पुष्करक्षेत्र यज्ञ में यह ऋत्विज थे।

देवज--संयमन राजा के पुत्र।

देवजाति--कश्यप-कुलोत्पन्न एक गोत्रकार। पाठांतर से इनका नाम भेदसाति भी मिलता है।

देवजित--१. कश्यप तथा दनु के एक पुत्र। २. अंगिरस् कुलोत्पन्न एक ब्रह्मर्षि।

देवताजित--सुमति तथा वृद्धसेन के पुत्र। इनकी स्त्री का नाम आसुरी था, जिससे देवद्युम्न नामक पुत्र हुआ।

देवदत्त--भागवत के अनुसार उरुश्रवा राजा के पुत्र। इनके पुत्र अग्निवेश्य, कानीव तथा जातू कर्ण्य थे।

देवदत्त शत--एक शाखा के प्रवर्तक। दे० 'पाणिनि'।

देवदर्श--कबंधायन के शिष्य और एक शाखा के प्रवर्तक ऋषि। कबंध ने इन्हें अथर्ववेद की शिक्षा दी। पिप्पलाद, ब्रह्मबल, मोद तथा शौल्कायनि इनके चार शिष्य थे। पाणिनि और देवदर्शन इनके नामांतर हैं। दे० 'पाणिनि'।

देवदर्शन--दे० 'देवदर्श'।

देवदास--मगध देश के निवासी एक ब्राह्मण। इनकी स्त्री का नाम उत्तमा था जो अत्यंत प्रतिव्रता थीं। इनके पुत्र का नाम अंगद तथा पुत्री का नाम वलया था। जब ये दोनों गृहस्थी सँभालने योग्य हुये तो सपत्नीक तीर्थयात्रा को निकले। रास्ते में एक महात्मा ने बद्रिकाश्रम आने का उपदेश दिया। तदनुसार इन्द्रप्रस्थ जाकर इन्होंने यमुना में स्नान किया और बाद में स्वर्ग चले गये।

देवद्युति--एक ऋषि जो सरस्वती तट पर एक आश्रम में रहते थे। भगवान विष्णु की कृपा से इनके सरस्वती नामक एक पुत्र हुआ था। इन्होंने ग्रीष्म ऋतु में पञ्चाग्नि साधन किया और १००० वर्ष तक विष्णु की तपस्या की, जिससे प्रसन्न हो विष्णु ने दर्शन दिया और वर माँगने को कहा, किंतु निस्पृह देवद्युति ने केवल भक्ति माँगी।

देवद्युम्न--भागवत के अनुसार सुमति के पुत्र।

देवपति--भृगु-कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

देवप्रस्थ—एक गोप। यह कृष्ण का एक सखा था।

देवभव—इन्होंने नारद से सृष्टि तत्व के सम्बन्ध में विचार विनिमय किया था।

देवभाग श्रौतर्ष—श्रुत ऋषि के पुत्र। यज्ञपशु के किस अंग को किसे देना चाहिये इसका इन्हें ज्ञान था। इन्होंने आजीवन इस ज्ञान को गुप्त रक्खा। पर एक अमानुष व्यक्ति ने गुप्त रीति से इसे जानकर बभ्रु के पुत्र गिरिज को बता दिया। सृंजय तथा कुरु के स्नेह दाक्षायण यक्ष में ये पुरोहित थे। यज्ञ में एक भूल हो जाने से सृंजय का का नाश हुआ।

देवभूति—ये भागवत के पुत्र थे। इनका नामांतर देवभूमि या क्षेमभूमि है।

देवभूमि—मत्स्य के अनुसार पुनर्भव तथा ब्रह्मांड के अनुसार भागवत के पुत्र। इन्होंने दश वर्षों तक राज्य किया।

देवमति—अंगिरा कुलोत्पन्न एक ब्रह्मर्षि।

देवमानुषि—राजा शूर के पुत्र। इनकी माता का नाम अश्मकी था। नामांतर देवमीढुष है।

देवमित्र शाकल्य—एक प्रसिद्ध ऋषि और आचार्य। इन्होंने मुद्गल, गोखल, मत्स्य, खालीय और शैशिरेय इन पाँच शिष्यों को पाँच संहिताओं की शिक्षा दी। भागवत में ये शाकल्य के समकक्ष माने गये हैं; पर वायु तथा ब्रह्मांड आदि में ये शाकल्य के शिष्य कहे गये हैं। राजा जनक के अश्वमेध यज्ञ समाप्त होने पर उन्होंने ब्राह्मणों को असंख्य दान देने की सोची। इससे याज्ञवल्क्य वहाँ आये। उन्होंने कहा कि ब्राह्मणों की श्रेष्ठता विद्या तथा ज्ञान से है। इसलिये जो मेरे प्रश्नों का उत्तर दे देगा, उसी को सब धन मिलेगा। यह सुनकर शाकल्य सामने आये और याज्ञवल्क्य से एक हजार प्रश्न किये जिनका उत्तर याज्ञवल्क्य ने दे दिया। इसके बाद याज्ञवल्क्य ने एक प्रश्न किया जिसका उत्तर ये न दे सके। इस क्षोभ से इनकी मृत्यु हो गई। देवमित्र की मृत्यु से इतर ब्राह्मणों को पातक लगा पर तीर्थयात्रा तथा स्नानादि से सब मुक्त हो गये। दे० 'वेदमित्र', 'व्यास' तथा 'याज्ञवल्क्य'।

देवमीढ़—१. भागवत के अनुसार कृतिरथ तथा वायु के अनुसार कीर्तिरथ के पुत्र। २. हृदीक के पुत्र। इनकी स्त्री का नाम ऐक्ष्वाकी तथा पुत्र का शूर था। देवमीढुष, देवमानुषि, तथा देवमेधस इनके नामांतर हैं। ३. द्विमीट का नामांतर। ४. वृष्णि के पाँच पुत्रों में से एक।

देवमीढुष—दे० 'देवमीढ़'।

देवमुनि ऐरमंद—एक सूक्तद्रष्टा।

देवमेधस—भविष्य के अनुसार हृदिदीपक के पुत्र।

देवयान—कश्यप कुलोत्पन्न गोत्रकार ऋषियों का नाम।

देवयाहु—१. भागवत के अनुसार हृदीक का पुत्र। २. रैवत मन्वंतर में सप्तर्षियों में से एक।

देवरंजित—दे० 'देवरक्षित'।

देवरक्षित—देवक के पुत्र, वसुदेव की स्त्री तथा कृष्ण-माता देवकी के भाई। देवरंजित तथा देववर्धम इनके नामांतर हैं।

देवरथ—भविष्य पुराण के अनुसार कुशुंभ के पुत्र। दे० 'देवरात'।

देवराजन—उन देवताओं की उपाधि जिन्होंने राजसूय यज्ञ किया था। इन देवताओं के नाम सायण के अनुसार सिंधुक्षित् दीर्घश्रवस् पार्थ तथा कक्षीवत है। मनुष्यों में भी जो राजसूय यज्ञ करते हैं वे मनुष्यराज कहलाते हैं।

देवराज वसिष्ठ—इनकी सहायता से रुय्यारण ने सत्यव्रत त्रिशंकु की सीमा पार कर अपना स्वाधीन राज्य स्थापित किया था।

देवरात—१. विकुक्षि का नामांतर। २. देवरात का पाठांतर। ३. (शिव पुराण महात्म्य) एक ब्राह्मण, जो बड़ा झूठा और मद्यप था। एक बार यह एक तालाब में स्नान करने गया। वहाँ शोभवती नाम की वेश्या से इसकी मुलाकात हुई और यह उसके साथ रहने लगा। फिर एक बार प्रतिष्ठान नामक नगरी में गया। वहाँ महीने भर शिव की पूजा करता रहा इसके फल से यह कैलास को गया। ४. भागवत तथा वायु आदि पुराणों के अनुसार सुवंतु के पुत्र। इनके यहाँ शिव ने अपना धनुष रख छोड़ा था, जिसे सीता-स्वयंवर के समय राम ने तोड़ा। ५. मत्स्य तथा पद्म आदि के अनुसार करंभ के पुत्र। वायु के अनुसार करंभक के पुत्र। भविष्य में इनका नाम देवरथ कहा गया है। ६. भागवत के अनुसार प्रसिद्ध ऋषि तथा आचार्य याज्ञवल्क्य के पिता। वायु तथा ब्रह्मांड में इनका नाम ब्रह्मवाह कहा गया है। ७. एक गृहस्थ। कला नाम की इनकी कन्या को—जिसके पति शोण थे—मारीच नाम के एक राक्षस ने मार डाला। इसका बदला लेने के अभिप्राय से ये विश्वामित्र के पास गये फिर वशिष्ठ को लेकर शिवलोक गये। ८. युधिष्ठिर का एक दरबारी क्षत्रिय वीर। ९. भरत के एक पुत्र का नाम। इनके भाई देवश्रवस थे। इनका एक पूरा सूक्त है। इन्होंने सरस्वती, हषद्वती, तथा अत्पया, इन तीन नदियों के तट पर यज्ञ किया था।

देवरात विश्वामित्र—एक गोत्रकार। इनका एक गोत्र तथा प्रवर भी है। शुनःशेप को विश्वामित्र ने जब अपना पुत्र स्वीकार किया तब इनका नाम देवरात पड़ा। दे० 'शुनःशेप'।

देवराति—अंगिरा कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

देववत—१. राजा सुदास के पितामह। वध्यश्व, दिवोदास तथा सुदास ऐसा वंशक्रम माना जाता है। २. अक्रूर के पुत्र। ३. विष्णु स्वामी मतानुयायी तथा 'रामज्योत्स्नामय' नामक ग्रंथ के रचयिता। ४. देवक के बड़े भाई। इनके भाई उपदेव तथा सुदेव आदि थे। ५. रुद्रसावर्णि मनु के पुत्र।

देववती—प्राणी नामक गंधर्व की कन्या तथा सुरेश नामक राक्षस की स्त्री।

देववर—एक यजुर्वेदी ब्रह्मचारी ब्राह्मण।

देववर्णिनी—भारद्वाज ऋषि की कन्या तथा विश्रवा ऋषि की स्त्री। इनके पुत्र का नाम वैश्रवण था।

देववर्धन—भागवत के अनुसार देवक के पुत्र।

देववर्मन—वायु तथा ब्रह्मांड के अनुसार इंद्रबालित के

पुत्र। इन्होंने सात वर्षों तक राज्य किया था। नामांतर सोमशर्मा है।

देववर्ष–प्रियव्रत राजा के पुत्र।

देववीति–मेरु की नौ कन्याओं में से एक। ये अग्नीध्र के पुत्र केतुमाल की स्त्री थीं।

देवव्रत–१. भीष्म का वास्तविक नाम। दे० 'भीष्म'। २. एक कर्मनिष्ठ ब्राह्मण। एक बार एक कृष्णभक्त ने इन्हें कृष्ण नाम जपने का उपदेश दिया। इन्होंने उसकी अवहेलना की, जिस कारण इन्हें बाँस का जन्म मिला। फिर तीर्थ आदि के पुण्य से श्रीकृष्ण ने उसी बाँस से अपनी वंशी बनाई।

देव शर्मन–१. एक ऋषि। इनकी स्त्री का नाम रुचि था। २. जनमेजय के नागयज्ञ का एक सदस्य। ३. व्यास की ऋक् शिष्य परंपरा में रथीतर के शिष्य। ४. एक कर्मठ ब्राह्मण। यह प्रत्येक पर्व पर पितरों का श्राद्ध करने समुद्र संगम पर जाते थे। अंत में प्रत्यक्ष होकर उन्होंने आशीर्वाद दिया। इस नाम के कई ब्राह्मणों के उल्लेख पुराणों में मिलते है।

देवश्रवस–१. शूद नाम के राजा का पुत्र। इनकी स्त्री कंस की बहन कंका थी। सुवीर और इषुमान इनके दो पुत्र थे। २. विश्वामित्र कुलोत्पन्न एक ऋषि तथा प्रवर। यह एक मंत्रकार थे।

देवश्रवस भारत–एक सूक्तद्रष्टा।

देवश्रवस यामायन–एक सूक्त द्रष्टा। अनुक्रमणी के अनुसार ये यमपुत्र थे।

देवश्रेष्ठ–रुद्र सावर्णि मनु के पुत्र।

देव सावर्णि–तेरहवें मनु। इनका नाम ऋतुधामा भी था।

देवसिंह–भीम के पुत्र तथा सहदेव के अंशावतार।

देवसेना–१. दक्ष प्रजापति की एक कन्या। केशी नामक दैत्य इन्हें अपहरण किये भागा जा रहा था उसी समय इंद्र ने इन्हें मार डाला फिर कार्तिकेय के साथ देवसेना का विवाह हुआ। २. 'स्कंदगुप्त नाटक (जयशंकर प्रसाद कृत) की प्रधान नायिका।

देवस्थान–एक ब्रह्मर्षि।

देवहव्य–एक ऋषि।

देवहूति–स्वायंभुव मनु की कन्या तथा कर्दम प्रजापति की स्त्री। इनके कपिल नामक पुत्र तथा नौ कन्यायें थीं। महर्षि कपिल ने इन्हें सांख्य की शिक्षा दी थी। इसके बाद शरीर त्यागकर इन्होंने नदी का रूप धारण किया।

देवहोत्र–एक ऋषि। यह उपरिचर वसु के यज्ञ में ऋत्विज थे।

देवांतक–१. रावण के पुत्र। इन्हें हनुमान ने मारा था। २. एक राक्षस। यह हिरण्य का मित्र था। उसकी ओर से लड़ता हुआ यम के हाथ से यह मारा गया। ३. कालनेमि का पुत्र। ४. रौद्रकेतु नामक राक्षस का पुत्र। अपने अत्याचारों से इसने त्रैलोक्य में हाहाकार मचा दिया। अंत में गणेश ने कश्यप के यहाँ जन्म लेकर इसका वध किया।

देवातिथि काण्व–१. एक सूक्तद्रष्टा। इनके सूक्त में रुम, रुशम, श्यावक तथा कृप का उल्लेख है। २. क्रोधन तथा कंडू के पुत्र। इनकी स्त्री वैदर्भी मर्यादा थीं।

देवाधिप–कौरव-पक्षीय एक राजा।

देवानंद--प्रियानंद राजा के पुत्र। इन्होंने २० वर्षों तक राज्य किया।

देवानीक--क्षेमधन्वा के पुत्र।

देवापि आर्ष्टिषेण--१. एक मंत्रद्रष्टा। इनके सूत्र में अर्ष्टिषेण तथा शंतनु का उल्लेख है। ये दोनों भाई थे। छोटे होने पर गद्दी पर बैठे और इसी कारण अनावृष्टि जनित अकाल पड़ा। ब्राह्मणों ने कहा कि बड़े भाई के होने पर भी छोटे भाई के राजगद्दी पर बैठने के कारण अकाल पड़ा। इन्होंने बड़े भाई से प्रार्थना की; किंतु कुष्ट रोग से पीड़ित होने के कारण उन्होंने अस्वीकार किया और वन में तपस्या करने चले गये। ये राजा प्रतीप और शैब्या के पुत्र थे। इन्होंने पृथूदक तीर्थ पर तप किया इस कारण इन्हें ब्राह्मणत्व मिला। २. चेदि देश का एक क्षत्रिय वीर। इसे कर्ण ने मारा था। ३. आर्ष्टिषेण राजा के उपमन्यु नामक पुरोहित के पुत्र।

देवार्ह--वायु के अनुसार हृदीक के पुत्र।

देवावृध–सात्वत राजा के पुत्र। कोई पुत्र न होने के कारण ये पर्णाशा नदी के तट पर तप करने लगे। नदी ने स्त्री रूप धारण कर इन्हें पति रूप से वरण किया। इस संबंध से इन्हें बभ्रु नामक पुत्र उत्पन्न हुआ।

देविका–शैव्य की कन्या तथा युधिष्ठिर की धात्री।

देवी--१. प्रह्लाद के पुत्र विरोचन की स्त्री। २. वरुण की स्त्री। इनको बल नाम का पुत्र तथा सुरा नाम की एक कन्या थी। दे० 'दुर्गा' ३. एक अप्सरा।

देहिन्--अमिताभ देवों में से एक।

दैर्घतम--दीर्घतम्या के पुत्र धन्वंतरि का पैतृक नाम।

दैर्घतमस- दे० 'कक्षीवत्।

दैव--अथर्वन् का पैतृक नाम।

दैवत्य--उपाकर्मांग आचार्य तर्पण में इनका उल्लेख है। दे० 'जैमिनि'।

दैववात--सृंजय का नामांतर।

दैवोदास--भृगुकुलोत्पन्न एक ऋषि।

दोष--१. अष्ट वसुओं में से एक। २. पुष्पाणी राजा की स्त्री। इनके तीन पुत्र थे— प्रदोष निशीथ तथा व्युष्ट।

द्यावा पृथिवी--विश्व के माता-पिता आकाश और पृथ्वी, वेदों के अनुसार समग्र देवों के माता-पिता कहे गये है। अन्यत्र ये दोनों स्वयंजात कहे गये हैं। पर इनकी उत्पत्ति कैसे हुई यह अनुमेय है। एक मंत्र में यह प्रश्न आता है। ' इन दोनों में से कौन प्रथम हुआ और कौन अंत में ? कैसे उत्पन्न हुये, कौन जानता है।" शतपथ के अनुसार पृथिवी सबसे प्रथम उत्पन्न हुई।

द्यु--अष्ट वसुओं में से एक। एक बार सब वसु अपनी स्त्रियों के सहित वसिष्ठ मुनि के आश्रम में गये। वहाँ उनकी गाय कामधेनु को लेना चाहा द्यु डंडे से मार-मार कर गाय लेकर चले गये। इससे वसिष्ठ ने शाप दिया कि सभी वसु मनुष्य योनि में जन्म लें। इसी के

फलस्वरूप द्यु गंगा की कोख से भीष्म के रूप में प्रकट हुए।

द्युतान मारुत–एक सूक्तद्रष्टा। अन्यत्र इनको वायु देवता का नामांतर माना गया है।

द्युति–एक देवी।

द्युतिमत्–१. मदिराश्व राजा का पुत्र। इनके पुत्र का नाम सुवीर था। २. शाल्व देश के राजा। इन्होंने अपना सारा राज्य ऋचीक ऋषि को दान कर दिया था। इसके कारण मरने पर इन्हें सद्गति मिली। ३. स्वायंभुव मनु के एक पुत्र। ४. दक्ष सावर्णि मन्वंतर में सप्तर्षियों में से एक। ५. मणिभद्र तथा पुण्यजनी के पुत्र। ६. भद्रावती नामक नगरी के एक राजा। यह नगरी सरस्वती तट पर स्थिति थी।

द्युमणि वत्सथ–एक राजा। भविष्य के अनुसार ये अरुपोषण के पुत्र थे और इन्होंने ३७००० वर्ष राज्य किया था।

द्युमत्सेन–१. शाल्वदेश के सत्यवान्। २. युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के समय अर्जुन ने इन्हें परास्त किया और ये कृष्ण के हाथ से मारे गये थे। ३. भागवत के अनुसार शुभ के पुत्र तथा मतांतर से त्रिनेत्र के पुत्र।

द्युमन्–१. स्वायंभुव मन्वंतर में वसिष्ठ तथा उर्जा के पुत्र। २. स्वारोचिष मनु के पुत्र। ३. राजा प्रतर्दन का नामांतर। ४. राजा शाल्व के मंत्री। कृष्ण ने इनको मारा था।

द्युम्न–चाक्षुष मनु तथा नड्वला के पुत्र।

द्युम्न विश्वचर्षणि आत्रेय–एक सूक्तद्रष्टा।

द्युम्नीक वासिष्ट–१. एक सूक्तद्रष्टा। २. सुतय देवों में से एक।

द्योराजनीर–एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त।

द्रवणिक–अग्नीश तथा वर्सोधीरा के पुत्र।

द्रविड–कृष्ण तथा जांबवती के पुत्र।

द्रविडा–वायु के अनुसार तृणविंदु की कन्या।

द्रविण–१. पृथु तथा अर्चि के पुत्र। २. धर नामक वसु का पुत्र। ३. तुषित देवों में से एक।

द्राह्याचण–श्रौत तथा गृह्यसूत्रों के रचयिता, तथा राणायनीय शाखा के सूत्रकार। इनको श्वादिर भी कहा जाता है। रुद्रभूती का पैतृक नाम था।

द्रुति–नला की स्त्री।

द्रुम–१. अधिरथ सूत के पुत्र तथा महारथी कर्ण के भाई। महाभारत युद्ध में भीम के हाथ से ये मारे गये। २. राजा शिबि का अंशावतार। ३. गंधर्वों के पुरोहित।

द्रुमसेन–१. दुर्योधन पक्षीय एक राजा जो धृष्टद्युम्न के हाथ से मारे गये। २. शल्य का चक्र-रक्षक एक क्षत्रिय वीर जो युधिष्ठिर के हाथ से मारा गया।

द्रुमिल–ऋषभदेव तथा जयंती के सौ पुत्रों में एक। ये बड़े भगवत-भक्त थे।

द्रुह्यु–१. राजा सुदास के शत्रु। ये इंद्र तथा अश्विनीकुमारों के भक्त, आयु पुत्र नहुष के पौत्र तथा ययाति के पुत्र थे। शर्मिष्ठा इनकी माता थीं। अनु और पुरु इनके दो भाई थे। ययाति ने बारी-बारी से अपने पुत्रों को बुला कर उनका यौवन माँगा। पुरु के अतिरिक्त सबने अस्वीकार किया। पुरु को राज्य देकर और सबको शाप दिया। ययाति के विशाल राज्य का पच्छिमी भाग द्रुह्यु को मिला। इनके वंशज भरतखंड के उत्तर भाग में राज्य करते थे। इनके राज्य में यवनों का आधिपत्य था। जल में डूबने के कारण इनकी मृत्यु हुई। २. मतिनार के पुत्र।

द्रोण–ऋषि भरद्वाज के पुत्र। एक बार गंगा-स्नान के समय, भरद्वाज को अप्सरा घृताची को विवस्त्रा देखकर वीर्य-पात हो गया था। उन्होंने उसे द्रोण नामक यज्ञ-पात्र में रख दिया था। उसी से कालांतर में एक बालक उत्पन्न हुआ। ऋषि ने उसका नामकरण उस यज्ञ-पात्र का ही नाम, द्रोण, किया। आश्रम में रहकर बालक बढ़ने लगा। चंद्रवंशीय महाराज पृषत् से ऋषि भरद्वाज की बड़ी घनिष्ठता थी। उनका पुत्र द्रुपद भी इस प्रकार ऋषिपुत्र द्रोण से परिचित हो गया और दोनों में मित्रता हो गई। द्रुपद ने उस समय कहा था कि महाराज होने पर भी दोनों में ऐसी ही मित्रता रहेगी और उसे और दृढ़ करने के लिए वह अपने राज्य का अर्ध भाग द्रोण को दे देगा। द्रोण ने धनुर्विद्या तथा आग्नेयास्त्र की शिक्षा सर्व-प्रथम स्वयं भरद्वाज के शिष्य अग्निवेश से पाई थी। उसके बाद अस्त्रविद्या में निपुण होने के लिए वे महेंद्र पर्वत पर निवास करने वाले परशुराम जी के पास गये तथा वहाँ विशेष काल तक यह विद्या सीखते रहे। वापस आने पर पिता की आज्ञा से शरद्वान् की कन्या कृपी का इन्होंने पाणिग्रहण किया। कृपी के गर्भ से इनके एक पुत्र उत्पन्न हुआ जो अश्वत्थामा के नाम से विख्यात है। भीष्म पितामह ने कौरवों तथा पांडवों को शस्त्र विद्या की शिक्षा देने के लिए इन्हीं को नियुक्त किया। अपने सभी शिष्यों में अर्जुन के ऊपर इनका अपार स्नेह था। द्रुपद इस समय तक पांचाल के महाराज हो चुके थे, किंतु अपने सखा द्रोण को उन्होंने पूर्णतः भुला दिया था, तथा अपनी राजसभा में जाने पर उन्हें उपेक्षा की दृष्टि से देखा था। द्रोण को इससे विशेष क्षोभ हुआ था। कौरव तथा पांडव को अस्त्रविद्या में निपुण करने के बाद, द्रुपद को उनके द्वारा पराजित करने का सुन्दर अवसर उन्होंने पाया। पांडवों के द्वारा उन्होंने द्रुपद को पराजित करा कर अपने सम्मुख बंदी-रूप में उपस्थित कराया। कहा जाता है उस समय उन्होंने उसके राज्य का अर्धांश भी ले लिया। किंतु बाद को उन्होंने द्रुपद को मुक्त कर दिया तथा उसके राज्य का अर्धांश भी उसे वापस कर दिया। उसके आहत अभिमान में ही उन्होंने अपनी इच्छा की पूर्णता देखी। किंतु इसके द्वारा जो विष-वृक्ष उत्पन्न हुआ उसने दोनों के ही प्राण लिए। एक बार द्रोणाचार्य ने अर्जुन से कहा था—"अर्जुन जब कभी तुम्हें मुझसे युद्ध करना हो तो अपनी सम्पूर्ण कला के साथ युद्ध करना। किसी प्रकार का संकोच तुम्हारे मन में न रहे।" इसी कथन के अनुसार महाभारत में अर्जुन द्रोण से निर्भय होकर लड़े थे। कौरवों के द्वारा पोषित होने के कारण महा-

भारत में उन्होंने उन्हीं का पक्ष ग्रहण किया था। भीष्म के शर-शय्या ग्रहण करने के बाद द्रोण को ही कौरवों का सेनापति बनाया गया था। अपने सेनापति होने के चौथे दिन इन्होंने द्रुपद का वध किया था। द्रुपद के पुत्र धृष्टद्युम्न ने यह देखकर उनका वध करने की प्रतिज्ञा की थी, और युधिष्ठिर के द्वारा यह सुनकर कि "अश्वत्थामा मृतो नरो..." जब वे कुछ क्षण के लिए पुत्र-शोक से विचलित हो गये थे, तो उसने उनका बध कर डाला था।

द्रोणशाङ्ग–१. मंदपाल ऋषि के पुत्र, एक मंत्रद्रष्टा। इनकी माता का नाम शार्ङ्गी था। ये पहुँचे हुए तत्ववेत्ता थे। खाण्डव वन दाह के समय अग्नि की उपासना करके इन्होंने अपनी रक्षा की थी। इनका विवाह कंधर की कन्या तार्क्षी से हुआ था। इनके चार पुत्र थे—चिगाक्ष, तिर्वाध, सुपुत्र तथा सुमुख। २. एक वसु। इनकी स्त्री का नाम धारा था।

द्रोणायन–भृगु कुलोत्पन्न एक ऋषि।

द्वारक–भविष्य के अनुसार क्षेमधन्वा के पुत्र।

द्वारिका–एक प्राचीन नगरी। कृष्ण ने जरासंध के उत्पातों के कारण मथुरा को छोड़कर इसे अपनी राजधानी बनाया था। महाभारत के पूर्व दुर्योधन तथा अर्जुन उन्हें लेने के लिए यहीं आये थे। कृष्ण के सखा सुदामा भी उनसे मिलने के लिए यहीं आये थे, जब कृष्ण ने अपने प्रिय सखा की पोटली के चावल खा डाले थे। कामरूप के राजा को पराजित कर उसकी साठ सहस्र रानियों को भी उन्होंने यहीं लाकर रक्खा था। पुराणों के अनुसार यह सप्त-प्रधान नगरियों में मानी जाती है। इसके तीर्थ-स्थान होने के सम्बन्ध में सर्वप्रथम महाभारत के सभापर्व में उल्लेख मिलता है—"उस प्रदेश में (सुराष्ट्र में) पुण्य-जनक द्वारावती तीर्थ है, जहाँ साक्षात् पुरातन देव मधुसूदन विराजमान हैं।" कहा जाता है कृष्ण के देहत्याग के बाद यह समुद्र में निमग्न हो गई थी।

द्विगत भार्गव–सामगायन के फल से स्वर्ग प्राप्त कर ये पुनः मृत्युलोक में आये और फिर स्वर्ग प्राप्त किया।

द्विज–वायु के अनुसार शूरसेन के पुत्र।

द्विजिह्व–रावण की सेना का एक राक्षस वीर।

द्वित–१. ब्रह्म मानस पुत्र। २. गौतम ऋषि के पुत्र। इनका एक सूक्त है। दे० 'त्रित'।

द्विमीढ–भागवत आदि पुराणों के अनुसार हस्ती के और विष्णु के अनुसार हस्तीनर के पुत्र। इनका एक स्वतंत्र वंश है।

द्विविद–एक प्रसिद्ध वानर वीर। यह सुषेण का पुत्र, मयंद का भाई, सुग्रीव का मंत्री, किष्किधा का राजा और नरकासुर का मित्र था। कृष्ण द्वारा नरक के मारे जाने पर यह कृष्ण और बलराम दोनों को त्रास देने लगा। अंत में बलराम के हाथ से मारा गया।

द्विमूर्धन–दनु का पुत्र एक दानव। पृथ्वी-दोहन के समय यह दोग्धा बना था।

द्विवेदिन्–काश्यप, कण्व तथा आर्यवती के पुत्र।

द्वैतरथ–वायु के अनुसार राजा हृदीक के पुत्र।

द्वैपायन–दे० 'व्यास'।

द्व्यक्षी–अशोक वाटिका की एक राक्षसी।

द्व्याख्येय–अंगिरस कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

धनंजय–१. अर्जुन का नामांतर। उत्तर कुरु जीतने के कारण इनका नाम धनंजय पड़ा था। २. कद्रू-पुत्र एक सर्प। यह पाताल में रहता था। माघ के अंत में यह पूषन के सामने घूमता था। ३. वसिष्ठ कुलोत्पन्न एक ब्राह्मण। इनके सौ स्त्रियाँ और उतनी ही कन्यायें थीं। इन्होंने अपनी सारी संपत्ति समान रूप से बाँट दी। ४. त्रेता में उत्पन्न एक ब्राह्मण। ये बड़े विष्णु भक्त थे और बड़े कष्ट से जीवन व्यतीत करते थे। अंत में विष्णु ने इनको दर्शन दिये और वर माँगने को कहा, पर इन्होंने केवल विष्णु-भक्ति ही माँगी। ५. वर्तमान मन्वंतर के सोलहवें व्यास। ६. विश्वामित्र कुलोत्पन्न एक मंत्रदृष्टा ब्रह्मर्षि। दे० 'कुशिक'। ७. कुमारी के पति। ८. एक वैश्य जो दक्षिण समुद्र तट पर रहते थे। इनकी माता पति की आज्ञा का पालन नहीं करती थीं। उनके मरने पर यह उनकी हड्डियों को लेकर काशी प्रवाह करने के लिए चले। पर वहाँ उस अस्थि-भांड को हव्य-भांड समझकर शबर उठा ले गये। फिर ये शबर के यहाँ गये और उसको मुँह माँगा धन देने की प्रतिज्ञा कर अस्थियों को ले आये।

धनक–विष्णु तथा पद्म के अनुशार दुर्दम के, परंतु भागवत के अनुसार भद्रसेन के पुत्र।

धनद–कुबेर का नामांतर। तृणबिंदु की कन्या इडविडा इनकी माता थीं और मणिग्रीव या वर्ण कवि और नल कूबर या मधुराज इन्हीं के पुत्र थे।

धनधर्मन–वायु के अनुसार मथुरा के राजा। ब्रह्मांड के अनुसार ये विदिशा के एक नागवंशी राजा थे।

धनपाल–अयोध्या नगरी के वैश्य। इन्होंने सूर्य का एक दिव्य मंदिर बनवाया और एक पौराणिक को वेतन देकर वर्ष भर पुराण सुनाने को नियुक्त किया। छः महीने पुराण कथा होने पर सूर्य स्वयं उपस्थित हुये, इनकी पूजा की और फिर इन्हें ब्रह्मलोक में जाने को कहा।

धनयाति–भविष्य के अनुसार संयाति के पुत्र।

धनवर्धन–सत्ययुग में पुष्कर क्षेत्र में रहनेवाले एक वैश्य। ये एक बार भोजन कर रहे थे कि बाहर "अन्न" ऐसी आवाज आई। यह तुरंत भोजन छोड़कर बाहर चले गये, पर वहाँ उन्हें कोई नहीं दिखाई दिया लौटकर त्यक्त अन्न को पुनः स्वीकार करते समय तत्क्षण इनके सौ टुकड़े हो गये।

धनशर्मन–मध्यदेश में रहनेवाले एक ब्राह्मण। एक बार कुश आदि यज्ञ सामग्री एकत्र करने के लिए ये वन में गये वहाँ इन्हें तीन पिशाच मिले। उनकी दुर्दशा से उनका उद्धार करने के लिये इन्होंने तिल आदि का दान तथा वैशाख स्नान किया। इन्होंने इस व्रत का पुण्य पिशाचों को ही दान किया जिससे उनकी मुक्ति हुई।

धनाधिप–दे० 'कुबेर'।

धनायु–मत्स्य के अनुसार पुरुरवा के पुत्रों में से एक।

धनिष्ठा–सोम की सत्ताइस स्त्रियों में से एक।
धनुग्रह–धृतराष्ट्र का एक पुत्र।
धनुर्धर–धृतराष्ट्र का एक पुत्र जो भीम के हाथ से मारा गया।
धनुर्ध्वज–एक शूद्र। दे० 'पद्मावती'।
धनुष–मत्स्य के अनुसार सत्यधृति का एक पुत्र। पाठांतर सुधन्वन् है।
धनुषाक्ष–यह रैभ्य थे। बालधि ऋषि के पुत्र मेधावी ने इन्हें त्रास दिया जिससे उसके नाश के लिये इन्होंने शाप दिया, पर इस शाप का कोई परिणाम नहीं हुआ। इन्होंने उसे पर्वत से ढकेल कर मार डाला क्योंकि अन्य किसी प्रकार उसकी मृत्यु संभव नहीं थी। नामांतर धनुषाख्य है।
धनेयु–विष्णु के अनुसार रौद्राश्व के पुत्र। नामांतर धर्मयु है।
धन्या–उत्तानपाद के पुत्र ध्रुव की स्त्री।
धन्विन्–तामस मुनि के एक पुत्र।
धमति–अंगिराकुलोत्पन्न एक ऋषि। पाठांतर धनति है।
धमनि–ह्लाद नामक एक राक्षस की स्त्री। इल्वल तथा वातापी नामक इसके दो पुत्र थे।
धमिल्ला–अनुशाल्व राजा की स्त्री।
धमेश्वर–अवंती नगरी का एक दुराचारी ब्राह्मण जो सदैव निषिद्ध पदार्थों का व्यापार करता था। एक बार व्यापार करने महिष्मती नगरी गया। वहाँ कार्तिक मास में अनेक पुण्यात्माओं के दर्शन तथा भगवद्‌भजन का संयोग इसे मिला। रात में साँप ने काटा। यम ने कल्प पर्यंत नरक वास की व्यवस्था की; किन्तु अग्निकुण्ड से इसे कोई त्रास नहीं हुआ। फिर नारद की कृपा से यम ने यक्ष योनि में डाल दिया जहाँ यह कुबेर का सेवक हो गया।
धर–१. धर्म तथा वसु के पुत्र। इनकी स्त्री का नाम मनोहरा था। द्रविण, हुतहव्यवह, शिशिर, प्राणरमण तथा रज इनके पुत्र थे। मतांतर से दो ही पुत्र थे—द्रविण तथा हुतहव्यवह। २. सोम का पुत्र। ३. पांडव-पक्षीय एक राजा।
धरापाल–विदिशा नगरी का राजा। एक बार देवी के शाप के कारण एक गण ने वेतसी और वेत्रवती नदी के संगम-स्थल पर प्राण छोड़े। वहीं पर राजा ने विष्णु का एक देवालय बनवा कर वहाँ पुराण सुनाने के लिये पौराणिक नियुक्त कर दिये। इनके मरने पर यम ने इन्हें लेने के लिये विमान भेजा।
धरिणी–अग्निष्वात्तादि पितरों की एक मानस कन्या। इनके वायु नाम की एक भगिनी थी।
धरुण–अंगिरा कुलोत्पन्न एक सूक्तद्रष्टा।
धर्म–१. ब्रह्मा के एक मानस पुत्र। मतांतर से इनकी उत्पत्ति ब्रह्मा के दक्षिण अंग से हुई। उत्पन्न होते ही ब्रह्मा ने इनसे कहा—'तुम चार पैर वाले बैल के आकार के हो जाओ और प्रजा का पालन करो।' गुण, द्रव्य, क्रिया और जाति—ये ही धर्म के चार पैर हैं। कृतयुग में धर्म चारों पैरों से, त्रेता में तीन, द्वापर में दो और कलियुग में एक पैर से प्रजा की रक्षा करता है। एकादशी तिथि में धर्म का वास है। धर्म एक प्रजापति थे। दक्ष प्रजापति ने अपनी तेरह स्त्रियाँ इन्हें ब्याह दी थीं। इनके नाम थे—श्रद्धा मैत्री, दया, शांति, तुष्ठि, पुष्ठि, क्रिया, उन्नति, बुद्धि, मेधा, तितिक्षा, ह्री तथा मूर्ति। इनमें प्रथम बारह से क्रमशः शुभ, प्रसाद, अभय, सुख, मुद, स्मय, योग, दर्प, अर्च, स्मृति, क्षेम तथा प्रमम नामक पुत्र और मूर्ति से नर-नारायण नामक ऋषि उत्पन्न हुये। भागवत में इनकी स्त्रियों और पुत्रों के भिन्न नाम दिये गये हैं। पहले धर्म का जब महादेव के शाप से नाश हो गया तब वैवस्वत मन्वंतर में ब्रह्मा ने धर्म को फिर उत्पन्न किया। तात्पर्य यह है कि धर्म की उत्पत्ति प्रत्येक युग में होती है। धर्म की स्त्रियाँ तथा पुत्रों के नाम वास्तविक व्यक्तियों के न होकर धर्म के सहायक सद्‌गुणों के हैं। २. यम का नामांतर। ३. अक्रूर के पुत्र। ४. गांधार के पुत्र। इनके पुत्र धृत थे। ५. पृथुश्रव्य के पुत्र। ६. हैतव्य राजा के पुत्र। पर्याय धर्मतत्व तथा धर्मनेत्र हैं। ७. एक ब्रह्मर्षि। इनकी स्त्री का नाम धृति था। उत्तम मन्वंतर में सत्यसेन अवतार के पिता। ८. विष्णु के अनुसार रामचंद्र के पुत्र। ९. वायु के अनुसार दीर्घतमा के पुत्र। १०. एक व्यास। ११. एक धार्मिक वैश्य। १२. विष्णु के अनुसार सुव्रत के पुत्र। नामांतर शर्मनेत्र, सुनेत्र, तथा धर्मसूत्र मिलते हैं। १३. सुतप देवों में से एक। १४. चाक्षुप मन्वंतर का एक अवतार। इनके पुत्र नारायण थे।
धर्मकेतु–सुकेतु के पुत्र।
धर्मगुप्त–सोमवंशी राजा नंद का पुत्र।
धर्मतत्व–१. वायु के अनुसार हैहय के पुत्र।
धर्मदत्त–१. करवीर नगर निवासी एक ब्राह्मण। एक बार पूजन सामग्री लेकर मंदिर की ओर आते समय इन्हें एक राक्षसी मिली जिसे देखकर ये भय से मूर्च्छित हो गये। कुछ होश आने पर पूजा की सामग्री उस पर फेंककर मारा। पूजा की सामग्री—तुलसी पत्रादि—के प्रभाव से उसे ज्ञान हुआ और पूर्वजन्म की बातें याद आ गईं। अपनी दशा सुधारने के लिये उसने धर्मदत्त से प्रार्थना की और इन्होंने कार्तिक व्रत का पुण्य देकर उसका उद्धार किया। २. कश्यप के एक मित्र। ये कश्यप पुत्र गजानन को एक बार भोजन कराने लिवा ले गये थे।
धर्मद्रवा—ब्रह्मदेव की सात भार्यायों में से एक। ये ही गंगा थीं। ब्रह्मा ने इन्हें अपने कमंडल में रक्खा। वामनावतारी देवों को निर्भय करने के बाद ब्रह्मा ने इन्हें विष्णु के चरणों पर गिराया। वहाँ से ये हेमकूट पर गिरीं, जहाँ शिव ने इन्हें अपनी जटा में धारण किया। भगीरथ की प्रार्थना से ऐरावत ने हेमकूट पर्वत पर तीन जगह अपने दाँत भोंक दिये। उन्हीं तीन छिद्रों से (तीन श्रोतों से) गंगा की धारायें चल पड़ीं।
धर्मध्वज–१. राजा रथध्वज के पुत्र। इनके तुलसी नाम की एक कन्या थी। २. भागवत के अनुसार कुशध्वज जनक के पुत्र। इनके कृतध्वज और मित्रध्वज नाम के दो पुत्र थे।
धर्मध्वजिन्–जनक कुलोत्पन्न एक क्षत्रिय। इन्हें असित ने पृथ्वीगीत सुनाया था।

धर्मन–विष्णु के मत से यह वृहद्राज के पुत्र थे। नामांतर धर्मिन अथवा बर्हि है।

धर्मनारायण–एक व्यास।

धर्मनेत्र–१. विष्णु, मत्स्य आदि के अनुसार हैहय के पुत्र। २. वायु के अनुसार भुवन के, पर ब्रह्माण्ड के अनुसार सुव्रत के पुत्र। इन्होंने पाँच वर्ष तक राज्य किया था। दे० 'धर्म'।

धर्मपाल–१. राजा दशरथ के एक मन्त्री। २. भविष्य के अनुसार आनन्दवर्धन के एक पुत्र। इन्होंने २७०० वर्षों तक राज्य किया था।

धर्मबुद्धि–एक चोल राजा।

धर्मराज–धर्म तथा न्याय का अधिष्ठाता होने के कारण यम को इस संज्ञा से सम्बोधित किया जाता है।

धेनुक–एक राक्षस। यह गर्दभ के आकार का कहा जाता है। एक बार जब कृष्ण तथा बलराम गोकुल के समीप एक बन में फल-फूल आदि सब तोड़ कर खा रहे तो इसने अपने पिछले पैरों से बलराम पर आक्रमण किया था। बलराम ने उसे वहीं उसके पिछले पैरों को पकड़कर पटककर मार डाला था। उसके बाद और भी उसके कितने साथी गर्दभों ने बलराम पर आक्रमण किया और सभी बलराम के द्वारा धराशायी हुए। 'दशम स्कंध' में लिखा है कि बलराम ने धेनुक को मारकर उसकी ठठरी को ताड़ वृक्ष के ऊपर फेंक दिया था। इसी प्रकार अन्य गर्दभों को भी वृक्षों के ऊपर फेंक दिया गया था, जिससे उस स्थान के सभी वृक्षों पर गधे ही दिखाई देने लगे थे।

ध्रुव–एक नक्षत्र। विष्णु-पुराण में इन्हें स्वयंभू मनु का पौत्र तथा उत्तानपाद का पुत्र कहा गया है। उत्तानपाद की दो स्त्रियाँ थी–सुरुचि तथा सुनीति। सुनीति के गर्भ से ध्रुव तथा सुरुचि के गर्भ से उत्तम की उत्पत्ति हुई थी। महाराज उत्तानपाद सुरुचि को अधिक चाहते थे, इस कारण उसके पुत्र उत्तम से भी उन्हें अधिक स्नेह था। एक बार जब उत्तम उनकी गोद में बैठा हुआ था तो ध्रुव भी जाकर उनकी गोद के एक भाग में बैठ गया। सुरुचि ने यह देख ध्रुव को अवज्ञा के साथ वहाँ से हटा दिया। ध्रुव के लिए यह अपमान असह्य हो गया और उसी समय वे घर से बाहर निकल कर एक निर्जन बन में तपस्या करने लगे। उस समय उनकी अवस्था अधिक नहीं थी फिर भी उन्होंने अपने घोर तप से भगवान को प्रसन्न किया और यह व्रत प्राप्त किया कि "तुम समस्त लोकों, ग्रहों तथा नक्षत्रों के ऊपर उनके आधार-स्वरूप होकर स्थित रहोगे, और तुम्हारे रहने से वह स्थान ध्रुव लोक के नाम से विख्यात होगा।" उसके बाद उन्होंने घर आकर अपने पिता का राज्य प्राप्त किया तथा शिशुमार की कन्या भ्रमि का पाणिग्रहण किया। इनकी एक पत्नी का नाम इला भी कहा जाता है। भ्रमि के गर्भ से इनको दो सन्तानें हुई थी जिनके नाम कल्प तथा वत्सर कहे जाते हैं और इला से केवल एक पुत्र उत्कल। अपने सौतेले भाई उत्तम के यज्ञों के द्वारा मारे जाने के कारण, इन्हें एक बार उनसे युद्ध करना पड़ा था। अन्त में साठ सहस्त्र वर्ष राज्य करने के बाद, ध्रुव भगवान से प्राप्त हुए वरदान के अनुसार ध्रुव-लोक (तात्पर्य है नक्षत्र से) में जाकर रहने लगे थे। घोर तपस्या के समय इन्द्र आदि देवों ने इनका ध्यान भंग करने का प्रयत्न किया था, किन्तु अपने इन प्रयत्नों में सभी को असफलता मिली थी। इसी कारण अकसर लोग किसी कठिन वस्तु की प्राप्ति के लिए 'ध्रुव प्रयत्न' अर्थात् ध्रुव की भाँति प्रयत्न करने को कहते हैं।

नंद–१. गोकुल के गोपराज तथा कृष्ण के पिता वसुदेव के सखा। कंस के कारागृह में कृष्ण का जन्म होने के बाद वसुदेव उन्हें इन्हीं के यहाँ छोड़ आये थे। इस प्रकार कृष्ण का बालकाल इन्हीं के यहाँ बीता था। इनकी स्त्री यशोदा ने कृष्ण का पालन-पोषण किया था। इनके पूर्व-जन्म के सम्बन्ध में कहा जाता है कि ये दक्ष प्रजापति थे, तथा यशोदा प्रसूति नाम से इनकी स्त्री थीं। इनकी कन्या सती थीं और उनका ब्याह शिव के साथ हुआ था। दक्ष ने एक यज्ञ किया था और उसमें अपनी सभी कन्याओं को निमन्त्रित किया, किन्तु सती को निर्धन व्यक्ति की अर्द्धांगिनी जान कर बहीं बुलाया था। सती बिना बुलाए ही आई थीं और यज्ञभूमि में अपने स्वामी शिव की निन्दा सुनकर भस्म हो गयीं थीं। दक्ष को उस समय अपनी कन्या की महानता का ज्ञान हुआ था तथा अपनी पत्नी सहित वे तपस्या करने चले गये थे। उन की तपस्या से प्रसन्न होकर सती ने कहा था कि "द्वापर में मैं तुम्हारे यहाँ फिर जन्म लूँगी, किन्तु अधिक समय तक तुम्हारे यहाँ रहूँगी नहीं और न तुम लोग मुझे पहचान ही पाओगे। कहा जाता है इसी वरदान के अनुसार सती ने कृष्ण-जन्म के ही समय यशोदा के गर्भ से जन्म लिया था, किंतु वसुदेव कृष्ण को उनके स्थान पर छोड़ कर उन्हें मथुरा ले गए थे मथुरा में जब कंस ने उसका बध करने का प्रयत्न किया था तो वह कंस का बध करने वाले का जन्म हो जाने की घोषणा करके आकाश में बिलीन हो गई थीं। कृष्ण जब अक्रूर के साथ मथुरा गए थे तो नंद भी उनके साथ थे। नंद ने कंस वध के बाद कृष्ण को गोकुल वापस ले जाने का प्रयत्न किया था, किंतु कृष्ण ने कार्यव्यस्तता दिखा कर क्षमा चाही थी, जिससे इन्हें विशेष कष्ट हुआ था। कृष्ण जब हंस तथा डिंभक का दमन करने के लिए गोवर्धन आए थे, उस समय भी इन्होंने कृष्ण को गोकुल ले जाने का प्रयत्न किया था, किंतु असफल रहे थे। एक बार ये एकादशी के दिन, रात को यमुना में स्नान करने गए थे, कहा जाता है, उस समय वरुण के दूतों ने प्रस्तुत होकर इन्हें बंदी करके वरुण की सभा में उपस्थित किया था। कृष्ण ने यह समाचार सुनकर इन्हें मुक्त कराया था। इनके पूर्व-जन्म के संबंध में यह भी कहा जाता है कि ये वसुश्रेष्ठ-द्रोण थे, तथा इनकी स्त्री का नाम धरा था। गंधमादन पर्वत पर तपस्या करके इन्होंने अगले जन्म में भगवान के दर्शनों का वर प्राप्त किया था। द्वापर में यही नंद तथा यशोदा के रूप में उत्पन्न हुए थे और भगवान कृष्ण के रूप में इनके यहाँ रहे थे। २. नव

नंदों में से पंचम। ये प्रसिद्ध हरिभक्त तथा गोरक्षक थे। दे, 'पर्जन्य'।

नंददास—हरिभक्त। महात्मा नामदेव के समान इन्होंने एक मरी बछिया को जीवित कर दिया था। विख्यात हिंदी कवि नंददास के ये एक घनिष्ठ मित्र थे।

नंदी—शिवपुरी कैलाश के द्वारपाल तथा महादेव के एक वृषभ अनुचर। एक बार शिव के दर्शनार्थ भृगु आये पर उस समय शिव पार्वती के साथ विहार कर रहे थे। नंदी के भीतर जाने से मना करने पर उन्होंने शाप दिया कि आज से लिंग और योनि के रूप में ही शिव की पूजा होगी। एक बार रावण ने कैलाश पर्वत उठा लिया, जिससे क्रुद्ध हो नंदी ने अपने एक पैर से रावण का हाथ दबा लिया। रावण सारी शक्ति लगा कर भी उस हाथ को न खींच सका। अंत में उसने शिव की प्रार्थना की और नंदी से क्षमा माँगी।

नकवत—वायु पुराण के असार हृदीक के पुत्र।

नकुल—युधिष्ठर के चतुर्थ भ्राता, माद्री के एक पुत्र। दे० 'पाँडु'।

नकुलीश—एक आचार्य। ये पाशुपत दर्शन के रचयिता थे।

नभी साप्य—एक ऋषि। ऋग्वेद में कई बार इनका उल्लेख हुआ है। इन्द्र ने अपने पराक्रम से इनकी रक्षा की थी। कालांतर में ये विदेह के राजा हो गये थे।

नमुचि—इन्द्र के शत्रु। पुराणों के अनुसार दनु का पुत्र तथा वृत्रासुर का अनुयायी। हिरण्यकशिपु के समय में देवासुर संग्राम में यह दैत्य सेना का सेनापति था। और देवताओं को इसने हराया भी था। स्वमुनि की कन्या सुप्रभा इनकी स्त्री थीं। यद्यपि एक बार की मित्रता के कारण इंद्र ने वरदान दिया कि किसी शस्त्राघात से वह नहीं मरेगा; किंतु अन्त में समुद्र के फेन से वह मारा गया।

नय—१. रौच्य मनु के पुत्र। २. तुषितसाध्य देवों में से एक।

नर—१. दे० 'नारायण'। २. तामस मनु के पुत्र। ३. सुधृति राजा के पुत्र। ४. विष्णु के अनुसार उशीनर के पुत्र। ५. ब्रह्मा के पसीने से उत्पन्न एक उग्र पुरुष जिसे ब्रह्मा ने शंकर को दंड देने के लिए उत्पन्न किया था। इससे रक्षा पाने के लिए शिव ने विष्णु से प्रार्थना की। विष्णु ने अपने रक्त की बूँदों से एक पुरुष उत्पन्न किया। इसी का नाम नर हुआ। इस नर ने उग्र का बध किया। ६. तुषितसाध्य देवों में से एक। ७. विष्णु के अनुसार गय का पुत्र। ८. भागवत के अनुसार मन्यु के पुत्र।

नरक—१. कश्यप तथा दनु का एक पुत्र। २. विप्रचित्ति नामक दैत्य तथा दिति-कन्या सिंहिका का पुत्र। ३. भूमि का पुत्र, प्रसिद्ध नरकासुर राक्षस। ४. वह स्थान जहाँ मृत्यु के बाद पापी मनुष्यों की आत्मा अपने पाप का दंड पाने के लिए भेजी जाती है। यह यम का स्थान कहा जाता है: वेदों में नरक का कोई उल्लेख नहीं मिलता है। मनुस्मृति में कर्मों के अनुसार नरकों की संख्या २१ बतलाई गई है: तामिस्र, अंधतामिस्र, रौरव, महारौरव, नरक, महानरक, कालसूत्र संजीवन, महावीचि, तपन, प्रतापन, संहात, काकोल, कुड्मल, प्रतिमूर्तिक, लौहशंकु, ऋत्रीष, शाल्मली, वैतरणी, असिपत्र-वन तथा लौहदारक। भागवत में नरक संबंध में यह उल्लेख है: एक बार परीक्षित ने शुकदेव से पूछा: 'भगवन्! नरक क्या कोई पृथ्वी का देश-विशेष है अथवा ब्रह्मांड के बहिर्भाग अथवा अंतराल में उपस्थित कोई स्थान है?" शुकदेव जी ने उत्तर दिया, "इस भू-मंडल से दक्षिण, भूमि के नीचे तथा जल के ऊपर एक स्थान, जहाँ अग्निष्वात्तादि पितृगण रहते हैं। यह यम का भी निवास-स्थान है, जहाँ वे अपने गणों के साथ रहते हैं, और अपने लेखक चित्रगुप्त के लेख के आधार पर मृत आत्माओं के कर्मों के गुण दोष का विचार करते हैं तथा उन्हें अपने कर्मानुसार नरक में कष्टभोग के लिए भेजते हैं" भागवत में भी नरकों की संख्या २१ ही मिलती है, किंतु नाम मनुस्मृति से भिन्न है—तामिस्र, अंध तामिस्र, रौरव, महारौरव, कुंभीपाक, कालसूत्र, असिपत्रवन, शूकरमुख, अंधकूप, कुतिभोजन, संदंश, तप्तशूर्मि, वज्रकंटक, शाल्मली, वैतरणी, पूयोद, प्राणरोध, विशसन, लालाभक्ष, सारमेयादन, अवीची और अयःपान। इनके अतिरिक्त क्षारमर्द्दन, रक्षोगण-भोजन, शूलप्रोत, दंदशूक, अवटर-निरोधन, पर्यावर्तन और सूचीमुख ये सात नरक और भी माने गये हैं। कुछ स्थानों पर उपर्युक्त नरकों के साथ ही ८४ नरककुंडों के भी नाम मिलते हैं। जैसे वह्निकुंड, तप्तकुंड तथा क्षारकुंड आदि।

नर भागवत—एक सूक्तद्रष्टा। भरद्वाज के पाँच पुत्रों में से एक।

नरवाहन०कुबेर का नामांतर।

नरसिंह—१. गौड़ देश के राजा। इनके सेनापति सरभमेरुंग गीता पाठ से मुक्त हुये थे। २. विष्णु के एक अवतार। उनकी कथा इस प्रकार है: सत्ययुग में दैत्यों के आदि पुरुष हिरण्यकशिपु ने ब्रह्मा की घोर तपस्या करके यह वरदान प्राप्त किया था कि वह देवता, गंधर्व, असुर, नाग, किन्नर तथा मनुष्य किसी के द्वारा न मारा जा सके। उसकी मृत्यु अस्त्र-शस्त्र, वृक्ष, शैल, सूखी तथा भीगी किसी वस्तु से न हो सके। स्वर्ग मृत्यु लोक तथा पाताल कहीं भी उसकी मृत्यु न हो तथा दिन अथवा रात वह किसी समय में न मारा जा सके। इस प्रकार पूर्ण-रूप से निर्भय होकर उसने अपना निरंकुश शासन आरम्भ किया और देवताओं को कष्ट देने लगा। देवतागण अपनी रक्षा के लिए विष्णु की शरण में गये। विष्णु ने उन्हें अभय-दान दिया और अर्ध-नर तथा अर्धसिंह का रूप धारण कर वे हिरण्यकशिपु के सम्मुख आये। उसके पुत्र प्रह्लाद ने उस नृसिंह रूप को देखकर कहा—"यह तो कोई दिव्य मूर्ति प्रतीत होती है, जिसमें समस्त चराचर ब्रह्म दिखाई दे रहा है। ज्ञात होता है अब दैत्य-वंश का नाश निकट है।" हिरण्यकशिपु ने यह सुनकर अपने अनुचरों से नृसिंह का वध करने के लिए कहा; किंतु जो उन्हें मारने के लिये आगे बढ़ा वह स्वयं ही उनके द्वारा धराशायी हुआ। अंत में हिरण्यकशिपु ने नृसिंह के साथ स्वयं युद्ध आरम्भ किया। नृसिंह ने क्षण मात्र में अपने नखों से उदर विदीर्ण करके उसका वध

कर डाला। भागवत में प्रह्लाद की भक्ति का प्रसंग और बढ़ा दिया गया है, जिससे कथा इस प्रकार की हो गई है। ब्रह्म से वर-प्राप्ति के बाद हिरण्यकशिपु ने निर्भय होकर देवताओं पर अत्याचार आरम्भ किये। उसके पुत्र प्रह्लाद के हृदय में भगवान के प्रति बड़ा स्नेह था, इससे उसने उसका भी वध करने का प्रयत्न किया। किंतु विष्णु की कृपा के कारण प्रह्लाद का बाल भी बाँका न कर सका। एक बार क्रोधित होकर हिरण्यकशिपु ने प्रह्लाद से पूछा—"तू किसकी शक्ति पर इतना इतराता फिरता है?" प्रह्लाद ने कहा—"भगवान की शक्ति पर, जिसके सहारे यह संसार चल रहा है।" हिरण्यकशिपु ने पूछा—"कहाँ है तेरा वह भगवान?" प्रह्लाद ने कहा—"वह सर्वत्र है।" दैत्यराज ने क्रोधित होकर कहा—"क्या इस खंभे में भी है?" प्रह्लाद ने उत्तर दिया—"अवश्य है", और हिरण्यकशिपु ने अपने खंग से खंभे पर आघात किया। खंभा टूट गया और उसके भीतर से एक नृसिंहमूर्ति प्रकट हुई। उसने अपने नखों से देहली के ऊपर बैठकर संध्या के समय जब न रात थी न दिन, बिना किसी अस्त्र के अपने नखों से हिरण्यकशिपु का वध कर डाला। उसके बाद वह मूर्ति अंतर्हित हो गई। दे० 'प्रह्लाद' तथा 'हिरण्यकशिपु'।

नरांतक—१. रावण का एक पुत्र जिसे वालि-पुत्र अंगद ने मारा था। २. रावण के मंत्री प्रहस्त का पुत्र। यह द्विविद नामक वानर के हाथ से मारा गया था। ३. रौद्रकेतु नामक दैत्य का पुत्र। अपने अत्याचार से इसने त्रैलोक्य को दुखी किया। जब इसे यह ज्ञात हुआ कि विनायक के हाथ से इसकी मृत्यु होगी तो विनायक के नाश के लिये यह वर-प्राप्ति का प्रयत्न करने लगा। इसी बीच में बिनायक ने इसका वध कर डाला। ४. कालनेमि का पुत्र।

नरामित्र—त्रिधामन नामक शिवावतार के शिष्य।

नरि—वहु-पुत्र के पुत्र। इनके पुत्र अभिजित् थे।

नरिनु—वनरस नगर के तालन नामक राजा के पुत्र।

नरिष्यंत—१. वैवस्वत मनु के पुत्र। इनके पुत्र का नाम शुक था। २. वायु तथा विष्णु के अनुसार मरुत के पुत्र।

नरोत्तम—१. विष्णु के अनुसार मरुत के पुत्र। २. एक ब्राह्मण। ये माता-पिता का अनादर करते थे पर तीर्थ-यात्रा आदि के फल से इन्होंने बहुत सा पुण्य संचित किया।

नर्मदा—१. एक नदी। इन्हें इक्ष्वाकु कुलोत्पन्न दुर्योधन को वरण करने की इक्षछा हुई और मनुष्य रूप धारण कर उन्हें वरण किया। २. एक गंधर्वी। इन्होंने अपनी तीन कन्यायों को सुकेश नामक राक्षस के तीन पुत्रों को दिया। ३. पुरुकुत्स की पत्नी तथा सांधाना की कन्या। ४. सोमप नामक पितरों की कन्या।

नलकूबर—कुबेर के पुत्र। एक बार अपने भाई मणिग्रीव के साथ ये कैलाश पर्वत के पास उपवन में जलक्रीड़ा कर रहे थे। मद्यपान करने के कारण अपनी स्त्रियों सहित ये नग्न हो गये और इनको अपनी नग्नता का भी ध्यान न रहा। नारद के आने पर इनकी स्त्रियों ने तो कपड़े पहिन लिये किन्तु ये नग्न ही रहे। नारद ने सोचा कि जिसे अपने शरीर के कपड़े का भी ध्यान नहीं रहा वह वृक्ष योनि में ही रहने योग्य है। यह सोचकर उन्होंने उन दोनों को १०० वर्षों तक वृक्ष योनि में रहने का शाप दिया। नारद की ही कृपा से इन्हें अपनी पूर्वस्थिति का ज्ञान बना रहा। यशोदा के आँगन में ये उगे और कृष्ण के सान्निध्य प्राप्त होने के कारण ये दोनों कृष्ण भक्त हो गये। यशोदा ने जब कृष्ण का उलूखल-बंधन किया तभी ऊखल से टक्कर खाकर ये दोनों भाई पुनः अपनी पूर्व योनि को प्राप्त हुए।

नव—मत्स्य के अनुसार उशीनर के पुत्र।

नवग्व—आंगिरसों में से एक वर्ग का नाम। इन्होंने इन्द्र की स्तुति की थी। नव महीने का यज्ञ पूरा करने के कारण इनका नाम नवग्व पड़ा।

नवतंतु—विश्वामित्र के एक पुत्र।

नवरंग—दिल्ली का राजा और शाहजहाँ का पुत्र औरङ्गजेब।

नवरथ—भागवत, विष्णु, मत्स्य तथ पद्म के अनुसार भीमरथ के पुत्र। मतांतर से रथवर के पुत्र।

नववास्व—इनका उल्लेख ऋग्वेद में हुआ है। भरद्वाज ने इन्द्र द्वारा इनका वध करवाया था।

नहुर—न्यूहवंशीय ताहर राजा के तीन पुत्रों में से एक।

नहुष—१. यह नाम ऋग्वेद में आया है, पर कोई विशेष परिचय नहीं मिलता है। २. एक वैदिक राजा। यह संभवतः पृथुश्रवा के संबंधी थे। ३. प्रसिद्ध राजा नहुष। ये आयु के पुत्र, पुरुरवा के नाती तथा ययाति के पिता थे। इन्द्र को ब्रह्महत्या लगने पर ये ही इन्द्र बनाये गये। मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'नहुष' के नायक यही हैं। ४. कश्यप तथा कद्रू के एक पुत्र। ५. वैवस्वत मनु के एक पुत्र।

नहुष मानव—एक सूक्तद्रष्टा।

नाक—दक्ष सावर्णि मनु के पुत्र।

नाक मौद्गल—एक आचार्य के रूप में इनका कई जगह उल्लेख हुआ है। ग्लाव मैत्रेय से इनका वादविवाद हुआ था।

नाकुलि—भृगु कुलोत्पन्न एक गोत्रकार। पाठांतर त्विबुकि है।

नाग—कश्यप तथा कद्रू के पुत्र। यह मेरु कर्णिका में रहते थे और वरुण की सभा के सभापति थे। कश्यप के पुत्र आठ प्रमुख सर्प अष्टकुली नाग कहलाते हैं। इनके नाम हैं—अनंत, वासुकि, तक्षक, कर्कोटक, पद्म, महापद्म, शंख तथा कुलिक। इनके कारण जब त्रैलोक्य में बहुत उपद्रव होने लगे तब ब्रह्मा ने इन्हें शाप दिया कि जनमेजय के नागयज्ञ में तुम सपरिवार नष्ट हो जाओ। पर इन लोगों की विनती से द्रवित हो शाप का प्रत्याहार कर दिया। ये सब एक नये स्थान में चले गये और वहाँ पर नागतीर्थ की सृष्टि की। जिस दिन ये ब्रह्मा के पास प्रार्थना करने गये थे वह श्रावण शुक्ला पंचमी थी और अब 'नागपंचमी' के नाम से प्रसिद्ध है।

नागदत्त—धृतराष्ट्र का पुत्र। यह भीम के हाथ मारा गया।

नागदत्ता—एक अप्सरा।

नागवाह–अजमेर के चौहान वंशोत्पन्न श्वेतराय के पुत्र। इनके पुत्र का नाम लोहधार था।

नागवीथी–धर्म ऋषि तथा यामी की कन्या।

नागेय–वसिष्ठ कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

नागेश्वर–शंकर के एक अवतार। दारुक नामक राक्षस को मारकर इन्होंने सुप्रिय नामक वैश्यनाथ की रक्षा की। इनका उपलिंग भूतेश्वर है।

नाग्नजित–स्पर्जिन का पैतृक नाम।

नाग्नजिती–दे० 'सत्या'।

नाचिक (नाचिकि)–विश्वामित्र के पुत्र।

नाचिकेत–नचिकेतस् ऋषि का नामांतर। दे० 'नचिकेत'।

नाडपिती–शंकुतला का विशेषण। पर यह विशेषण किस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है, यह स्पष्ट नहीं।

नाडायन–अंगिराकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

नाडीजंघ–दे० 'गौतम'।

नाड्यनीय–व्यास की साम शिष्य-परंपरा में ब्रह्मांड पुराण के अनुसार लोकाक्षी के शिष्य।

नाड्वलायन (नाड्वलेय)–नाड्वले के पुत्रों का मातृक नाम।

नाथशर्मन–मच्छिंद और रंभा के पुत्र। यह शंकराचार्य के शिष्य थे।

नाद–१. चाक्षुष मन्वंतर में सप्तर्षियों में से एक। २. अमिताभ देवों में से एक।

नादिर (नादर)–एक म्लेच्छराज जो नादिरशाह के नाम से भारतीय इतिहास में प्रसिद्ध हैं। इन्होंने मुहम्मदशाह रँगीले के समय में दिल्ली पर आक्रमण करके उसे लूटा था।

नान्यादृश्–मरुत् गणों में के ६ गणों में से एक।

नाभ (नाभाग)–१. नाभाग का नामांतर। २. चाक्षुष मन्वंतर के एक ऋषि। ३. भविष्य के अनुसार नल के पुत्र। इन्होंने १०००० वर्षों तक राज्य किया।

नाभाक–एक सूक्तद्रष्टा। इनके सूक्त में इनका स्पष्ट उल्लेख है। वायु, भागवत तथा विष्णु के मत से ये श्रुत के पुत्र सिद्ध होते हैं। भागवत में इनको नाभ ही कहा गया है पर अन्यत्र नाभाक कहा गया है। ये मांधाता की स्तुति करते हैं, इसलिए इनको मांधाता का वंशज भी माना गया है।

नाभाग–१. वैवस्वत मनु के नवें पुत्र नभग के पुत्र नाभाग थे। पद्म में इन्हें वैवस्वत का ही पुत्र माना गया है। अंबरीष इन्हीं के पुत्र थे। धन का बँटवारा करते समय इनके पिता ने कहा कि तुम धन की इच्छा न करो। हम तुम्हारी दूसरी व्यवस्था करेंगे। अंगिरा यज्ञ करा रहे थे। उन्होंने रुद्र का भाग लगा कर उन्हें समर्पण किया। संतुष्ट होकर रुद्र ने सारी संपत्ति नाभाग को दे दी और विद्या की शिक्षा भी। २. वैवस्वत मनु के पुत्र दिष्ट और उनके पुत्र नाभाग थे। नाभाग के पुत्र का नाम मलंदन था। वायु के अनुसार ये मनु के ही पुत्र थे। विष्णु के अनुसार ये नेदिष्ट और भागवत के अनुसार दिष्ट के पुत्र थे। ३. विष्णु, वायु तथा भागवत के अनुसार श्रुत के पुत्र। मत्स्य के अनुसार ये राजा भगीरथ के पुत्र थे। नामांतर है : नाभागारिष्ट, नाभा, नेदिष्ट तथा नाभागदिष्ठ।

नाभानेदिष्ट मानव–एक सूक्तद्रष्टा।

नाभि–प्रियव्रत-पुत्र आग्नीध्र तथा पूर्वचित्ति अप्सरा के पुत्र। इनकी स्त्री का नाम मेरुदेवी था जिससे इनको ऋषभदेव नामक पुत्र उत्पन्न हुआ।

नाभिगुप्त–हिरण्यरेत के पुत्र। ये राजा प्रियव्रत के पौत्र थे।

नाय–विकुंठ देवों में से एक।

नायकि–अंगिराकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

नायु–दक्ष तथा असिक्नी की कन्या तथा कश्यप की स्त्री।

नारद–एक देवर्षि। युग-सृष्टि के समय ब्रह्मा के मानस-पुत्र के रूप में इनका उल्लेख मिलता है। अपने पिता के द्वारा शापित होकर गंधर्व-योनि में इनकी उत्पति हुई थी। किंतु अपनी कठिन तपस्या से यह फिर अपने पूर्व-रूप को प्राप्त कर सके थे। प्रायः प्रत्येक पौराणिक आख्यान में इनका उल्लेख मिलता है। अपनी वीणा लिए हुए विष्णु के प्रति अपनी भक्ति की भावना के गीत गाते हुए यह रावण से लेकर कंस तक की राज-सभा में देखने को मिलते हैं। भागवत में इनका उल्लेख वेदज्ञ ब्राह्मण की एक दासी के पुत्र के रूप में मिलता है। बाल्यावस्था में यह अपनी माता के साथ उन्हीं ब्राह्मणों की सेवा करते रहे। एक दिन उन्होंने उन्हीं ब्राह्मणों का उच्छिष्टान्न खा लिया। उससे उनका हृदय शुद्ध हो गया और पाँच वर्ष की अवस्था में ही यह हरिगण-कीर्तन करने लगे। उसके बाद एक दिन सर्प के काटने से इनकी माता की मृत्यु हो गई। अब यह पूर्ण-रूप से स्वाधीन हो गये और घर द्वार छोड़कर उत्तरदिशा की ओर चल दिये। एक वन में पहुँचकर उन्होंने एक सरोवर में स्नान तथा जलपान किया और एक सघन वृक्ष की छाया में बैठकर भगवान का स्मरण करने लगे। भगवान ने उन्हें हृदय में दर्शन दिये, किंतु उससे उनकी इच्छा की पूर्ति न हुई और वह प्रत्यक्ष दर्शन के लिये चिंता करने लगे। उनके कष्ट को देखकर भगवान ने आकाशवाणी द्वारा उन्हें समझाया कि 'इस जन्म में तुम्हें हमारे साक्षात् दर्शन नहीं हो सकते। अपने प्रति तुम्हारे अनुराग की वृद्धि करने के लिए ही हमने तुम्हें दर्शन दिये हैं। तुम साधु-सेवा में रत हो उसी से तुम हमारे समीप आ सकोगे।'' नारद ने उनकी आज्ञा सहर्ष स्वीकार की तथा कालांतर में परमधाम को प्राप्त हुए। इसी प्रकार नारद के संबंध में अनेक कथाएँ मिलती हैं। उनमें भी इसी कथा की भाँति भगवान के प्रति उनके अनुराग की भावना प्रधान है, तथा उनकी स्पष्टवादिता तथा बुद्धि-कौशल का भी उल्लेख है। नारद गानविद्या में विशेष निपुण माने जाते हैं। कहा जाता है कि गानविद्या की शिक्षा इन्होंने रुक्मिणी से पाई थी। इनके द्वारा प्रणीत दो ग्रंथों का उल्लेख मिलता है : पंचरात्र तथा भक्तिसूत्र।

नारदी–नारद ने एक बार वृंदारण्य में कौसुभ सरोवर में स्नान किया जिसके कारण इनका पुंसत्व नष्ट हो गया

और ये स्त्री हो गये। तभी से इनका नाम नारदी हो गया।

नारायण–१. एक सूक्तद्रष्टा। २. धर्म ऋषि के पुत्र। पुष्कर क्षेत्र में ब्रह्मा ने यज्ञ किया था। जिसमें उद्गातृ गणो में ये एक प्रतिहर्ता थे। दे० 'नरनारायण'। ३. भागवत तथा विष्णु के अनुसार भूमित्र के पुत्र। मतांतर से ये भूतिमित्र के पुत्र थे। ४. परिहार वंशीय सूरसेन राजा के पुत्र। ५. तुषितसाध्य देवों में से एक।

नारायणि–अंगिराकुलोत्पन्न एक गोत्रकार। पाठभेद से इनका नाम परस्यायणि मिलता है।

नारायणी–१. मुद्गल ऋषि की स्त्री। इनको इंद्रसेना भी कहते हैं। २. दुर्गा का एक नाम।

नारी–१. मेरु की कन्या तथा अग्नीध्र पुत्र कुरु की स्त्री। २. अंगिराकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

नारी कवच–अश्मक राजा के पुत्र। नामांतर मूलक है। दे० 'मूलक'।

नार्मेद–इनका उल्लेख ऋग्वेद में सहबसू के साथ हुआ है।

नार्मेध–एक सूक्तद्रष्टा। दे० 'शकपूत'।

नार्य–ऋग्वेद में उल्लखित वैवास्व को दान देनेवाले एक ऋषि।

नार्षद–कण्व का पैतृक नाम।

नालविद्–अंगिराकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

नालायनी–इंद्रसेन का नामांतर।

नाविक–विदुर के पुत्र। पांडवों ने जब लाक्षागृह में प्रवेश किया था तो इन्होंने नाव से उनको गंगा पार उतारा था।

नाहुष–एक सूक्तद्रष्टा।

निंबादित्य (निंबार्क)–चार वैष्णवाचार्यों-रामानुज, माध्व, विष्णु स्वामी तथा निम्बार्क—में से एक। ये गोविंद शर्मा के पुत्र थे। ये जंगल में रहते हुए विष्णु की उपासना करते थे। एक बार इनके यहाँ कुछ अतिथि आये। अतिथियों ने सूर्यास्त के पूर्व ही इनसे भोजन करा देने को कहा, पर भोजन काल आने से पहले सूर्यास्त हो गया। इस पर इन्होंने फिर से सूर्य का आवाहन किया। इनकी प्रार्थना करने से सूर्य देव ने निकटवर्ती नीम के पेड़ पर फिर से आकर दर्शन दिया और तब अथितियों ने भोजन किया। इसी से इनका नाम निंबादित्य पड़ा। इनके गुरु का नाम कृष्ण चैतन्य था। भागवत के आधार पर इन्होंने कृष्ण खंड नामक एक ग्रंथ लिखा। इनका चलाया हुआ संम्प्रदाय द्वैताद्वैत के नाम से प्रसिद्ध है। द्वैताद्वैतवाद के अनुसार ईश्वर और जीव भिन्न भी हैं और अभिन्न भी। इनके एक ग्रंथ का नाम धर्माव्धिबोध है। इनकी गद्दी मथुरा के पास ध्रुवतीर्थ नामक स्थान में है। इनके शिष्य हरिव्यास के वंशधर अब भी वहाँ हैं। इनके अनुसार निंबार्क का प्रादुर्भाव काल १४२० ई० से पहले है।

निकषा–सुमाली राक्षस की कन्या तथा ऋषि विश्रवा की अर्द्धांगिनी। लंका के महाराज रावण तथा उसके छोटे भाई कुंभकर्ण का जन्म इसी के गर्भ से हुआ था।

निकुंत–भविष्य के अनुसार शोशाश्व के पुत्र।

निकुंभ–१. एक राक्षस जिसे कृष्ण ने मारा था। २. प्रह्लाद का पुत्र। सुंद और उपसुंद नामक दो प्रसिद्ध राक्षस बंधु इसी के पुत्र थे। ३. हर्मश्व राजा के पुत्र। सहेताश्व इनका पुत्र था। भागवत में इनके पुत्र का नाम बर्हणाश्व दिया हुआ है। दे० 'क्षेमक'। ४. कुंभकर्ण का एक पुत्र। इसकी माता का नाम वज्रज्वाला था। इसकी मृत्यु हनुमान के हाथ से हुई। ५. रावणपक्षीय एक राक्षस जिसे नील नामक एक बानर वीर ने मारा था। ६. कौरव पक्षीय एक वीर। ७. वाराणसी के राजा दिवोदास का मित्र। गणेश की पूजा न करने के कारण इनकी रानी सुयशा को पुत्र नहीं हुआ। इस कारण इन्होंने गणपति का मंदिर तोड़ डाला जिसके कारण गणपति ने काशी को ध्वंस होने का शाप दिया।

निकुंभक–भविष्य के अनुसार राजादृढ़ाश्व के पुत्र। इन्होंने ३३,२०० वर्षों तक राज्य किया।

निकुंभनाभ–बली के पुत्र।

निकुषज–ब्रह्मसावर्णि राजा के पुत्र।

निकृतज–कश्यप कुलोत्पन्न एक ब्रह्मर्षि। पाठांतर निकृतिज है।

निकृति–१. सुबल की कन्या। यह गांधारी की भगिनी तथा धृतराष्ट्र की एक पत्नी थी। २. दंभ तथा माया की कन्या।

निकृतिज–दे० 'निकृतज'।

निकोथन भायजात्य–प्रतिथि देवरथ के एक शिष्य।

निक्षुभा–एक अप्सरा। सूर्य के शाप से मिहिर गोत्रीय सदाचारी सुनिद्ध नामक धर्मपुत्र की कन्या के रूप में प्रकट हुई। एक बार अग्नि लेने जाते समय इसके ऊपर सूर्य की दृष्टि पड़ी। उन्होंने मनुष्य रूप में प्रकट होकर इसका पाणिग्रहण किया और अंततोगत्वा गर्भ रह गया। इनके पिता ने शाप दिया कि लोक में इसकी संतान अपूज्य होगी। सूर्य ने इसका प्रतीकार यह किया कि अपूज्य होने पर भी संतान सदाचारी, विद्वान् और तेजपूर्ण होगी। इनके वंशज मग द्विजातीय तथा भोजक आदि नामों से प्रसिद्ध हुए। ये शाकद्वीप में रहते थे और जंबूद्वीप के मंदिरों की पूजा-उपासना करते थे। इनके १८ कुल चले।

निखवट–रावण-पक्षीय एक राक्षस। इसको तार नामक एक राक्षस ने मारा था।

निगड पर्णिवल्कि–ये गिरिशकी कांठोविद्धि के शिष्य थे।

निघ्न–१. राजा अनरण्य के पुत्र। इनके पुत्र अनमित्र तथा रघूत्तम थे। २. विष्णु, मत्स्य तथा वायु के मत से अनमित के पुत्र।

निचंद्र–दनु का एक पुत्र।

निचक्र–विष्णु के अनुसार अधिसाम कृष्ण के पुत्र। दे० 'निमिचक्र'।

निजानंद–गोकुल के एक वयोवृद्ध गोप।

नित्य–१. मरीचि कुलोत्पन्न एक ऋषि। २. कश्यपकुलोत्पन्न एक मंत्रकार ३. शांडिल्यकुलोत्पन्न एक मंत्रद्रष्टा ऋषि।

नित्यानंद–शुक्लदत्त के पुत्र। यह जगन्नाथ पण्डित के शिष्य थे।

निदाघ–१. कश्यप कुलोत्पन्न एक गोत्रकार। यह भृगु ऋषि के शिष्य थे। २. पुलस्त्य के। यह ब्रह्मा-पुत्र ऋभु के शिष्य थे।

निदात–वायु के अनुसार शूर राजा के पुत्र।

निदाधर–कश्यप तथा दनु के एक पुत्र।

निदिताश्व–ये मेधातिथि के आश्रयदाता थे।

निधि–मुखदेवों में से एक।

निध्रुव काण्व–एक सूक्तद्रष्टा। यह कश्यप कुलोत्पन्न वत्सर के पुत्र थे। इनकी स्त्री सुमेधा महर्षि च्यवन की कन्या थीं। इनके पुत्र का नाम कुंडवापी था।

निप्ताल–एक मध्यम अध्वर्यु का नाम।

निबंध–भविष्य के अनुसार अतिथि के पुत्र। इन्होंने १००० वर्षों तक राज्य किया।

निबंधन–१. अरुण राजा के पुत्र। इनके पुत्र का नाम सत्यव्रत था जो त्रिशंकु के नाम से प्रसिद्ध थे। दे० 'त्रिधन्वन्'। २. एक ऋषि। इन्होंने अपनी माता भोगवती के साथ जो अध्यात्मवाद के संबंध में वाद किया वह मनन करने योग्य है।

निमि–१. विदेह वंश के आदि पुरुष, इक्ष्वाकु के बारहवें पुत्र। गौतम ऋषि के आश्रम के निकट, दंडक वन के दक्षिण में—जहाँ तिमिध्वज राज्य करते थे, इन्होंने वैजयंती नामक एक नगरी बनाई। डॉ० भंडारकर के अनुसार यह विजय दुर्ग था। और श्री नन्दलाल के अनुसार एक वनवासी नगर था।२. विदर्भ देश के एक राजा। इन्होंने आगस्त्य को राज्य तथा कन्या दी थी। ३. सात्वत भजवान (अंधक के भाई) के पुत्र। ४. दत्तात्रेय के पुत्र एक तपस्वी। ५. भागवत के अनुसार दंडपाणि के पुत्र।

निमित्र–भविष्य के अनुसार वहीनर के पुत्र।

निमष–एक अमृतरक्षक देवता जिन्होंने गरुड़ से युद्ध किया था।

निमेष–गरुड़ के एक पुत्र।

निम्न–भागवत के अनुसार अनमित्र के पुत्र। दे० 'निघ्न'।

नियज्ञ–राजा विश्वसह के पुत्र। यह बड़े अत्याचारी थे। इस कारण इनके राज्य में दीर्घ काल तक अनावृष्टि रही और राज्य नष्ट हो गया। रानी के आग्रह से वसिष्ट द्वारा इन्होंने यज्ञ कराया। इसके फलस्वरूप खट्वांग की उत्पत्ति हुई और इनका राज्य फिर से धन-धान्य-पूर्ण हो गया।

नियति–१. मेरु की कन्या तथा स्वायंभुव मन्वंतर में विधाता की स्त्री। २. रौच्चमनु के पुत्र। ३. नहुष के कनिष्ठ पुत्र।

नियम–१. सुखदेवों में से एक। २. आमूत रजस देवों में से एक।

नियुतायु–श्रुतायु के पुत्र। भारतयुद्ध में यह दुर्योधन की ओर से लड़े और अर्जुन के हाथ से मारे गये।

नियुत्सर्पि–शिव नाम के रुद्र की स्त्री।

नियुत्सा–प्रस्ताव नामक राजा की स्त्री। इनके विभु नाम का एक पुत्र था।

निरच–ऐक म्लेच्छ जाति का नाम। इनकी उत्पत्ति गरुड़ के कारण हुई। ये ईशान देश में रहते थे।

निराकृति–दक्ष सावर्णि मनु के पुत्र। पाठांतर से इनका नाम निरामय भी मिलता है।

निरामित्र–१. चतुर्थ पांडव नकुल के पुत्र। इनकी माता का नाम रेणुमती था। २. त्रिगर्त देश का एक क्षत्रिय वीर जो भारत युद्ध में सहदेव के हाथ से मारा गया। इसके बाप का नाम वीरधन्वा था। ३. ब्रह्म सावर्णि मनु के पुत्र। ४. आयुतायु के पुत्र। मत्स्य के अनुसार ये अप्रतीपिन के पुत्र थे। ५. मत्स्य तथा वायु के अनुसार दंडपाणि के पुत्र।

निराव–वसुदेव तथा पौरवी के पुत्र।

निरावृत्ति–भविष्य के अनुसार वृष्णि के पुत्र।

निरुद्ध–ब्रह्म सावर्णि मन्वंतर में एक देवगण।

निऋँता–कश्यप तथा खशा की कन्या।

निऋँति–कश्यप तथा सुरभि के पुत्र। २. एकादश रुद्रों में से एक। यह नैऋँत, भूत, राक्षस तथा दिकपालों के अधिपति हैं। शत्रुनाश की इच्छा करने वाले इनकी पूजा करते हैं। ३. वरुण पुत्र अधर्म की भार्या। मधु, महामय तथा मृत्यु इनकी संताने हैं।

निर्भय–रौच्य मनु के पुत्र।

निर्मोकि–१. सावर्णि मनु के एक पुत्र। २. देवसावर्णि मन्वंतर में सप्तर्षियों में से एक।

निर्मोह–१. रैवत मनु के एक पुत्र। २. सावर्णि मनु के पुत्र। ३. रौच्य मन्वंतर में एक ऋषि। ३. शाकुनि ऋषि के पुत्र। ये बड़े कठोर तपस्वी और संसार से विरक्त ऋषि थे।

निर्वक्र–वायु के अनुसार ये अधिसाम कृष्ण के पुत्र थे। दे० 'निमिचक्र'।

निर्विति–१. मत्स्य के अनुसार सुनेत्र के पुत्र। पाठभेद से नृपति भी मिलता है। २. धृष्टि के पुत्र मतांतर से धृष्ट अथवा सृष्ट के पुत्र।

निल–विभीषण का एक मंत्री था।

निवात कवच–१. प्रह्लाद के भाई संह्लाद के पुत्रों का सामूहिक नाम। ये राक्षस थे और रावण के मित्र थे। संख्या में ६० या ७० हजार थे। अर्जुन ने इनका वध किया था। २. कश्यप पुत्र पौलोम तथा कालकेय भी निवात कवच नाम से प्रसिद्ध हैं।

निवावरी–एक सूक्तद्रष्टा।

निशट–एक यादव।

निशाकर–गरुण का पुत्र।

निशीथ–भागवत के अनुसार राजा पुष्पणि तथा दोषा का पुत्र।

निमिचक्र–राजा अधिसाम कृष्ण के पुत्र। इनकी राजधानी हस्तिनापुर में थी; पर यमुना में बाढ़ आने के कारण जब यह नगर बह गया तो इन्होंने कौशांबी में अपनी नई राजधानी स्थापित की। इनके पुत्र का नाम चित्ररथ।

निशुंभ–प्रसिद्ध राक्षस शुंभ का भाई। इसने इंद्र को परास्त कर अमरावती जीती और जालंधर ने इसका राज्याभिषेक किया। इसको कृष्ण ने परास्त किया और चंडी ने इसका वध किया। दे० 'शंभ'।

निश्चक्र–भविष्य के अनुसार राजा यज्ञदत्त के पुत्र। इन्होंने १००० वर्षों तक राज्य किया।

निश्चर–१. धर्म सावर्णि मन्वंतर के एक सप्तर्षि। २. निश्चवन का नामांतर।

निश्चवन–१. वृहस्पति और तारा के पुत्र। इनके पुत्र विपाप्मन अथवा निष्कृति थे। २. स्वारोचिष मन्वंतर के एक सप्तर्षि।

निषंगिन–धृतराष्ट्र का एक पुत्र जिसे भीम ने मारा था।

निषध–१. राजा अतिथि के पुत्र। २. जनमेजय के पुत्र।

निषधाश्व–भागवत के अनुसार कुरु के पुत्र।

निषाद–वेन राजा का शरीर-मंथन करने पर उसमें कृष्णवर्ण एक पुरुष उत्पन्न हुआ था। इसी का नाम निषाद पड़ा।

निष्कंप–शैच्य मन्वंतर में एक सप्तर्षि।

निष्कृति–विश्चन पुत्र विपाप्मन का नामांतर। इनके पुत्र का नाम स्वन था।

निष्ठानक–एक सर्प। यह कद्रू का पुत्र था।

निष्ठुर–एक व्याध। कार्तिक में दीपदान करने के फल से यह मुक्त हुआ।

निसंद–एक राक्षस।

निह्लाद–जालंधर की सेना का एक राक्षस। इसे कुबेर ने मारा था।

नीतिन–भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

नीप–१. राजा पार के पुत्र एक प्रसिद्ध राजा। मत्स्य के अनुसार इनके पिता का नाम पौर था। इनके १०० पुत्र थे जो भीम के नाम से प्रसिद्ध हैं। स्त्री का नाम कृती अथवा कीर्तिमती था और पुत्र का ब्रह्मदत्त। २. भागवत के अनुसार कृती के पुत्र। इनके पुत्र महत्रात थे। ये निपुण शस्त्रधारी थे।

नीपरतिथि काण्व–एक मंत्रद्रष्टा ऋषि। इनके यहाँ इंद्र ने सोमरस-पान किया था। इन्होंने एक साम की रचना की थी।

नील–१. विश्वकर्मा का अंशावतार जो राम सेना का एक प्रसिद्ध बानर था। राम-सेना को समुद्र पार करने के लिये इसने ही सेतु की रचना की थी। मतांतर से इसकी उत्पत्ति अग्नि के अंश से हुई थी। निकुंभ, महोदर आदि राक्षसों को इसी ने मारा था। राम के अश्वमेध यज्ञ में यह रक्षक-सेना के साथ था। २. एक सर्प जो कद्रू का पुत्र था। ३. यदु पुत्रों में से तृतीय। ४. अजमीढ़ तथा नीलनी का पुत्र। ५. द्रौपदी स्वयंवर में सम्मिलित एक राजा। दे० 'नीलध्वज'। ६. भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार। ७. कौरव पक्षीय एक राजा। ८. अनूपदेश के एक राजा।

नीलकंठ–शिव का नामांतर। समुद्र से निकलने वाले हलाहल को शिव ने पीकर अपने कंठ में धारण कर लिया था तभी से उनका नाम नीलकंठ हो गया।

नीलपराशर–पराशर कुलोत्पन्न एक ऋषिगण।

नीलरत्न–राम के अश्वमेध के समय राम-सेना के साथ जानेवाला एक वीर।

नीला–कपिल तथा केशिनी की कन्या। विकचा नाम की इसकी एक कन्या थी।

नीलिभी–अजमीढ की एक स्त्री।

नृचक्षु–विष्णु के अनुसार ऋक्ष के परंतु भागवत के अनुसार सुनीथ के पुत्र। दे० 'त्रिचक्षु'।

नृपंजय–१. वायु तथा विष्णु के अनुसार सुवीर के परंतु मत्स्य के अनुसार सुनीथ के पुत्र। २. भागवत के अनुसार मेधावी के पुत्र।

नृपति–वायु तथा ब्रह्मांड के अनुसार धर्मनेत्र के पुत्र। इन्होंने ५८ वर्षों तक राज्य किया था।

नृमेध आंगरिस–अंगरिस् कुलोत्पन्न एक साम के द्रष्टा। ऋग्वेद के अनेक मंत्रों के भी ये द्रष्टा थे। अग्नि ने इन्हें संतति दी थी। इनके पुत्र का नाम शकपूत था।

नृषद–कण्व का पैतृक नाम। इसी शब्द से 'नार्षद' शब्द की उत्पत्ति हुई।

नृहरि–महिराज का पुत्र जो दुःशासन का अंशावतार था।

नेतिष्य–भृगुकुलोत्पन्न एक ऋषि। नामांतर नेतिण्य।

नेदिष्ट–वैवस्वत मनु के पुत्र।

नेम भार्गव–एक सूक्तद्रष्टा।

नेमि–१. बलिपक्षीय एक दैत्य। २. वायु पुराण के अनुसार इक्ष्वाकु के एक पुत्र। अन्य पुराणों में वर्णित निमि और ये एक ही व्यक्ति हैं।

नेमिकृष्ण–वायु के अनुसार एक राजा जिन्होंने २५ वर्षों तक राज्य किया।

नेमिचक्र–असीम कृष्ण के पुत्र। जब नदी में बाढ़ आने के कारण हस्तिनापुर बह गया तो इन्होंने कौशाम्बी में अपनी राजधानी बनाई। इनके पुत्र का नाम चित्ररथ था।

नैकजिह्व–भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

नैकदृश्–विश्वामित्र के पुत्र।

नैकशि–भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

नैगमेय–अनल वसु के पुत्र।

नैद्राणि–अत्रिकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

नैध्रुव–कश्यपकुलोत्पन्न एक मंत्रकार। ये कश्यप के पौत्र तथा अवत्सर के पुत्र थे।

नैध्रुकि–कश्यप का पैतृक का नाम।

नैर्ऋत–एक सूक्तद्रष्टा। दे० 'कपोतनैर्ऋत'।

नैल–एक ऋग्वेदी श्रुतर्षि।

नैषध–निषध देश के एक महाभारतकालीन राजा। ये भारतयुद्ध में कौरवों के पक्ष में लड़ते हुये धृष्टद्युम्न के हाथ से मारे गये।

नैषादि–१. एकलव्य का नामांतर। यह एक व्याध था और द्रोणाचार्य की प्रतिमा को गुरु बनाकर इसने धनुर्विद्या सीखी। दे० 'एकलव्य'। २. नल के वंश के नव राजाओं में से एक। ये कोमला नामक नगरी में रहते थे।

नैषिध–नड का पैतृक नाम।

नोधस्–एक सूक्तद्रष्टा। दे० 'एकद्यू'।

नोधस् गौतम–कक्षीवत के कुल में उत्पन्न एक सूक्तद्रष्टा।

न्यग्रोध–उग्रसेन के पुत्र। कंश-वध के बाद बलराम ने इसे अपने हल-मूसल से मारा था।

न्यूह–म्लेच्छ वंश के आदि पुरुष। इनकी स्त्री का नाम आर्यावती था। स्वप्न में विष्णु ने इनको प्रलय की सूचना दी। इन्होंने एक दृढ़ नौका बनवाई और अपने परिवार के साथ उस पर जा बैठे। इनका भय विष्णु ने दूर किया

इन्होंने कलि की वृद्धि के लिये और आर्यभाषा को अपशब्द रूप में परिणत करने का उपदेश दिया।

पंचकर्ण वात्स्यायन—एक प्रसिद्ध ऋषि। इन्होंने कामशास्त्र के सूत्रों की रचना की थी।

पंचचूड़ा—एक अप्सरा का नाम। इसने देवर्षि नारद से स्त्री स्वभाव के संबंध वाद-विवाद किया था।

पंचजन—१. एक प्रजापति। असिक्नी नाम की इनकी एक कन्या थी जो प्राचेतम दक्ष की पत्नी हुई। २. संह्लाद नामक राक्षस का पुत्र। यह शंख का रूप धारण करके समुद्र के गर्भ में रहता था। गुरु संदीपन के पुत्र का उद्धार करने के लिये कृष्ण जब समुद्र में गये, तब उन्होंने इसे मारकर इसकी हड्डियों से अपना शंख बनाया जो पांचजन्य शंख के नाम से प्रसिद्ध हुआ। ३. कपिल के शाप से बचे हुये सगर के चार पुत्रों में से एक का नाम। ४. संजय के पुत्र। इनके पुत्र का नाम सोमदत्त था। अग्नि पुराण में पञ्चधनुष पाठ है। कहीं-कहीं 'च्यवन' नाम भी मिलता है।

पंचजनी—ऋषभदेव के पुत्र भरत की भार्या। इनके पाँच पुत्र थे—सुमति, राष्ट्रभृत्, सुदर्शन, आवरण तथा धूम्रकेतु।

पंचतंत्र—संस्कृत की एक प्रसिद्ध कहानी पुस्तक। इसके रचयिता विष्णु शर्मा थे जिनका समय ५वीं शताब्दी माना गया है। आगे चलकर इसका संक्षिप्त संस्करण 'हितोपदेश' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसका भाषांतर अनेक प्राच्य और पाश्चात्य भाषाओं में हुआ है। आधुनिक फारसी ग्रंथ 'अनवर ई दानिश' का आधार पञ्चतंत्र ही है। भारतवर्ष में ये कहानियाँ अत्यंत उपादेय सिद्ध हुई है।

पंचपत्तलक—ब्रह्मांड के अनुसार हाला के पुत्र। दे० 'तलक'।

पंचम—व्यास की सामशिष्य परंपरा में हिरण्य नामक शिष्य।

पंचमेद—पाँच इंद्रियाँ पाँच पाँव, दस हाथ तथा आठ मुखवाला एक भयंकर राक्षस। बानर वीर बालि को खाने के लिये इसने युद्ध किया और उसे निगल गया। सुग्रीव दधीचि और कश्यप आदि को भी निगल गया। अंत में वीरभद्र ने उसका पेट फाड़ कर इन सब को निकाला।

पंचयाम—विभावसु के पुत्रों में से आतप के पुत्र। इन्हीं के योग बल से सब प्राणी अपने-अपने कर्म में प्रवृत्त हुये।

पंचवटी—एक वन का नाम जिसमें पाँच प्राचीन बटवृक्ष के नीचे बनवासी राम ने अपना आश्रम बनाया।

पंचशिख—१. यह आसुरी के प्रथम शिष्य थे। इनकी माता का नाम कपिला था। सांख्य दर्शन के अनुयायी इन्हें कपिल का अवतार मानते हैं। इन्होंने एक सहस्र वर्षों तक मानस यज्ञ किया। जनदेव नामक जनक से इन्होंने नास्तिकवाद के सम्बन्ध में तर्क किया था। सांख्य पर इनका ग्रन्थ है। २. दधिवाहन नाम शिवावतार के शिष्य।

पंचहस्त—दक्ष सावर्णि मनु के पुत्र।

पंचानन—शिव का एक पर्याय। दे० 'शिव'।

पंचाल—भद्राश्व के पाँच पुत्रों का समान नाम। इन्हीं के कारण उस देश का नाम पंचाल पड़ा।

पंचाल चंड—एक आचार्य का नाम।

पांडु—पांडव वंश के आदि-पुरुष, महाराज शांतनु के पुत्र, तथा विचित्रवीर्य के क्षेत्रज पुत्र। महर्षि व्यास के नियोग से इनका जन्म हुआ था। महाराज विचित्रवीर्य क्षय-रोग से पीड़ित होकर युवावस्था में मृत्यु को प्राप्त हुए थे और उनकी दोनों स्त्रियाँ अंबिका तथा अंबालिका विधवा हो गई थीं। उस समय उनके कोई संतान भी न हुई थी। विचित्रवीर्य की माता सत्यवती ने वंश चलाने के उद्देश्य से महाराज शांतनु की प्रथम पत्नी गंगा से उत्पन्न हुए पुत्र भीष्म से अंबिका तथा अंबालिका के साथ नियोग करके संतान उत्पन्न करने को कहा। भीष्म आजन्म ब्रह्मचारी रहने की प्रतिज्ञा कर चुके थे, इस कारण उन्होंने स्वयंनियोग करने से अस्वीकार करके किसी योग्य ब्राह्मण को बुलाकर गर्भाधान कराने का परामर्श दिया। सत्यवती ने अपने प्रथम पुत्र व्यास का स्मरण किया और उनसे वंशवृद्धि के लिए संतान-उत्पत्ति के लिए कहा। व्यास ने कठिन तपस्या में लीन रहकर अपनी रूप-रेखा को विवर्ण बना लिया था। इस कारण जब वे अंबिका के पास गये तो उसने आँखें मूंद लीं और उससे अंध धृतराष्ट्र की उत्पत्ति हुई। अंबालिका उनकी भयंकर रूप-रेखा को देखकर पांडु वर्ण हो गई थी, उसने कालांतर में एक पांडु पुत्र को जन्म दिया। पांडु होने के कारण उसका नामकरण भी पांडु ही हुआ। सत्यवती एक सुंदर संतान की सृष्टि चाहती थी, इसलिए उसने अंबिका से फिर गर्भधारण करने के लिए कहा। किन्तु वह व्यास से इतना भयभीत हो गई थी कि उनके आने पर उसने अपनी एक दासी को सम्मुख कर दिया। कालांतर में दासी ने विदुर को जन्म दिया। व्यास के वीर्यज पुत्र होने के कारण धृतराष्ट्र तथा पांडु के साथ विदुर का भी नाम लिया जाता है, तथा वे उनके भाई कहे जाते हैं। बाल्यावस्था में भीष्म ने इन तीनों का पालन-पोषण किया था। योग्य वय होने पर पांडु का विवाह कुंतिभोज की कन्या कुंती के साथ हुआ। भीष्म ने बाद को मद्र-कन्या माद्री से इनका विवाह करा दिया था। धृतराष्ट्र के अंधे होने के कारण राज-सिंहासन पांडु को ही मिला। कुछ दिन राज्य संचालन करने के बाद पांडु दिग्विजय के लिए निकले और उन्होंने भूमंडल के समस्त राजाओं को परास्त करके बहुत-सा धन एकत्र किया। धृतराष्ट्र ने इसी धन से पाँच महायज्ञों का आयोजन किया था। एक बार महाराज पांडु अपनी दोनों स्त्रियों को साथ लेकर वन में आखेट के लिए गये हुए थे। वहाँ उन्होंने संभोगरत हिरन-दंपति में हिरन को अपने तीर से धराशायी कर दिया। वह हिरन वास्तव में किमिंदय ऋषि थे। अपना पूर्व-रूप प्राप्त कर मरते हुए उन्होंने शाप दिया था कि जिस प्रकार संभोग के समय तुमने मेरा वध किया है उसी प्रकार भोग-क्रीड़ा के समय अर्ध-अवस्था में तुम्हारी भी मृत्यु होगी। पांडु यह सुनकर बहुत दुःखी हुए और अपनी स्त्रियों को साथ लेकर नागशत पर्वत पर जाकर

तपस्या करने लगे। एक बार ऋषियों के साथ उनकी भी स्वर्ग जाने की इच्छा हुई। किंतु ऋषियों ने उन्हें यह समझाकर कि जिसके संतान नहीं होती वह स्वर्ग नहीं जा सकता, अपने साथ चलने से रोका। पांडु ने स्वर्ग जाने की अपनी आकांक्षा की पूर्ति के लिए अपनी स्त्रियों से नियोग के लिए कहा। कुंती ने ऋषि दुर्वासा की बताई हुई रीत्यानुसार धर्म, वायु तथा इंद्र का आवाहन करके उनके नियोग से युधिष्ठिर भीम तथा अर्जुन को जन्म दिया। माद्री ने अश्विनीकुमारों के द्वारा नकुल तथा सहदेव दो पुत्र उत्पन्न किए। यही पाँच पांडु के क्षेत्रज पुत्र आगे चलकर पांडवों के नाम से विख्यात हुए। इस प्रकार पुत्रों की उत्पत्ति के बाद वसंत ऋतु में एक दिन पांडु को कामवासना ने पीड़ित किया। माद्री के मना करने पर भी उन्होंने उसके साथ बलपूर्वक संभोग किया। उसकी अर्ध-अवस्था में ही ऋषि किमिंदय के शाप के अनुसार उनकी मृत्यु हुई। कुंती उनके साथ सती होना चाहती थी, किंतु माद्री ने उन्हें समझाया कि मेरे साथ ही उनकी मृत्यु हुई, इसलिए मुझे ही उनके साथ सती होना चाहिए और उसने प्राण त्याग दिये। कहा जाता है कि पांडु तथा माद्री का मृत शरीर हस्तिनापुर लाया गया था और धृतराष्ट्र की आज्ञा से विदुर ने उनका अंतिम संस्कार किया था।

पक्थ–अश्विनीकुमारों के कृपापात्र, एक वैदिक व्यक्ति। दाशराज्ञ युद्ध में यह सुदास के विरुद्ध थे। शिव के कहने से इंद्र ने भी इन पर कृपा की।

पक्ष–१. मणिवर तथा देवजनी के पुत्र। २. वायु पुराण के अनुसार अनु के पुत्र। दे० 'चक्षु'।

पक्षगती–ऋग्वेदी श्रुतर्षि गणों का नाम।

पज्र अंगिरा तथा कक्षिवान का पैतृक नाम।

पटधर–एक राक्षस। इसको शूरतर राजा ने मारा था।

पटर्वन्–एक वैदिक राजा जिस पर अश्विनीकुमारों की कृपा थी।

पटवासक–एक सर्प का नाम। यह धृतराष्ट्र के कुल का था और जनमेजय के नागयज्ञ में सम्मानित हुआ था।

पटुमत–विष्णु के अनुसार मेवस्वाती के पुत्र। भागवत में इनका नाम अटमान है। इन्होंने २४ वर्षों तक राज्य किया।

पटुमित्र–विष्णु के अनुसार एक प्राचीन राजा।

पटुश–रावण की सेना का एक राक्षस जिसे राम-रावण-युद्ध में पनस नामक वानर ने मारा था।

पर्णाद–१. एक ब्राह्मण जिन्हें दूत बनाकर दमयंती ने नल के पास भेजा था। २. मय की सभा के एक ऋषि।

पणाव–वायु के अनुसार भजमान का पुत्र।

पणि–१. यह नाम ऋग्वेद में कई स्थलों पर आया है। आचार्य सायण तथा यास्क के अनुसार इस शब्द का अर्थ वणिज है। वास्तव में इंद्र के विरुद्ध रहनेवाले किसी संघ या व्यक्ति विशेष के अर्थ में यह शब्द प्रयुक्त हुआ है। सरमा और पणि नामक प्रसिद्ध संवाद में यह आशय व्यक्त किया गया है कि पणि ने इंद्र की गाय अपहरण कर ली थी और इसे लौटा देने के लिए सरमा ने डाट बताई थी। २. पातालवासी एक असुर।

पतग–महर्षि मरीचि के एक पुत्र।

पतंग प्राजापत्य–प्रजापति के एक पुत्र थे।

पतंगी–प्राचेतस् दक्ष प्रजापति तथा असिक्नी की कन्या और तार्क्ष्य कश्यप की स्त्री।

पतंचलकाप्य–१. भुज्यु लाह्यायनी ने याज्ञवल्क्य द्वारा किये गये प्रश्नों का उत्तर देते समय मद्र देश में घूमते समय पतंचल के घर जाने की बात कही है, जिसमें पाणिनि के सूत्रों का पक्ष लेकर कात्यायन के सूत्रों की आलोचना की। इनके महाकाव्य में पुष्यमित्रसभा, तथा चंद्रगुप्त सभा और यवनों के आक्रमण का उल्लेख है। इनका समय ई० पू० १५० माना गया है। इनकी कृतियों में महाभाष्य, सांख्य प्रवचन, योगसूत्र, छंदोविचिति तथा वैद्यक का एक ग्रंथ प्रसिद्ध है। २. कद्रू-पुत्र एक सर्प। ३. अंगिराकुलोत्पन्न एक गोत्रकार। ४. कौमुक पाराशर्य के एक शिष्य।

पतंजलि–मुनित्रय-पाणिनि, कात्यायन, पतजलि में से एक महर्षि और व्याकरण शास्त्रकार। पहले ये विष्णुभक्त थे। फिर देवी की उपासना की और कात्यायन को परास्त किया। इन्होंने कृष्णमंत्र का घर-घर प्रचार किया। इन्होंने ही महाभाष्य की रचना की।

पतन–रावणपक्षीय एक राक्षस।

पत्तलक–विष्णु के अनुसार हाल के पुत्र। दे० 'तलक'।

पत्र–तालन के एक पुत्र। इनके दो पुत्र थे।

पत्री–श्रीकृष्ण के सोलह सेवकों में से एक।

पथिनसौभर–अयास्य अंगिरस् के शिष्य और वत्सनपात बाभ्रव के गुरू।

पथ्य–कबंध के शिष्य।

पथ्यवत्–रौच्य मन्वंतर के एक सप्तर्षि।

पथ्या–मन्दु की कन्या तथा अंगिरस की स्त्री। धृष्टि इनके पुत्र थे।

पदाति–जनमेजय (परीक्षितपुत्र) के पुत्र।

पदुम जी (राजा)–एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। इन्होंने अपनी कोठी हरिभक्तों को दे दी।

पद्म–१. कद्रू-पुत्र एक प्रसिद्ध सर्प। यह बड़ा धार्मिक और वरुण की सभा का सदस्य था। २. ऐरावत का पुत्र, ऐलविल का वाहन। इसका रंग पीला था। नामांतर मंद है। ३. मणिभद्र तथा पुण्यजनी के पुत्र ४. अष्टकुली महानागों में से एक। ये बैकुंठ के द्वारपाल हैं और हमेशा चिंतन में लीन रहते हैं। ५. एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। ६. एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। नाभा जी ने चैतन्य की शिष्य-परंपरा में इनका उल्लेख किया है।

पद्मगंधा–इंद्र की दासी। पूर्व जन्म में यह क्रौंची थी। इसके बच्चे गंगा में डूबकर जब मर गये तब इन्द्रा की इच्छा से यह उनकी दासी हो गई।

पद्मचित्र–कद्रू-पुत्र एक सर्प।

पद्मजा–जयंत की स्त्री। इसके पिता का नाम बौद्धसिंह था। दे० 'जयंत'।

पद्मनाभ–१. एक ब्राह्मण। इन्हें दबाने के लिए एक राक्षस

आया पर विष्णु के चक्र ने इनकी रक्षा की और उसी स्थान पर चक्रतीर्थ नामक तीर्थ की स्थापना की। २. कद्रू-पुत्र एक विद्वान् तथा ज्ञानी सर्प। ३. धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ४. मणिवर तथा देवजनी का एक पुत्र। ५. प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। रामानंदी सम्प्रदाय के प्रमुख प्रचारक। ये पैहारी जी के शिष्य, नाभा जी के कुरु, और अग्रदास जी के गुरु भाई थे।

पद्मपुराण–अष्टादश पुराणों में से एक। इसकी श्लोक संख्या ५५००० तथा प्रकृति सात्विकी कही गई है। यह पुराण ५ भागों में विभक्त है। १. सृष्टि खंड २. भूमि खंड, ३. स्वर्ग खंड, ४. पाताल खंड तथा ५. उत्तर खंड। ये पाँचों भाग असम्बद्ध हैं। यह १२वीं सदी से पहले की रचना नहीं मालूम होती है।

पद्ममित्र–विष्णु के अनुसार एक राजा।

पद्मवर्ण–मणिवर तथा देवजनी के एक पुत्र।

पद्महस्त–राजा नल के मंत्री।

पद्माकर–विदुगढ़ के राजा शारदानंद के पुत्र।

पद्माक्ष–चन्द्रहास राजा के कनिष्क पुत्र।

पद्मावती–१. विदर्भराज सत्यकेतु की कन्या और मथुरा के राजा उग्रसेन की स्त्री। पति-पत्नी में आदर्श प्रेम था, पर दैवयोग से मोहवश इसे कुबेर के गोभिल नामक दूत से गर्भ रह गया, जिससे कंस की उत्पत्ति हुई। २. प्रणिधि नामक एक धनी वैश्य की स्त्री। ३. सत्यव्रत की कन्या तथा सूर्य के अंशावतार जयदेव की स्त्री। ४. भक्तमाल के अनुसार रामानंद की शिष्य मंडली में एक प्रमुख शिष्या।

पद्मिनी–विदुगढ़ के राजा शारदानंद की कन्या। उसने स्वयंवर में 'लक्षण' को पतिरूप से वरण किया और पृथ्वीराज आदि राजाओं में इसके लिये घोर युद्ध हुआ।

पनस–१. राम-सेना का एक वानर वीर। युद्ध में इसने पहुश नामक राक्षस को मारा था। २. विभीषण का मंत्री।

पन्नग–एक ऋग्वेदी श्रुतर्षि।

पन्नगारि–१. एक गरुड़राज। इन्होंने ४० वर्षों तक राज्य किया। २. बाष्कली भरद्वाज के शिष्य। ३. वशिष्ठ कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

पयोद–विश्वामित्र कुलोत्पन्न एक गोत्रकार ऋषि।

परंजय–विष्णु के अनुसार विकुक्षि-पुत्र का नामांतर। भागवत में पुरंजय नाम मिलता है।

परंतप–तामस मनु के दस पुत्रों में से एक।

पर–१. विश्वामित्र के एक पुत्र। २. वायु के अनुसार समर के पुत्र। ३. नहुष के पुत्र।

परण्यस्त–अंगिराकुलोत्पन्न एक ऋषि।

परपक्ष–वायु के अनुसार अनु के पुत्र। नामांतर परमेषु, पराक्ष, परमेक्ष आदि मिलते हैं।

परमहंस–एक प्रसिद्ध ग्रंथ। इसके रचयिता प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य श्रीधर जी थे, जिनकी भागवत टीका सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है।

परमानंद–१. अष्टछाप के कवियों में से एक भक्त कवि। इन्होंने 'परमानंद सागर' लिखा है किन्तु वह अप्राप्य है। इनकी कविता भक्ति के सच्चे मनोभाव से परिपूर्ण है। २. एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। ये विख्यात भक्तलाहा जी के शिष्य थे। ये एक प्रसिद्ध सहयोगी थे। ३. 'औली' नामक स्थान के निवासी एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। इन्होंने अपना भवन हरिभक्तों को दे दिया था।

परमेष्ठिन्–१. ब्रह्मा के शिष्य, एक सूक्तद्रष्टा। इनके शिष्य का नाम सनग था। मतांतर से ये प्रजापति के शिष्य थे। २. भागवत के अनुसार देवद्युम्न, तथा विष्णु के अनुसार इंद्रद्युम्न और धेनुमती के पुत्र। इनकी स्त्री का नाम सुवर्चला और पुत्र का प्रतीह था। ३. भविष्य के अनुसार आत्मपूजक के पुत्र। इन्होंने २७०० वर्षों तक राज्य किया। ४. अजमीट और नीली के पुत्र।

परमेषु–मत्स्य के अनुसार अनु के पुत्र। दे० 'परपक्ष'।

परवीराक्ष–खर नामक राक्षस का एक मंत्री।

परशु–१. उत्तम मनु के पुत्र। २. एक राक्षस। यह शाकल्य को खाने आया था, पर विष्णु की कृपा से मुक्त हुआ।

परशुचि–उत्तम मनु के पुत्र।

परशुबाहु–शिव प्रभादान का नामांतर। इन्हें काशीधाम में धुंडिराज गणेश ने अपने हाथ से परशु प्रदान किया था। इसी से इनका यह नाम पड़ा।

परशुराम–१. जमदग्नि के पाँचवें पुत्र का नाम। शङ्कर से इन्होंने अमोघ 'परशु' प्राप्त किया था, अतएव इन्हें परशुराम कहते हैं। इनकी माता की चित्त-चंचलता के कारण इनके पिता ने अपने सब पुत्रों से माता का वध करने को कहा। किसी ने भी उनकी आज्ञा का पालन न किया। इससे पिता ने सबको संज्ञाहीन कर दिया। अंत में परशुराम ने पिता की आज्ञा से माता का सिर काट डाला। पिता ने प्रसन्न होकर वर माँगने को कहा। इन्होंने ४ वरदान माँगे—(१) माता जीवित हों, (२) भाई सचेत हों, (३) मैं दीर्घजीवी होऊँ और (४) मैं युद्ध में अपराजेय होऊँ। पिता ने कहा 'तथास्तु' हैहयराज कार्तवीर्य ने इनके पिता का वध कर डाला। उसी अपराध में इन्होंने २१ बार पृथ्वी को क्षत्रिय-विहीन किया और राज्य ब्राह्मणों को दे दिया। रामावतार में जनक के यहाँ धनुष टूटने पर ये जनक के यहाँ आये। राम ने इनका दिया हुआ धनुष चढ़ा दिया तब ये समझ गये कि विष्णु का अवतार हो गया। अतएव ये जंगल को चले गये। इन्हें विष्णु का अवतार माना जाता है। २. एक प्रसिद्ध भक्त कवि तथा वैष्णव मत प्रचारक। ३. एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त तथा नाभाजी के यजमान।

परस्परायणि–अंगिराकुलोत्पन्न एक ब्रह्मर्षि।

पराक्ष–दे० 'परपक्ष'।

परातंस–भविष्य के अनुसार प्रतंस के पुत्र।

परानंद–शूद्रा स्त्री से नन्दसुत प्रनन्द के पुत्र। यह मगध के राजा थे। इन्होंने दस वर्षों तक राज्य किया था। इनके पुत्र का नाम समरनंद था।

परायण–व्यास की साम शिष्य परंपरा में कौथुम पाराशर्य के शिष्य।

परावसु–१. एक गंधर्व। २. रैभ्य ऋषि के पुत्र तथा विश्वामित्र के पौत्र। इन्होंने हरिण समझ कर अपने बाप को मार डाला था। बृहद्युम्न के यज्ञ में इनके बंधु अर्वावसु

ने इन्हें व्रत करने का उपदेश देते हुए कहा था—'तुम ब्रह्महत्या के दोषी हो, तुमसे यज्ञ पूरा नहीं होगा।' यह मानकर ये व्रत करने लगे। इधर इनको राजा के यहाँ ब्रह्महत्या का दोषी ठहराकर उसने वृहद्युम्न राजा का यज्ञ पूरा किया। यवक्रीत ने इनकी स्त्री के साथ बलात्कार किया। परशुराम से इन्होंने शिकायत की कि क्षत्रिय अब भी पृथ्वी पर अत्याचार कर रहे हैं। इस पर परशुराम ने पुनः पृथ्वी को क्षत्रियों से रहित करने का कार्य प्रारम्भ किया।

परावृत–पद्म तथा विष्णु के अनुसार रुक्मकवच के पुत्र।

परिकूट–विश्वामित्र कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

परिकृष्ट–हिरण्यनाभ के शिष्य।

परिक्षित–एक राजा। इनके ऐश्वर्य का बड़ा वर्णन मिलता है। इनकी देवताओं से तुलना की गई है। यह परीक्षित से भिन्न हैं।

परिघ–मत्स्य तथा वायु के अनुसार रुक्मकवच के पुत्र।

परिप्लव–विष्णु के अनुसार सुखीबल और भागवत के अनुसार सुखोनल के पुत्र।

परिमंडल–दे० 'उपरिमंडल'।

परिमति–भव्यदेवों में से एक।

परिमल–प्रद्योत के पुत्र। प्रद्योत मथुरा से धुंधुकार नामक राजा के एक शक्तिशाली मंत्री थे। परिमल एक लाख सेना के अधिपति थे। इन्होंने पृथ्वीराज और जयचंद में वैर उत्पन्न कर दिया था।

परिमला–इंद्रप्रस्थ के प्रद्योत नामक राजा की कन्या। यह दुःशला के अंश से उत्पन्न हुई थी। स्वयंवर के द्वारा इसका विवाह कच्छप राज के पुत्र कमलापति से हुआ था।

परिवर्ह–गरुड़ के पुत्र।

परिष्णव–दे० 'परिप्लव'।

परिस्वंग–मरीचि ऋषि तथा ऊर्णा के एक पुत्र।

परिहर–अथर्ववेद परायण एक बौद्ध-द्रोही राजा। चित्रकूट के पास कालिंजर नामक नगर में ये रहते थे।

परीक्षित–अर्जुन के पौत्र तथा अभिमन्यु के पुत्र। इनकी माता का नाम उत्तरा था। महाभारत के बाद यही चक्रवर्ती सम्राट् हुए। कलि इन्हीं के समय से पृथ्वी पर आया। इनकी मृत्यु शृंगी ऋषि के शाप के कारण तक्षक के काटने से हुई।

परुष–खर राक्षस का एक मंत्री।

परोक्ष–भागवत के अनुसार अनुराज के कनिष्ठ पुत्र।

पर्जन्य–१. वृष्टि के वैदिक देवता। इनकी स्तुति में ऋग्वेद में तीन मंत्र हैं। यह नाम प्रायः बात के साथ आता है। वायु और वर्षा के अनवरत संबंध के कारण ही ऐसा हुआ है। आगे चलकर पर्जन्य वर्षा और मेघों के रक्षक के रूप में माने गये हैं। इनकों वृषभ, वशा, पिता, पृथ्वी माता तथा पर्जन्य पिता आदि नामों से अभिहित किया गया गया है। इन्द्र और इनका साम्य है। २. एक आदित्य जो फाल्गुन मास के सूर्य हैं। इनके साथ ऋतु नामक यज्ञ, वर्चस नामक राक्षस भरद्वाज ऋषि, विश्वा नाम की अप्सरा, सेनजित नाम के गन्धर्व तथा ऐरावत नाम के नाग आदि का सहयोग है। ३. रैवत मन्वंतर में सप्तर्षियों में से एक। ४. एक देवगंधर्व जिनकी उत्पत्ति कश्यप तथा उनकी मुनि नाम की भार्या से हुई थी।

पर्णा–दे० 'एकपाटला'।

पर्णजंघ–विश्वामित्र के एक पुत्र।

पर्णय–एक वैदिक व्यक्ति। इन्द्र ने इनका वध किया था।

पर्णवि–अत्रि कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

पर्णागारि–वशिष्ट कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

पर्णिनी–एक अप्सरा।

पर्णिनु–व्यास की यजुःशिष्य परंपरा में याज्ञवल्क्य के एक शिष्य।

पर्युषित–प्रेत योनि को प्राप्त होने पर पृथु नामक ब्राह्मण ने इनका उद्धार किया।

पर्वण–रावणपक्षीय एक राक्षस।

पर्वत–१. एक प्राचीन ऋषि। अद्भुत रामायण के अनुसार इन्हीं के शाप से लक्ष्मी नारायण त्रेता में मनुष्य योनि में अवतार लेना पड़ा। २. कश्यप के एक मानस पुत्र। जनमेजय के नागयज्ञ में एक सभासद। शरशैय्या में पड़े भीष्म के पास ये गये थे। नारद को वानरमुखी होने का शाप इन्होंने ही दिया।

पर्वत काण्व–एक सूक्तद्रष्टा। नारद के साथ इनका कई बार उल्लेख हुआ है।

पर्वतायु–बालधि ऋषि के पुत्र मेधावी का नामांतर।

पर्वतेश्वर–विंध्य देश के राजा।

पर्शु–सायण के अनुसार पर्शु के पुत्र तिरिंदर थे। परन्तु अन्यत्र तिरिंदर को पारशव्य कहा गया है। पृथु पर्शु ने सुदास की सहायता की थी। पाणिनि ने पर्शु का उल्लेख किया है।

पर्शुमानवी–सायण के अनुसार एक मृगी जिसने एक साथ २० बच्चे दिये। कात्यायन ने स्त्री वाचक पर्शु का उल्लेख किया है।

पलांड–एक यजुर्वेदी श्रुतर्षि।

पलिंग–हिरण्य केशी शाखा के पितृ तर्पण में इनका उल्लेख हुआ है।

पवन–१. दे० 'वायु'। २. उत्तम मनु के एक पुत्र।

पवमान–१. अग्नि तथा स्वाहा के एक पुत्र। इनके पुत्र का नाम हव्यवाह था। यह गृहस्थों के पूज्य हैं। २. राजा विजिताश्व के एक पुत्र। यह पूर्व जन्म में अग्नि थे जो वसिष्ठ के शाप से मनुष्य योनि को प्राप्त हुये। ३. मेधातिथि के एक पुत्र।

पवित्र–१. एक ब्राह्मण। इनकी स्त्री का नाम बहुला था। २. भौत्य मन्वंतर में देवगणों का नाम। ३. इन्द्रसावर्णि मन्वंतर में देवगण।

पवित्र अंगिरस्–एक सूक्तद्रष्टा।

पवित्र प्राण–एक ब्रह्मर्षि।

पशु–सविता नाम के आठवें आदित्य और उनकी पृश्नि नाम की स्त्री से उत्पन्न पुत्र।

पांचजनी–आसिक्री का नामांतर।

पांचाल–पांचाल देश के राजा के अर्थ में इस शब्द का

प्रयोग हुआ है। दुर्मुख और शोण राजाओं के लिये यह शब्द विशेष रूप से आता है।

पांचाली–राजा द्रुपद की पुत्री। दे० 'द्रौपदी'।

पांचाल्य–आरुणि नाम के एक ऋषि का नाम।

पांचि–एक ऋषि जिन्होंने सोम यज्ञ में तीन अंगुलि प्रमाण की वेदी रचने की प्रथा चलाई।

पांड–कण्व के पुत्र। सरस्वती नामक कन्या से इनको सोलह पुत्र हुये थे। दे० 'पाठक'।

पांडर–सर्प यज्ञ में भस्म होनेवाले ऐरावत कुलोत्पन्न एक सर्प।

पांडरोचि–भृगु कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

पांड्य–द्रविड देश के एक राजा। इनके चित्रांगदा नाम की कन्या थी। भारत युद्ध में ये पांडवों के पक्ष में थे। अश्वत्थामा ने इनका वध किया।

पाक–एक असुर, जिसे इंद्र ने मारकर 'पाकशासन' की उपाधि पाई थी।

पाचि–मत्स्य के अनुसार नहुष के पुत्र।

पाटल–राम-सेना का एक बानर।

पाठक–कश्यप और आर्यवती के तृतीय पुत्र। यह एक गोत्रकार थे। इनके सरस्वती नामक स्त्री से १६ पुत्र हुए—कश्यप, भारद्वाज, विश्वामित्र, गोतम, जमदग्नि, वसिष्ट, वत्स, गौतम, पराशर, गर्ग, अत्रि, भृगु, अंगिरा, शृंगी, कात्यायन तथा याज्ञवल्क्य।

पाडक–वायु के अनुसार व्यास की साम शिष्य परंपरा में हिरण्यनाभ के शिष्य। ब्रह्मांड के अनुसार इनका नाम मांडूक था।

पाणिक--अंगिराकुलोत्पन्न एक ऋषि।

पाणिन--१. एक ऋषि। २. कश्यप तथा कद्रू के एक पुत्र।

पातालकेतु--१. जालंधर की सेना का एक राक्षस। २. दे० 'ऋतुध्वज'।

पाथ्य--वृषन् का पैतृक नाम।

पादप--वसिष्ट कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

पादयापन--दे० 'पालवाधन'।

पापनाशन--दमन नामक शिवावतार के शिष्य।

पायु--अंगिरा कुलोत्पन्न एक ऋषि।

पायु भारद्वाज--राजा दिवोदास के आश्रित एक सूक्तद्रष्टा।

पार--१. पृथुसेन अथवा पृथुषेण के पुत्र। इनके पुत्र नीप नाम से प्रसिद्ध हैं। २. विष्णु, मत्स्य तथा वायु के मत से समर के पुत्र। ३. अंग के पुत्र।

पारद--हरिश्चंद्र कुलोत्पन्न गर राजा का राज्य जीतनेवालों में से एक।

पारशवी--देवराज की कन्या तथा विदुर की स्त्री।

पारस्कर--एक आचार्य। इन्होंने पारस्कर गृह्यसूत्र तथा स्मृति की रचना की थी। बहुतों के मत से कात्यायन और ये एक ही हैं।

पारावतसुत--भविष्य के अनुसार कमलांशु का पुत्र।

पाराशर--१. व्यास के पिता तथा सत्यवती के स्वामी। इन्होंने धीवर की कन्या से गंगातट पर विवाह करके संभोग किया, जिससे महाभारत के रचयिता व्यास उत्पन्न हुए। प्रसिद्ध पाराशर स्मृति के रचयिता यही माने जाते हैं। २. एक ऋषि। इन्होंने शुक्ल यजुर्वेद की १६० श्लोकों से युक्त पाराशरी शिक्षा प्राप्त की थी। दे० 'पराशर'।

पाराशरी कौंडनी पुत्र--गार्गी-पुत्र के शिष्य।

पाराशरी पुत्र--कात्यायनी पुत्र के शिष्य थे। इनके पुत्र भारद्वाजी आदि थे।

पाराशर्य--१ भारद्वाज तथा जातुकर्ण्य के शिष्य। २. युधिष्ठिर की सभा के एक ऋषि।

पारिजात--१. नारद के साथ मय की सभा में जानेवाले एक ऋषि। २. ब्रह्मांड पुलह तथा श्वेता के पुत्र।

पारिभद्र--प्रियव्रत पुत्र यज्ञवाहु के सात पुत्रों में से पाँचवें।

पारियात्र--१ भागवत के अनुसार अनीह के, वायु के अनुसार अहीनगु के, विष्णु के अनुसार रुरु के तथा भविष्य के अनुसार कुरु के पुत्र। इन्होंने दस हजार वर्षों तक राज्य किया। २. सर्प यज्ञ में दग्ध होनेवाला ऐरावत कुलोत्पन्न एक यक्ष।

पारुवत–१. सायणाचार्य के अनुसार परवत् के निवासियों को पारावत कहते हैं। २. सर्प यज्ञ में दग्ध होनेवाला ऐरावत कुलोत्पन्न एक सर्प। ३. स्वारोचिष मन्वंतर में देवगण।

पार्थ–दे० 'अर्जुन'।

पार्थव–दे० 'अभ्यावर्तिन्'।

पार्थिव–अंगिरा कुलोत्पन्न गोत्रकार गण।

पार्थश्रवस्–धृतराष्ट्र का पैतृक नाम।

पार्वती–हिमालय तथा मैना की कन्या। नारद के कहने से हिमालय ने इनका विवाह शिव से करा दिया था। पार्वती ने इसके पूर्व अपनी घोर तपस्या से शिव को प्रसन्न किया था।

पार्वतीय–दुर्योधन के मामा शकुनि का नामांतर।

पार्ष्णि शैलन–एक आचार्य।

पार्ष्णि--चेकितान् राजा के सारथि।

पालंकायन--वसिष्ठ कुलोत्पन्न एक गोत्रकार। पाठभेद पादपायन है।

पालक--प्रद्योत के पुत्र।

पालिशय--वसिष्ट कुलोत्पन्न एक गोत्रकार ऋषि।

पावक--१. विजिताश्व के पुत्र। इन्होंने वसिष्ट के शाप से मनुष्य योनि में जन्म लिया। २. एक सूक्तद्रष्टा। अग्नि और स्वाहा के पुत्र।

पावकाक्ष--राम-सेना का एक बानर।

पावन--१. मित्रविंदा नामक स्त्री से कृष्ण के पुत्र। २. दीर्घतपा ऋषि के कनिष्ट पुत्र।

पाशिन्--धृतराष्ट्र के एक पुत्र।

पिंग--अंगिरा कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

पिंगल--१. एक आचार्य जिन्होंने वेदांत छंदशास्त्र की रचना की। छंदशास्त्र में लौकिक और वैदिक दोनों प्रकार के छंद हैं। पिंगल को कुछ लोग पाणिनि का छोटा भाई मानते हैं। किंतु छंदशास्त्र में प्राकृत का वर्णन है जिसका विकास पाणिनि काल के कई शताब्दियों के बाद हुआ। २. एक आचारहीन ब्राह्मण जो पुरुकुत्स नामक नगर में रहता था। ३. एक राक्षस। ४. कद्रू पुत्र एक सर्प। ५.

भृगुकुलोत्पन्न एक ऋषि जो जनमेजय के नागयज्ञ में थे। ६. सूर्य के अनुचर तथा लेखक। ७. एकादश रुद्रों में से एक।

पिंगलक--एक यक्ष।

पिंगला--१. अवंति नगरी की एक वेश्या। एक ब्राह्मण इस पर आसक्त था। ऋषभयोग्य की सेवा के प्रसाद से यह चंद्रानंद नामक राजा की स्त्री के गर्भ से उत्पन्न हुई और कीर्तिमालिनी नाम से प्रसिद्ध हुई। इसका विवाह भद्रायु हुआ। दे० 'भद्रायु'। २. मिथिला नगरी की एक वेश्या। राम से पत्नीत्व-संबंध के लिये इसने प्रार्थना की किंतु एकपत्नीव्रती होने के कारण राम ने इसे अस्वीकार कर दिया। दूसरे जन्म में यही कुब्जा हुई।

पिंगलाक्ष--शिव के रुद्रगणों में से एक।

पिंगा--दे० 'ऐतरेय'।

पिंगाक्ष--१. एक शबर। अत्यंत परोपकारी होने के कारण निर्ऋति लोक के अधिपति हुये। २. मणिभद्र तथा पुण्यजनी के पुत्र।

पिंजक--कश्यप तथा कद्रू का एक पुत्र।

पिंडसेक्तृ--सर्पयज्ञ में दग्ध होनेवाला तक्षक कुल का एक नाग।

पिंडारक--१. द्रौपदी-स्वयंवर में आनेवाला एक यादव। २. कश्यप तथा कद्रू का एक पुत्र। ३. वसुदेव के एक पुत्र।

पिप्पलायन जो--नव योगीश्वरों में एक का नाम।

पिजवन--निरुक्त के अनुसार ये सुदास के पिता थे। सुदास का पैतृक नाम पैजवन प्रसिद्ध है।

पिठर--वरुण सभा का एक राक्षस।

पिठरक--कश्यप तथा कद्रू का एक पुत्र।

पिठीनस--इन्होंने इंद्र को रजि नाम की स्त्री दी थी।

पितामह--एक स्मृतिकार।

पितृ--दक्ष-कन्या स्वधा के पति।

पितृवती--सूर्य की पूजा के फलस्वरूप इनको सात पुत्र हुये थे और नित्य एक सेर सुवर्ण मिलने लगा था।

पितृवर्तिन--कुरुक्षेत्र के कौशिक नामक ब्राह्मण के सात पुत्रो में से कनिष्ठ।

पितृवर्धन--भविष्य के अनुसार श्राद्धदेव के पुत्र।

पिनाक--शिव का धनुष, जो दधीचि की हड्डियों से बना था और जिसे राम ने सीता स्वयंवर के समय तोड़ा था।

पिनाकिन्--एकादश रुद्रों में से एक। पिनाक नामक धनुष धारण करने के कारण यह नाम पड़ा।

पिप्पल--१. मित्र नामक आदित्य तथा रेवती के कनिष्ठ पुत्र। २. एक राक्षस जो अगस्त मुनि का द्वादश वर्ष व्यापी यज्ञ चलाता था। उसमें यह ब्राह्मणों को खाता था। ३. एक ब्राह्मण। यह बड़े अभिमानी थे। सुकर्मा ने इनका गर्व चूर्ण किया।

पिप्पलायन--ऋषभदेव तथा जयंती के नव सिद्ध पुत्रों में से एक। ये बड़े भगवत् भक्त थे।

पिप्पल्य--एक गोत्रकार।

पिप्रु--एक वैदिक व्यक्ति। इनको दास और असुर कहा गया है। इनके कई किले थे। इंद्र ने इनको परास्त किया था।

पिशंग--१. सर्पयज्ञ में होता थे। २. मणिवर तथा देवजनी के पुत्र। ३. सर्पयज्ञ में दग्ध होनेवाला धृतराष्ट्र कुलोत्पन्न एक सर्प।

पिशाच--राक्षसों से कुछ नीची योनि और उसके व्यक्ति पुलह ने इनकी उत्पत्ति की। रुद्र इनके अधिपति थे। ऋग्वेद में इनको पिशाचि कहा गया है।

पिशुन--कौशिक ऋषि के सात पुत्रों में से एक।

पीठ--नरकासुर का सेनापति, जिसे कृष्ण ने मारा था।

पीडापर--कश्यप तथा खशा के पुत्र।

पीवर--तामस मन्वंतर में सप्तर्षियों में से एक।

पीवरी--अग्निष्वात्त पितरों की कन्या तथा व्यास पुत्र शुक की स्त्री।

पीपा--१. एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। ये भिक्षावृत्ति द्वारा ही जीविका प्राप्त करते थे। २. रामानंदी संप्रदाय के एक प्रमुख संत। ये कबीरपंथी थे। संतबानी संग्रह में इनके पद सकलित हैं।

पुंजिकस्थला--एक अप्सरा। यही शाप के कारण अंजना होकर प्रकट हुई।

पुंजिकस्थली--एक अप्सरा जो वैशाख में सूर्य के सामने आती है।

पुंड--१. बलि के सौ पुत्रों में से एक। २. वसुदेव के सुतनु नामक स्त्री से ज्येष्ठ पुत्र। ३. व्यास की यजुः शिष्य-परंपरा में ब्रह्मांड के अनुसार याज्ञवल्क्य के शिष्य।

पुंडरिका--एक अप्सरा। यह कश्यप तथा मुनि की कन्या थी।

पुंडरिकाक्ष--दे० 'पुंडरीक'।

पुंडरीक--१. राजा नभ के पुत्र। इन्हीं को पुंडरिकाक्ष भी कहते हैं। इनके पुत्र क्षेमधन्वा थे। भविष्य के अनुसार ये नाभ के पुत्र थे। इन्होंने १०,००० वर्षों तक राज्य किया। २. पातालवासी एक सर्प। ३. यम की सभा के एक सभासद। ४. नागपुर के नाग राजा। ५. अंबरीष के मित्र। ये पहले अधार्मिक थे। फिर जब इन्हें सुबुद्धि हुई तो इन्होंने जगन्नाथ की पूजा की और इन्हें मोक्ष-लाभ हुआ। ६. एक ब्राह्मण। इन्होंने नारद से बाद-विवाद किया था। ७. विदर्भ नगर के मालव नामक ब्राह्मण के भांजे। ये इतने बड़े विष्णु भक्त थे कि विष्णु भगवान ने प्रत्यक्ष रूप से इनके घर में एक महीने तक निवास किया था।

पुंडरीकाक्ष--श्री संप्रदाय के प्रवर्तकों में से एक मुख्य वैष्णव। नाभादास जी ने इन्हें यामुनाचार्य आदि की पंक्तियों में रक्खा है।

पुण्य--१. दीर्घतपस् और महेंद्रा के पुत्र। पावन नामक इनके एक मूर्ख भाई था। माता-पिता की मृत्यु के अनंतर पावन को इन्होंने ज्ञान की शिक्षा दी जिससे वह शोक-मुक्त हुए। २. मत्स्य के अनुसार पुण्यपावन के पुत्र थे।

पुण्यजन--एक राक्षस। इसने ककुद्मिन् रैवतक की अनुपस्थिति में द्वारका पर अधिकार कर लिया था। २. प्रयागवासी एक दरिद्र वैष्णव।

पुण्यजनी--मणिभद्र की स्त्री।
पुण्यनिधि--मथुरा के चंद्रवंशी राजा।
पुण्यवत्--मत्स्य के अनुसार वृषभ के पुत्र। नामांतर पुण्यवत् है।
पुण्यशील--गोदावरी तट निवासी एक ब्राह्मण।
पुण्यश्रवस्--एक ऋषि। यह कृष्ण के भक्त थे।
पुत्र--स्वारोचिष मनु के पुत्र।
पुत्रक--वायु के अनुसार कुरु के पुत्र। नामांतर प्रतन है।
पुत्रव--अंगिरा कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।
पुनदत्त--एक आचार्य का नाम।
पुनभव सभाभाग--मत्स्य के अनुसार वजुमित्र के पुत्र।
पुनर्वसु--सोम की स्त्री तथा दक्ष की कन्या। एक नक्षत्र।
पुनर्वसु आत्रेय--इन्होंने ही सर्वप्रथम पृथ्वी पर आयुर्वेद की परंपरा का आरंभ किया।
पुरंजन--पांचाल देश के एक बड़े प्रतापी राजा। भागवत में इनकी कथा बड़े विस्तार से मिलती है। वह रूपक के रूप में वर्णित है।
पुरंजय--१. विकुक्षि के पुत्र। नामांतर इंद्रवाह तथा कुकुत्स्थ। २. सृंजय के पुत्र। मत्स्य पुराण के अनुसार इनका नामांतर वीर था। ३. मत्स्य के अनुसार मेधावी के पुत्र। दे० 'नृपंजय'।
पुरंदर--वैवस्वत मन्वंतर के इंद्र। इन्होंने वास्तु शास्त्र पर एक ग्रंथ की रचना की थी। दे० 'इंद्र'।
पुर--एक राक्षस का नाम।
पुरदहन--दे० 'पुरंदर'।
पुराण--१. हिंदुओं के प्राचीन धर्मग्रंथों का नाम। संख्या में ये १८ हैं। भागवत, हरिवंश, ब्रह्म आदि अति प्रसिद्ध हैं। भारतीय इतिहास को समझने के लिये इनका अध्ययन अत्यंत आवश्यक है। इनके विभिन्न रूप, सृष्टि-तत्व, अवतारों की कथा तथा दार्शनिक तत्वों का समावेश है। कपोल-कल्पित बातें अधिक हैं, यद्यपि ऐतिहासिक तथ्य भी हैं। अमरसिंह के अनुसार पुराणों में ५ अंग मुख्य होने चाहिये—१. सृष्टितत्व, २. प्रलय, ३. देवताओं की वंशावली, ४. मनुओं का राज्य काल, ५ सूर्य तथा चंद्र वंश। १८ पुराणों की तीन वृत्तियाँ हैं। विष्णु, नारदीय, गरुड़, पद्म वराह, और भागवत में सात्विक, ब्रह्म, ब्रह्मांड, ब्रह्मवैवर्त, मार्कण्डेय भविष्य और वामन में राजसिक और मत्स्य, कूर्म, लिंग, शिव, स्कंद, तथा अग्नि में तामसिक वृत्ति है। किंतु यह वर्गीकरण वैज्ञानिक नहीं है। इसके अलावा १८ उपपुराण हैं। १. सनत कुमार २. नरसिंह, ३. नारदीय, ४. शिव, ५. दुर्वासा, ६. कपिल, ७. भार्गव, ८. ओशंस, ९. वरुण, १०. कालिका, ११. शांब, १२. नंदी, १३. सौर, १४. पराशर, १५. आदित्य, १६ माहेश्वर, १७. भागवत और १८. वासिष्ठ। २. एक ऋषि का नाम। ३. कुशिक कुलोत्पन्न एक मंत्रकार। नामांतर पूरण है।
पुरारि--दे० 'पुरंदर'।
पुरींद्रसेन--मत्स्य के अनुसार मंदुलक के पुत्र।
पुरीष्य--विधाता नामक आठवें आदित्य तथा क्रिया से उत्पन्न पंचचित अग्नि का नाम।
पुरुंड--कश्यप तथा दनु के पुत्र।
पुरु--१. ययाति के एक पुत्र। इन्होंने अपने पिता को अपना यौवन दान दिया था। दे० 'ययाति'। २. मय सभा का एक क्षत्रिय। ३. वसुदेव के एक पुत्र।
पुरुकुत्स--१. एक प्रसिद्ध राजा। दौर्गह इनका विशेषण है। अतः ये दुर्गह के पुत्र हैं। २. भागवत आदि पुराणों के अनुसार ये मांधाता तथा विंदुमती के पुत्र थे।
पुरुकुत्सकाप्य--यह प्रारम्भ में क्षत्रिय थे पर तप के प्रभाव से ब्राह्मण हो गये थे।
पुरुकुत्सानी--पुरुकुत्सु की स्त्री।
पुरुरवा--बुध के पुत्र तथा चन्द्रमा के पौत्र, एक परम प्रतापी प्राचीन राजा। उर्वशी ने जब पृथ्वी पर अवतार लिया था तो कुछ शर्तों के साथ इन्हें पतिरूप में वरण किया था। ६१ वर्ष के बाद इनके यहाँ से वह चली गईं। उर्वशी के पुरूरवा से सात संतानें हुईं जिन्हें लेकर वह केवल एक रात के लिए फिर पुरुरवा के पास आई थी। पुरुरवा की राजधानी वर्तमान प्रयाग में थी। गंगा तट पर प्रतिष्ठित होने के कारण इसका नाम प्रतिष्ठानपुर था। दे० 'उर्वशी' और 'बुध'।
पुरुज--भागवत के अनुसार सुशांति के पुत्र। अन्यत्र इनको पुरुजानु अथवा पुरुजाति कहा गया है।
पुरुजित--१. भागवत के अनुसार अज नामक जनक राजा के पुत्र। इनके पुत्र अरिष्टनेमि थे। २. रुचक राजा के पुत्र। ३. श्रीकृष्ण तथा जांबवती के एक पुत्र। ४. राजा कुंतिभोज के पुत्र तथा कुंती के भाई। भारत युद्ध में पांडवों के पक्ष से लड़ते हुये ये द्रोणाचार्य के हाथ से मारे गये।
पुरुदम--एक वैदिक व्यक्ति।
पुरुद्वत्--मत्स्य के अनुसार पुरुवस तथा वायु के अनुसार महापुरुष के पुत्र।
पुरुद्वह--वायु के अनुसार पुरुद्वत के पुत्र।
पुरुमिह्ल् आंगिरस--एक सूक्तद्रष्टा।
पुरुमित्र--१. एक वैदिक व्यक्ति। कमद्यू इनकी कन्या थी। २. धृतराष्ट्र के पुत्र। ३. एक क्षत्रीय। भारत युद्ध में ये कौरवों के पक्ष में थे।
पुरुमीढ--हस्ति अथवा मतांतर से हस्तिनर के तीन पुत्रों में से कनिष्ठ।
पुरुमेध आंगिरस--एक सूक्तद्रष्टा।
पुरुयंत्र-एक वैदिक व्यक्ति। इन्होंने भरद्वाज को दान दिया था।
पुरुवस--मत्स्य के अनुसार मध्यु के पुत्र। नामांतर 'कुरुवश' अथवा 'कुरुवत्स' है।
पुरुषंति--एक वैदिक व्यक्ति। अश्विनीकुमारों ने इन पर कृपा की थी।
पुरुष--१. चाक्षुष मनु के पुत्र। २. एक मरुतगण।
पुरुषा--रामानंदी संप्रदाय के एक प्रमुख वैष्णव भक्त। इनके गुरु प्रसिद्ध पैहारीजी थे।
पुरुषारुक--एक शाखा के प्रवर्तक। दे० 'पाणिनि'।
पुरुषोत्तमपुर नृपति--पुरुषोत्तमपुरी नामक नगरी के प्रसिद्ध

राजा। यह जगन्नाथपुरी का ही पर्याय है। जगन्नाथ के ये परम भक्त थे।

पुरुहोत्र–भागवत के अनुसार अनु के पुत्र। इनके पुत्र अंशु थे। भविष्य के अनुसार ये कुरुवत्स के पुत्र थे। नामांतर पुरुवस है।

पुरह्वर–धर्म सावर्णि मनु के पुत्र।

पुरोचन–एक म्लेच्छ। दुर्योधन का मित्र तथा मंत्री। इसी ने पांडवों के नाश के लिये वारणावत में लाक्षागृह का निर्माण किया था। इसके रथ में गधे जुते थे। आग लगने पर लाक्षागृह में यह स्वयं जल गया।

पुरोजव–१.मेधातिथि के सात पुत्रों में से प्रथम। २. प्राण नामक वसु तथा उर्जस्वती के कनिष्ठ पुत्र। ३. अनिल नामक वसु के पुत्र।

पुरोहव–धर्म सावर्णि मनु से पुत्र।

पुलक--मृग रूप से एक राक्षस। उग्र तप से शिव को प्रसन्न कर इसने अपने शरीर में अद्‌भुत सुगंधि प्राप्त की। इससे सारी देव स्त्रियाँ इस पर मोहित हो गईं और यह अखिल विश्व को त्रास देने लगा। देवों से प्रार्थित शिव ने इससे असुर शरीर छोड़ने को कहा। इसने स्वीकार किया पर प्रार्थना की कि उसके शरीर की सुगंधि न जाये। २. मत्स्य के अनुसार शुनक का नामांतर।

पुलस्त्य--१. एक ऋषि जो ब्रह्मा के मानसपुत्र, दक्ष के जामातृ तथा शंकर के साढ़ू थे। कर्दम प्रजापति की पुत्री हविसुवा इनकी पत्नी थी जिसमें इनको अगस्त्य और विश्रवा नामक दो पुत्र उत्पन्न हुये। यही विश्रवा रावण के पिता थे महाभारत के अनुसार तृणविंदु राजा की कन्या गौ से पुलस्त्य का विवाह हुआ था। २. सप्तर्षियों में से एक। मतान्तर से ब्रह्मा के मानस पुत्र। इनके पुत्र विश्रवा थे जिन्होंने कुबेर और रावण को जन्म दिया। इनके भाई पुलह हैं।

पुलह--१. ब्रह्मा के मानस-पुत्र तथा एक प्रजापति। इनकी उत्पत्ति ब्रह्मा की नाभि से हुई। यह दक्ष के जामाता और शिव के साढ़ू थे। दक्ष कन्या क्षमा इनकी स्त्री थीं। इससे इन्हें कर्दम, उर्वरीवान्, सहिष्णु तथा कनकपीठ ये चार पुत्र तथा पीवरी नामक कन्या उत्पन्न हुई। कर्दम का विवाह आत्रेयी श्रुति के साथ हुआ था, जिससे उनको शंखपद नामक पुत्र और काम्या नाम की कन्या हुई। काम्या का विवाह प्रियव्रत के साथ हुआ था। २. एक दूसरी कथा के अनुसार यह कहा जाता है कि ब्रह्मा के सभी मानस पुत्रों की मृत्यु के बाद उन्होंने एक यज्ञ किया। उस यज्ञ के फलस्वरूप संध्या से कर्दम की उत्पत्ति हुई। पुलह ने अगस्त्य दृढ़ास्य को गोद लिया था, जिसके इनके सब वंशज अगस्त गोत्रीय हुये। ब्रह्मा के पुष्कर क्षेत्रवाले यज्ञ में ये उपस्थित थे। एक ऋषि। ४. पुलस्त्य के भाई सप्तर्षियों में से एक।

पुलिंद–ब्रह्मांड के अनुसार भद्र के, भागवत के अनुसार भद्रक के और वायु के अनुसार ध्रुक के पुत्र। विष्णु में इनको आर्दक पुत्र पुलिंदक कहा गया है।

पुलिन--एक देव। यह अमृत के रक्षक थे।

पुलिभत्--विष्णु के अनुसार गोमती के पुत्र।

पुलुष प्राचीन योग्य--दृति ऐंद्रोत शौनक के शिष्य।

पुलोभार्चि--विष्णु के अनुसार चंडश्री के पुत्र।

पुलोमजा--पुलोम नामक दैत्य की कन्या।

पुलोमत–१. एक राक्षस। दे' 'पुलोमा'। २. हिरण्यकशिपु तथा वृत्रासुर का एक अनुयायी। ३. मत्स्य के अनुसार चंडश्री के पुत्र। ४. प्रहोति के पुत्र। इनके पुत्र का नाम मधु था ५. दनु का एक पुत्र।

पुलोमा--महर्षि भृगु की स्त्री तथा च्यवन की माता। ये वैश्वानर की कन्या थीं।

पुलोमारि--ब्रह्मांड के अनुसार दंडश्री के पुत्र।

पुष्कर--सोम की कन्या ज्योत्स्ना काली के पति। २. निषाधराज नल के छोटे भाई। कलि की सहायता से द्यूत क्रीड़ा में अपने भाई को कराकर उनका सर्वस्व छीन लिया। अज्ञातवास के अनंतर नल ने फिर द्यूत क्रीड़ा की और इन्हें परास्त किया। ३. राम के पुत्र कुश के कुल के सुनक्षत्र राजा के पुत्र। इनके पुत्र अंतरिक्ष थे। ४. वसुदेव के भाई और वृक तथा दुर्वाक्षी के पुत्र। ५. कृष्ण के एक पुत्र। ६. एक तीर्थ-स्थान जो अजमेर के पास स्थित है। यहाँ एक सरोवर के तट पर ब्रह्मा, सावित्री, बदरीनारायण यथा वराह जी के मंदिर हैं। महाभारत में भी इस तीर्थ-स्थान का उल्लेख मिलता हैं। साँची के एक शिलालेख के आधार पर यह ईसा के तीन शताब्दी पूर्व का माना जाता है। इसके तीर्थ-स्थान के रूप में प्रतिष्ठित होने के संबंध में कहा जाता है कि एक बार स्वयं ब्रह्मा ने यहाँ यज्ञ किया था। पद्मपुराण में इसके स्थापन की कथा इस प्रकार मिलती है—एक बार पितामह ब्रह्मा यज्ञ करने की इच्छा से कोई उपयुक्त स्थान खोज रहे थे। इस सुंदर पर्वत प्रदेश में आकर उनके हाथ का कमल जिसे लिये हुये वे चल रहे थे गिर पड़ा। देवता उसके गिरने के शब्द को सुन कर काँप उठे। जब इस संबंध में उन्होंने ब्रह्मा से प्रश्न किया तो उन्होंने उत्तर दिया कि "एक बज्रनाभ नामक असुर तुम्हारे संहार के लिये कठोर तपस्या से शक्ति-संग्रह करके उठना ही चाहता था कि मैंने अपना कमल गिरा कर स्वयं उसी का संहार कर दिया। इस प्रकार तुम्हारी एक बहुत बड़ी विपत्ति से रक्षा हो गई। इस कमल के गिरने के कारण आज से इस स्थान का नाम पुष्कर (कमल) होता है। इसकी गणना आज से महान् तीर्थों में होगी।"

पुष्कर मालिनी--विदर्भदेश में उच्छवृत्ति से रहनेवाले सत्य नामक ऋषि की स्त्री।

पुष्कर मालिन्–अष्टावक्र और जनक के बीच होनेवाले विवाद के समय उग्रसेन तथा पुष्कर मालिन जनक के नाम थे। यह जनक कौन से थे जानना कठिन है।

पुष्करारुणि--भागवत के अनुसार दुरितक्षय राजा के तीन पुत्रों में से कनिष्ठ। इसने तप के प्रभाव से ब्राह्णत्व प्राप्त किया।

पुष्करिणी--१. व्युष्ट राजा की स्त्री। इनके सर्वतेजस् नाम का एक पुत्र था। २. उल्मुक राजा की स्री। उसे अंग, सुमनस्, ख्याति, ऋतु, अंगिरा तथा गय नामक पुत्र थे। ३. भूमन्यु की स्त्री।

पुष्करिन--वायु के अनुसार उभक्षय तथा विष्णु के अनुसार उरुक्षय के पुत्र। दे० 'पुष्करारुणि'।

पुष्कल--राम के भाई भरत और मांडवी के पुत्रों में से कनिष्ठ। राम के अश्वमेध यज्ञ में अश्व-रक्षक सेना के साथ ये गये थे। युद्ध में सुबाहु के पुत्र दमन को परास्त किया था। चित्रांग, विद्युन्माली उग्रदंष्ट्र आदि से भी इनका युद्ध हुआ। लव ने इन्हें पराजित किया। गांधारनगर जीतकर इन्होंने पुष्कलावती नामक नगर को अपनी राजधानी बनाया। कांतिमती इनकी स्त्री का नाम था।

पुष्टि--१.स्वायंभुव मन्वंतर में दक्ष की एक कन्या। ये धर्म की स्त्री थीं। इनके पुत्र का नाम स्मय था। २. हिरण्यनाम के शिष्य। ३. वसुदेव और मदिरा के पुत्र। ४. धर्म सावर्णि मन्वंतर में एक सप्तर्षि।

पुष्टिमुकाण्व--एक सूक्तद्रष्टा ऋषि।

पुष्प--विष्णु के अनुसार हिरण्यनाम के एक पुत्र।

पुष्पदंत--१. गंधर्व। यह बड़ा शिव भक्त था। इसी ने शिव महिम्नस्तोत्र की रचना की थी। २. विष्णु के पार्षद। ३. एक रुद्रगण। ४. मणिगण तथा देवजनी के एक पुत्र।

पुष्पदंती--एक गंधर्वी। एक समय नृत्य करते समय इंद्र सभा में यह माल्यवान पर मुग्ध हो गई। इससे इंद्र के शाप के कारण इसे पिशाच योनि में जाना पड़ा। एकादसी के व्रत से इसकी मुक्ति हुई।

पुष्पदंष्ट्र--एक सर्प।

पुष्पमित्र--यज्ञांस से इनकी उत्पत्ति हुई। कहा जाता है कि जन्म से ही ये साढ़े सोलह वर्ष के नवयुवक की तरह लगते थे।

पुष्पवती--कृष्णांश की स्त्री तथा मकरंद की भगिनी।

पुष्पवत--ऋषभ के पुत्र।

पुष्पवाहन-रथंतर कल्पनाथ के राजा। इनकी स्त्री का नाम लावण्यवती था। इनके दस हजार पुत्र थे।

पुष्पश्रवस्--एक ऋषि। इन्हें लवंग नाम की गोपी का जन्म मिला था।

पुष्पसेन--भविष्य के अनुसार स्वर्णनाभ के पुत्र। इन्होंने दस हजार वर्षों तक राज्य किया।

पुष्पान्--एक यक्ष।

पुष्पान्वोष--अंगिराकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

पुष्पार्ण--ध्रुव के पौत्र। वत्सर और स्वर्वीथी के ज्येष्ठ पुत्र।

पुष्पोदरी--बनारस नगर के राजा तालन की कन्या।

पुष्य--भागवत तथा वायु के अनुसार हिरण्यनाभ के पुत्र। इनके पुत्र ध्रुवसंधि थे।

पुष्यमित्र--१. कलियुग के एक बाह्लीक राजा। इनके पुत्र का नाम दुर्मित्र था। बृहद्रथ के सेनापति।

पूतक्रता--१. पूतक्रतु की स्त्री। २. एक वैदिक व्यक्ति। सायणाचार्य इनको स्वतंत्र व्यक्ति नहीं मानते हैं। यह संभव है कि अटिथिग्व, इन्द्रोत, अश्वमेध और ये एक ही व्यक्ति रहे हों। इनके पुत्र का नाम दस्यवेतृक था।

पूतदक्ष आंगिरस्--एक सूक्तद्रष्टा।

पूतना--अघासुर तथा बकासुर की बहन। एक राक्षसी। कंस ने इसे कृष्ण का वध करने के लिए गोकुल भेजा था। यह एक सुंदर नारी का रूप धारण कर अपने स्तनों में विष का लेपन करके गई थी और यशोदा की गोद से कृष्ण को लेकर वह अपना स्तन उन्हें पान कराने लगी थी। कृष्ण ने बड़ी लगन के साथ उसके स्तनों का पान आरंभ किया था और उन्हें छोड़ने को ही नहीं उद्यत थे। अंत में झुँझलाकर वह कृष्ण को लेकर भागी। उस समय उसका आकार विराट हो गया। कृष्ण फिर भी उसके स्तनों को चूसने में लगे हुए थे और उस समय तक चूसते रहे जब तक वह मृत होकर धरती पर गिर नहीं पड़ी। कहा जाता है जितनी दूर वह गिरी थी उतनी दूर की भूमि धँस गई थी।

पूतिमाष--अंगिराकुलोत्पन्न एक ऋषि।

पूरु--१ ऋग्वेद में जहाँ यह एकवचनांत प्रयुक्त हुआ है। वहीं यह व्यक्तिवाचक भी है। यह सुदास के शत्रु थे। गौरवर्ण के थे और जिन लोगों को इन्होंने जीता वे भी गौरवर्ण के थे। वसिष्ट ने एक ऋचा में ऐसा कहा है कि इंद्र ने युद्ध में सुदासु पौरुकुलि, ऋदस्यु और पुरु की रक्षा की थी। २. अर्जुन का सारथि। ३. भागवत के अनुसार जह्नु के पुत्र। नामांतर अज अथवा अजमीढ है। बलकाश्व इनके पुत्र थे। ४. चक्षुर्मनु और नड्वला के ज्येष्ठ पुत्र।

पूरु आत्रेय--एक सूक्तद्रष्टा।

पुरुयशस्--पांचाल देश में राज्य करनेवाले भूरियश के पुत्र।

पूर्ण--१. कश्यप तथा प्राधा के पुत्रों में से एक। २. वासुकि कुल का एक सर्प जो नागयज्ञ में भस्म हुआ।

पूर्णभद्र--१. कश्यप तथा कद्रू के पुत्र। २. एक यज्ञ के पुत्र। हरिकेश नामका इनको एक पुत्र था। स्कंदपुराण में ये हरिभक्त कहे गये हैं। ३. मणिवर तथा देवजनी के पुत्र।

पूर्णभद्र वैमांडकि--इनकी कृपा से राजा चंप को हर्यंग नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। हर्यंग के यज्ञ में ये इंद्र का ऐरावत लाये थे।

पूर्णमल--पट्टन के राजा। इन्होंने अपनी विद्वन्माला माम की कन्या महीराज पुत्र भीम को व्याही थे।

पूर्णमास--एक ब्रह्मर्षि। दे० ,अगस्त्य'। २. कृष्ण ओर कालिंदी के एक पुत्र। ३. धाता नामक आदित्य और अनुमति के पुत्र। ४. मणिवर तथा देवजनी के पुत्र।

पूर्णमुख--धृतराष्ट्र कुलोत्पन्न एक सर्प जो नागयज्ञ में जला था।

पूर्णरसा--कृष्ण की एक प्रिय सखी।

पूर्णांश--कश्यप तथा क्रोधा के पुत्र।

पूर्णाचार्य--श्री संप्रदाय के प्रवर्तकों में से एक। ये यामुनाचार्य के प्रधान शिष्य और रामानुज के गुरु थे। यामुनाचार्य के पाँच शिष्य प्रसिद्ध हैं—महापूर्ण, मांचीपूर्ण, गोष्टीपूर्ण, कौलपूर्ण और मालाधर। दे० 'रामानुज' 'यामुनाचार्य'।

पूर्णायु--कश्यप तथा प्रधा के पुत्र।

पूर्णिमत्--मरीच ऋषि तथा कर्दम कन्या कला के दा

पुत्रों में से कनिष्ठ। विरग और विश्वग नाम के इनके दो पुत्र और देवकृत्या नाम की एक कन्या थी।

पूर्णिमागतिक–भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

पूर्णोत्सिंग–विष्णु के अनुसार शातकर्णी के पुत्र। भागवत के अनुसार इनका नामांतर पौर्णमास था।

पूर्य–कश्यपकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

पूर्वचित्ति–१. स्वायंभुव मन्वंतर की एक अप्सरा। यह प्रियव्रत के पुत्र अग्नीध्र राजा की स्त्री थी। २. वैवस्वत मन्वंतर में प्राधा की अप्सरा कन्याओं में से एक।

पूर्वपालिन्–पांडवपक्षीय एक राजा।

पूर्वा–सोम की सत्ताइस स्त्रियों में एक।

पूर्वेन्द्र–पूर्व कल्प में पांडव रूप जन्म लेनेवाले पाँच इन्द्र।

पूषन–एक वैदिक देवता। इनके रथ में बकरे जुते हैं। दंतहीन होने के कारण ये खीर या पिसी चीजें ही खाते हैं। यह एक आदित्य हैं और सारे विश्व को देखते हैं। ये अपनी बहन सूर्या के प्रेमी थे। सूर्या इनकी स्त्री हैं। यह रोगों का नाश करते हैं। आगे चल कर पुराणों में आदित्य से मिला दिये गये।

पूषमित्र गोमिल–यह अश्वमित्र गोमिल के शिष्य थे। इनके शिष्य सगर थे।

पृथ–रौच्य मनु के पुत्र।

पृथग्भाव--रौच्य मन्वंतर में एक देव गण।

पृथवान--इनका उल्लेख दु:शमी के साथ ऋग्वेद में हुआ है।

पृथा--शूरसेन यादव से राजा कुंतिभोज ने पृथा नाम की कन्या को गोद लिया था। यही पांडवों की माता कुंती थी। दे० 'कुंती'।

पृथु--१. ऋग्वेद में इनका उल्लेख है। पुराणों के अनुसार देवताओं ने राजा वेन की दाईं जंघा का घर्षण करके एक तेजस्वी पुत्र की उत्पत्ति की। यही आगे चलकर चक्रवर्ती राजा पृथु हुये। प्रजा को धन-धान्य से भरने के लिए इन्होंने गो रूप की पृथ्वी को कई बार दुहा। अन्त में पृथ्वी इनकी पुत्री रूप हो गई। तभी से इसका नाम पृथ्वी हो गया। २. दक्ष सावर्णि मनु के पुत्र। ३. कुकुत्स के पुत्र। ४. पुरुजान के पुत्र। ५. रुचक का पुत्र। ६. अष्टवसुओं में से एक। ७. एक सदाचारी ब्राह्मण। ८. अनेनस् नामक राजा के पुत्र। ९. प्रसार के पुत्र। १०. राज्य पुत्र नामक देश के राजा।

पृथुक--कैवत मन्वंतर में देव गण। ये कुल आठ थे।

पृथुकर्म--विष्णु के अनुसार शशबिंदु के पुत्र।

पृथुकीर्ति--१. मत्स्य और वायु के अनुसार शशिबिंदु के पुत्र। २. श्रुतदेव का नामांतर।

पृथुग्रीव--खर नामक राक्षस का एक मंत्री।

पृथुजय--भागवत के अनुसार महाभोज के पुत्र।

पृथुतेजस्--शशबिंदु के पौत्र।

पृथुदास--प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। रामानंदी सम्प्रदाय के एक प्रमुख प्रचारक पैहारी जी के २४ प्रधान शिष्यों में से एक।

पृथुश्याम--पृथुग्रीव का नामांतर।

पृथुश्रवस् कानीत--एक वैदिक व्यक्ति। यह घोड़ों के उधार देनेवाले थे। अश्विनीकुमारों की इन पर कृपा थी।

पृथुषेण--राजा विभु के पुत्र। इनकी स्त्री का नाम आकुटि और पुत्र का नाम नल था।

पृथुसेन--भागवत के अनुसार रुचिपश्व के पौत्र और पार राजा के पुत्र।

पृथ्वी--भू-मंडल। पुराणों में पृथ्वी की उत्पत्ति के संबंध में अनेक कथाएँ हैं। कुछ स्थानों पर इसकी उत्पत्ति मधु-कैटभ के मेद से मानी गई है, और इसी से कहा जाता है उसे मेदिनी संज्ञा भी मिली थी। कुछ अन्य स्थानों पर उसके विराट पुरुष के रोम-कूपों में, एकत्रित होनेवाले मल से उत्पन्न होने की कथा भी मिलती है। पृथ्वी शेषनाग के फन पर कछुए की पीठ पर स्थित मानी जाती है। महाराज पृथु द्वारा प्रतिष्ठित होने के कारण इसे पृथ्वी संज्ञा मिली।

पृथ्वीराज--उत्तरी भारत का अंतिम प्रसिद्ध राजपूत राजा जो दिल्ली की गद्दी पर था। इसने मुहम्मद गोरी को ६ बार परास्त किया। अंत में राजा जयचंद के छल से मुहम्मद गोरी द्वारा मारा गया। पृथ्वीराज रासो नामक महाकाव्य का नायक यही है। इसका विवाह संयोगिता से हुआ था। इसी कारण जयचंद से इसकी शत्रुता हो गई थी।

पृश्नि--१. सविता नामक आदित्य की पत्नी। २. मरुतों की माता। इनका एक सूक्त है।

पृश्निगर्भ--पृश्नि के पुत्र। यह विष्णु के अवतार और त्रेतायुग में उपास्य थे।

पृषत्--विष्णु तथा वायु के अनुसार सोमक के पुत्र। पर भागवत के अनुसार यह जंतु के पुत्र थे। इनके पुत्र द्रुपद थे।

पृषदश्व--१. विरूप के पुत्र। इनके पुत्र रथीवर थे। अंगिरा ऋषि की सेवा से ये ब्राह्मण हुये और उनके गोत्र में मंत्रकार हुये। २. यम की सभा का एक क्षत्रिय।

पृषध्र--१. वैवस्वत मनु और उनकी संज्ञा नामक स्त्री से उत्पन्न पुत्र। इनके गुरु च्यवन थे। २. मतांतर से सावर्णि मनु के पुत्र। २. पांडवपक्षीय एक राजा जो भारतयुद्ध में अश्वत्थामा द्वारा मारे गये।

पृषध्रकाण्व--एक मंतद्रष्टा। इनके द्वारा आयु ने इन्द्र की प्रार्थना की थी।

पेरुक--भारद्वाज के आश्रयदाता। इनके द्वारा भारद्वाज को धनप्राप्ति हुई थी।

पैज--व्यास के एक शिष्य।

पैजवन--१. सुदास का पैतृक नाम। २. एक शूद्र। वेद का अधिकार न होने से इन्होंने ऐंद्राग्नविधान से दक्षिणा दी थी।

पैठय--याज्ञवल्क्य के शिष्य, एक प्रसिद्ध ऋषि। भागवित्ति इनके शिष्य थे। 'पैंग्यमत' नाम से इनका एक विशेष मत प्रसिद्ध है। युधिष्ठिर की सभा में ये उपस्थित थे।

पैठानसि--एक ऋषि और स्मृतिकार आचार्य। याज्ञवल्क्य स्मृति में इनका उल्लेख नहीं है। ये अथर्ववेदी थे। स्मृति-

चन्द्रिका, मिताक्षरा तथा कई अन्य स्मृतियों में पैठानसि के उद्धरण हैं।

ल--१. अंगिरा या भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार। ये पिलि ऋषि के वंशज हैं। २. कृष्ण द्वैपायन व्यास के शिष्य, वसु ऋषि के पुत्र और पांडवों के राजसूय यज्ञ के होता।

पैलमौलि--कश्यप कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

पैहारी (पयहारी कृष्णदास)--स्वामी रामानंद की गद्दी के अधिकारी, मठाधीश तथा विख्यात वैष्णव आचार्य, स्वामी अनन्तानंद के सात प्रधान शिष्यों में से एक। इनका वास्तविक नाम कृष्णदास था। ये 'दुग्ध' के आधार पर रहते थे, अतएव इनका नाम 'पैहारी' पड़ गया। ये बाल ब्रह्मचारी थे। इन्होंने आजीवन अन्न ग्रहण नहीं किया। गलता (आमेर) को इन्होंने अपनी गद्दी बनाई।

पोतक--कश्यप के पुत्र।

पोष्ट्र--अमिताभ देवों में से एक।

पौंडरिक--क्षेमधृत्वन का पैतृक नाम।

पौंड्र--पौंड्रक वासुदेव का नामांतर।

पौंड्रक--एक राक्षस। यह कुंभकर्ण का पौत्र और निकुंभ का पुत्र था।

पौंड्रक मात्स्यक--एक राजा। यह भारतयुद्ध में कौरवों के पक्ष में थे।

पौंड्रक वासुदेव--करुष देश के राजा। इनके पिता का नाम वसुदेव था। चेदि वंश में ये 'पुरुषोत्तम' नाम से प्रसिद्ध थे और शरीर पर श्रीकृष्ण के सारे चिह्न धारण करते थे। कृष्ण ने काशिराज के साथ इनका वध किया था।

पौतक्रत--पूतक्रत के पुत्र। दस्यवेतृक का यह मातृक नाम है।

पौत्र आत्रेय--एक सूक्तद्रष्टा।

पौथायन--भृगुवंशीय एक गोत्रकार।

पौर--रूम तथा रुशम के साथ पौर का ऋग्वेद में उल्लेख हुआ है।

पौरव--१. विश्वामित्र ऋषि के एक पुत्र। २. पुरुकुल के एक बड़े दानवीर राजा। ३. एक महारथी। इनका वध अभिमन्यु ने किया था। ४. पांडवपक्षीय एक राजा, जिनका वध अस्वत्थामा ने किया।

पौरवी--१. युधिष्ठिर की स्त्री। इनके पुत्र देवक थे। २. वसुदेव की स्त्री। भद्रवाह, सुभद्र आदि इनके कई पुत्र थे।

पौरायायन--भृगु कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

पौरुकुत्स--अंगिराकुलोत्पन्न एक मंत्रकार।

पौरुकुत्सा--गाधि की माता। इनको पौरा भी कहते हैं। दे० 'रेणुका'।

पौरुषेय--१. एक राक्षस जो जेठ के महीने में सूर्य के सामने आता है। २. यातुधान का पुत्र।

पौर्णिमास--१. अगस्त्यकुलोत्पन्न एक गो कार। २. दे० 'पूर्णोत्संग'।

पौलस्त्य--दे० 'विश्रवा'।

पौलह--दक्ष सावर्णि मन्वंतर में सप्तर्षियों में से एक।

पौलोम--पुलोमा का पुत्र। अर्जुन ने इसका वध किया। दे० 'निवात कवच'।

पौलोमी--१. शक्र नामक आदित्य की स्त्री। जयंत, ऋषभ तथा मीढ़्व इसके पुत्र थे। इसकी माता का नाम पुलोमी था। दे० 'शची'। २. दे० 'पुलोमा'।

पौष्करसादि--एक आचार्य। ये एक वैयाकरण थे।

पौष्टी--पुरु की स्त्री।

पौष्यंजि--व्यास की साम शिष्य परम्परा में कुकर्मा शिष्य। याज्ञवल्क्य को इन्होंने योग की शिक्षा दी थी।

पौष्य--१. पूषन के पुत्र। शिव की स्तुति करने पर चंद्रशेखर नाम का एक पुत्र उत्पन्न हुआ। इनकी राजधानी ब्रह्मावर्त में दृषद्वती के पास करवीर नामक नगरी में थी। २. पुष्य-पुत्र ध्रुवसंधि का नामांतर।

प्रकाम--काश्मीर के राजा कैकय के कनिष्ठ भ्राता।

प्रकालन--वासुकि कुलोत्पन्न सर्पयज्ञ में जल मरनेवाला एक सर्प।

प्रकाश--तम ऋषि के पुत्र। इनके पुत्र वागींद्र थे।

प्रकाशक--रैवत मनु के पुत्र।

प्रकृति--रैवत मन्वंतर में देवगण।

प्रगाथ काण्व--एक ऋषि और मंत्रद्रष्टा। 'प्रगाथ' नाम के मंत्रविशेष के यह द्रष्टा थे इसलिए यह नाम पड़ा। अनुक्रमणी के अनुसार ये दुर्गह के समकालीन थे।

प्रचंड--१. एक राक्षस वीर। शिव और त्रिपुर के बीच घोर युद्ध के समय यह कार्तिकेय से लड़ा था। २. एक गोप। जाबालि चित्रगंधा गोपी होकर यह प्रकट हुये थे।

प्रचिन्वत्--भागवत् तथा विष्णु के अनुसार प्रथम जनमेजय के पुत्र। नामांतर प्राचिन्वत् है।

प्रचेतस्--१. एक प्रजापति। ब्रह्मा के मानसपुत्र। यह भार्गव कुलोत्पन्न एक मंत्रकार थे। २. एक स्मृतिकार। ३. विभिन्न पुराणों के अनुसार दुर्मन, दुर्गम, अथवा दुर्दम के पुत्र। ४. वरुण का एक नामांतर।

प्रचेतस् अंगिरस--एक सूक्तद्रष्टा।

प्रचेष्ट--राजपुत्र माधव का अनुचर।

प्रजंघ--१. रावणपक्षीय एक राक्षस जिसे अंगद ने मारा था। २. रामपक्षीय एक बानर। संपति नामक राक्षस ने इसे मारा था।

प्रजन--मत्स्य के अनुसार कुरु राजा के पाँच पुत्रों में कनिष्ठ।

प्रजय--राष्ट्रपाल के कनिष्ठ पुत्र। गंगातट पर इन्होंने १२ वर्षों तक तप किया। शारदा ने प्रसन्न होकर इन्हें एक नगर दिया। उसी नगर से कान्यकुब्जों की उत्पत्ति हुई।

प्रजा--एक ब्राह्मण। यह पूर्व जन्म में भील थे।

प्रजापति परमेष्ठिन्--एक सूक्तद्रष्टा।

प्रजापति वाच्य--एक सूक्तद्रष्टा।

प्रजापति वैश्वामित्र--एक सूक्तद्रष्टा।

प्रजावत प्राजापत्य--एक सूक्तद्रष्टा।

प्रज्ञ--अमिताभ देवों में से एक।

प्रज्योति--अमिताभ देवों में से एक।

प्रणित--मरीचिगर्भ देवों में से एक।

प्रतंस--भविष्य के अनुसार अवतंस के पुत्र।

प्रतपन--एक राक्षस जिसे नल नामक बानर वीर ने मारा था।

प्रद्यस–१. एक राक्षस जिसे हनुमान ने मारा था । २. एक राक्षस जिसे सुग्रीव ने मारा था।

प्रद्यसा–एक राक्षसी जो अशोक वाटिका में वंदिनी सीता की रक्षा के लिये नियुक्त थी।

प्रद्योष--श्रीकृष्ण तथा लक्ष्मण पुत्रों के नाम।

प्रभुता--एक प्रसिद्ध मध्यकालीन हरिभक्त-परायण महिला।

प्रयागदास--एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। अग्रदास जी के सुयोग्य शिष्य 'आरा' और 'बलिया' के बीच 'क्यामे' नामक गाँव में ये रहते थे।

प्रलंब--एक दानव। कंस का एक अनुचर। यह भी कंस की आज्ञा से कृष्ण का वध करने के लिये गोकुल गया था। जब कृष्ण तथा बलराम गोप-बालकों के साथ खेल रहे थे तो यह भी एक गोप-बालक का वेश बनाकर उनमें मिल गया था। सब लोग यह खेल-खेल रहे थे कि कुश्ती में जो हार जाय वह जीतनेवाले को अपनी पीठ पर बिठा कर घुमाये। एक बार प्रलंब बलराम से पराजित होकर उन्हें अपनी पीठ पर लेकर भागने लगा। बलराम ने यह देखकर अपने शरीर को इतना बोझिल बना लिया कि उसमें उन्हें लेकर चलने की शक्ति ही नहीं रह गई। अंत में वह अपना वास्तविक रूप धारण कर बलराम के साथ युद्ध करने लगा। बलराम ने युद्ध में उसे पराजित कर उसका वध कर डाला।

प्रसूती--मनु की कन्या तथा दक्ष प्रजापति की धर्मपत्नी। नाभाजी ने इनको प्रथम श्रेणी के भक्तों में रक्खा है।

प्रह्लाद--दैत्यराज हिरण्यकशिपु का पुत्र। हिरण्यकशिपु ने घोर तपस्या से विपुल शक्ति का संग्रह कर देवताओं को कष्ट देना प्रारम्भ किया, इंद्रासन पर भी अपना अधिकार कर लिया और आनंद तथा विलास का जीवन व्यतीत करने लगा। विष्णु से उसे विशेष द्वेष था। संभवतः इसी की प्रतिक्रिया-स्वरूप उसके पुत्र प्रह्लाद में विष्णु के प्रति भक्ति-भावना जाग्रत हुई थी। एक बार जब हिरण्यकशिपु अपने पुत्र की शिक्षा के संबंध में जानने के लिये उसके गुरु के यहाँ गया तो उसे अपने पुत्र की इस भक्ति का ज्ञान हुआ। इस पर क्रोधित होकर उसने सर्प से कटवा कर हाथी से कुचलवा कर तथा पहाड़ से गिरवा कर उसके प्राण-हरण का प्रयत्न किया। एक बार उसकी आज्ञा से उसकी बहन होलिका भी अपने भ्रातृज प्रह्लाद को लेकर आग के ऊपर बैठ गई। इसी समय से हिंदुओं के होलिकोत्सव त्योहार का प्रारम्भ माना जाता है किंतु प्रह्लाद ने भगवान् के प्रति अपनी भावना में दृढ़ होने के कारण किसी प्रकार अपनी प्राण-रक्षा कर ली थी। अंत में परेशान होकर हिरण्यकशिपु प्रह्लाद को उपेक्षा की दृष्टि से देखने लगा। एक बार उसने क्रोधित होकर प्रह्लाद से पूछा—"कहाँ तेरा भगवान है, जिसकी दिन भर तू रट लगाये रहता है?" प्रह्लाद ने उत्तर दिया, "सभी जगह तो है" उसके पिता ने कहा—"क्या इस स्तंभ में भी है? मैं अपनी तलवार से उसके दो टुकड़े करता हूँ। देखूं तो वह कहाँ है?" यह कहकर उसने स्तंभ पर आघात किया और विष्णु ने नृसिंह-रूप में अवतरित होकर अपने नखों से हिरण्यकशिपु का वहीं वध कर दिया। इसके बाद कुछ स्थानों पर ऐसी कथा मिलती है कि प्रह्लाद ने अपने पिता के सिंहासन पर आरोहण किया तथा एक विशेष काल तक राज्य किया था। अंत में उसे इंद्र का स्थान भी प्राप्त हो गया था और उसी अवस्था में वह विष्णु में लीन हो गया था। पद्मपुराण के अनुसार उसके पूर्व-जन्म के संबंध में ज्ञात होता है कि वह शिव शर्मा नामक ब्राह्मण का सोम शर्मा नामक पुत्र था। अन्य चार भाइयों की मृत्यु के बाद उनके विष्णु से सायुज्य प्राप्त करने पर उसकी भी आकांक्षा अपने को विष्णु में लीन कर देने की हुई थी। किंतु जब वह इसके लिये ध्यान-मग्न था तो दैत्यों के कोलाहल से उसकी तपस्या भंग हो गई थी और इसी से वह अपने अगले जन्म में एक दैत्य के रूप में उत्पन्न हुआ था। अपने इस रूप में उसने देवताओं के साथ दैत्यों का जो युद्ध हुआ था उसमें अपने वंश का साथ दिया था, और स्वयं विष्णु के आघात से मृत्यु को प्राप्त हुआ था। उसके बाद उसका जन्म हिरण्यकशिपु के पुत्र के रूप में हुआ था। प्रह्लाद के पुत्र का नाम विरोचन मिलता है।

प्रियादास--एक भक्त, महात्मा तथा कवि। इनका जन्म सं० १८१६ में माना जाता है। इन्होंने नाभाजी के भक्तमाल की छंदबद्ध टीका की।

प्रेमकला--राधा की सखी, एक गोपी।

प्रेमनिधि--एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। इनके संबंध में कई रोचक कथायें भक्तमाल की ठीका में लिखी हैं।

बक--एक असुर। अघासुर तथा पूतना का भाई। योगमाया द्वारा अपना वध करनेवाले के जन्म का समाचार सुनकर कंस ने अपनी सभा में जिन दुष्टों को एकत्र किया था, उनमें से एक यह भी था। कंस ने इसे कृष्ण का वध करने के लिए वृंदावन भेजा। वृंदावन पहुँच कर यह एक बक का रूप धारण कर यमुना तट पर बैठ गया और जब कृष्ण आए तो उन्हें अपनी चोंच में दबा लिया। कुछ ही समय पर बक का तालुमूल जलने लगा और उसने कृष्ण को उगल दिया। इसके बाद जब उसने फिर कृष्ण को उदरस्थ करने का प्रयत्न किया तो उन्होंने, इसके पूर्व ही कि वह उन्हें अपने दाँतों में पकड़ सके, उसकी चोंच के दोनों भागों को पकड़कर चीर दिया और उसकी मृत्यु हो गई।

बकी--बक की बहन पूतना का पर्याय। दे० 'पूतना'।

बत्सासुर--कंस का एक अनुचर। यह भी कंस की आज्ञा से कृष्ण का वध करने के लिए वृंदावन गया था और वहाँ स्वयं ही कृष्ण के हाथों से मृत्यु को प्राप्त हुआ।

बद्रीपति (नर-नारायण)–भागवत के अनुसार विष्णु के चौथे अवतार नर-नारायण ने बद्रिकाश्रम में घोर तप किया जिससे बद्रीपति कहलाये। दो रूप होने पर भी ये एकवय तथा समान थे। द्वापर में यही अर्जुन और कृष्ण होकर अवतरित हुए। कहा जाता है कि शिव ने नरसिंह के दो टुकड़े कर दिये थे। उन्हीं दो टुकड़ों से नर और नारायण की उत्पत्ति हुई। एक अन्य मत

से इनकी उत्पत्ति धर्म की स्त्री मुक्ति से मानी जाती है।

बनवारीदास–एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त । ये अग्रदास जी के शिष्य और नाभाजी के गुरुभाई थे।

बल-प्रबल--जय-विजय की भाँति बल-प्रबल भी दो भाई थे। नाभा जी के अनुसार ये विष्णु के षोडश पारषदों में से हैं।

बलराम--वसुदेव के पुत्र । रोहिणी के गर्भ से गोपराज नंद के गृह में इनका जन्म हुआ था। सर्वप्रथम यह कंस के कारागृह में देवकी के गर्भ में आए थे। यदि देवकी के गर्भ से ही इनका जन्म होता तो कंस के द्वारा यह मृत्यु को प्राप्त होते। इसलिए विष्णु की आज्ञा से माया ने इन्हें देवकी के गर्भ से लेकर रोहिणी के गर्भ में स्थित कर दिया था। इस प्रकार गर्भकर्षण द्वारा दूसरे स्थान पर ले जाये जाने के कारण वसुदेव के द्वारा गोकुल भेजे गये ब्राह्मण गुरुदेव ने इनका नामकरण संकर्षण किया था। विपुल शक्ति संपन्न होने के कारण उन्होंने इन्हें बलराम की भी संज्ञा दी थी। अपने बाल्यकाल में ही कंस द्वारा भेजे गये दो राक्षसों, प्रलंब तथा धेनुक का इन्होंने वध कर डाला था। कंस ने जब यज्ञ का आयोजन करके अक्रूर को इन्हें तथा कृष्ण को बुलाने के लिए भेजा था तो यह मथुरा आए थे। वहाँ इन्होंने कंस के मल्ल चाणूर का वध किया था। एक बार दुर्योधन ने इनसे पराजित होकर गदा-युद्ध सिखाने की प्रार्थना की। इन्होंने कुछ समय तक उसे गदा-युद्ध सिखाया भी था। इस प्रकार यह दुर्योधन के आचार्य थे और महाभारत युद्ध में इनके भी भाग लेने की संभावना थी। कृष्ण ने इसीलिए इन्हें उसके पूर्व ही तीर्थस्थानों की यात्रा के लिए भेज दिया था। यह स्वभाव के उद्दंड तथा मद्य-प्रिय कहे जाते हैं। इनके अस्त्रों में हल अथवा मूसल का नाम लिया जाता है।

बलि--एक दैत्यराज। प्रह्लाद के पौत्र तथा विरोचन के पुत्र। इनकी पत्नी का नाम विंध्यावली मिलता है। कठोर तपस्या से इकट्ठा की हुई शक्ति के आधार पर इन्होंने इंद्र को भी पराजित किया था तथा तीनों लोकों में अपना प्रभुत्व स्थापित किया था। अंत में अश्वमेध यज्ञ का आयोजन कर दान देना प्रारंभ किया। उनके इस पुण्यकार्य को देखकर इंद्र को अपने पद के उनके द्वारा हस्तगत हो जाने का भय हो गया और उन्हीं की प्रार्थना पर विष्णु वामन रूप में बलि के सामने उपस्थित हुए। वामन ने बलि की प्रशंसा कर उनसे तीन पद भूमि की याचना की। बलि इस याचना को सुनकर बड़े आश्चर्यान्वित हुए थे। उनके गुरु शुक्राचार्य ने उस समय उन्हें यह समझाया था कि तुम अस्वीकृति दे दो। यह वामन स्वयं भागवन् विष्णु हैं। अपने एक ही पद में यह समस्त भूमंडल तथा स्वर्ग आदि को नाप लेंगे और तुम्हें पथ का भिखारी बना देंगे। किंतु बलि ने उनकी बात स्वीकार न की। उन्होंने कहा कि अपने द्वार पर आये हुये किसी भी व्यक्ति को मैं निराश नहीं जाने दे सकता। दान का संकल्प जब पढ़ा जा रहा था और जल गिराने के लिए पात्र उठाया गया तो शुक्राचार्य ने जल का मार्ग टोंटी में बैठकर अवरुद्ध कर लिया। सींक से जब रुकी हुई वस्तु को बाहर निकालने का प्रयत्न किया गया तो शुक्राचार्य की आंख अनजान में ही फूट गई। प्राथमिक कृत्य पूर्ण होने के बाद जब दान को लेने का समय आया तो वामन-रूपधारी विष्णु ने अपना अनंत विस्तार किया और एक पद से समस्त भूमंडल तथा दूसरे पद से स्वर्ग को नाप किया था। तीसरा पद उठाने पर जब उसे उन्हें कहीं रखने का स्थान ही नहीं मिला था तो उन्होंने बलि से प्रश्न किया कि उसे कहाँ रक्खें। बलि ने उसे सहर्ष अपने मस्तक पर धारण करने की बात कही। विष्णु ने उनका कथन स्वीकार करके उनके मस्तक पर अपना तीसरा पद धर दिया। बलि की यह अवस्था देखकर इस परिस्थिति से उनकी रक्षा के लिए स्वयं प्रह्लाद प्रकट हुये थे। उनके अनुनय-विनय तथा स्वयं बलि के पुण्य-कृत्यों से प्रसन्न होकर विष्णु ने बलि को विश्वकर्मा द्वारा निर्मित सुतल में रहने की आज्ञा दी और अंत में इंद्र-पद प्राप्ति का भी वरदान दिया। बलि ने उनकी आज्ञा स्वीकार की और उस रोग-जरा-मृत्युहीन लोक में जाकर अवस्थित हो गए।

बही–दस प्रचेताओं के पिता। इनके दसों पुत्र परम भक्त थे।

बहोरन–एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त तथा कवि।

बालकृष्ण गोस्वामी–१. बल्लभाचार्य के पौत्र तथा विठ्ठलेश के पुत्र एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य भक्त। 'नाथद्वारा' नामकी गद्दी के संस्थापक यही थे। एक बार एक वारांगना के गान से मुग्ध होकर इन्होंने उसे मंदिर में गवाया और उसका उद्धार किया। प्रेम-रस-राशि नामक ग्रंथ भी इनके नाम से मिलता है। २. एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। इन्होंने चारों धाम में हरिभक्ति का प्रचार किया।

बाल्मीकि–रामायण के रचयिता तथा संस्कृत के आदि कवि। आरंभ में ये एक अनाथ ब्राह्मण बालक थे। भीलों द्वारा पालित हुये और एक भीलनी से इनका विवाह भी हुआ। मृगया और डाका डालना इनका प्रधान कार्य था। एक बार सप्तर्षियों के ऊपर डाका डाला। उनके सम्पर्क में आने से किरात बुद्धि जाती रही और ये 'मरा मरा' जपते रहे। उसी से 'राम राम' मंत्र बन गया। इन्होंने घोर तपस्या की। यहाँ तक कि दीमकों ने इनके ऊपर घर बना लिया। सप्तर्षियों ने फिर इनका उद्धार करके इन्हें दिव्य ज्ञान का उपदेश दिया। इन्होंने रामायण की रचना की। कहा जाता है कि इन्होंने ही सीता को वनवास के समय आश्रय दिया था और लव-कुश को शिक्षा दी थी। एक किंवदंती के अनुसार जिला बाँदा में करवी के पास पहाड़ी नामक स्थान इनका निवास-स्थान बतलाया जाता है। रामायण, भागवत तथा पाराशरीय विष्णु पुराण आदि कई ग्रंथ इनके द्वारा लिखे कहे जाते हैं।

बावन--एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। विख्यात महात्मा योगानंद जी के ये वंशज थे।

बासव--दे० 'इन्द्र'।

बाहुबल--एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त।

बिदावत–एक प्रसिद्ध मध्य-कालीन वैष्णव भक्त।

बिक्रोदी (बिक्रो)–एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त।

बिट्ठलदास–माथुर चौबे ब्राह्मण, एक प्रसिद्ध कृष्ण भक्त तथा तत्कालीन उदयपुर महाराणा के पुरोहित। ये बड़े दानवीर थे। एक बार एक गुणवती नटी के भगवान के सामने नृत्य करने पर प्रसन्न हो इन्होने उसे अपनी सारी संपत्ति दे दी।

बिट्ठल बिपुल–प्रसिद्ध वैष्णव भक्त तथा गायक। ये स्वामी हरिदास के प्रधान शिष्यों में से एक थे।

बिधुंतुद–दे० 'राहु'।

बिरंचि–ब्रह्मा का एक पर्यायवाची शब्द। दे० 'ब्रह्मा'।

बिल्वमंगल–१. द्रविड़ जातीय एक भक्त। विष्णु स्वामी की परंपरा में ये एक मठाधीस थे। इनके बाद श्री संप्रदाय हतप्राय हो गया जिसका उद्धार फिर बल्लभाचार्य ने किया। २. एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। आरंभ में बड़े विषयी और चिंतामणि वैश्या के अनन्य प्रेमी थे। कहा जाता है कि एक बार भादों की रात में एक शव पर यमुना पार कर ये चिंतामणि के घर गये। द्वारा बंद होने के कारण एक सर्प को पकड़कर उसकी खिड़की से ऊपर चढ़ गये। वहाँ चिंतामणि ने धिक्कारते हुये इनसे कहा कि इतना प्रेम यदि श्री कृष्ण से होता तो उद्धार हो जाता। उसी क्षण इन्हें ज्ञान प्राप्त हो गया और इन्होंने अपनी आखें फोड़ डालीं। तब से ये हरिभक्ति में लीन हो गये। श्रीकृष्ण करुणामृत नामक ग्रंथ की रचना की। इनका उपनाम सूरदास था; पर ये सूरसागर के रचयिता सूर से भिन्न थे।

बिहारी–१. एक प्रसिद्ध रीतिकालीन कवि। कुछ लोग इन्हें एक बड़ा वैष्णव भक्त कवि मानते हैं। ग्वालियर राज्य के अन्तर्गत बसुआ गोविंदपुर नामक ग्राम में इनका जन्म हुआ था। इनका शैशव बुंदेलखंड में बीता। युवावस्था में इन्होंने अपनी ससुराल मथुरा में निवास किया। इसके बाद राजा जयसिंह के यहाँ दरबारी कवि के रूप में रहे। इनका एकमात्र ग्रंथ 'बिहारी सतसई' उपलब्ध है, जिसमें ७१९ दोहे हैं। कुछ लोग इन्हें प्रसिद्ध कवि केशव का पुत्र मानते हैं। २. नाभा जी ने एक भक्त कवि 'बिहारी' का उल्लेख किया है। ये कवि बिहारी सतसई के रचयिता से भिन्न हैं।

बीठल–एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। ये 'होड़ा' नामक स्थान के निवासी थे और भिक्षावृत्ति से जीवन निर्वाह करते थे।

बीठलजी–एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। ये मथुरा मंडल के एक प्रख्यात भक्त थे।

बीरारामदास–एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। ये सुहेले के रहनेवाले थे। इन्होंने अपनी कोठी हरिभक्तों को दे दी थी।

बुद्ध–ज्ञान प्राप्त होने के बाद राजा शुद्धोधन के पुत्र सिद्धार्थ ही गौतम बुद्ध के नाम से प्रसिद्ध हुए। इन्होंने विश्वप्रसिद्ध बौद्धधर्म की स्थापना की। बौद्धधर्म वास्तव में हिंदू धर्म के सुधार के रूप में प्रादुर्भूत हुआ था। अन्त में यह एक स्वतंत्र धर्म ही हो गया। अशोक, कनिष्ठ तथा हर्ष आदि प्रसिद्ध सम्राटों ने इस धर्म की उन्नति के लिए बड़ा प्रयत्न किया। यह लगभग १००० वर्षों तक भारत में अधिक उन्नति पर रहा। अन्त में बौद्धधर्म के संघप्रचारकों में भ्रष्टाचार बढ़ गया। कुमारिल और शंकराचार्य ऐसे विद्वानों ने फिर से हिन्दू धर्म के उद्धार के प्रयत्न किये। इसलिये उसके बाद बौद्धधर्म भारत में बढ़ या ठहर न सका। किंतु विश्व में आज भी लगभग ५० करोड़ जन समुदाय बौद्ध धर्मावलम्बी है। चीन, जापान, बर्मा, तिब्बत आदि देशों में आज भी बौद्धधर्म ही प्रधान धर्म है।

बुद्धि प्रकाश–श्रीकृष्ण के षोड़श सेवकों में से एक। इनको श्रीकृष्ण का अनवरत सान्निध्य प्राप्त था।

बुध–शाब्दिक अर्थ ज्ञानी। ऋग्वेद के मंत्रों का प्रकाशक। नव ग्रहों में से एक ग्रह। यह वृहस्पति की स्त्री तारा के गर्भ से चंद्रमा का पुत्र कहा जाता है। चंद्रमा ने एक बार देवगुरु वृहस्पति की स्त्री का अपहरण कर उसके साथ संभोग किया था। बुध की उत्पत्ति कालांतर में उसी के फलस्वरूप हुई थी। वृहस्पत्ति ने चंद्रमा के साथ अपनी स्त्री की पुनः प्राप्ति के लिये घोर युद्ध किया। अंत में उसे बहुत बढ़ते देखकर ब्रह्मा ने चंद्रमा को समझा बुझाकर वृहस्पति को उनकी स्त्री दिलवा दी थी। जब बुध का जन्म हुआ था तो वृहस्पति तथा चंद्रमा दोनों ने उसे अपना पुत्र कहा था। तारा कुछ समय तक मौन होकर दोनों के तर्कों को सुनती रही थी। अंत में उसने स्वीकार किया था कि वह चंद्रमा का पुत्र है और वह ब्रह्मा की आज्ञा से चंद्रमा को ही दे दिया गया था। पुराणों में यह उल्लेख मिलता है कि बुध ने वैवस्वत मनु की इला नामक पुत्री से अपना विवाह किया था और उससे उनको पुरुरवा नामक एक पुत्र हुआ। बुध के संबंध में यह उल्लेख मिलता है कि यह नपुंसक, शुद्ध, अथर्ववेद के ज्ञाता, रजोगुणी, मगध देश के अधिपति, बाल-स्वभाव तथा दुर्वाश्याम वर्ण के थे। सूर्य तथा शुक्र इनके मित्र तथा चंद्रमा शत्रु कहे जाते हैं।

बेताल–शिव का एक अनुचर और उनका द्वारपाल।

बेन–एक उपद्रवी और अत्याचारी राजा का नाम। वेणु, बेनु आदि भी इन्हीं के नाम हैं।

बेनी भक्त–मथुरा मंडल के एक प्रसिद्ध भक्त। ये 'बेनी प्रवीन' नामक प्रसिद्ध हिंदी कवि के मित्र थे।

बैकुण्ठ–यह विष्णु तथा उन्हीं के साथ लक्ष्मी का निवास-स्थान माना जाता है। मोक्ष-प्राप्ति के बाद पुण्यात्माएँ, जरा-मृत्युहीन इस लोक में विष्णु के साथ निवास करती हैं। इसकी स्थिति सत्यलोक से भी ऊपर मानी जाती है। कुछ स्थानों पर स्वर्ग के पर्याय के रूप में भी इसका उल्लेख मिलता है।

बैनतेय–दे० 'गरुड़'।

बैतरनी–यमलोक की एक नदी। मृत्यु के बाद मनुष्य इसे पार करता है। रुढ़िवादी हिंदू इसलिये मरते समय गोदान करते हैं कि इस नदी को सरलता से पार कर सकें।

बोपदेव–भक्तमाल के अनुसार श्रीमद्‌भागवत के रचयिता। ये एक महान वैय्याकरण थे। इनका 'सिद्धान्त कौमुदी' व्याकरण का अति प्रसिद्ध ग्रंथ है। वैद्यक पर भी

इनके नौ ग्रंथ हैं। इनके द्वारा रचित दो निघंटु भी बताये जाते हैं। इनके प्रधान ग्रंथ हैं—१. मुग्धबोध व्याकरण, २. राम व्याकरण, ३. कवि कल्पद्रुम, ४. कवि काम, धेन्वाख्य, ५. त्रिशत्श्लोकी, ६. धातुकोष, ७. शार्ङ्गधर संहिता, ८. सिद्ध मंत्र प्रकाश, ९. हृदय दीप निघंटु १०. पदार्थादर्श, ११. मुक्ताफल, १२. हरिलीला, १३. मुकुट, १४. परम हंस प्रिया और १५. परशुराम प्रताप टीका। नाभा जी ने इन्हें रामानुज परंपरा में रक्खा है जो उचित नहीं जान पड़ता।

ब्रह्मदास—एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त तथा कवि।

ब्रह्मपुराण—एक महापुराण। इसकी श्लोक संख्या दस हजार तथा प्रकृति राजसी कही गई है। इसे ब्रह्मा ने मरीचि को सुनाया था। इससे सृष्टि रचना, मनु और मन्वंतरों का काल तथा सूर्य और चंद्रवंश का वर्णन है। उड़ीसा के बहुत से मंदिरों का भी इसमें उल्लेख है। इससे प्रतीत होता है कि इसकी रचना १३वीं वि०शती की है। ब्रह्मोत्तर पुराण नामक एक पूरक ग्रंथ की भी रचना हुई जिसमें ३ हजार श्लोक हैं।

ब्रह्मवैवत-एक महापुराण जिसे सावर्णि ने नारद को सुनाया था। इसमें अठारह हजार श्लोक कहे गये हैं। राधा का वर्णन सर्वप्रथम इसी पुराण में मिलता है।

ब्रह्म संप्रदाय-वैष्णव के चार सम्प्रदायों में से एक मुख्य सम्प्रदाय। मध्वाचार्य जी इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक थे। ब्रह्म सम्प्रदाय ने अद्वैत का पूर्ण विरोध किया। इसको द्वैत सम्प्रदाय भी कहते हैं। इसमें जीव और ब्रह्म की एकता के लिये कोई स्थान नहीं है। इस सम्प्रदाय में 'मध्वाचार्य' ब्रह्मा के अवतार माने गये, इसीलिये इसका नाम ब्रह्म सम्प्रदाय पड़ा।

ब्रह्मांड पुराण—एक महापुराण। अष्टादश पुराणों में इसका सातवाँ स्थान है। श्लोक संख्या बारह हजार कही जाती है। प्रसिद्ध अध्यात्म रामायण इसी का एक खंड कहा जाता है।

ब्रह्मा—हिंदू त्रिदेवों में से एक। इनकी उत्पत्ति के संबंध में मनुस्मृति में उल्लेख है कि स्वयंभू भगवान् ने जल की सृष्टि करके उसमें जो वीर्य स्खलित किया था, उससे एक ज्योतिर्मय अंड की उत्पत्ति हुई थी और उसी से ब्रह्मा का प्रादुर्भाव हुआ था। अन्य मत से एकार्णव में शेष की शैया पर लक्ष्मी द्वारा सेवित होकर शयन करते हुए विष्णु की नाभि से जो कमल की उत्पत्ति हुई थी, उसी से ब्रह्मा का जन्म हुआ था यह भी उल्लेख मिलता है। ब्रह्मा चतुर्मुख कहे जाते हैं। इस संबंध में कथा है कि एक बार ब्रह्मा के शरीर से एक सुंदरी कन्या की उत्पत्ति हुई। ब्रह्मा उसे देखते ही उस पर मोहित हो गये। उनकी वासनापूर्ण दृष्टि से अपनी रक्षा करने के लिए वह एक ओर हो गई। ब्रह्मा फिर उसकी ओर मुख करके उसे देखने लगे। इसी प्रकार वह ब्रह्मा के चारों ओर घूमी और ब्रह्मा उसे देखने को चतुर्मुख हो गये। उन्होंने उस कन्या को, जो आगे चलकर सरस्वती संज्ञा से विभूषित हुई, अपनी अर्द्धांगिनी बना लिया। ब्रह्मा सृष्टि के कर्ता माने जाते हैं। इनके दस मानस पुत्र कहे जाते हैं। मरीचि, अत्रि, अंगिरा पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, प्रचेता, वसिष्ठ, भृगु तथा नारद। ब्रह्मा वेदों के प्रकट करनेवाले भी माने जाते हैं। कर्मानुसार मनुष्य के शुभाशुभ फल तथा भाग्य का निर्माण भी उन्हीं का कार्य कहा जाता है। हिंदु त्रिदेवों में इस प्रकार इनका प्रथम स्थान है। फिर भी हिंदू समाज इनकी पूजा के प्रति सदा से उदासीन रहा है। इस संबंध में कथा है कि ब्रह्मा ने अपने मानस पुत्र नारद को उत्पन्न करने के बाद उससे सृष्टि की रचना करने के लिए कहा था। नारद ने तपश्चर्या को अधिक उपयुक्त समझ कर उसी को ग्रहण करने की बात कही थी। ब्रह्मा ने इससे क्रोधित होकर नारद को शाप दिया था। नारद भी उस शाप को सुनकर क्रोधित हो गये थे और उन्होंने कहा था कि "आपने पिता होकर मुझे शाप दिया है, यह देखकर मुझे विशेष दुःख होता है। मैं भी आपको शाप देता हूँ कि आपकी पूजा कभी भी न हो।" ब्रह्मा प्रथम प्रजापति माने जाते हैं।

ब्रह्माणी—ब्रह्मा की स्त्री का नाम। दे० 'सरस्वती'।

ब्रह्मोत्तर पुराण—ब्रह्मपुराण का पूरक। दे० 'ब्रह्मपुराण'।

भक्तभाई—एक प्रसिद्ध कवि, भक्त तथा मत-प्रचारक।

भक्तमाल—भक्ति-रसात्मक एक प्रसिद्ध ग्रंथ। इसके रचयिता नाभादास जी हैं, जो स्वयं एक बड़े भक्त थे। इसमें १०८ छप्पय हैं। प्रत्येक छप्पय में एक भक्त का संक्षिप्त पर आलोचनात्मक वर्णन है। इस ग्रंथ की कई टीकायें भी हो गई हैं। अन्य प्रतियों में १९७ या १९९ छप्पय हैं। इसमें लगभग ८०० भक्तों की नामावली दी है। यद्यपि इसमें यदा-कदा अत्युक्ति भी है किंतु हिंदी साहित्य में यह प्रथम आलोचनात्मक ग्रंथ है और इसी लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

भक्तराज (कुल शेखर)—एक बड़े भक्त। एक बार सीताहरण की कथा सुनकर जब ये घोड़े पर चढ़कर काल्पनिक रावण का पीछा करते-करते सागर में कूद पड़े तब राम ने इन्हें बचाया था।

भगदत्त—नरकासुर का पुत्र। श्रीकृष्ण ने नरकासुर को मार कर भगदत्त को प्रागज्योतिष का राजा बनाया था। युधिष्ठिर के अश्वमेध यज्ञ के अवसर पर अर्जुन और भगदत्त से घोर संग्राम हुआ था। अंत में भगदत्त को हार माननी पड़ी। महाभारत-युद्ध में भगदत्त कौरव पक्ष से लड़ा और अर्जुन के हाथ से मारा गया।

भगवंत—एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। ये विख्यात माधवदास जी के पुत्र थे।

भगवान—मथुरा मंडल के एक प्रसिद्ध भक्त।

भगवानदास—१. ठाकुर भगवानदास राजपूत एक बड़े भक्त थे। प्रतिवर्ष मथुरा जाकर बहुत बड़ा भंडारा करते थे। दान में एक बार इन्होने सब कुछ स्वाहा कर दिया। कहा जाता है कि एक बार इन्होंने जितना चाहा उतना अन्न बाँटा; किंतु वह फिर भी समाप्त न हुआ। यह सब हरि की महिमा का फल था। २. एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। प्रसिद्ध वैष्णव भक्त खोजी के ये शिष्य थे। कहा जाता है कि एक बार मथुरा में बादशाह ने यह आज्ञा

निकाली कि कोई भी कंठी-माला न धारण करे। केवल यही ऐसे निकले जिन्होंने बादशाह की आज्ञा का उल्लंघन किया। बादशाह ने इससे प्रसन्न होकर आज्ञा हटा ली। ३. एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। ये कील्ह जी के शिष्य थे।

भगीरथ—सूर्यवंशी राजा अंशुमान के पौत्र तथा दिलीप के पुत्र। अपने साठ सहस्र पूर्वजों को तारने के विचार से अल्पायु में ही ये तपस्या करने निकल गये। १००० वर्ष तपस्या करने के बाद ब्रह्मा ने प्रसन्न हो वर माँगने को कहा। इन्होंने दो वरदान माँगे—(१) कपिल के शाप से भस्म हमारे पूर्वज गंगा की धार से तरें, (२) मेरा वंश चले। ब्रह्मा ने पूछा कि तीव्र धार को कौन सहन करेगा। इस पर भगीरथ ने फिर अपनी तपस्या से शंकर को प्रसन्न किया। शंकर गंगा के गर्व को चूर्ण करने के लिए १००० वर्षों तक उन्हें अपनी जटा में बंद किये रहे, अंत में भगीरथ की प्रार्थना पर उन्हें जटा से निकाला। गंगा तीन धार होकर बहीं। राजा भगीरथ दिव्य रथ में सवार हो आगे-आगे पथ-प्रदर्शन का कार्य कर रहे थे। इसीलिए गंगा का एक नाम 'भागीरथी' भी हुआ।

भट्ट—एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। भक्तमाल के अनुसार इन्होंने कई वैष्णव ग्रंथ भी लिखे थे।

भद्र सुभद्र—जय-विजय की भाँति भद्र-सुभद्र भी हरि के चिर सेवकों में गिने जाते हैं। ये सदा मुक्त और अमर हैं।

भरत—१. राम के भाई। ये कैकेयी के पुत्र थे। २. राजा ऋषभदेव के पुत्रों में से सबसे ज्येष्ठ। उनके एक-एक पुत्र नौ-नौ खंडों के स्वामी हुए थे। 'भरतखंड' के स्वामी 'भरत' थे। यही भरतखंड आगे चलकर 'भारतवर्ष' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। नाट्य-शास्त्र के रचयिता भरत तथा दुष्यंत के पुत्र भरत अन्य थे। ३. एक ज्ञानी जो ज्ञानी होने पर भी ये बड़े कामी थे। वानप्रस्थ की अवस्था में इन्होंने एक मृग शावक से इतना प्रेम बढ़ाया कि अगले जन्म में इन्हें मृग होकर जन्म लेना पड़ा। कई योनियों में घूमने के बाद मनुष्य योनि में आने पर उन्हें लोग जड़ भरत कहकर पुकारने लगे। ज्ञानी होने पर भी ये बड़े आलसी और मूर्ख प्रतीत होते थे। लोग इनको भोजन देकर जो चाहते काम करवा लिया करते थे। एक बार राजा सौवीर ने इन्हें अपनी पालकी उठाने के लिये पकड़ा। बहुत मार खाने पर भी ये टस से मस न हुये। मारते-मारते राजा थक गये; किंतु ये हिले-डुले नहीं। अंत में राजा को ज्ञान हुआ। उसने इनसे क्षमा माँगी। जड़ भरत ने उन्हें ज्ञानोपदेश दिया और स्वयं भी मोक्ष प्राप्त किया। दे० 'जड़ भरत' तथा 'ऋषभदेव'।

भरद्वाज—एक मुनि का नाम। प्रयाग में गंगा-तट पर इनका बहुत बड़ा आश्रम था जहाँ पर बहुत से विद्यार्थी पढ़ने आते थे। संभवत: भारतवर्ष में यह पहला विश्व-विद्यालय था। राम सीता और लक्ष्मण वनवास के समय इनके यहाँ ठहरे थे। भक्तमाल के अनुसार ये प्रसिद्ध वैदिक ऋषि और बृहस्पति के पुत्र तथा कौरवों-पांडवों के गुरु द्रोणाचार्य के पिता थे। हरिवंश आदि अन्य पुराणों के अनुसार ये राजा भरत के दत्तक पुत्र थे। ये दो पितरों से उत्पन्न थे।

भवानी—'भव' शिव का एक पर्याय है। उसी में आनी प्रत्यय लगा कर यह शब्द बना है। भवानी पार्वती का एक पर्याय है। सर्वप्रथम दक्ष प्रजापति के गृह में सती के रूप में इनका जन्म हुआ था। इन्होंने अपने माता-पिता की अनिच्छा से कठोर तपस्या करके शिव को अपने स्वामी के रूप में प्राप्त किया था। दक्ष ने एक बार अपने यहाँ यज्ञ का आयोजन किया और इन्हें निर्धन स्वामी की स्त्री जानकर निमंत्रित नहीं किया। फिर भी यह यज्ञ में उपस्थित हुईं, किंतु वहाँ अपने पिता के मुख से अपने स्वामी की निंदा सुनकर इन्होंने यज्ञ-कुंड में प्रवेश कर अपना शरीर त्याग किया था। इसके बाद पर्वतराज हिमालय के यहाँ उसकी स्त्री मेना अथवा मेनका के गर्भ से इनकी उत्पत्ति हुई थी। पर्वतराज की कन्या होने के कारण इस जन्म में इनका नामकरण पार्वती हुआ। योग्य वय होने पर अपनी कठोर तपस्या के द्वारा इन्होंने फिर महादेव जी को अपने स्वामी के रूप में प्राप्त किया। भागवत 'दशम स्कंध', द्वितीय अध्याय, में इन्हें योग-माया कहा गया है।

भविष्य पुराण—एक महापुराण जिसमें भविष्यत काल की कथाओं का वर्णन किया गया है। इसमें ७००० श्लोक माने गये हैं। इसकी प्रकृति राजसी है। 'पंच-लक्षणों' के अनुसार इसे पुराण नहीं कह सकते हैं। 'भविष्योत्तर पुराण' नामक ग्रंथ की रचना इसके पूरक के रूप में की गई है, जिसमें ७००० श्लोक हैं।

भविष्योत्तर पुराण—दे० 'भविष्य पुराण'।

भागवत—प्रसिद्ध वैष्णव पुराण। हिंदू वैष्णव पुराणों का सबसे अधिक लोकप्रिय और प्रामाणिक ग्रंथ है। कहा जाता है कि सर्वप्रथम विष्णु ने 'चार श्लोक' (चतुःश्लोकी भागवत) ब्रह्मा को सुनाया। पश्चात् ब्रह्मा ने नारद को, नारद ने व्यास को और व्यास ने शुकदेव को और सुकदेव ने सात दिन में राजा परीक्षित को सुनाया। हिंदुओं में इसीलिए 'भागवत सप्ताह' का बड़ा महत्व है। इस पुराण में रामायण और महाभारत में वर्णित भगवान के दश अवतारों विशेषकर राम और कृष्ण की कथा है। उसमें कृष्ण की कथा ही सर्व-प्रधान है। इस एक ही पुस्तक ने सारे वैष्णव धर्म को सबसे अधिक प्रभावित किया और इसके रचयिता तथा रचना-तिथि के विषय में विद्वानों में मतभेद है। हिंदी के भक्त कवि इस पुराण से सबसे अधिक प्रभावित हैं। सूरसागर इसका भावानुवाद कहा जाता है। नंददास ने भी भागवत का अनुवाद किया था।

भावन—एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। ये ब्रजभूमि के निवासी थे।

भावानंद—रामानंदी संप्रदाय के एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य। भक्तमाल के अनुसार ये राजर्षि जनक के अवतार थे।

भीष्म—गंगा के गर्भ से उत्पन्न महाराजा शांतनु के ज्येष्ठ पुत्र। अष्ट वसुओं में आठवें वसु के ये अवतार थे। शांतनु की प्रार्थना से गंगा ने इन्हें पृथ्वी पर छोड़ दिया। इनका

नाम पहिले गांगेय या देवव्रत था। भीष्म नाम एक भीषण प्रतिज्ञा के कारण पड़ा था। इनके पिता ने सत्यवती नामक स्त्री से ब्याह करने की इच्छा प्रकट की। वह शूद्रा थी। उसने इस शर्त पर विवाह करना स्वीकार किया कि उसके गर्भ से उत्पन्न पुत्र राज्याधिकारी हो। पिता को प्रसन्न करने के लिये भीष्म ने आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत का प्रण किया और उसे सदैव निभाया। सत्यवती के दो पुत्रों, विचित्रवीर्य और चित्रांगद, के विवाह के लिये काशिराज की दो कन्याओं का इन्होंने हरण किया। सब से ज्येष्ठ अम्बा ने इन्हीं के साथ विवाह करने का आग्रह किया; किन्तु अपनी प्रतिज्ञा के कारण इन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया। अम्बा ने इसका बदला लेने के लिये घोर तपस्या की और महाभारत काल में शिखंडी होकर जन्म लिया। शिखंडी को भीष्म जानते थे। अतएव उस पर उन्होंने वाण प्रहार नहीं किया। शिखंडी के पीछे से अर्जुन ने अपने वाणों की वर्षा करके भीष्म को धराशायी किया। महाभारत के युद्ध में प्रारम्भिक दस दिनों तक भीष्म ने कौरव सेना का सेना पतित्व किया। ब्रह्मचारी होने के कारण मृत्यु बिना इच्छा के इन्हें नहीं ले जा सकती थी। धराशायी होते समय शुभ घड़ी नहीं थी, अतएव बहुत दिनों तक ये बाणों की शय्या पर सोते रहे। उस काल में पांडवों को इन्होंने उपदेश दिया जो महाभारत के शांति पर्व में उल्लिखित हैं। भीष्म हिंदू जाति-मात्र के पितामह माने गये हैं। दे० 'शांतनु' तथा 'गंगा'।

भीष्म भट्ट–प्रसिद्ध वैष्णव भक्त तथा कथावाचक।

भुशुंडि–एक ज्ञानी काक जो राम का बड़ा भक्त था।

भूगर्भ (गुसाईं)–एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। वृन्दावन निवासी वैष्णव भक्तों में ये विख्यात भक्त थे।

भूरिश्रवा–महाभारत के एक प्रसिद्ध वीर। ये राजा सोमदत्त के पुत्र थे। महाभारत-युद्ध में ये कौरवों की ओर से लड़े थे। युद्ध में अर्जुन ने इनके दोनों हाथ काट डाले और सात्यकी ने इनका वध किया। कहा जाता है कि काशी के पास भुइली नामक गाँव में इनकी राजधानी थी। वहाँ पर हनुमान जी की एक विशाल मूर्ति है। लोगों की धारणा है कि भूरिश्रवा ने ही यह मूर्ति स्थापित की थी।

भृगु–एक ऋषि। ये शिव के पुत्र माने गये हैं। इनके साथ ही ब्रह्मा के कवि और अग्नि के अंगिरा माने गये हैं। एक बार यह निर्णय करने के लिये कि ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों में कौन बड़ा है—इन्होंने तीनों का अपमान किया। ब्रह्मा और महेश क्रुद्ध हो गये। फिर क्षीरशायी विष्णु के सोते समय जाकर उनकी छाती पर इन्होंने एक लात मारी, किंतु जागने पर क्रोध करने के बजाय विष्णु ने पूछा कि आपके पैर में चोट तो नहीं लगी। इस पर भृगु विष्णु की महानता मान गये। भृगु के कुल में ही ऋचीक, जमदग्नि तथा परशुराम हुये। दे० 'जमदग्नि' तथा 'राम'। अन्य पुराणों के अनुसार भृगु ब्रह्मा के मानस पुत्र तथा दक्ष प्रजापतियों में से एक हैं दक्ष कन्या ख्याति इनकी स्त्री थीं। भृगु धनुर्वेद के विद्या प्रवर्तक थे। भृगु ने एक बार शिव को भी शाप दिया था। नंदी ने इन्हें भीतर जाने से मना कर दिया था, क्योंकि शिव पार्वती के साथ संभोग में रत थे। इनके शाप से ही कलियुग में लिंग और योनि के रूप में शिव की पूजा होती है और इनका प्रसाद द्विजातियों को ग्राह्य नहीं है।

भोगावति–१. सर्पों की एक पाताल नगरी। २. गंगा की वह धारा जो पाताल में बहती है।

भोज–१. एक प्रसिद्ध ब्रजवासी गोप, श्रीकृष्ण के बाल्य-बंधु. अतः हरिभक्तों के परम पूज्य। २. इस नाम के कई राजे अत्यंत प्रसिद्ध हो गये हैं। जिनमें धार के राजा भोज अधिक प्रसिद्ध हैं। ये साहित्य और ललित कला के संरक्षक थे। ३. एक यदुवंशी राजा जिनकी राजधानी 'मृतकवती' नगरी थी जो मालवा के पास है। ४. विंध्य प्रांत में रहनेवाली एक जंगली जाति का नाम।

भौमासुर–एक असुर। यह नरकासुर नाम से भी विख्यात है। पुराणों में इसकी उत्पत्ति के संबंध में कथा मिलती है कि वराह अवतार के समय विष्णु ने एक बार पृथ्वी के साथ संभोग किया था, उसी से यह पृथ्वी के गर्भ में आ गया था। देवताओं को जब एक उग्र तथा उद्दंड असुर के पृथ्वी के गर्भ में अवस्थित होने की बात ज्ञात हुई थी तो उन्होंने इसकी उत्पत्ति को ही रुद्ध कर दिया। यह ज्ञात होने पर पृथ्वी ने विष्णु का आवाहन किया था और उनसे इसकी उत्पत्ति की प्रार्थना की थी। विष्णु ने वरदान किया था कि त्रेता युग में रावण के निधन के बाद इसकी उत्पत्ति होगी। इस वरदान के फल-स्वरूप रामचंद्र द्वारा रावण के वध के बाद पृथ्वी के उसी स्थान से जहाँ सीता का जन्म हुआ था इसकी उत्पत्ति हुई थी। सोलह वर्ष तक यह जनक के द्वारा ही पोषित हुआ था। उसके बाद पृथ्वी आकर इसे अपने साथ ले गई थी। इसको अपना संबंध बताने के लिये उसने इसके गर्भाधान तथा जन्म की कथा सुनाई तथा विष्णु का स्मरण किया था। विष्णु प्रकट हुये और उन्होंने नरक को ले जाकर प्राग्ज्योतिषपुर में प्रतिष्ठित किया। उसी समय विदर्भराज की कन्या माया से इसका विवाह भी हो गया। चलते समय विष्णु ने इसे उपदेश दिया था कि तुम ब्राह्मणों तथा देवताओं के साथ किसी प्रकार का विरोध न करना। उन्होंने उसे एक दुर्भेद्य रथ भी दिया था। अपने पिता की आज्ञा का पालन करते हुये उसने कुछ समय तक उचित रीति से राज्य-संचालन किया, किंतु वाणासुर का साथ होते ही इसमें राक्षसी भावनाओं का उदय प्रारम्भ हुआ। कामाख्या देवी के दर्शनों के लिये आये हुये ऋषि वसिष्ठ को इसने नगर के भीतर भी प्रवेश न करने दिया। उसके इस कृत्य को देखकर वसिष्ठ ने शाप दिया कि, "शीघ्र ही अपने पिता के ही हाथों से तुम्हारी मृत्यु होगी।" इसी शाप के फल-स्वरूप कालांतर में कृष्ण ने प्राग्ज्योतिषपुर पर आक्रमण करके इसका वध किया था। इसके पुत्रों के नाम भगदत्त, मदवान्, महाशीर्ष तथा सुमाली मिलते हैं। कहा जाता है कि इसको पराजित कर कृष्ण इसके भांडागार से जितना धन ले गये थे, उतना कुबेर के कोष में भी नहीं था।

मंगल--एक ग्रह। यह पुरुष, क्षत्रिय, भरद्वाज ऋषि का पुत्र, सामवेदी, चतुर्भुज, अपनी सभी भुजाओं में शक्ति रखने वाला, अभय, गदा को धारण करनेवाला, पित्त-प्रकृति, युवा, क्रूर, वनचारी, गेरू आदि धातुओं तथा लाल रंग के समस्त पदार्थों का स्वामी, कुछ अंग-हीन तथा अवंति देश का अधिपति कहा गया है। कार्तिकेय इसके अधिष्ठाता देवता हैं। इसके जन्म के सम्बन्ध में विभिन्न कथाएँ मिलती हैं। ब्रह्मवैवर्तपुराण में उल्लेख है कि एक बार पृथ्वी विष्णु के ऊपर आसक्त होकर एक युवती का वेश धारण कर उनके सम्मुख आई थी। विष्णु ने स्वयं अपने हाथों से उनका शृंगार किया था। अपने प्रियतम द्वारा इस प्रकार सम्मानित हो भाव-मग्न होकर वह मूर्च्छित हो गई थी। उसी अवस्था में विष्णु ने उसके साथ संभोग किया था; जिससे कालांतर में मंगल की उत्पत्ति हुई थी। पद्मपुराण में विष्णु के श्रम-बिंदुओं से मंगल की उत्पत्ति कही गई है। मत्स्यपुराण के आधार पर कहा जाता है कि दक्ष के नाश के लिए महादेव ने जिस वीरभद्र को उत्पन्न किया था, वही आगे चलकर मंगल हुआ। इसी प्रकार भिन्न-भिन्न पुराणों में इसके जन्म के संबंध में विभिन्न कथाएँ मिलती हैं।

मंथरा--१. राजा दशरथ की रानी कैकेयी की दासी। इसी के कहने से कैकेयी ने दो वरदान माँगे थे--१. भरत को राज्य, २. राम को चौदह वर्ष का बनबास। पूर्व जन्म में यह दुंदुभि नामक एक गंधर्वी थी। २. विरोचन दैत्य की कन्या। बहुत अत्याचार करने पर इन्द्र ने इसका बध किया।

मंदाकिनी--दे० 'गंगा'।

मंदालसा--राजा रतिध्वज की स्त्री। सती तथा हरिभक्ति-परायणा। एकपत्नीव्रती से ही विवाह करने की इन्होंने प्रतिज्ञा की थी। रतिध्वज ऐसे ही थे। इनके ६ पुत्र ११वें वर्ष में विरक्त हो गये। सप्तम पुत्र अलर्क (सुबाहु) को राजा ने राज्य के लिये रख लिया। अंत में राजा और पुत्र स्वयं विरक्त हो गये।

मंदोदरी--१. पञ्च कन्याओं में से एक। इसका पिता मयासुर तथा माता अप्सरा रंभा थी। यह रावण की रानी तथा इंद्रजीत की माँ थी। २. सिंहलद्वीप के राजा चंद्रसेन तथा रानी गुणवती की कन्या का नाम।

मकरंद--श्रीकृष्ण के प्रिय सखाओं में से एक।

मघा--एक नक्षत्र जो श्रावण के अंत में पड़ता है।

मच्छ--भगवान विष्णु का प्रथम अवतार। प्रलय काल उपस्थित होने पर जब त्रयलोक जलमग्न हुआ तब महा समुद्र में सोये हुये ब्रह्मा के मुँह से चार वेदों की उत्पत्ति हुई। उन्हें हयग्रीव ने चुरा लिया। इन्हीं के उद्धार के लिये विष्णु ने मत्स्य रूप में अवतार लिया। भागवत में इसकी विस्तृत कथा दी हुई है। कहा जाता है कि महामत्स्य के रूप में भगवान ने राजा सत्यव्रत को बताया था कि आज के सातवें दिन प्रलय होगा। उस समय समस्त विश्व जल मग्न होगा पर तुम्हारे उद्धार के लिये एक विराट नौका बनाऊँगा। उसमें समस्त औषधियों, प्राणियों तथा सप्तर्षियों सहित तुम चढ़ जाना। महा सर्प का रज्जु बनाकर मेरी सींग से उसे बाँध देना। ब्रह्मा की रात्रि जब तक न व्यतीत होगी तब तक मैं उस नाव की रक्षा करूँगा। ऐसा ही सातवें दिन हुआ। मत्स्य ने हिमालय पर्वत की चोटी पर उस विराट नाव को बाँधा था। आज भी हिमालय की एक चोटी नौकाबंधन चोटी के नाम से प्रसिद्ध है। सत्यव्रत ही आगे चलकर वैवस्वत मनु कहलाये। वास्तव में 'मत्स्य' की कथा से सृष्टि के आदि विकास पर प्रकाश पड़ता है। विज्ञान के अनुसार भी सृष्टि का प्रथम जीव एक प्रकार का मत्स्य ही है।

मथुरा--पुराणों में उल्लिखित सप्त पुरियों में से एक। यह ब्रज-भूमि में यमुना के दक्षिण तट पर अवस्थित है। वाल्मीकीय रामायण के उत्तर कांड में दी हुई एक कथा के अनुसार इसे मधु नामक एक दैत्य ने बसाया था और उसके पुत्र बाणासुर को पराजित कर शत्रुघ्न ने उसे विजित किया था। महाभारत के समय यहाँ यदुवंशी राजाओं का राज्य था। इसी यदुवंश की एक शाखा में कंस तथा दूसरी शाखा में कृष्ण का जन्म हुआ था।

मदन--कामदेव का एक पर्याय। दे० 'कामदेव'।

मधु--१. श्रीकृष्ण के एक प्रिय सखा। २. कैटभ नामक दैत्य का भाई। यह श्रीकृष्ण के द्वारा मारा गया। मथुरा या मधुपुरी इसी ने बसाई थी। ३. एक दैत्य जिसका वध शत्रुघ्न ने किया था।

मधुकरशाह--एक प्रसिद्ध राजवंशीय वैष्णव भक्त। ये ओड़छे के अधीश्वर थे।

मधुगोंसाई--चैतन्य की शिष्य मंडली के एक प्रसिद्ध भक्त। कहा जाता है। कि वृंदावन जाकर इन्होंने कृष्ण का साक्षात् दर्शन किया।

मधुपुरी--मथुरा का प्राचीन नाम। मधु दानव द्वारा बसाए जाने के कारण उसका यह नामकरण हुआ था। दे० 'मथुरा'।

मधुसूदन सरस्वती--एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त तथा संन्यासी। 'भक्ति रसायन' ग्रंथ इन्हीं का रचा हुआ है। कहा जाता है कि गोस्वामी तुलसीदास से इनकी भेंट हुई थी।

मध्वाचार्य--चार प्रसिद्ध वैष्णव सम्प्रदायों में से ब्रह्म सम्प्रदाय के प्रचारक। उनका आविर्भाव ११९९ ई० में दक्षिण प्रांत में तुलब नामक गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम मधीजी था। ९ वर्ष की अवस्था में इन्होंने संन्यास ले लिया था। इनके गुरु अच्युतप्रोच कहे जाते हैं। कहा जाता है कि इन्होंने ३७ ग्रंथों की रचना की जिनमें ऋक्भाष्य, सूत्रभाष्य, गीताभाष्य, भागवत तात्पर्य, कृष्ण नामामृत तथा दशोपनिषद्भाष्य मुख्य हैं। ये प्रसिद्ध द्वैतवादी थे।

मनुस्मृति--मनु का प्रसिद्ध धर्मग्रंथ। गंभीर विवेचना से प्रतीत होता है कि यह ग्रंथ किसी एक व्यक्ति की स्वतंत्र रचना न होकर विभिन्न लेखकों की रचनाओं का संग्रह है। आज इसमें २६८५ श्लोक हैं। उनमें भी बहुत से प्रक्षिप्त हैं। कई पाश्चात्य भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है।

मयंद--राम सेना के सेनापतियों में से एक।

मय--एक महाक्रमी दानव। शिल्पकला तथा हर्म्यनिर्माण में यह अत्यंत कुशल था। रावण का श्वसुर तथा मंदोदरी का पिता यही था। इसके दो पुत्र थे--मायावी तथा दुन्दुभि। दे० 'त्रिपुर'।

मयन--दे० 'काम'।

महरि--नंद की स्त्री यशोदा का एक उपनाम। दे० 'यशोदा'।

महादेव--दे० 'शिव'।

महावीर--दे० 'हनुमान'।

महि--दे० 'पृथ्वी'।

महिरावण--दे० 'अहिरावण'।

मांडव्य--प्रसिद्ध भक्त मुनि। बाल्यावस्था में एक पतिंगे के शरीर में काँटा छुभो देने के कारण इन्हें यम ने सूली दे दी पर सूली टूट गई। इन्होंने यम को शाप दिया कि वह शूद्र योनि में जन्म ले। यम के ही अवतार विदुर हैं। दे० 'विदुर'।

मांधाता--प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा युवनाश्व के पुत्र। कोई पुत्र न होने से युवनाश्व से ऋषियों ने यज्ञ करवाया। मंत्र का रक्खा हुआ जल धोखे से युवनाश्व ही पी गये और उन्हीं को गर्भ रह गया अन्त में उनका पेट चीर कर पुत्र निकाला गया। प्रश्न यह हुआ कि कैसे उसका पालन हो। उसी समय इंद्र उपस्थित हुये और उन्होंने कहा कि यह मेरी अँगुली पीवेगा। बालक एक ही दिन में बड़ा हो गया। मान्धाता का विवाह शशिविंदु की कन्या विंदुमती से हुआ जिससे इन्हें ५० कन्यायें और पुरुकुल्स, अंबरीष तथा मुचुकुन्द नामक पुत्र हुये। मान्धाता परम ऐश्वर्यशाली चक्रवर्ती राजा हुये।

मातंगी--दे० 'उग्रतारा'।

मातलि--इंद्र के सारथी का नाम। इंद्र के पुष्पक विमान के ये चालक थे।

माधवदास--एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। इस नाम के ११ भक्तों का उल्लेख नाभा जी ने किया है।

मानदास--एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। रामायण और हनुमन्नाटक का इन्होंने भाषांतर किया।

मार--दे० 'काम'।

मारीच--एक मायावी राक्षस का नाम। यह रावण का मामा था। रावण के अनुग्रह से यह स्वर्णमृग बना था। राम के हाथ से मारा जाकर मोक्ष को प्राप्त हुआ। यह ताड़का नामक राक्षसी का पुत्र और सुबाहु का भाई था।

मार्कंडेय--प्रसिद्ध ऋषि। मार्कंडेय पुराण के प्रणेता। अपनी तपस्या और दीर्घायु के लिए ये प्रसिद्ध हैं। इनका एक नाम 'दीर्घायु' भी है।

मार्कंडेय पुराण--एक पुराण जो कुछ मार्कण्डेय द्वारा और कुछ ज्ञानी पक्षियों द्वारा रचा गया है। इसकी कहानियाँ सभी कपोल कल्पित हैं; किंतु भागवत को छोड़कर अन्य पुराणों से श्रेष्ठतर हैं। इसका रचना काल ९वीं या १०वीं सदी है। इसकी श्लोक संख्या ९५००० कही जाती है। प्रकृति राजसी है।

मित्रावरुण--वेदों में मित्र और वरुण दोनों शब्द एक साथ आये हैं। मित्र दिन और वरुण रात्रि के स्वामी हैं। मित्र अदिति के पुत्र हैं। दे० 'सूर्य' तथा 'आदित्य'।

मिथिलेश (निमि)--इक्ष्वाकु के पुत्र तथा मिथिलावंश के आदि पुरुष। वसिष्ठ के शाप से ये शरीरहीन हो गये थे। देवताओं ने इन्हें इनका शरीर देना चाहा लेकिन इन्होंने नहीं लिया। अन्त में इनका प्राण सब की दृष्टि में रख दिया गया। संभवतः पलक मारने में जो समय लगता है उसे 'निमिष' इसीलिये कहते हैं। निमि के पुत्र मिथि थे जिन्होंने मिथिला बनाई। ये निमि सीता के पिता जनक के पितामह थे। दे० 'कुशध्वज'।

मीराँबाई--हिंदी साहित्य की एक प्रधान हरिभक्ति परायणा कवियत्री। इनका जन्म मेड़ते के चौकड़ी नामक गाँव में सं० १५०४ में माना जाता है। इनके पिता रत्नसिंह राव दूदाजी के कनिष्ठ पुत्र थे। जोधपुर के संस्थापक राव जोधा जी रानरे चतुर्थ के पुत्र थे। शैशवावस्था में ही माता की मृत्यु हो जाने पर राव दूदाजी ने मीराँ का पालन-पोषण किया। वे बड़े भक्त और उदारचेता थे। मीराँ का ध्यान भी उधर ही गया। मीराँ को संगीत की भी शिक्षा उन्होंने दी थी। पर वे मीराँ को ११ वर्ष की अवस्था में ही छोड़कर चले गये। सं० १५७३ में मीराँ का विवाह चित्तौड़ के राजा भोजराज से हुआ। किंतु कुछ दिन बाद ही वे वीरगति को प्राप्त हुये। विवाहित जीवन अच्छा था। राजा ने शैव होने पर भी मीराँ की वैष्णवी उपासना की सभी सुविधायें एकत्र कर दी थीं पर इनके उत्तराधिकारी विक्रमाजीत ने विरोध प्रारम्भ किया। मंदिर में जाना, हरिभक्तों से मिलना आदि सब पर प्रतिबंध लगा दिया गया। जब मीराँ ने एक न सुनी तो उनकी हत्या के अनेक उपाय किये गये--यथा पिटारी में सर्प भेजना तथा विष देना आदि; किंतु मीराँ सबसे बचती गई। मीराँ के ननिहाल में भी विपत्ति आ गई और इन्हें अपनी ससुराल भी छोड़नी पड़ी। तब उन्होंने वृन्दावन, द्वारका आदि स्थानों की तीर्थयात्रा की। कहा जाता है कि रैदास इनके गुरु थे, किंतु इसमें संदेह है। मीराँ से तुलसी का पत्र व्यवहार भी एक झूठी धारणा है। मीराँ की भक्ति पति रूप की थी। उसे वैष्णव भक्ति ही कहेंगे यद्यपि उस पर निर्गुण संतों का भी प्रभाव है। निम्नलिखित ग्रन्थ मीराँ कृत बताये जाते हैं। (१) नरसीजी का मायरा, (२) गीत गोविंद की टीका और (३) राग गोविंद। मीराँ की भाषा राजस्थानी मिश्रित व्रज है। मीराँ हिंदी साहित्य की अमर कवियत्री हैं।

मुचुकुंद--अयोध्या के प्राचीन राजा। देवासुर-संग्राम में इन्होंने देवों की बड़ी सहायता की थी। फिर क्लांत हो बहुत दिनों तक पर्वत की एक कंदरा में विश्राम करते रहे। एक बार कालयवन से भागते-भागते कृष्ण ने उसी गुफा में आकर अपना पीताम्बर मुचुकुंद को ओढ़ा दिया। कालयवन मुचुकुंद की ओर झपटा और इनके नेत्र खोलते ही भस्म हो गया। संभवतः कालयवन को यह वरदान था कि वह किसी यदुवंशी से न मारा जायगा। कहा जाता है कि गीतगोविंद के रचयिता जयदेव इन्हीं के अवतार हैं।

मुर–एक राक्षस, जिसे मार कर भगवान ने मुरारि की उपाधि धारण की ।

मुष्टिक–कंस का एक असुर मल्ल जिसे श्रीकृष्ण ने कंस के धनुष यज्ञ के अवसर पर मल्लयुद्ध में मारा था ।

मृड–महादेव का एक पर्याय । दे० 'महादेव' ।

मेरु–पुराणों में उल्लिखित एक पर्वत, जो स्वर्ण का माना जाता है । देवासुर ने समुद्र-मंथन के समय इसी को मथानी बनाया था । इसे अधिकतर सुमेरु कहते हैं ।

मैत्रेय–दे० 'विदुर' ।

मोरध्वज–एक प्रसिद्ध दानवीर राजा । इनके पुत्र का नाम ताम्रध्वज था । अर्जुन की भक्ति का गर्व हरण करने के लिये कृष्ण ने इनकी परीक्षा ली थी । ये और इनकी पत्नी ब्राह्मण वेषधारी कृष्ण को अपने लड़के का आधा अंग देने पर राजी हो गये, और दोनों ने मिलकर आरे से पुत्र को चीरा । दायाँ अंग ब्राह्मण वेषधारी कृष्ण ने सिंह वेषधारी अर्जुन को दे दिया । राजा के बायें नेत्र से कुछ आँसू की बूँदें टपक पड़ीं । कृष्ण से पूछे जाने पर राजा ने कहा कि मुझे बायें अंग का दुःख है कि वह किसी भी काम नहीं आया । इस पर प्रसन्न होकर कृष्ण साक्षात् रूप से प्रकट हो गये ।

मोहिनी–१.शुंभ तथा निशुंभ नामक दो राक्षसों के वध के लिये विष्णु ने मोहिनी रूप में अवतार लिया । दोनों स्त्री को देखकर मोहित हो गये और उसको प्राप्त करने के लिये आपस में लड़ मरे । २. विष्णु का समुद्र-मंथन के समय एक अवतार । इसी रूप से भगवान ने अमृत देवों को तथा और सुरा असुरों को पिलाई थी ।

यदु–ययाति के पुत्र । पिता ने इनसे यौवन माँगा लेकिन इन्होंने देने से इनकार कर दिया । पिता ने शाप दिया कि तुम्हारे वंशजों को राज्य सुख नहीं मिलेगा । इसी यदुवंश में बाद में श्रीकृष्ण का जन्म हुआ ।

यदुनंदन–मथुरा मंडल के एक प्रसिद्ध भक्त । ये वैष्णव भक्ति के प्रसिद्ध प्रचारक थे ।

यदुनाथ (गोस्वामी)–प्रसिद्ध गद्दीधारी वैष्णव आचार्य तथा पुष्टि मार्ग के प्रचारक । ये श्री बल्लभाचार्य के पौत्र तथा गोस्वामी विट्ठलनाथ जी के पुत्र थे ।

यम–मृत्यु के देवता । दक्षिण दिशा के दिगपाल । इनका वाहन महिष है । ये सूर्य के पुत्र हैं ।

यमदग्नि–ऋचीक और सत्यवती के पुत्र । इनके पाँच पुत्र थे । सबसे कनिष्ठ परशुराम थे । इनकी पत्नी का नाम रेणुका था । दे० 'परशुराम'

यमुनाबाई–एक प्रसिद्ध हरिभक्ति परायणा महिला ।

ययाति–प्रसिद्ध राजा नहुष के पुत्र । इनकी स्त्री का नाम देवयानी था । इनकी एक दूसरी पत्नी का नाम शर्मिष्ठा था । देवयानी से यदु और शर्मिष्ठा से पुरु का जन्म हुआ । इसी से यादव और पौरव दो वंशों की नींव पड़ी । ययाति बड़े विषयी थे और शर्मिष्ठा में विशेष अनुरक्त थे । वृद्ध होने पर इन्होंने पुरु से यौवन प्राप्त किया । १००० वर्षों तक विषय भोग के बाद वैराग्य लिया ।

यशोदा–नंद की रानी । ब्रज में माता रूप से कृष्ण का पालन इन्होंने ही किया । इनकी कथा भिन्न-भिन्न पुराणों में भिन्न रूप से दी गई है । भागवत के अनुसार ये शिव-पत्नी सती थीं । दक्ष यज्ञ में प्राण त्यागकर द्वापर में यशोदा हुईं । ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार ये पूर्व जन्म में वसुश्रेष्ठ द्रोण की पत्नी धरा थे । जिस समय देवकी से कृष्ण जन्मे उसी समय यशोदा से एक कन्या । बसुदेव कन्या ले गये और कृष्ण को दवकी की गोद में सुला आए ।

याज्ञवल्क्य–शुक्ल यजुर्वेद, शतपथ ब्राह्मण, बृहदारण्यक उपनिषद तथा याज्ञवल्क्य स्मृति के प्रणेता । कात्यायन के बाद मनु (मनुस्मृतिकार) के पहिले इनका समय पड़ता है । महाभारत के अनुसार ये युधिष्ठिर की सभा में थे । मैत्रेयी और कात्यायन नाम की इनकी दो स्त्रियाँ थीं । इनका दूसरा नाम वाजसनेय था ।

याज्ञवल्क्य स्मृति–मनुस्मृति के बाद धर्मशास्त्र ग्रंथों में इसी का स्थान है । 'मिताक्षरा' नाम की इसकी टीका अति प्रसिद्ध है, जिसका अनुवाद अन्य कई भाषाओं में हुआ है ।

यामुनाचार्य–रामानुज के दीक्षागुरु पूर्णाचार्य के गुरु । ये महान् विद्वान् और श्रीरंग के भक्त थे । गीता के एक-एक श्लोक का इन्होंने सारांश लिखा था ।

युधिष्ठिर–पांडु के ज्येष्ठ क्षेत्रज पुत्र । माता कुंती ने धर्म से इन्हें प्राप्त किया । पांडवों में सबसे बड़े भाई यही थे । अपनी सत्यता के कारण ये धर्मराज के नाम से विदित थे । दे० 'अर्जुन', 'कुंती', 'कृष्ण', तथा 'पांडु' ।

रंगाराम–एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त तथा पैहारीं जी के शिष्य ।

रंतिदेव–एक धार्मिक चन्द्रवंशी राजा । एक बार ४८ उपवास करने पर भी इन्होंने भूखों को अपना भोजन दे दिया । इससे प्रसन्न हो भगवान् ने इन्हें दर्शन दिया । भगवान् से इन्होंने यही वरदान माँगा कि मैं जीवों का दुःख भोगूँ और सब लोग सुखी हों । प्रभु इनको सपरिवार अपने विमान पर ले गये ।

रंभा–एक अप्सरा । इसकी उत्पत्ति देवासुर के समुद्र-मंथन से मानी जाती है और सौंदर्य के एक प्रतीक के रूप में स्वीकृत है । इंद्र ने देवताओं से इसे अपनी राजसभा के लिए प्राप्त किया था । एक बार उन्होंने इसे विश्वामित्र की तपस्या को भंग करने के लिए भेजा था, किंतु महर्षि ने इससे अप्रभावित होकर इसे एक सहस्र वर्ष तक पाषाणी के रूप में रहने का शाप दिया । कहा जाता है, एक बार जब यह कुबेर-पुत्र नलकूबर के यहाँ जा रही थी तो कैलास की ओर जाते हुए रावण ने मार्ग में रोक कर इसके साथ बलात्कार किया था ।

रघु–इक्ष्वाकुवंशी अयोध्या के प्रसिद्ध राजा और दिलीप के पुत्र । सूर्यवंश में यही सबसे प्रसिद्ध राजा हुए इसलिये वंश इन्हीं के नाम से चला । इन्होंने एक विश्वजित यज्ञ किया था । भगवान रामचन्द्र इन्हीं के वंश में हुए थे ।

रघुनाथ–(गोस्वामी) गोस्वामी विट्ठलनाथ जी के सात पुत्रों में से एक । इन्होंने वैष्णव धर्म का प्रचार किया । दे० 'विट्ठलनाथ' ।

रघुनाथ गुसाईं–जगन्नाथ जी के ये वैसे ही सेवक थे जैसे विष्णु के गरुड़। ये सदैव जगन्नाथ जी के द्वार पर खड़े रहा करते थे। इनके विषय में कई कथायें भी प्रसिद्ध हैं।

रति–कामदेव की अर्द्धांगिनी तथा दक्ष प्रजापति की कन्या। कहा जाता है दक्ष ने अपने शरीर के श्रम-बिंदुओं से इसे उत्पन्न करके कामदेव को समर्पित किया था। यह सौंदर्य के प्रतीक-स्वरूप मानी जाती है। इसके सौंदर्य को देख कर सभी देवताओं के हृदय में इसके प्रति आकर्षण की भावना उत्पन्न हुई थी, इसी से इसका नामकरण रति हुआ। शिवजी ने जब इसके स्वामी कामदेव को अपना ध्यान भंग करने के कारण क्रोधित होकर भस्म कर दिया था तब इसी ने शिव से प्रार्थना करके अपने स्वामी के अनंग-रूप में जीवित रहने का वर प्राप्त किया था तथा मृत्युलोक में स्वयं मायावती के रूप में जन्म लेकर अनिरुद्ध के रूप में कामदेव के अवतरित होने का वरदान पाया था। कहा जाता है कि यह सदा कामदेव के साथ रहती है। दे० 'अनंग', 'अनिरुद्ध' तथा 'कामदेव'।

रतिकला–एक गोपी। राधा की सखी।

रतिबेलि–एक गोपी। राधा की सखी।

रतिवंती–लीला अनुकरणी एक अनन्य श्रीकृष्ण भक्त। 'ऊखल बंधन' की कथा सुनकर एक बार ये लड़ने लगीं और लड़ते-लड़ते इनके प्राण निकल गये।

रत्नाकर–समुद्र का एक पर्याय। दे० 'समुद्र'।

रत्नावली–एक प्रसिद्ध अनन्य हरि-भक्ति-परायणा महिला। ये आमेर के राजा मानसिंह के छोटे भाई माधवसिंह जी की रानी थीं।

रसिक मुरारि–एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। इन्होंने एक मतवाले हाथी को भी अपना शिष्य बना लिया था। इनके विषय में कई कहानियाँ प्रसिद्ध हैं।

रहूगण–एक प्राचीन प्रतापी राजा। पालकी पर एक बार इन्हें कपिलमुनि के आश्रम में ज्ञान के लिये जाना था। 'जड़ भरत' को पालकी में लगाया और न चलने पर उन्हें बहुत मारा। अन्त में इन्हें ज्ञान प्राप्त हो गया। संभवतः सुवीर और रहूगण एक ही नाम हैं। दे० 'जड़भरत'।

राजानबाई–प्रसिद्ध राठौर राजा तथा अपूर्व वैष्णव भक्त रामरमन की धर्मपत्नी। ये अनन्य हरिभक्ति-परायणा थीं।

राधा–गोकुल के समीपवर्ती बरसाने ग्राम के गोपराज वृषभान की कन्या। इनकी माता का नाम कीर्ति मिलता है। भागवत में इनका कोई उल्लेख नहीं है। किन्तु देवी-भागवत तथा गर्गसंहिता आदि में कृष्ण की प्रेयसि के रूप में इनका उल्लेख मिलता है। प्रथम में परकीया तथा द्वितीय में स्वकीया नायिका अर्थात् पूर्णतः विवाहिता के रूप में इनका वर्णन है। हिंदी साहित्य में वस्तुतः इनका द्वितीय रूप ही स्वीकृत हुआ है। कृष्ण गोप-बालकों के साथ यमुना तट पर खेलने जाते थे। राधा भी अपनी सखियों को लेकर आती थीं। दोनों एक दूसरे को देखते और पारस्परिक अनुराग की भावनाओं के वशीभूत हो जाते थे। एक बार राधा नंद के घर में खेलने आईं। यशोदा उन्हें देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुई और उन्हें कृष्ण के योग्य ठहराया। एक 'द्विज-नारि' को बुलाकर उन्होंने राधा के पिता वृषभान के पास कृष्ण के लिए राधा को माँगने की बात कहलाया। 'द्विज-नारि' ने बरसाने ग्राम में जाकर राधा की माता कीर्ति से यशोदा की बात कही किंतु कीर्ति 'महा लंगर' तथा 'दधि-माखन चोर नंद-ढोटा' के साथ अपनी 'सूधी' राधा की सगाई करने को प्रस्तुत नहीं हुई। यशोदा ने सुना तो उन्हें बड़ा दुःख हुआ। उसी समय कृष्ण आ गए। अपनी माता की चिंता का कारण जानकर उन्हें आश्वासन दिया कि यदि तुम्हारी यही इच्छा है। तो मैं उसी के साथ विवाह करूँगा और उसकी माता मेरे पैरों पर गिर-गिर कर मुझे उसे देंगी। आगे का प्रसंग इस प्रकार है—कृष्ण बरसाने ग्राम की ओर चल दिए और वहाँ की एक बाटिका में जाकर बैठ गए। राधा अपनी सखियों को साथ लेकर उन्हें देखने के लिए आईं। कृष्ण ने एक दृष्टि-निक्षेप में उनका मन हर लिया और वे मूर्च्छित होकर गिर पड़ीं। सखियों ने बार बार ऊँचे स्वर से नाम लेकर उन्हें चैतन्य करने का प्रयत्न किया किंतु वे असफल रहीं। कुछ देर बाद वे स्वयं ही "श्याम ! श्याम !" कहती हुई उठ बैठीं। सखियों ने कृष्ण के प्रति उनका इतना गंभीर स्नेह देखकर कहा कि "तुम मूर्च्छित-सी होकर पड़ रहो। हम तुम्हें घर ले जायँगी और माताजी से कहेंगी कि इन्हें कालीनाग ने काट खाया है और फिर किसी बहाने कृष्ण को भी बुला लेंगी। इस प्रकार तुम्हारा उनका मिलन हो जायगा।" राधा ने उनकी बात स्वीकार कर ली। सखियाँ उन्हें उठाकर घर के भीतर ले गईं और कीर्ति से कहा कि "इन्हें नाग ने डस लिया है।" वह यह सुनकर घबड़ा गईं और "दौड़ो किसी को बुलाओ" कहने लगीं। सखियों ने अवसर पाकर कहा– "गोकुल-ग्राम में नंद का पुत्र कृष्ण एक बहुत बड़ा गारुड़ी है, कहो तो उसे बुला लाऊँ।" कीर्ति ने कहा—"जाओ और उससे जाकर यह कहो कि यदि कुँवरि फिर जीवित हो जायगी तो मैं उसे तुम्हें ही अर्पित कर दूँगी। मैं तुम्हारे पैरों पड़ती हूँ, विनती करती हूँ, तुम्हें संसार में यश प्राप्त होगा, यदि तुम आकर मेरी पुत्री को जीवन दान दोगे।" सखियों ने गोकुल आकर यशोदा से कीर्ति का यह संदेश कहा और कृष्ण को अपने साथ कर देने की प्रार्थना की। यशोदा ने बड़ी प्रसन्नता के साथ कृष्ण को बुला कर सब समाचार सुनाया और उनसे शीघ्र राधा के यहाँ जाने को कहा। कृष्ण ने बरसाने पहुँचकर अपने दर्शन से ही राधा का विष हर लिया। कीर्ति ने पारस्परिक स्नेह देखकर दोनों की सगाई की अनुमति दे दी। राधा ने कृष्ण के साथ रासलीला में प्रमुख भाग लिया था। कृष्ण जब अक्रूर के द्वारा कंस का निमंत्रण पाकर मथुरा गये थे तो राधा को ही सबसे अधिक वियोग का भार सहन करना पड़ा था, जो संभवतः उनके जीवन-पर्यंत रहा। मथुरा छोड़कर कृष्ण द्वारिका को चले गये थे और वहाँ पर उनके साथ रुक्मिणी के होने की कथा मिलती

है। फिर भी राधा का नाम ही कृष्ण के साथ अधिकतर लिया जाता है।

रामचन्द्र–अयोध्या के इक्ष्वाकुवंशी महाराज दशरथ के पुत्र। यह विष्णु के मर्यादापुरुषोत्तम अवतार के रूप में स्वीकृत हैं। इनका जन्म कौशल्या के गर्भ से हुआ था और ऋषि वसिष्ठ ने इन्हें शिक्षा दी थी। जब यह बालक ही थे तो ऋषि विश्वामित्र इन्हें अपने आश्रम की रक्षा के लिए लक्ष्मण के साथ माँगकर ले गये थे। आश्रम की ओर जाते हुए इन्होंने ताड़का तथा सुबाहु का बध किया था तथा मारीच को अपने बाण से दक्षिणापथ की ओर धावित कर दिया था। ऋषि विश्वामित्र के आश्रम में रहकर इन्होंने शस्त्रविद्या का विशेष अध्ययन किया था। विदेहराज जनक के यहाँ सीता के विवाह के लिए जब धनुषयज्ञ का आयोजन हुआ था तो विश्वामित्र जी इन्हें वहीं लेकर उपस्थित हुए थे। उन्हीं की आज्ञा से यह शिव-धनुष की प्रत्यंचा चढ़ाने के लिए चले थे। एक बार के ही प्रयत्न में इन्होंने शिव-धनुष को उठा लिया था; किंतु जब वह उसमें प्रत्यंचा चढ़ा रहे थे तो वह टूट गया था। फिर भी प्रतिज्ञा पूर्ण हो चुकी थी। अयोध्या में महाराज दशरथ को समाचार भेजा गया और बंधु-बांधवों के साथ उनके मिथिला आने पर रामचंद्र ने सीता का पाणिग्रहण किया। अयोध्या आने पर महाराज दशरथ ने इनके राज्याभिषेक की तैयारी प्रारम्भ करा दी। मंथरा नाम की एक दुष्टा दासी के कहने पर रानी कैकेयी ने महाराज दशरथ से राम को चौदह वर्ष का वनवास तथा भरत का राज्याभिषेक करने को कहा। महाराज दशरथ वचन-बद्ध थे। रामचन्द्र ने सहर्ष वनवास स्वीकार किया और गैरिक वसन धारण कर वन की ओर चल दिये। उनके साथ उनकी अर्द्धांगिनी सीता तथा अनुज लक्ष्मण भी चले। भरत उस समय अपने ननिहाल में थे। अयोध्या आने पर तथा सभी बातें ज्ञात होने पर उन्होंने सिंहासन पर बैठना अस्वीकार किया और राम को वापस बुलाने के लिए वन की ओर चल दिये। राम ने उन्हें यह समझा-बुझाकर वापस कर दिया कि वह पिता की आज्ञा से वनवास के लिए आये हैं और चौदह वर्ष की अवधि पूर्ण होने पर ही अयोध्या लौटेंगे। भरत ने अयोध्या लौटकर रामचन्द्र की चरण-पादुकाओं को सिंहासन पर रखकर राजकार्य आरंभ किया। रामचन्द्र वन पर्वतों में तथा ऋषियों के आश्रमों में घूमते रहे। एक स्थान पर सूर्पणखा नामक एक राक्षसी ने एक सुन्दरी के रूप में उपस्थित होकर उनसे अपने साथ विवाह की याचना की। उन्होंने पहले तो उसे समझाने-बुझाने का प्रयत्न किया किंतु बाद को लक्ष्मण से कहकर उसके नाक-कान कटवा लिये। उसने जाकर दक्षिणापथ में रहने वाले राक्षसों, खर और दूषण को अपनी कथा सुनाई और उनसे राम के साथ युद्ध करने के लिए कहा। वह दोनों रामचन्द्र के साथ युद्ध करने के लिए आये और उनके बाणों से मृत्यु को प्राप्त हुए। शूर्पणखा ने यह सब समाचार रावण को दिया तब वह आकर किसी प्रकार सीता को दंडकारण्य से हर ले गया। राम ने लक्ष्मण के साथ सीता को खोजना प्रारंभ किया। आश्रम से कुछ दूर जाकर उन्हें जटाऊ नामक एक गिद्धराज मिला जो पथ पर क्षत-विक्षत होकर पड़ा हुआ था। उसने बताया कि सीता को लंकाधिपति रावण हर ले गया है। उसके बाद हनुमान के प्रयत्न से रामचन्द्र ने सुग्रीव से मित्रता की तथा उसके भाई बालि का बधकर उसे दक्षिणापथ का अधिपति बनाया। सुग्रीव ने सीता की खोज के लिए दूत भेजे। कुछ दिनों बाद हनुमान ने आकर समाचार दिया कि सीता लंका में रावण के यहाँ अशोक-बाटिका में वंदिनी हैं। राम ने वानर तथा भल्लुकों की सेना लेकर लंका पर आक्रमण किया। रावण का छोटा भाई विभीषण आकर रामचन्द्र से मिल गया। उसकी सहायता तथा अपने युद्ध-कौशल से उन्होंने पुत्र-पौत्रों सहित रावण का बध किया और विभीषण को लंका का राज्य दिया। सीता को मुक्त कराकर वह पुष्पक विमान से अयोध्या वापस आये। वनवास की अवधि पूर्ण हो चुकी थी। उनका राज्याभिषेक हुआ और उन्होंने राज्य-संचालन प्रारम्भ किया। एक बार एक साधारण-सी प्रजा ने जब सीता के चरित्र पर रावण के यहाँ रहने के कारण संदेह किया तो इन्होंने सीता को लक्ष्मण से कहकर वन में छुड़वा दिया। सीता जा कर ऋषि वाल्मीकि के आश्रम में रहने लगीं। वहीं उनके लव तथा कुश नामक दो पुत्र हुए। रामचंद्र ने अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया। लव तथा कुश ने यज्ञ के अश्व को रोक लिया और उसके सभी रक्षकों को युद्ध में पराजित कर दिया। रामचंद्र जी स्वयं आये और वहाँ उन्हें किसी प्रकार यह ज्ञात हो गया कि यह लव तथा कुश उनके ही पुत्र हैं। उन्होंने सीता को भी पहचाना और उनसे अयोध्या वापस चलने के लिए कहा। सीता ने एक बार परित्यक्त होकर उनके साथ जाना अस्वीकार किया और पृथ्वी में समा कर अपने प्राण दे दिया। रामचंद्र लव तथा कुश को लेकर अयोध्या आये और उन्हें राजकार्य सौंप कर स्वर्ग चल दिये।

रामदास–एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। अकबरी दरबार के २० प्रधान कलाकारों में इनका भी नाम है। ये सूरदास के पिता कहे जाते हैं; किन्तु ये सूरदास कौन हैं, कहा नहीं जा सकता। भारतीय संगीत में इनकी गणना, तानसेन तथा बैजू आदि के साथ की जाती है।

रामानंद–रामानंदी सम्प्रदाय के प्रवर्तक। लोक प्रसिद्ध है कि ये रामानुज के शिष्य थे। साधारणतः १४वीं या १५वीं शताब्दी ही इनका आविर्भाव काल माना जाता है। रामानुज सम्प्रदाय के सभी बन्धनों को इन्होंने शिथिल कर दिया। ये नीच जाति के लोगों को भी दीक्षित करते थे। इनके ग्रन्थ संस्कृत में हैं केवल एक पद हिन्दी में मिला है। तुलसी और कबीर रामानन्द के ही शिष्य थे।

रामानुज–वैष्णव भक्ति के प्रचारक चार आचार्यों में से एक। इनका जन्म हारीत गोत्रीय ब्राह्मण वंश में भूतपुरी में हुआ था। यह स्थान मद्रास के चंगलपत जिले में है। इनकी जन्म तिथि १०१७ ई० मानी जाती है। १६ वर्ष की अवस्था में ही इनका विवाह हुआ। उसके कुछ ही

दिनों के बाद इनके पिता का देहान्त हो गया। इसके बाद इन्होंने वैराग्य ले लिया। पूर्णाचार्य जी इनके दीक्षा गुरु थे। रामानुज ने विशिष्टाद्वैत मत का प्रचार किया। इनके मुख्य ग्रन्थ हैं–१ वेदांत सूत्र पर श्री भाष्य, २. वेदांत संग्रह ३. वेदांत प्रदीप ४. वेदांत सार तथा ५. गीता भाष्य। इनके ७४ शिष्य प्रसिद्ध हैं। दे० 'यामुनाचार्य' तथा 'पूर्णाचार्य'।

रावण–प्रसिद्ध राक्षस, पुलस्त्य का नाती, लंका का राजा तथा राम का शत्रु। इसी के बध के लिए राम ने अवतार ग्रहण किया। रावण प्रकांड पंडित, बुद्धिवादी और बड़ा भारी शिव भक्त था। राम रावण का युद्ध भारतीय इतिहास में अति प्रसिद्ध घटना है। दे० 'जय-विजय', 'राम' तथा 'सीता'।

राहु–एक असुर। इसकी माता का नाम सिंहिका तथा पिता का नाम विप्रचित्ति मिलता है। कहा जाता है कि समुद्र मंथन के बाद विष्णु जब मोहनी का रूप धारण कर, देवताओं के बीच अमृत का वितरण कर रहे थे तो इसने भी देवताओं में सम्मिलित होकर अमृत पान कर लिया था। सूर्य और चंद्र ने उसके इस कृत्य को देख लिया था और विष्णु को उसका समाचार दे दिया था। विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से इसका सर धड़ से अलग कर दिया था, किन्तु अमृतपान से अमर हो जाने के कारण यह दो भागों में भी जीवित रहा। मस्तक 'राहु' तथा कबंध 'केतु' के नाम से विख्यात है। इस घटना के आधार पर सूर्य तथा चंद्र के प्रति उसकी शत्रुता का जन्म भी माना जाता है कि राहु अपनी इसी शत्रुता को सूर्य तथा चंद्र के ग्रहण के रूप में व्यक्त करता है। राहु आठ अश्वों के धूमिल रथ पर आसीन माना जाता है। ग्रहण के समन वह अपने इसी रथ पर पवन-वेग के अश्वों द्वारा परिचालित होकर सूर्य अथवा चन्द्र की ओर अग्रसर होता है।

रुक्म–दे० 'रुक्मी'।

रुक्मिणी–विदर्भराज भीष्मक की पुत्री। यह लक्ष्मी के अवतार के रूप में स्वीकृत हैं। इनके सौंदर्य की प्रशंसा सुनकर कृष्ण इनके प्रति अनुरक्त हो गए थे। कृष्ण के सुंदर स्वरूप तथा वीरता आदि का समाचार सुनकर इन्होंने भी अपने मन मन्दिर के देवता के रूप में उनको प्रतिष्ठित कर लिया था। किंतु इनके पिता ने जरासंध के कहने पर शिशुपाल के साथ इनका पाणिग्रहण करने की बात स्वीकार कर ली थी। इनका भाई रुक्मी भी इस विषय में अपने पिता के साथ सहमत था। योग्य वय होने पर कुंडिनपुर में विवाह का आयोजन होने लगा। शिशुपाल अपने मातृपक्ष से कृष्ण के साथ भाई के रूप में संबंधित था; इसलिए कृष्ण भी बलराम को लेकर कुंडिनपुर पहुँच गए। विवाह के एक दिन पूर्व संध्या समय जब रुक्मिणी इंद्राणी की पूजा के लिए मंदिर के भीतर गई तो कृष्ण भी मंदिर के द्वार पर पहुँच गए और रुक्मिणी को अपने रथ पर बिठा कर चल दिए। जब शिशुपाल तथा रुक्मी आदि को यह समाचार मिला तो उन्होंने कृष्ण का पीछा किया और समीप पहुँच कर आक्रमण भी कर दिया। कृष्ण ने अपने पराक्रम से सभी को पराजित किया। कहा जाता है यह युद्ध नर्मदा के तट पर हुआ था और रुक्मी उसमें मूच्छित होकर गिर पड़ा था। किंतु रुक्मिणी के कहने पर कृष्ण ने उसका वध नहीं किया था। द्वारिका पहुँच कर कृष्ण ने रुक्मिणी के साथ शास्त्रोक्त रीति से विवाह किया और उन्हें अपनी प्रधान महिषी बनाया। रुक्मिणी के गर्भ से कृष्ण के दस पुत्र हुए थे और एक कन्या। रुक्मिणी के पुत्रों के नाम प्रद्युम्न, चारुदेष्ण, सुषेण आदि हैं।

रुक्मी–विदर्भराज भीष्मक का पुत्र तथा रुक्मिणी का भाई। यह कंस का घनिष्ठ मित्र था। कृष्ण ने जब रुक्मिणी की सुंदरता की प्रशंसा सुन कर महाराज भीष्मक के पास अपने साथ रुक्मिणी का विवाह कर देने की बात कहलाई थी तो इसी ने अपने पिता से कह कर कृष्ण को अस्वीकृति भिजवा दी थी। कृष्ण के साथ अपनी बहन का विवाह, अपने मित्र कंस का घाती होने के कारण, यह नहीं करना चाहता था। जब शिशुपाल के साथ रुक्मिणी के विवाह के अवसर पर कृष्ण ने उपस्थित होकर मंदिर के द्वार से रुक्मिणी का हरण कर लिया था तो इसने आवेश में आकर अपने पिता से कह डाला था कि मैं कृष्ण का वध करने के बाद ही घर आऊँगा। किंतु कृष्ण के साथ युद्ध होने पर यह स्वयं ही मूच्छित होकर गिर पड़ा था और इसकी बहन को कृष्ण से इसके जीवनदान करने के लिए कहना पड़ा था। चेतना प्राप्त करने पर इसने पूर्वोक्त वचन के अनुसार कुंडिनपुर की ओर कदम नहीं बढ़ाए वरन् भोजराज नामक एक दूसरा नगर प्रतिष्ठित कर उसमें रहने का निश्चय किया।

रुद्र–साधारणत: रुद्र शब्द शिव का पर्याय है। रुद्र एक वैदिक देवता भी हैं। रुद्र की उत्पत्ति के विषय में भिन्न-भिन्न पुराणों में भिन्न-भिन्न कथायें मिलती हैं। कहा जाता है कि ब्रह्मा ने क्रुद्ध होकर अपने एक केश से एक पुरुष की सृष्टि की जो जन्म लेते ही विकराल शब्द कर के रोया। इसीलिए उसका नाम रुद्र हो गया। ब्रह्मा ने इन्हें सृष्टि रचने को कहा लेकिन इन्होंने बड़ी तामसी सृष्टि रच डाली। इसीलिए इन्हें केवल सृष्टि-संहार का कार्य दिया गया। दे० 'शिव'।

रूप गोस्वामी–चैतन्य महाप्रभु के प्रधान शिष्य। इनके भाई 'सनातन' भी चैतन्य के प्रधान शिष्य थे। वृन्दावन आदि में चैतन्य मत का इन्होंने बहुत प्रचार किया।

रेणुका–राजा प्रसेनजित की कन्या, जमदग्नि की पत्नी और परशुराम की माँ। जल-विहार करते समय चित्ररथ पर मोहित हो उन्होंने इससे व्यभिचार किया। घर लौटने पर जमदग्नि अपने योगबल से यह सब जान गये और अपने पुत्रों को इसका सिर काटने को कहा। तीन पुत्रों ने अस्वीकार किया किंतु परशुराम ने सिर काट डाला। बाद में परशुराम के कहने से जमदग्नि ने इनको जीवित कर दिया। दे० 'परशुराम'।

रेवती–राजा रेवत की पुत्री तथा श्रीकृष्ण के भाई बलदेव की पत्नी। दे० 'बलराम'।

रैदास--रामानंद की शिष्य-परंपरा के एक प्रसिद्ध संत तथा कवि। ये जाति के चमार थे। कहा जाता है कि मीरा-बाई ने इनका शिष्यत्व ग्रहण किया था। इनकी माता का नाम घुरबिनिया और पिता का नाम रघू था। ये कबीर के समकालीन थे इन्होंने अपना एक मत भी चलाया।

रूपलता--एक गोपी जो राधा की सखी थी।

रोहिणी--वसुदेव की अर्द्धांगिनी तथा बलराम की माता। इन्होंने देवकी के सातवें गर्भ को दैवी विधान से धारण कर लिया था और उसी से बलराम की उत्पत्ति हुई थी। यदुवंश का नाश होने पर जब वसुदेव ने द्वारिका में शरीर-त्याग किया था तो यह उनके साथ सती हुई थीं। वसुदेव जिस समय देवकी के साथ मथुरा में कारागृह में बंदी थे उस समय यह नंद के यहाँ थीं और वहीं इन्होंने बलराम को जन्म दिया था।

रौरव--एक भीषण नरक। दे० 'नरक'।

लंका--एक द्वीप का नाम। यह रावण की राजधानी थी। त्रिकूट पर्वत पर बसी यह नगरी स्वर्णनिर्मित थी।

लकिनी--एक राक्षसी का नाम।

लक्ष्मण--१. दाशरथि राम के छोटे भाई। ये सुमित्रा के पुत्र और उर्मिला के पति थे। १४ वर्षों तक इन्होंने कठिन व्रत साधना कर राम-वनवास के समय राम और सीता की सेवा की। मेघनाथ की शक्ति लगने पर ये मूच्छित हुए, किंतु संजीवनी बूटी से पुन: जीवित हो गये। इन्होंने ही मेघनाथ का वध किया। २. एक प्रसिद्ध मध्यकालीन वैष्णव भक्त।

लक्ष्मी--विष्णु की पत्नी। समुद्र-मंथन के फलस्वरूप निकले हुए १४ रत्नों में से यह भी एक थीं। यह शब्द ऋग्वेद में प्रयुक्त हुआ है। वहाँ इसका शब्दार्थ सौभाग्यवती है। अथर्ववेद में सौभाग्य और दुर्भाग्य के अर्थ में भी प्रयुक्त हुआ है। तैत्तरीय उपनिषद् में लक्ष्मी और श्री को आदित्य की पत्नी कहा गया है। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार प्रजापति ने श्री को जन्म दिया। पौराणिक साहित्य में इनकी उत्पत्ति के विषय में अनेक गाथायें मिलती हैं। ये धन की अधिष्ठात्री देवी हैं। इनका वाहन उल्लू है। सीता और रुक्मिणी इन्हीं की अवतार कही गईं हैं।

लक्ष्मीबाई--१. एक प्रसिद्ध हरिभक्ति परायणा महिला। २. झाँसी की रानी जो गदर में अंग्रेजों के हाथ से मारी गईं।

लखा--एक प्रसिद्ध मध्यकालीन हरिभक्ति परायण महिला।

लघुजन--मथुरा के एक प्रसिद्ध राजवंशीय वैष्णव भक्त।

लड्डू--एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। एक बार बंगाल में कुछ शाक्त लोग इनकी बलि चढ़ाने जा रहे थे, किंतु देवी ने स्वयं प्रकट हो बहुतों का सिर काट डाला। शेष लोग फिर वैष्णव हो गये।

ललिता--एक गोपी जो राधा की सखी थी।

लव--दे० 'कुश'।

लाखाजी--मारवाड़-निवासी, जाति के डोम, एक परम भक्त। लोग इन्हें हनुमान-वंशी कहते थे। मारवाड़ से साष्टांग दंडवत करते हुये जगन्नाथ पुरी गये। प्रसिद्ध ये कि जगन्नाथ जी ने इन्हें अपनी पालकी भेजी थी। बड़े-बड़े राजे इनका दर्शन करने आते थे।

लालाचार्य--एक प्रमुख वैष्णव भक्त। कहा जाता है कि ये स्वामी रामानुज के जामाता थे। ये सब संतों को अपना भाई मानते थे। इन्होंने एक बार माला पहिने एक शव देखा। उसे अपने घर ले आये और विधिवत उसका अंतिम संस्कार किया।

लिंगपुराण--अष्टादश महापुराणों में से एक। श्लोक संख्या ११००० है तथा प्रकृति तामसी कही गई है। इसका अधि-कांश भाग विधि-विधान और कर्मकांड से पूर्ण है। लिंग पूजा इसका मुख्य भाग है; पर भौतिक लिंग पूजा के अर्थ में नहीं है। यह ८वीं सदी से पहिले का नहीं है।

लोमश--प्रसिद्ध ऋषि। इनकी दीर्घायु प्रसिद्ध है। कई कल्पों तक इन्होंने तप किया और कई अवतारों के चमत्कार देखे। इनका नाम चिरंजीवी भी है।

वरुण--एक प्रधान वैदिक देवता। ये जल के अधिपति कहे गये हैं। पुराणों में इनकी गणना दिग्पालों में की गई है। ये पच्छिम दिशा के दिग्पाल हैं। पुराणों के अनुसार वरुण कश्यप के पुत्र हैं। वरुण वर्तमान समय में भी धार्मिक जनता के द्वारा जल के देवता माने जाते हैं। साहित्य में ये करुण रस देवता कहे गए हैं।

वलि--राजा वैरोचन के पुत्र तथा प्रह्लाद के पौत्र। ये प्रसिद्ध दानी और भक्त थे। इन्होंने ९९ यज्ञ किये थे। १००वें यज्ञ के समय इंद्र भयभीत हुए कि कहीं उनका इंद्रासन न छिन जाय। उनके प्रार्थना करने पर विष्णु ने बावन अंगुल का रूप धर इनसे साढ़े तीन पग पृथ्वी दान माँगी। दान पाकर विराट रूप धर उन्होंने पृथ्वी, आकाश और पाताल को नाप लिया। आधे पग के लिये बलि ने कहा कि मेरा आधा शरीर नाप लें। इस पर ब्राह्मण रूप छोड़ विष्णु साक्षात् रूप में प्रकट हुये और बलि को मुँह-माँगा बरदान दिया। दे० 'वामन'।

वसिष्ठ--प्रसिद्ध वैदिक ऋषि। सप्तर्षियों तथा प्रजापतियों में से एक। विश्वामित्र से इनकी प्रतिद्वंदिता प्रसिद्ध है। इनके पास नन्दिनी नामक कामधेनु थी उसी के स्वामी होने के कारण इनका नाम वसिष्ठ (सर्वस्व के स्वामी) पड़ा। ये ब्रह्मा के मानस पुत्र भी कहे जाते हैं। कहा जाता है कि एक बार मित्रावरुण का उर्वशी को देखकर वीर्यपात हो गया और उससे अगस्त्य और वसिष्ठ की उत्पत्ति हुई। वसिष्ठ सूर्यवंश के पुरोहित थे। इनकी स्त्री का नाम अरुंधती था।

वसुदेव--श्रीकृष्ण के पिता का नाम। ये कंस के बहनोई थे। इनकी पत्नी देवकी कंस की बहन थीं। दे० 'कृष्ण' 'देवकी' तथा कंस'।

वामन पुराण--१८ पुराणों में से ११ वाँ पुराण। इसकी श्लोक संख्या १०००० मानी गई है। मुख्यत: इसमें विष्णु के वामन अवतार की कथा है। इसकी रचना १६

वीं शताब्दी में हुई है। पुराणों के पंच लक्षणों में से एक भी लक्षण इसमें नहीं मिलते हैं।

वाराह–विष्णु के अवतारों में से द्वितीय। हिरण्याक्ष जब पृथ्वी को लेकर पाताल को भागा तभी पृथ्वी का उद्धार करने के लिए विष्णु का यह अवतार हुआ था। दे० 'हिरण्याक्ष' तथा 'जय-विजय'।

वाराहपुराण–१८ पुराणों में एक पुराण। इसको स्वयं विष्णु ने कहा है। इसकी प्रकृति सात्विक है। इसमें विष्णु के वाराह अवतार की कथा मुख्य है। इसका रचना काल सम्भवतः १२वीं शताब्दि है। वास्तविक श्लोक संख्या १०००० है।

वासव–दे० 'इंद्र'।

वासुकी–पाताल में रहने वाले नागराज। समुद्र-मंथन के समय देवासुरों ने रज्जु के रूप में इनका उपयोग किया था। दे० 'शेष'।

विंध्यावली–प्रसिद्ध राजा बलि की पत्नी।

विजय–दे० 'जय-विजय'।

विट्ठलनाथ–प्रसिद्ध वैष्णवाचार्य बल्लभाचार्य के पुत्र तथा पुष्टि मार्ग के प्रथम उत्तराधिकारी। 'दो सौ बावन वैष्णव की वार्ता' तथा 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' के रचयिता अथवा संकलनकर्ता यही कहे जाते हैं, यद्यपि यह मत सर्वमान्य नहीं है। इनके सात पुत्र थे।

विदुर–१. व्यास के औरस पुत्र जो दासी के गर्भ से उत्पन्न थे। धृतराष्ट्र और पांडु के भाई थे। धृतराष्ट्र के शासन काल में ये सदैव न्यायपूर्ण और सत्य परामर्श देते आये। महाभारत युद्ध रोकने का इन्होंने भरसक प्रयत्न किया पर इनकी न चली। दुर्योधन के यहाँ समझौता कराने के लिये आते समय कृष्ण विदुर के यहाँ ही ठहरे थे, दुर्योधन के यहाँ नहीं। दे० 'अंबिका', 'पांडु' तथा 'धृतराष्ट्र'। २. जोधपुर के एक प्रसिद्ध भक्त। भक्तमाल में इनका वर्णन है।

विदुरानी–परम नीतिज्ञ विदुर की पत्नी। यह कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम रखती थीं। घर आने पर प्रेमातुर हो इन्होंने केले का छिलका कृष्ण को खिलाया और सार फेंकती गईं। कृष्ण भी प्रेम से खाते गये।

विदेह–मिथिला के राजा। सीता का जन्म इसी वंश में हुआ था। दे० 'निमि'।

विद्यापति–वैष्णव भक्त तथा विख्यात मैथिल कवि। इनके पिता का नाम गणपति तथा पितामह का जयदत्त था। मिथिलानरेश कीर्तिसिंह के यहाँ ये राज्यकवि थे। ये चंडीदास के समसामयिक थे तथा संस्कृत, मैथिल एवं बंगला के विद्वान् थे। इनकी भाषा पूर्वी हिन्दी तथा मैथिली है। संस्कृत के १३ ग्रन्थों की रचना इन्होंने की है, जिनमें पुरुष-परीक्षा, शैव सर्वस्व सार, दुर्गा तरंगिणी आदि उल्लेखनीय हैं। मैथिली में इनकी पदावली उच्चकोटि के साहित्य में गिनी जाती है। ये भक्त थे, या शृंगारी कवि थे इस पर विद्वानों में मतभेद है।

विभीषण–रावण के छोटे भाई। राक्षस कुल में जन्म होने पर भी ये हरिभक्त थे। सीता को लौटा देने के लिए जब इन्होंने कहा तो रावण ने लात मारकर इन्हें निकाल दिया। तब ये राम की शरण में आये। राम ने उसी समय इन्हें लंका का राज्य दे दिया। इन्होंने रावण की मृत्यु का रहस्य बतलाया था। रावण के मरने के बाद यही लंकेश हुए।

विमला--राधा की एक सखी।

विरोचन--एक दैत्य। प्रह्लाद का पुत्र तथा बलि का पिता। कहा जाता है जब गाय-रूपी पृथ्वी का दुग्ध निकाला गया था तो इसने असुरों के वत्स (बछड़े) का कार्य किया था।

विश्वरूप--त्वष्टा के पुत्र का नाम। ये इंद्र के गुरु थे पर कालांतर में इंद्र द्वारा ही इनकी हत्या हुई। इस हत्या के चार अंश पृथ्वी, जल, वृक्ष और नारी में पड़े जिससे ऊसर, काई, गोंद और आर्तव की उत्पत्ति हुई। इनके पिता ने इनकी मृत्यु से क्रुद्ध हो वृत्रासुर की उत्पत्ति की।

विश्वामित्र--एक ऋषि। ऋग्वेद के अनेक मंत्रों के निर्माता। ऋग्वेद में इनका उल्लेख कुश वंश के महाराज कुशिक के पुत्र के रूप में मिलता है। किंतु बाद के साहित्य में यह पुरुवंशी महाराज गाधि के पुत्र कहे गये हैं। कहा जाता है, सबसे पहले महाराज गाधि के सत्यवती नाम की एक कन्या उत्पन्न हुई थी। उसे उन्होंने ऋषि ऋचीक को समर्पित कर दी थी। इन्हीं ऋचीक ने एक बार अपनी स्त्री सत्यवती को दो चरु लाकर दिए और कहा था कि इनमें से यह एक चरु तुम खालो, उससे तुम्हें ब्राह्मणगुण संपन्न एक पुत्र होगा और यह दूसरा चरु अपनी माता को भिजवा दो। इससे उन्हें क्षत्रियगुण-संपन्न एक तेजस्वी पुत्र प्राप्त होगा। ऋषि के यह कह कर चले जाते ही महाराज गाधि अपनी स्त्री सहित उनके आश्रम में उपस्थित हुए। सत्यवती ने अपनी माता तथा पिता का समुचित रूप से स्वागत किया और अपनी माता के सम्मुख ऋषि के दिये हुए दोनों चरु लाकर रख दिये। सत्यवती की माता ने यह सोचकर कि उन्होंने अपनी पत्नी को ही अच्छा चरु दिया होगा। वह चरु जो ऋचीक ने अपनी स्त्री के लिए दिया था, खा लिया। इस चरु के कारण उनको ब्राह्मणगुण-संपन्न विश्वरथ नाम का एक पुत्र हुआ। यही विश्वरथ आगे चल कर अपने ब्राह्म तेज के कारण विश्वामित्र की संज्ञा से संबोधित हुए। सत्यवती को दूसरा चरु खाना पड़ा था, जिससे उनके क्षत्रियगुण-संपन्न जमदग्नि नामक पुत्र हुआ था। विश्वामित्र के जीवन के संबंध में जितनी कथाएँ प्रचलित हैं उनमें सबसे प्रधान ब्रह्मर्षि वसिष्ठ के प्रति उनकी प्रतिद्वंद्विता की है। ऋग्वेद में भी इस संबंध के कुछ उल्लेख मिलते हैं। दोनों ही महर्षि थे और दोनों ने वैदिक ऋचाओं का निर्माण किया था। विश्वामित्र की ऋचाएँ ऋग्वेद के तृतीय मंडल में मिलती हैं, जिसमें गायत्री-मंत्र भी है। वसिष्ठ ने सप्तम मंडल की ऋचाओं का निर्माण किया था। महाराज सुदास के यहाँ राज-पुरोहित के रूप में विश्वामित्र तथा वसिष्ठ दोनों के ही रहने का उल्लेख मिलता है। वसिष्ठ, विश्वामित्र को

क्षत्रिय कुल में उत्पन्न होने के कारण हीन दृष्टि से देखते थे। विश्वामित्र अपने को स्वयं वसिष्ठ के मुख से ब्रह्मर्षि कहलाना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने वसिष्ठ पर बल-प्रयोग भी किया था। उनके सौ पुत्रों का वध कर डाला था। कहा जाता है कि वसिष्ठ ने भी इस पर क्रोधित होकर उनके भी पुत्र का वध कर दिया था। महाभारत में एक कथा है कि एक बार विश्वामित्र ने गंगा से भी वसिष्ठ को लाने के लिए कहा था, किन्तु जब गंगा उन्हें उनके पास नहीं लाई वरन् उनकी पहुँच के बाहर एक सुरक्षित स्थान में पहुँचा आई थीं तो इन्होंने गंगा की धारा को रक्तमय कर दिया था। रामायण में वसिष्ठ के प्रति इनकी प्रतिद्वंद्विता की कथा दूसरी प्रकार से वर्णित है। महाराज के रूप में यह प्रायः वसिष्ठ के आश्रम में आया करते थे। एक बार इन्होंने वसिष्ठ की एक सुन्दर कामधेनु को बिना पूछे खोलकर अपने यहाँ ले जाने का प्रयत्न किया, किन्तु कामधेनु अपनी अर्गला तुड़ाकर भाग गई। जब इन्होंने उसे यत्नपूर्वक ले जाने का प्रयत्न किया तो वसिष्ठ के पुत्रों ने इनका मार्ग रोका। युद्ध आरम्भ हुआ, जिसमें इन्होंने वसिष्ठ के पुत्रों का वध कर डाला। उसके बाद स्वयं वसिष्ठ ने उपस्थित होकर इन्हें पराजित किया। क्षत्रिय को ब्रह्मतेज के सम्मुख अपनी पराजय स्वीकार करनी पड़ी। इस प्रकार अपमानित होकर उन्होंने घोर तपस्या के द्वारा अपने को ब्राह्मण वर्ण में परिवर्तित करने का प्रयत्न किया। जब यह घोर तपस्या में निरत थे तो ताड़का राक्षसी तथा उसके पुत्रों ने इन्हें बहुत कष्ट देना आरम्भ किया। उनसे अपनी रक्षा करने के लिए यही राम तथा लक्ष्मण को दशरथ से कहकर अपने आश्रम लिवा ले गये थे तथा मार्ग में ताड़का का वध कराया था। विश्वामित्र ही राम तथा लक्ष्मण को अपने आश्रम से धनुषयज्ञ के समय जनक के यहाँ लिवा ले गये थे तथा राम के द्वारा धनुर्भंग कराकर सीता के साथ उनके विवाह में सहायक हुए थे। विश्वामित्र ने वसिष्ठ के प्रति अपनी प्रतिद्वंद्विता की भावना के वशीभूत होकर ही एक बार त्रिशंकु को वसिष्ठ के अस्वीकार करने पर भी सदेह स्वर्ग भेज दिया था। इनकी घोर तपस्या को देख कर एक बार इन्द्र भी विचलित हो गये थे और इस भय से कि कहीं विशेष शक्ति का संग्रह कर यह मुझसे इन्द्रत्व न छीन लें मेनका को इनकी तपस्या भङ्ग करने के लिए भेजा था। विश्वामित्र का ध्यान भङ्ग हुआ था और मेनका के प्रति वह आकर्षित हुए थे। उसी के फलस्वरूप शकुन्तला का जन्म हुआ था। विश्वामित्र को अपने इस कृत्य से इतनी ग्लानि हुई थी कि वे अपने पूर्व-स्थान छोड़कर हिमालय में तपस्या करने चले गये थे। अन्त में देवताओं के कहने पर वसिष्ठ ने इन्हें ब्रह्मर्षि के रूप में स्वीकार कर लिया था।

विष्णु—हिन्दू त्रिदेवों में इनका द्वितीय स्थान है। ऋग्वेद में इनका उल्लेख प्रमुख देवताओं में नहीं मिलता, किन्तु ब्राह्मण-ग्रन्थों में, इन्हें विशेष महत्व प्रदान किया गया है। ऋग्वेद में इनका उल्लेख त्रि-विक्रम अर्थात् तीन डगों में समस्त विश्व का अतिक्रमण करनेवाले के रूप में हुआ है। इन तीन डगों की व्याख्या विद्वानों ने अग्नि, विद्युत् तथा सूर्य-प्रकाश की अभिव्यक्तियों के रूप में की है। कुछ अन्य विद्वानों ने सूर्य के उदय, आकाश में स्थिति तथा अस्त होने को ही तीन डगों के रूप में स्वीकार किया है। सम्भवतः इसी कथा को पुराणों में वामन के तीन डगों में विस्तृत किया गया है। मनु ने अपनी स्मृति में भी इनका उल्लेख किया है, किन्तु उसमें भी केवल एक बड़े देवता के रूप में ही। महाभारत में इन्हें त्रिदेवों में स्वीकार किया गया है। ब्रह्मा सृष्टि के निर्माता हैं, विष्णु उसके पालनकर्त्ता हैं और शिव अथवा रुद्र संहार करनेवाले। कुछ स्थानों में इनका वर्णन प्रजापति के रूप में मिलता है और त्रिदेव केवल इनकी तीन अवस्थाओं के रूप में स्वीकार किये गये हैं। इस प्रकार विष्णु ही त्रिदेवों में सर्वप्रमुख स्थान पाते हैं। इनका निवास-स्थान क्षीरसागर माना जाता है, जहाँ इन्हें शेषनाग की शैया पर लक्ष्मी के साथ शयन करते हुए चित्रित किया गया है। इसी अवस्था में इनकी नाभि से एक कमल की उत्पत्ति हुई थी और उस पर ब्रह्मा का जन्म हुआ था। विष्णु में सत्व-गुण की प्रधानता मानी जाती है। अपने इसी गुण के आधार पर तथा जीवमात्र का पालन करनेवाला होने के कारण इनके संसार में २४ बार अवतरित होने की भी कथाएँ मिलती हैं। ऋग्वेद तथा शतपथ ब्राह्मण में इनके सम्बन्ध में कुछ ऐसी कथाएँ हैं जिन्हें आगे चलकर पुराणों में वाराह, मत्स्य, कूर्म तथा वामन आदि अवतारों के रूप में विकसित किया गया है। विष्णु के यह अवतार निम्नलिखित हैं—ब्रह्मा, वाराह, नारद, नरनारायण, कपिल, दत्तात्रेय यज्ञ, ऋषभ, प्रभु, मत्स्य, कूर्म, धन्वंतरि, मोहिनी, नृसिंह, वामन, परशुराम, वेदव्यास, राम, बलराम, कृष्ण, बुद्ध, हंस, हयग्रीव तथा कल्कि। इनमें से अन्तिम कल्कि अभी होने को कहा जाता है। किन्तु इन २४ अवतारों में प्रधानता १० को ही दी जाती है—मत्स्य, कच्छप, वाराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध और कल्कि। देवासुर के समुद्र-मंथन के समय सुमेरु को जल में धारण करने के लिए इन्होंने कछुए का रूप धारण किया था और उसके द्वारा जो लक्ष्मी, एक सौन्दर्यमयी रमणी, प्राप्त हुई थी उसे अपनी अर्धांगिनी के रूप में स्वीकार किया था। इनकी रूपरेखा के सम्बन्ध में उल्लेख है कि ये श्याम-वर्ण तथा चतुर्भुज हैं और सदा युवा ही रहते हैं। इनके चारों हाथों में शङ्ख, चक्र, गदा तथा पद्म कहे जाते हैं। इनके शङ्ख का नाम पांचजन्य, चक्र का नाम सुदर्शन और गदा का नाम कौमोदकी है। इनके धनुष का नाम शार्ङ्ग तथा तलवार का नाम नंदक है। वैनतेय गरुड़ इनका वाहन माना जाता है। गंगा की उत्पत्ति इन्हीं के चरणों से कही गई है। इनके पर्याय की संख्या सहस्रों तक जाती है।

विष्णु पुराण—अष्टादश में तृतीय महापुराण। इसकी श्लोक संख्या २३००० तथा प्रकृति सात्विक मानी गई है। पुराणों के सबसे अधिक लक्षण विष्णु पुराण में मिलते हैं। प्रकाशित ग्रंथ में केवल ७००० श्लोक हैं। पुराणों में भागवत के बाद इसी का स्थान है।

वीरभद्र–शंकर के गण। सती ने दक्ष यज्ञ में प्राण त्याग दिया। यह सुनकर क्रोध में आ शंकर ने अपनी जटा का एक बाल पृथ्वी पर पटक दिया जिससे वीरभद्र की उत्पत्ति हुई। वीरभद्र ने दक्ष का यज्ञ विध्वंस किया। दे० 'दक्ष' तथा 'सती'।

वृत्र–त्वष्टा ने क्रुद्ध हो अपनी जटा से इसे उत्पन्न किया था। इन्द्र को इसने स्वर्ग से हटा दिया था। पदच्युत इन्द्र ने दधीच की हड्डी से वज्र बनाकर इसका वध किया। दे० 'विश्वरूप', 'इन्द्र' तथा 'त्वष्टा'।

वृंदावन–व्रज-भूमि में गोकुल के समीप स्थित एक वन। कृष्ण ने अपनी अधिकांश बाल-लीलाएँ यहीं की थीं। कंस के द्वारा भेजे गए दानवों का संहार यहीं हुआ था तथा कृष्ण ने गोपियों के साथ रास-नृत्य भी यहीं किया था। मध्य-युग में महमूद गजनवी ने अपनी संहारकारी प्रकृति से इसे सम्पूर्णतः नष्ट करा दिया था। आधुनिक वृन्दावन इस दुर्घटना के बाद चैतन्य महाप्रभु द्वारा बसाया गया था।

वृक–एक दानव।

वृषभानु–राधा के पिता और व्रज के एक प्रसिद्ध गोप। राधा का इसी कारण वृषभानुकुमारि नाम पड़ा है।

वृषली–विचित्रवीर्य की रानियों अम्बिका और अम्बालिका की दासी। धृतराष्ट्र के अन्धे और पांडु के पीले होने के कारण सत्यवती ने जब फिर अम्बालिका को व्यास के पास गर्भ धारण करने के लिये भेजा, तो अम्बालिका ने स्वयं न जाकर अपनी दासी को ही अपने वस्त्र पहना कर भेजा था जिससे विदुर की उत्पत्ति हुई थी।

वृहस्पति–ऋग्वेद में इनका उल्लेख एक देवता के रूप में मिलता है। उसमें इनकी रूपरेखा सप्तमुखी तथा शृंग और पंख-युक्त वर्णित है। इनकी उत्पत्ति अन्तरिक्ष के महातेज से मानी गई है; जिससे इन्होंने जन्म के समय समस्त अन्धकार को ध्वस्त कर दिया था। कुछ स्थानों पर इनका वर्णन अग्नि के समान भी मिलता है। कुछ अंशों में इनके पुरोहित होने का भी उल्लेख है, जिसमें इन्हें देवताओं तथा मनुष्यों में सम्बन्ध स्थापित करनेवाला तथा मनुष्यमात्र का कल्याणकारी भी कहा गया है। एक स्थान पर देवताओं के पिता के रूप में भी इन्हें सम्बोधित किया गया है। कुछ ऋचाओं में इन्हें जाज्वल्यमान, स्वर्णिम तथा घन-गर्जन में अपनी वाणी व्यक्त करने वाला भी कहा गया है। किन्तु बाद के साहित्य में यह एक ऋषि तथा देवताओं के गुरु के रूप में मिलते हैं। इनके पिता का नाम अङ्गिरा मिलता है, जिससे इन्हें आङ्गिरस् की संज्ञा प्राप्त हुई थी। इनकी स्त्री का नाम तारा था, जिन्हें एक बार सोम हरण कर ले गया था। अपनी पत्नी को प्राप्त करने के लिए इन्हें सोम (चन्द्र) से घोर युद्ध करना पड़ा था जिसमें स्वयं महादेव ने भी उपस्थित होकर इनका पक्ष लिया था। अन्त में ब्रह्मा ने आकर युद्ध शान्त किया था और तारा इन्हें दिलवा दी थी। तारा के गर्भ में स्थित शिशु जो चन्द्रमा का था, वह उसे ही दे दिया गया था। बृहस्पति की गणना नव ग्रहों में भी की जाती है। दे० 'चन्द्रमा'।

वैदेही–दे० 'सीता'

वैवस्वत–एक मनु। ये सूर्य के पुत्र थे। इनकी स्त्री श्रद्धा से इला नाम की कन्या उत्पन्न हुई। बाद को वसिष्ठ ने कन्या इला को ही पुत्र रूप में बदल दिया, जिसका नाम सुद्युम्न हुआ। दे० 'सूर्य' तथा 'इला'।

व्यास–सत्यवती नामक धीवर की कन्या के गर्भ से महर्षि पराशर के औरस पुत्र। भागवत में ये विष्णु के अवतार माने गये हैं। एक द्वीप में जन्म होने से इनका नाम कृष्ण द्वैपायन पड़ा। महाभारत और वेदांत दर्शन के सूत्रों के रचयिता यही कहे जाते हैं। दे० 'सत्यवती' तथा 'पराशर'।

श

शंकर (आचार्य)–विख्यात तत्त्ववेत्ता। इनका जन्म सं० ७८८ में मालावार के काहाड़ी गाँव में सुप्रसिद्ध नम्बूद्री कुल में हुआ था। इनके पिता का नाम शिवगुरु तथा पितामह का विद्याधर था। ये इतने विलक्षण मेधावी थे कि आठ वर्ष में ही कठिन दार्शनिक समस्यायों की मीमांसा करने लगे और शीघ्र ही वेद-वेदांगों में पारंगत हो गये। ब्रह्मचर्य अवस्था समाप्त होते ही इन्होंने संन्यास ले लिया। माँ ने विवाह के लिए प्रयत्न किया पर सब व्यर्थ हुआ। माता की आज्ञा से संन्यास ले, गोविन्दपाद नामक आचार्य से इन्होंने दीक्षा ली। विद्या में पारंगत हो शंकर ने जैन और बौद्धों के विरोध में अद्वैतवाद की संस्थापना की। देश के चारों ओर अपने मत के प्रचार करने के लिए इन्होंने यात्रा की जिसका नाम 'शंकर दिग्विजय' है। माधव के 'शंकर दिग्विजय' में इसका विस्तृत विवरण मिलता है। इन्होंने मंडन मिश्र से प्रसिद्ध वाद-विवाद किया जिसकी मध्यस्थ मंडन मिश्र की पत्नी भारती थीं। इनका अन्तिम शास्त्रार्थ अभिनव गुप्त नामक प्रकांड शाक्त भाष्यकार से हुआ था। इसके बाद ही ये भगंदर रोग से पीड़ित हो हिमालय की ओर चले गये और केदारनाथ की गुफा में प्रविष्ठ हो गये। शंकराचार्य भारतवर्ष के दार्शनिकों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं। ये भारतीय संस्कृति के प्रधान स्तम्भ हैं। इनके प्रसिद्ध ग्रन्थ उपनिषदों, ब्रह्मसूत्रों पर किये गये भाष्य हैं। इनका 'सहस्र-नाम' भी प्रसिद्ध है।

शची–इन्द्र की पत्नी का नाम। इन्हें इन्द्राणी भी कहते हैं।

शनैश्चर–एक ग्रह। यह एक बुरे ग्रह माने जाते हैं। शुभ-कार्य इस ग्रह के समय निषिद्ध हैं। शनिवार इन्हीं के नाम से हैं।

शमीक–शृङ्गी ऋषि के पिता एक प्रसिद्ध ऋषि। ध्यानमग्न शमीक ने आखेट में रत परीक्षित को रास्ता न बताया जिससे उन्होंने एक मृत सर्प इनके गले में डाल दिया। ऋषि-बालकों ने शृङ्गी से यह बात कही। शृङ्गी ने क्रुद्ध हो यह शाप दिया कि आज से सातवें दिन सर्प के डसने से राजा की मृत्यु होगी। ऐसा ही हुआ। दे० 'परीक्षित'।

शरभंग–प्रसिद्ध भक्त मुनि। बनवास के समय राम इनके आश्रम में गये थे।

शांतनु–भीष्म पितामह के पिता। इनकी वीरता पर मुग्ध

हो गंगा ने इनकी पत्नी होना स्वीकार किया था। शर्त यह थी कि जो संतान होगी उसे जलसमाधि तुरंत ही दे दी जायेगी। सात संतानें जलमग्न कर दी गईं। आठवीं संतान 'देवव्रत' (भीष्म) बच गये। ये आगे पूर्व जन्म में वसु थे, जिन्हें शाप के कारण पृथ्वी में अवतार लेना पड़ा। महाराज शांतनु ने एक बार सत्यवती नामक धीवर-कन्या पर मुग्ध हो उससे विवाह करना चाहा; किंतु उसने यह शर्त रक्खी कि मुझसे जो संतान हो वही राज्यपद प्राप्त करे। शांतनु ने अस्वीकार किया किंतु भीष्म ने आजन्म ब्रह्मचारी रहने की प्रतिज्ञा कर पिता के मन की बात पूरी की। सत्यवती से विचित्रवीर्य और चित्रांगद दो संतानें हुईं, जिनसे कौरव तथा पांडव वंश चले। दे० 'भीष्म'।

शिखंडी—महाराज द्रुपद के एक नपुंसक पुत्र। दे० 'अंबा'।

शिव (संप्रदाय)—विष्णु स्वामी द्वारा प्रवर्तित एक वैष्णव संप्रदाय। श्री वल्लभाचार्य ने इसी मत को पुष्टिमार्ग के नाम से चलाया।

शिवपुराण—एक पुराण। श्लोक संख्या २४००० मानी गई है। प्रकृति तामसिक है। इसका अधिकांश शिवपूजा से संबद्ध है।

शिवि—प्रसिद्ध प्राचीन दानी राजा। इंद्र (बाज) और अग्नि (कबूतर) ने इनकी परीक्षा ली थी। शरणागत कबूतर को बचाने के लिए ये अपने शरीर का मांस ही बाज को चीर-चीर कर देने लगे और अंत में स्वयं तुला पर बैठ गये। यह देख इंद्र और अग्नि प्रकट हो गये और इन्हें बरदान दिया।

शुकदेव—भारत के सबसे महान पौणारिक कथाकार। अल्पावस्था में ही पूर्ण तत्त्वज्ञानी होने के कारण ऋषियों में ये अग्रणी गिने जाते हैं। ये व्यास के पुत्र हैं। शिव जब पार्वती को अमर होने के लिए सहस्र विष्णु नाम का उपदेश दे रहे थे, उस समय उस कथा को एक शुक भी सुन रहा था। शिव को जब पता चला तो उन्होंने उसका पीछा किया। उसी समस व्यास-पत्नी अपने आँगन में खड़ी हो अँगड़ाई ले रही थीं। उनको देख शुक-शरीर छोड़ ये उनके पेट में चले गये और १२ वर्ष तक वहीं रहे। व्यास महाभारत तथा गीता आदि अपनी पत्नी को सुनाते थे। इस प्रकार गर्भ में ही शुक तत्त्वज्ञानी हुए। भगवान ने इन्हें गर्भ में ही वचन दिया कि संसार की माया तुम्हें नहीं व्यापेगी। कालांतर में राजा परीक्षित को भागवत इन्होंने ही सुनाई।

शुक्र—यह दैत्यों के आचार्य थे। इनके पिता का नाम महर्षि भृगु मिलता है। एक बार जब दैत्यराज बलि वामन को समस्त भूमंडल का दान दे रहे थे, तब यह उन्हें इस कार्य से रोकने के विचार से जलपात्र की टोंटी में बैठ गये थे। यह समझकर कि वहाँ कोई वस्तु फँस गई है, उसे सींक से खोदकर निकालने का प्रयत्न किया गया था, जिसमें इनकी एक आँख फूट गई थी। उसके बाद ये काने ही बने रहे। इनकी कन्या का नाम देवयानी तथा पुत्रों का नाम शंड और अमर्क मिलता है। वृहस्पति के पुत्र कच ने इनसे संजीवनी विद्या सीखी थी।

शूरसेन—मथुरा के एक प्रसिद्ध यदुवंशी महाराज, जो कृष्ण के पितामह तथा वसुदेव के पिता थे।

शूर्पणखा—रावण की बहन। इसके नख सूप की भाँति होने का उल्लेख मिलता है और कहा जाता है कि इसी से इसका नामकरण शूर्पणखा हुआ था। जिस समय रामचंद्र, सीता तथा लक्ष्मण के साथ वनवास कर रहे थे, यह राम के प्रति आकर्षित हो गई थी, और इसने उनके सम्मुख एक सुन्दरी के रूप में उपस्थित होकर विवाह का प्रस्ताव रक्खा था। राम के अस्वीकार करने पर यह लक्ष्मण के पास गई थी, किंतु उन्होंने फिर इसे राम के ही पास भेज दिया था। अन्त में रामचन्द्र ने इसकी बातों से झुँझलाकर लक्ष्मण से इसके नाक-कान कटवा लिए थे। अपनी यह दुर्दशा कराकर यह खर तथा दूषण नामक दो राक्षसों के पास, जिन्हें रावण ने भारत भूमि के दक्षिणी भाग में अपनी लंका की रक्षा के लिए रख छोड़ा था, गई। रामचंद्र से जब यह दोनों राक्षस लड़ने के लिए आये तो उन्होंने इनका वधकर डाला। शूर्पणखा उसके बाद अपने भाई रावण के पास गई और उसने सीता के सौंदर्य का वर्णन उसके सम्मुख किया। इसी के कहने पर रावण ने सीताहरण किया था।

शृंगी—प्रसिद्ध ऋषि शमीक के पुत्र। दे० 'शमीक'।

शेष—एक सर्पराज, जिनके सहस्र फनों पर पृथ्वी के स्थित होने का उल्लेख मिलता है। वासुकि तथा तक्षक के साथ इन्हें भी रुद्र का पुत्र कहा जाता है। इन्हें ज्ञान का अधिष्ठाता माना जाता है और यह भी उल्लेख मिलता है कि इन्होंने ऋषि गर्ग को ज्योतिष विद्या की शिक्षा दी थी। पाताल में इनका निवास-स्थान माना जाता है। कुछ स्थानों पर इनका उल्लेख पाताल के अधिराज के रूप में भी मिलता है। लक्ष्मण तथा बलराम इनके अवतार माने जाते हैं। विष्णु भगवान क्षीरसागर में इन्हीं की शैया पर शयन करते हैं।

शौनक—शुकदेव ने अपनी भागवत कथा का ज्ञान सुत और शौनकों को दिया था। अठासी सहस्त्र शौनकों में ये सबसे प्रसिद्ध थे।

श्री संप्रदाय—एक वैष्णव मत जिसके संस्थापक स्वामी रामानुज थे।

श्रीदामा—कृष्ण का एक सखा।

श्रीधर (स्वामी)—प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। इन्होंने भागवत की विशद टीका की। दे० 'भागवत'।

श्रीरंग—प्रसिद्ध वैष्णव भक्त और चैतन्य महाप्रभु के प्रमुख शिष्य।

षंडामर्क—प्रह्लाद के गुरु का नाम। ये दैत्य-गुरु शुक्राचार्य के पुत्र थे। प्रह्लाद को इन्होंने ही भक्ति का पाठ पढ़ाया था।

षट्वांग—एक प्रसिद्ध सूर्यबंशी राजा। अपने समय के अद्वितीय राजा थे। देवासुर संग्राम में इन्होंने इंद्र की सहायता की थी। इंद्र ने प्रसन्न हो इनसे वर माँगने को कहा। इन्होंने पहिले अपनी आयु पूछी। इंद्र ने कहा

कि केवल दो मुहूर्त है। उन्होंने कहा कि मुझे आप मेरे घर भिजवा दें। एक ही मुहूर्त में ये घर पहुँचा दिये गये और दूसरी शेष मुहूर्त हरि-भजन में लगा दिया। इससे इन्हें परमपद की प्राप्ति हुई।

संकर्षण–रोहिणी के गर्भ से उत्पन्न होनेवाले वसुदेव के ज्येष्ठ पुत्र तथा कृष्ण के बड़े भाई। मथुरा से वसुदेव के द्वारा भेजे हुए ब्राह्मण गर्ग ने अग्निहोत्र के बाद इनका यह नामकरण किया था। दे० 'गर्ग' तथा 'बलराम'।

संख–प्रसिद्ध ऋषि। ये एक धर्मशास्त्र-लेखक थे।

संजय–महर्षि व्यास के शिष्य, कौरवराज धृतराष्ट्र के मंत्री तथा पुरोहित। इनको दिव्य दृष्टि प्राप्त थी, जिससे इन्होंने महाभारत-युद्ध देखा और देखते समय ही कथा के रूप में उसे धृतराष्ट्र को सुनाते गये।

संतदास–एक प्रसिद्ध वैष्णव-भक्त कवि। इनकी कविता सूर के समान कही गई है। इनका जन्म विमलानंद जी प्रबंधक के वंश में हुआ था।

संदीपनसुत–संदीपन के पुत्र। गोकुल में इनकी एक पाठ-शाला थी। वहीं बलराम और कृष्ण पढ़ते थे।

संपाती–एक गृध्र, जो जटायु का बड़ा भाई था। दोनों भाई सूर्य के पास तक उड़ना चाहते थे, किन्तु बीच में ही पंख इनके जल गये। संपाती समुद्र के किनारे रहता था। अंगद हनुमान आदि को इसने सीता का पता बताया था।

सतरूपा–स्वायंभुव मनु की स्त्री। बहुत दिन तक स्वर्ग में रहने के उपरांत ये त्रेता में रामचन्द्र जी की जननी कौशल्या के रूप में प्रकट हुई। दे० 'कौशल्या'।

सती–दक्ष प्रजापति की सात कन्याओं में से एक। यह शिव के साथ ब्याही गई थीं। दक्ष ने अपने यज्ञ में शिव को बलि नहीं दी थीं। इस अपमान से सती ने अपने प्राण त्याग दिये। दूसरे जन्म में ये हिमालय की पुत्री होकर जन्मीं। और शिव के लिये घोर तप किया। अन्त में शिव से ही इनका ब्याह हुआ। दे० 'पार्वती'।

सत्तम–भागवत की कथा से शुकदेव ने परीक्षित को स्थान-स्थान पर इसी संज्ञा से सम्बोधित किया है। अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु के वह पुत्र थे।

सत्यवती–व्यास की माता और पाराशर की प्रेयसि। यह एक धीवर की परम सुन्दरी कन्या थीं। एक बार नदी पर ये अकेले ही थीं। संयोग से पाराशर ऋषि उधर से आ गये। वे इन्हें देखकर मोहित हो गये और रति की याचना की। शाप के डर से सत्यवती ने स्वीकार किया। उस गर्भ से व्यास की उत्पत्ति हुई। सत्यवती को चिरकौमार्य का व्रत मिला था। इनका अन्य पर्याय 'मच्छोदरि' है। दे० 'व्यास'।

सत्यव्रत–१. सातवें मनु का नाम। २. इक्ष्वाकुवंशी हरिश्चंद्र के पिता। इन्हीं का नाम वेधा और त्रिशंकु है। वशिष्ठ के पुत्रों ने इन्हें चांडाल होने का शाप दिया, किन्तु विश्वामित्र ने मुक्त कर दिया। ये सशरीर स्वर्ग जाना चाहते थे। विश्वामित्र ने भेज भी दिया किन्तु देवताओं ने विरोध किया और इन्हें विश्वामित्र निर्मित नक्षत्रलोक में आकाश पाताल के बीच में रहना पड़ा, जहाँ इनके पैर ऊपर की ओर और सिर नीचे की ओर कहे गए हैं। इनकी कथा महाभारत, तथा हरिवंश तथा भागवत आदि में कुछ भिन्न करके दी गई है।

सदना–एक प्रसिद्ध वैष्णव संत कवि, जो जाति के कसाई थे। ये सदैव शालिग्राम की बटिया से मांस तौलते थे। ये परम भक्त थे। कहा जाता है कि जगन्नाथ जी ने इनके लिये पालकी भेजी थी।

सनन्दन–ब्रह्मा के एक मानस पुत्र। दे० 'सनक'।

सनक–ब्रह्मा के मानस पुत्र। इनके साथ ब्रह्मा के तीन अन्य पुत्रों का नाम लिया जाता है—सनंदन, सनातन तथा सनत्कुमार। इनमें से अंतिम सबसे अधिक विख्यात हैं। इनके संबंध में उल्लेख मिलता है कि ब्रह्मा ने इन्हें प्रजापति बनाने के लिए उत्पन्न किया, किंतु अपने जन्म के बाद ही सभी भाई भगवान की उपासना में निरत हो गये, जिससे ब्रह्मा को अन्य पुत्रों की उत्पत्ति करनी पड़ी। इनके परम ज्ञानी तथा विष्णु के सभासद होने का भी उल्लेख मिलता है। सनत्कुमार के संबंध में यह भी कहा जाता है कि इन्होंने कुछ समय के लिए प्रजापति का आसन ग्रहण किया था और पहले प्रजापति थे।

सनकादि–ब्रह्मा के चार मानस पुत्र सनक, संनदन, सनातन तथा सनत्कुमार। ये एक ही आयु के हैं और सदैव एक ही साथ रहते हैं।

सनकादिक-(संप्रदाय) स्वामी निम्बार्क द्वारा प्रवर्तित एक प्रसिद्ध सम्प्रदाय का नाम। निम्बार्क सनकादिक के अवतार माने जाते हैं। इसी से इसका यह नाम है। दे० 'निम्बार्क'।

समुद्र–भू-मंडल पर स्थित जल भाग के प्रतीक स्वरूप स्वीकृत देवता। रामायण में इनके संबंध में यह उल्लेख मिलता है कि रामचंद्र ने बानर तथा भल्लुकों को लंका जाने के लिए मार्ग देने की इनसे प्रार्थना की थी। किंतु जब यह उसे अनसुनी कर रहे थे तो उन्होंने इनके ऊपर वाण-वर्षा की थी; जिससे विचलित होकर यह राम के सम्मुख प्रकट हुए थे और इन्होंने नल तथा नील के स्पर्श से पत्थरों में जल के ऊपर रहने की शक्ति आ जाने का वचन दिया था तथा उनके द्वारा मार्ग बन-वाने का परामर्श दिया था। उसी के अनुसार रामचंद्र ने रामेश्वरम् से लंका तक सेतु बनवाया था। प्राचीन साहित्य में समुद्रों की संख्या सात मिलती है। उनकी उत्पत्ति के संबंध में कथा है कि एक बार कृष्ण अपनी स्त्री विरजा के साथ बैठे हुए थे। उसी समय उनका एक पुत्र रोने लगा। विरजा को चुप कराने के लिए उसके पास जाना पड़ा। कृष्ण उसके जाते ही उठकर राधिका के यहाँ चले गये। विरजा को जब यह ज्ञात हुआ तो उसने अपने समस्त पुत्रों को शाप दे डाला कि अगले जन्म में तुम लवण समुद्रों के रुप में उत्पन्न हो। यही कालां-तर में सात समुद्रों के रूप में अवतरित हुए।

सरस्वती–वेदों में नदी के रूप में इनका उल्लेख मिलता है, किंतु कुछ स्थानों पर देवी के रूप में भी ये हैं। सरस्वती नदी की स्थिति आर्यों के प्राचीन स्थान ब्रह्मावर्त प्रदेश की सीमा पर थी और गंगा की

भाँति ही उनकी पूजा होती थी। नदी के रूप में वह धन-धान्य की अधिष्ठात्री देवी के रूप में स्वीकृत थीं। कुछ मंत्रों में इडा तथा भारती के साथ इनका नाम तीन प्रधान यज्ञ-देवियों में भी मिलता है। वाजसनेयी संहिता के आधार पर कहा जाता कि वाचा देवी के द्वारा इन्होंने इंद्र को शक्ति प्रदान की थी। बाद के साहित, ब्राह्मण-ग्रंथों तथा पुराणों में सरस्वती स्वयं वाग्देवी हो गई है। अपने इसी रूप में उन्होंने संस्कृत भाषा तथा देवनागरी अक्षरों का निर्माण किया था। अपने अंतिम रूप, ज्ञान तथा विज्ञान की अधिष्ठात्री देवी के रूप में ये आज विख्यात हैं। सरस्वती ब्रह्मा की पुत्री तथा पत्नी दोनों ही मानी जाती हैं। महाभारत में एक स्थान पर इन्हें दक्ष प्रजापति की कन्या भी कहा गया है। वंग-भूमि में वैष्णवों में यह कथा प्रसिद्ध है कि पहले यह विष्णु की स्त्री थीं; किंतु विष्णु ने लक्ष्मी के साथ इनका प्रतिदिन का झगड़ा देखकर इन्हें ब्रह्मा को दे दिया था और उन्होंने इन्हें अपनी स्त्री के रूप में स्वीकार कर लिया था। नदी के रूप में आज इनकी धारा का लोप हो गया है।

सवरी(शबरी)–सबरी भिल्लनी की गणना भगवान् के प्रमुख भक्तों में की जाती है। बाल्यावस्था से ही यह धार्मिक प्रवृत्ति की थी। अभ्यागतों का स्वागत सदैव सुन्दर मीठे फलों से करती थी। बनवास के समय राम-लक्ष्मण इनके यहाँ पधारे। सबरी ने मीठे-मीठे बेर खिलाये जिन्हें पहले ही वह चीख लिया करती थी। राम इससे बहुत प्रसन्न हुए और उसे परम धाम दिया। कहा जाता है कि द्वापर में यही कुब्जा नामक दासी हुई थी।

सहसबाहु (सहस्रार्जुन)–हैहयवंशी महा प्रतापी राजा। इनके पिता का नाम कृतवीर्य था। दत्तात्रेय की उपासना से इन्हें सहस्रबाहु होने का और अपराजेय होने का वर मिला था। इन्होंने चिरयौवन प्राप्त कर ८५००० वर्षों तक राज्य किया था। लंकेश रावण को दीर्घकाल तक इन्होंने कारागार में रक्खा था। ये जमदग्नि की कामधेनु लेना चाहते थे, इससे परशुराम ने इनका वध किया।

सहसानन–दे० 'बासुकी' तथा 'शेष'।

सहस्रार्जुन–यह महाराज कृतवीर्य का पुत्र था। इसकी राजधानी माहिष्मती थी। एक बार यह अपनी स्त्रियों सहित नर्मदा में जलक्रीड़ा कर रहा था, इसने अपनी सहस्र भुजाओं से नदी के प्रवाह को रोक लिया था। रावण पास ही कहीं शिव की पूजा कर रहा था। नदी की धारा के रुद्ध हो जाने से उसका ध्यान भंग हो गया और उसका कारण ज्ञात होने पर वह सहस्रार्जुन के साथ युद्ध करने को उद्यत हो गया और सहस्रार्जुन ने अपने पराक्रम से उसे पराजित किया। एक बार सहस्रार्जुन ने जमदग्नि के आश्रम में उपस्थित होकर ऋषि की अनुपस्थिति में उनकी कामधेनु को अपने यहाँ ले जाने का प्रयत्न किया था। जब जमदग्नि के पुत्र परशुराम को अपनी माता से यह समाचार मिला तो उन्होंने कामधेनु को लेकर जाते हुए सहस्रार्जुन से युद्ध किया था और उसकी सहस्र भुजाओं को काटकर उसका वध कर डाला था।

साढ़साती–शनि की एक अनिष्टकारी ग्रहदशा जिसका व्याप्ति-काल साढ़े सात वर्षों का होता है।

सारीरामदास–एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। अनंतानंद के सात शिष्यों में से एक।

सिलपिल्ले–शालिग्राम की कल्पित मूर्ति का नाम। एक बार एक राजा की कन्या और एक पड़ोसी की कन्या ने राजा पुरोहित को शालिग्राम की पूजा करते देख उनसे शालिग्राम को माँगा। पुरोहित ने पास में पड़े दो पत्थर के गोल-गोल टुकड़े दे दिये और कहा कि ये 'सिलपिल्ले' भगवान है। कन्याओं ने उन्हीं की पूजा की जिससे उन्हें भगवान के दर्शन हुए।

सीता–राम की पत्नी, राजा जनक की कन्या तथा लव-कुश की माँ। राम की उपासना के साथ सदैव सीता का नाम लगा रहता है। इन्हें लक्ष्मी का अवतार माना जाता है। जनक के हल जोतने से ये पृथ्वी से निकलती थीं। इसीलिए इनका एक नाम भूमिजा भी है। जनक ने 'धनुष-यज्ञ' करके 'स्वयंवर' में शिव के धनुष तोड़नेवाले राम के साथ सीता का ब्याह कर दिया। ब्याह के कुछ दिनों के बाद सीता राम के साथ बन गई। वहाँ रावण द्वारा उनका हरण हुआ। अन्त में बानरों की सहायता से राम ने रावण का बध किया और अग्नि-परीक्षा लेकर सीता को स्वीकार किया। किन्तु अयोध्यावासी नहीं चाहते थे कि राम भार्या-रूप में सीता को स्वीकार करें। लाचार होकर राज्य धर्म पालन के लिए इन्हें गर्भवती सीता का परित्याग करना पड़ा। वाल्मीकि के आश्रम में सीता का निवास हुआ। वहीं कुश लव की उत्पत्ति हुई। लव-कुश ने अश्वमेध के समय राम सेना को परास्त किया अंत में राम स्वयं सीता को ग्रहण करने के लिए वाल्मीकि आश्रम में गये, किंतु उसी समय सीता भूमि में लीन हो गईं। दे० 'राम', 'कुश' तथा 'लव'।

सुन्द–सुंद और उपसुंद दोनों भाई थे और निसुंद नामक दैत्य के पुत्र थे। इनका जन्म हिरण्याक्ष के वंश में हुआ था। इन दोनों ने तपस्या करके ब्रह्मा से यह वरदान ले लिया कि इन्हें कोई मार न सके। ये ही एक दूसरे को मार सकते थे। जब पृथ्वी पर ये बहुत अत्याचार करने लगे तब ब्रह्मा ने एक परम सुन्दरी स्त्री 'तिलोत्तमा' की सृष्टि की। उसे देख दोनों ही मोहित हो गये और दोनों ही उसके अधिकारी बनने की इच्छा से लड़ मरे। दे० 'तलोत्तमा' तथा 'जय-विजय'।

सुखानंद–१. रामानंद की शिष्य परम्परा में एक प्रमुख मठाधीश। ये परम भक्त थे। नाभाजी ने इन्हें शिव-शंभु का अवतार माना है। २. एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त तथा कवि। ये महान् परोपकारी थे।

सुग्रीव–सूर्य के पुत्र, प्रसिद्ध बानर वीर बालि के अनुज, किष्किधा के राजा तथा राम के मित्र एवं भक्त। सीता-हरण के बाद राम ने सुग्रीव से मित्रता की, बालि का वध किया और तारा सुग्रीव की पत्नी हुई। राम रावण युद्ध में

सुग्रीव ने राम की बड़ी सहायता की थी। दे० 'बलि', 'तारा तथा' अंगद'।

सुद्युम्न–मनु के पुत्र। पहले मनु की स्त्री श्रद्धा से इला नाम की कन्या के रूप में उत्पन्न हुए थे, किंतु बाद में वसिष्ठ की कृपा से सुद्युम्न हुए। कहा जाता है कि एक बार सब देवता शिव के दर्शन को गये। उस समय गौरी विवसना थीं। सबको देख लज्जावश वे शिव से चिपट गईं। इस परिस्थिति से बचाने के लिए शिव ने यह वर दिया कि जो भी उस क्षेत्र में जायगा, स्त्री हो जायगा। देवयोग से सुद्युम्न वहाँ पहुँचे और स्त्री हो गये। स्त्री रूप में चंद्रमा के पुत्र बुध से इनका प्रेम हुआ और दोनों के संयोग से महाप्रतापी राजा पुरूरवा की उत्पत्ति हुई। अंत में राजा अपने स्त्री रूप से थक गये। वसिष्ठ से प्रार्थना की। बहुत प्रयत्न करने पर शिव ने कहा कि ये एक महीने स्त्री और एक महीने पुरुष रहेंगे। देव 'मनु', 'पुरूरवा' तथा 'उर्वशी'।

सुधन्वा–प्राचीन राजा हंसध्वज अथवा नीलध्वज के पुत्र और सुरथ के सगे भाई। अर्जुन के साथ युद्ध करने की इनको पिता ने आज्ञा दी; किंतु ऋतुस्नाता स्त्री की अभिलाषा पूर्ण करने में इन्हें बिलम्ब हो गया जिससे पिता ने इन्हें जलते तेल के कड़ाहे में छोड़वा दिया था। अर्जुन के साथ युद्ध करते हुए ये वीरगति को प्राप्त हुए।

सुनंद–गोकुल का एक वृद्ध गोप।

सुनीति–राजा उत्तानपाद की रानी; विख्यात बाल भक्त ध्रुव की माँ। इनकी पत्नी का नाम सुरुचि था। अपनी सौतेली मां से अपमानित हो बालक ध्रुव ने पूछा, 'मेरे पिता कहाँ हैं?' सुनीति ने 'कहा जंगल में।' उसी समय से ध्रुव ने जंगल की राह ली। अंत में भगवान् का उन्हें दर्शन हुआ। उत्तानपाद ने अन्त में ध्रुव से, और सुनीति से क्षमा मांगी। दे० 'उत्तानपाद' तथा 'ध्रुव'।

सुबाहु–१. एक प्रसिद्ध ब्रजवासी गोप। कृष्ण के प्रिय सखा। २. मथुरा के राजा शत्रुघ्न का नाम भी सुबाहु था। ३. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

सुमंत्र–राजा दशरथ के प्रसिद्ध मंत्री का नाम।

सुमित्रा–दशरथ की रानी तथा लक्ष्मण और शत्रुघ्न की माँ।

सुरसा–एक राक्षसी। इसने हनुमान को निगल जाने का प्रयत्न किया था।

सुरुचि–उत्तानपाद की एक स्त्री का नाम। ध्रुव को राजा की गोंदी में बैठा देख डाह के कारण उसे गदी से उन्होंने उतरवा दिया था। अपमानित ध्रुव अपनी माँ के कहने से तपस्वी बने। दे० 'ध्रुव', 'सुनीति' तथा 'उत्तानपाद'।

सुषेण–रावण के प्रसिद्ध राजवैद्य। लक्ष्मण के शक्ति लगने पर इन्होंने ही संजीवनी बूटी बताई थी, जिसे हनुमान लाये थे।

सूत–शाब्दिक अर्थ है पुराणवक्ता। सबसे अधिक प्रसिद्ध सूत लोमहर्ष हुए हैं। ये महाभारत के कर्ता महर्षि व्यास के शिष्य थे। इनके संबंध में उल्लेख मिलता है कि इन्होंने नैमिषारण्य में ऋषियों को समस्त पुराण सुनाये थे।

सूरश्याम–सूरदास के पर्याय के रूप में प्रयुक्त शब्द। कुछ विद्वान् इस नाम के पदों को सूरदास कृत नहीं मानते।

सूर्य–दिन में आकाश में स्थित होकर अपना प्रकाश विकीर्ण करनेवाले गोलक के प्रतीक-स्वरूप स्वीकृत एक देवता। वैदिक त्रिदेवों में अग्नि और इंद्र के साथ इनका नाम आता है। यह प्रकाश तथा ताप विकीर्ण करनेवाले स्वीकृत हुए हैं और इनके उल्लेखों में यथार्थ से अधिक कल्पना को प्राधान्य दिया गया है। कुछ स्थानों पर आदित्य के साथ इनके व्यक्तित्व को एक कर दिया गया है। एक स्थान पर ऊषा का उल्लेख इनकी स्त्री के रूप में मिलता है किंतु दूसरे मंत्र में इन्हें ऊषा-पुत्र कहा गया है। ऋग्वेद में इनके सात अश्वों के रथ पर धावित होने का उल्लेख मिलता है। बाद के साहित्य में सूर्य की कई स्त्रियों के होने का उल्लेख मिलता है, किंतु उनके पुत्र अश्विनीकुमारों का जन्म अश्विनी नामक एक अप्सरा से कहा गया है। रामायण तथा पुराणों में कश्यप तथा अदिति के पुत्र के रूप में सूर्य का उल्लेख है, किंतु एक स्थान पर उन्हें ब्रह्मा का पुत्र कह कर भी संबोधित किया गया है। उनकी स्त्री का नाम संज्ञा मिलता है, जिसके गर्भ से उनके दो पत्र तथा एक पुत्री हुई थी-मनु वैवस्वत, यम और यमुना। यही यमुना आगे चलकर नदी के रूप में अवतरित हुई। विश्वकर्मा की पुत्री संज्ञा ने तीन संतानों की उत्पत्ति के बाद भी अपने स्वामी सूर्य की भोग-लिप्सा को पूर्ण न होते हुए देखकर वन की यात्रा की थी और वहाँ एक अश्विनी का रूप धारण कर कठोर तपस्या में लीन हो गई थी। एक दिन पास से जाते हुए सूर्य ने अपनी स्त्री को उस रूप में भी पहचान लिया था और उससे संभोग में रत हो गए थे। इसी के फल स्वरूप कालांतर में अश्विनकुमारों का जन्म हुआ था। उसके बाद सूर्य अपनी स्त्री को अपने शुद्ध रूप में घर ले आए। रामायण में सुग्रीव तथा महाभारत में कर्ण के सूर्य पुत्र होने का उल्लेख मिलता है।

सेतुबंध–रामेश्वर नामक एक तीर्थ का नाम जहाँ पर वनबासी राम ने बानरों की सहायता से सागर पार किया था।

सेन–१. रामानंदी संप्रदाय के प्रसिद्ध संत कवि। नाभा जी के अनुसार ये भीष्म के अवतार थे। इनके पद 'संतबानी' में संकलित हैं। २. एक संत कवि जो जाति के नाई थे। बघेल वंश के राजा वीरसिंह के यहाँ ये तेल की मालिश करते थे। एक बार अतिथि सत्कार के कारण इन्हें मालिश करने में देर हो गई। भगवान् स्वयं सेन का रूप धर मालिश कर गये। सेन के आने पर रहस्य खुला तो राजा ने इन की पगधूल ली। इन्हें सेना भी कहा गया है।

स्कंदपुराण–अष्टादश महापुराणों में से एक। श्लोकसंख्या ८१००० और प्रकृति तामसी कही गई है। अलग-अलग संकलित रूप में न मिलकर यह अंशों में मिलता है। 'काशीखंड' इसका महत्वपूर्ण अंश है। यह मुहम्मद गजनवी के आक्रमण के पूर्व रचा गया होगा।

स्मृति–हिन्दुओं के धर्मशास्त्र जिनमें कर्मकाण्ड का विशेष

वर्णन है। मनुस्मृति स्मृतियों में प्रधान है। इनके बाद पाराशर और याज्ञवल्क्य की स्मृति महत्वपूर्ण है। इन तीनों में यत्र-तत्र मतभेद है। स्मृतियों की संख्या १८ कही गई है।

स्वर्ग–देवलोक। इसकी स्थिति आकाश में सूर्यलोक से लेकर ध्रुवलोक तक मानी जाती है। कुछ स्थानों पर इसे सुमेरु पर्वत पर भी स्थित कहा गया है। यह प्रधान-रूप से देवताओं का निवास-स्थान माना जाता है तथा यह भी कहा जाता है कि इस संसार में जो पुण्य और सत्कर्म करता है, उसकी आत्मा मृत्यु के बाद इसी लोक में जाकर निवास करती है। प्राचीन काल में मनुष्य के समस्त पुण्य कार्यों का उद्देश्य स्वर्ग-प्राप्ति ही समझा जाता था। यहाँ रहने की अवधि प्राणी के पुण्य कर्मों पर निर्धारित होती है। उसके पूर्ण होने पर वह फिर कर्मानुसार शरीर धारण करता है। यही क्रम उस समय तक चलता रहता है जब तक वह पूर्ण रूप से मुक्त होकर स्वयं भगवान् में लीन नहीं हो जाता। स्वर्ग सुन्दर वृक्षों, मनोहर वाटिकाओं तथा अप्सराओं का निवास-स्थान माना जाता है। आधुनिक बुद्धिवादी व्यक्ति इसे पूर्ण-रूपेण मनुष्य की एक कल्पना के रूप में स्वीकार करते हैं।

स्वायंभुव–भागवत के अनुसार सृष्टि के चार आदि मनु माने गये हैं। प्रथम का नाम स्वायंभुव है। इनकी माता गायत्री हैं। ये ब्रह्मा के मानस पुत्र और मानव जाति के जनक हैं। प्रत्येक कल्प में चौदह मनु उत्पन्न होते हैं—स्वायंभुव, स्वारोचिष, औत्तमी, तामस, रैवत, चाक्षुष, वैवस्वत, सावर्णि, देवसावर्णि, रौच्य, धर्म सावर्णि, रुद्र-सावर्णि, दक्षसावर्णि तथा इन्द्रसावर्णि। कहा जाता है कि इस समय वैवस्वत मनु की प्रजा का युग चल रहा है जो सप्तम मनु हैं। कई मनुओं का हिन्दू धर्म शास्त्रों में वर्णन है। सबका इतिहास कुछ ऐसा मिल गया है कि कौन मनु क्या है, यह निश्चय करना कठिन प्रतीत होता है।

हंस–विष्णु के चौबीस अवतारों में से चौदहवाँ अवतार। यह अवतार ब्रह्मलोक में हुआ था।

हनुमान–अंजना के गर्भ से उत्पन्न पवन के पुत्र। यह प्राचीन साहित्य में कपि रूप में स्वीकृत हुए हैं। सुग्रीव जब अपने बड़े भाई बालि से पराजित होकर किष्किंधा पर्वत में अपने अन्य साथियों को लेकर रहते थे तो यह भी उस समय उन्हीं के साथ थे। इन्होंने ही रामचन्द्र तथा सुग्रीव की मित्रता कराई थी। सीता के लंका में रावण के यहाँ अशोक-वन में बन्दिनी होने का समाचार इन्होंने ही रामचन्द्र को दिया था। लंका में रावण के पुत्र मेघनाद ने इन्हें बन्दी भी कर लिया था। किन्तु राज-दूत होने के कारण उस समय के राजनीतिक विधान से इन्हें प्राणदण्ड नहीं दिया गया था। इनकी पूँछ में कपड़ा लपेटकर आग लगा दी गई थी। यह प्रसिद्ध है कि अपनी इसी जलती हुई पूँछ से इन्होंने लंका-दहन किया था। रामचन्द्र ने सीता की मुक्ति के लिए जब लंका पर आक्रमण किया था तब इन्होंने बड़ी वीरता के साथ राक्षसों के साथ युद्ध किया था। मेघनाद के शक्ति-प्रहार से जब लक्ष्मण मूर्च्छित हो गये थे तब इन्हें ही एक रात में हिमालय से संजीवनी औषधि लाने का कार्य सौंपा गया था। राम के प्रति इनके हृदय में अनन्य भक्ति थी। भरत के सम्बन्ध में भी इन्होंने सुना था कि वह भी अपने बड़े भाई राम के अनन्य भक्त हैं। उसी के परीक्षण के लिए हिमालय से लौटते हुए यह अयोध्या में भी गये थे। फिर भी प्रातःकाल के पूर्व ही इन्होंने संजीवनी औषधि लंका में लाकर उपस्थित कर दी थी। रावण-वध तथा सीता की मुक्ति के बाद रामचन्द्र के साथ यह भी पुष्पक विमान पर बैठकर अयोध्या आये थे। रामचन्द्र ने जब अश्वमेध यज्ञ किया था तो यह भी अश्व के साथ देश-विदेश गये थे। लव-कुश के सम्मुख लक्ष्मण के साथ इन्हें भी पराजित होना पड़ा था। राम तथा सीता के चित्रों में इन्हें प्रधानतः उनके चरण धोते हुए देखा जाता है। महाभारत में अर्जुन के रथ की ध्वजा धारण करने के कार्य में इन्हें संलग्न देखा जाता है। ये महावीर हैं और परशुराम, अश्वत्थामा, विभीषण आदि के साथ आज भी जीवित माने जाते हैं।

हयग्रीव–भागवत के अनुसार हैयग्रीव विष्णु के अवतार थे। इनका वध विष्णु भगवान् ने मच्छावतार लेकर किया और वेदों का उद्धार किया। दे० 'मच्छ'।

हरि–१. कवि आदि नव योगीश्वरों में से एक। २. विष्णु का तेरहवाँ अवतार जो त्रिकूट पर्वत पर हुआ था।

हरिश्चंद्र–प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा। अपनी सत्यता के लिए ये भारतीय साहित्य में प्रसिद्ध हैं। इन्होंने अपना सारा राज-पाट विश्वामित्र को दान दे दिया था। उनकी दक्षिणा की ७०० मुद्रायें इनको और देनी थीं। कुछ समय पश्चात् देने की प्रतिज्ञा कर इन्होंने राज्य छोड़ दिया। अन्त में कोई उपाय न सोच काशी में एक चण्डाल के हाथ अपने को और एक ब्राह्मण के हाथ अपनी रानी शैव्या तथा पुत्र रोहित को बेच दिया। ब्राह्मण के यहाँ रहते हुए रोहिताश्व को साँप ने काट लिया। शव को शैव्या श्मसान भूमि में ले आई। हरिश्चन्द्र का वहाँ पर पहरा था। शैव्या के पास कर देने के लिये कुछ नहीं था, अतएव वह अपनी आधी साड़ी जो वह पहने थी, फाड़ने को उद्यत हुई। यह हरिश्चन्द्र की कठिन परीक्षा का अवसर था, क्योंकि रानी ने राजा को पहचान कर प्रार्थना की कि पुत्र आप ही का है, और अपनी साड़ी फाड़ने से मैं नंगी हो जाऊँगी। सत्यव्रती राजा अपने सत्य से न डिगे। शैव्या साड़ी फाड़ने जा रही थी, कि विष्णु भगवान् प्रकट हुए। विश्वामित्र ने क्षमा माँगी। इसी के आधार पर संस्कृत में चण्डकौशिक नाटक की रचना हुई। हिन्दी में भी भारतेन्दु ने 'सत्य हरिश्चन्द्र' की रचना इसी आधार पर की है।

हरिदास (स्वामी)–१. विख्यात वैष्णव भक्त, कवि तथा संगीताचार्य। ये अकबर के समकालीन थे। गायक तान-सेन इनके शिष्य थे। अकबर भी कभी-कभी छद्मवेश में संगीत सुनने के लिए तानसेन के साथ इनके यहाँ आता

था। २. हरिदास नाम के अन्य कई वैष्णव भक्त हो चुके हैं, जिनका नाभादास जी ने उल्लेख किया है।

हरिराम हठीले–प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। एक बार इन्होंने भरी सभा में उदयपुर के महाराणा को फटकारा था।

हलधर–श्रीकृष्ण के अग्रज। महाभारत के अनुसार विष्णु ने एक श्वेत और एक श्याम केश दिये थे। ये ही देवकी के कृष्ण और बलराम होकर अवतरित हुए। उत्पन्न होते ही ये यशोदा और रोहिणी के यहाँ पहुँचा दिये गये। ये कृष्ण के समान ही परम पराक्रमी थे। इनका अमोघ अस्त्र हल था। एक बार स्नानार्थ इन्होंने यमुना को अपने पास खींच लिया था। तभी से इनका नाम यमुनाभिद् हो गया। बलराम ने ही दुर्योधन और भीम को गदायुद्ध की शिक्षा दी थी। छल से दुर्योधन को मारने पर ये बहुत ही क्रुद्ध हुये थे। इनका विवाह रेवती से हुआ था। कृष्ण के पहिले ही एक वृक्ष के नीचे बैठे-बैठे इनका स्वर्गवास हुआ। महाभारत में इनका वर्णन अधिकतर मनुष्य रूप से ही है, पर भागवतादि पुराणों में ये अवतार मान लिए गये हैं। इनको लक्ष्मण का अवतार भी माना गया है।

हारीत–१. हारीत स्मृति के प्रणेता। २. राजा युवनाश्व के पुत्र। हारीत अंगिरसों की इन्हीं से उत्पत्ति हुई। मतांतर से ये च्यवन के पुत्र थे।

हित हरिवंश–प्रसिद्ध वैष्णव कवि और भक्त। सं० १४९९ में इनका जन्म हुआ था। इन्होंने अपना अलग सम्प्रदाय भी चलाया, जिसे 'हितसम्प्रदाय' कहते हैं। इनके पिता का नाम केशवदास मिश्र तथा माता का नाम तारा मतीचा था। ये पहिले मध्वानुयायी गोपाल भट्ट के शिष्य थे। फिर स्वप्न में राधा से दीक्षित हुए।

हिमगिरि-भारतवर्ष की उत्तर सीमा पर स्थित एक पर्वत-माला। प्राचीन साहित्य में इसे पर्वत मेना अथवा मेनाक का स्वामी स्वीकार किया गया है। इस रूप में महादेव की अर्द्धांगिनी पार्वती इसकी पुत्री मानी जाती हैं। गंगा भी इनकी पुत्री के रूप में स्वीकृत हुई हैं। दे० 'गंगा'।

हिरण्यकशिपु–कश्यप तथा अदिति का पुत्र, एक दैत्य-राज। ब्रह्मा की कठोर तपस्या से अभय प्राप्त कर इसने देवताओं को कष्ट देना आरम्भ किया था तथा स्वर्ग पर भी अपना अधिकार स्थापित कर लिया था। विष्णु के प्रति इसके हृदय में बड़ा द्वेष था। सम्भवतः इसी की प्रतिक्रिया-स्वरूप इसके पुत्र प्रह्लाद में उनके प्रति भक्ति की भावना का उदय हुआ था। प्रह्लाद की इस प्रवृत्ति को देखकर इसने कितनी ही बार उसका बध किया था। पर अन्त में विष्णु ने नरसिंह रूप में इसका बध कर डाला। दे० 'प्रह्लाद'।

हिरण्याक्ष–हिरण्यकश्यपु का भाई। कश्यप स्त्री दिति इसकी माता थीं। पूर्व जन्म में दोनों भाई विष्णु के द्वारपाल जय-विजय थे। सनतकुमारों के शाप से राक्षस हुए। यह पृथ्वी को लेकर ही पाताल की ओर भाग रहा था। उसी समय वाराह अवतार लेकर विष्णु ने इसका वध किया।